Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सरलव्याकरण

संस्कृतका

हिन्दीभाषामें

श्रीनवीनचन्द्ररायकर्त्तृकप्रणीत।

Sarala Viā Karana

Sanskrit Grammar

by

Navina Chandra Rai

published

under the auspices of the Panjab University College

पञ्जाबके महाविद्यालयकेनिमित्त

मित्रविलासयन्त्रलाहोरमें

पण्डितश्रीमुकुन्दरामयज्ञार्थीकेद्वाराछपी

सम्वत १९२९ वि० — 1872 — सन १८७२ ई०

द्वितीयसंस्कारण मूल्य ॥) १२०० जिल्द

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सरल व्याकरण

संस्कृतका

हिन्दीभाषामें

श्रीनवीनचन्द्ररायकर्तृक प्रणीत।

Sarala Viá Karana

Sanskrit Grammar

by

Navina Chandra Rái

published

under the auspices of the Panjab University College

पञ्जाबके महाविद्यालयके निमित्त

मित्रविलासयन्त्रलाहोरमें

पण्डितश्रीमुकुन्दरामयन्त्राध्यक्षके द्वारा छपी

सम्वत १९२९ वि० — 1872 — सन १८७२ ई०

द्वितीयसंस्करण   मूल्य ।।।)   १२०० जिल्द

N. 16

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

6199.

Price Rs. 1-a-0-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Via Karm No. 14

PRATAP SINGH MUSEUM SRINAGAR 3269

प्रस्तावना।

संस्कृत विद्यामे प्रवेश के निमित्त व्याकरण द्वार स्वरूप है, परन्तु संस्कृत के जितने व्याकरण हैं सब संस्कृत वाणी मे विरचित हुए हैं; और उन्के सूत्र और प्रयोग सिद्धि के क्रम ऐसे क्लिष्ट और पूर्व्वापर विवेचना सापेक्ष हैं कि बहुतेरे संस्कृत प्रारिप्सुओं के प्रथमोद्यम को उन्होंने निराश करदिया है। बहुत लोग, व्याकरण वारिधि को उल्लंघ्य जानकर उस्के सन्तरण की इच्छा ही नहिं करते; और जो लोग कुछ थोड़ा बहुत अग्रसर होते भी हैं वे बाध्यबाधकभाव रूप ऊर्म्मियों से भीत होकर अथवा परिभाषा प्रभृति आवर्त्त मे पतित होकर फेर मुड़ आते हैं; इसीलिये संस्कृतविद्या का अच्छा प्रचार भी नहीं होने पाता। जो लोग अत्यन्त अध्यवसाय पूर्व्वक व्याकरण के अध्ययन मे लगे रहते हैं उनका समाप्ति पर्य्यन्त बहुत काल व्यतीत होता है; और जो लोग उस्के शास्त्र तरङ्ग मे पड़गये वे तो कितने दिनोंमे कूल प्राप्त होवें गे कहा नहिं जासकता। इतने परिश्रम के पीछे जब व्याकरण का परिज्ञान होजाता है तब अन्यान्य शास्त्र जिन्के प्राप्त होने के लिये व्याकरण एक सोपान मात्र है उन्की पर्य्यालोचना को अवसर नहिं रहता; इसीलिये व्याकरण मात्र जानकर अपने को पण्डित समझ प्रकृत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विद्याके रसास्वादन मे बहुत लोग वञ्चित हो रहते हैं। इस कष्टकी निवृत्तिके निमित्त पूर्वतन लोग भी यत्नान्वितथे परन्तु जैसे किसी वनके पारजानेके निमित्त ऊंची नीची और कण्टकमय भूमि को समतल और परिष्कार न करके पथकी नैकट्यता का अनुसन्धान हि करते रहे, वैसे वे लोग व्याकरण के कार्य्य और तात्पर्य्यावगति के सीधे उपाय को लक्ष्य न करके सूत्रों के लाघव मे नियुक्त रहे, यहांतक कि वे एकमात्रा लाघव को भी पुत्रोत्सव मानतेथे यहबात प्रसिद्ध है।

अब जिस्से व्याकरण के तात्पर्य्य का शीघ्र और अल्पश्रम सेहि बोध हो जावे इसलिये वह स्वदेशीय भाषामे एक अभिनव रीतिसे सङ्कलित होती है। सारग्राही महात्माओं से यह प्रार्थना है कि इस्मे प्राचीन रीति अनुसार यद्यपि कोई त्रुटि हुई हो उसे क्षमा करें; और भ्रान्ति प्रयुक्त जहां कहीं भूल रह गयी हो उसे संशोधन करलें।

उक्त उद्देश्य साधनके निमित्त पण्डिताग्रगण्य श्रीयुत ईश्वर चन्द्र विद्यासागर महाशय की बङ्गभाषा मे विरचित व्याकरण कौमुदी को अवलम्बन करके यह ग्रन्थ लिखागया है, पर इसके प्रथम और द्वितीय भाग मे अन्यान्य व्याकरणों से भी बहुत विषय, जो व्याकरण-कौमुदीमे नथा, लियागया है, अथच उस ग्रन्थका अनावश्यक विस्तार परित्यक्त हुआहै। स्थूलविषय अर्थात् सामान्य नियम ग्रन्थके मध्यमे बड़े अक्षरों से लिखे गये हैं, और सूक्ष्म विषय अर्थात् विशेष नियम, नीचे टीका के स्थानमे छोटे अक्षरोंसे लिखे गये हैं; अभिप्राय इससे यह है कि पहिले पढ़ने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वाला निचले विशेष कार्य्यों को छोड़भी दे तथापि उसकी आवश्यकतानुसार व्याकरण का साधारण रूपसे उसे यथेष्ट बोध हो जावेगा, अतएव प्रथम पाठक उन्हें छोड़हि दे तो अच्छा है इससे उस्का बहुत समय वृथा नष्ट नहि होगा।

इस ग्रन्थमे बाध्यबाधक भाव का भी प्रायशः निवारण किया गया है और एक प्रक्रिया जहांतक होसकी दूसरी की अनपेक्षकी गयी है। संस्कृत व्याकरण प्रायशः सूत्रोंमे है, उन्का कण्ठ कर लेना तो सुलाला है परन्तु तात्पर्य्य उन्का भी वृत्तिविना जाना नहिं जा सकता इसलिये इसग्रन्थमे सूत्रोंका सन्निवेश अनावश्यक समझागया। इसमेजो नियम किये गये हैं वेहि सूत्र और वृत्ति दोनोंका काम देंगे। षट्‌लिङ्ग मे सिद्धरूपहि दिखाये गये हैं क्योंकि और शब्दोंके भी तत्सदृशरूप होते हैं; पर जिन शब्दों के विशेष रूप होते हैं वे भी प्रदर्शित हुए हैं। इस ग्रन्थ के समग्र पाठ से पुराण स्मृति तथा अन्यान्य शास्त्र और काव्योंके समझने की सामर्थ्य हो जायगी परन्तु संस्कृत व्याकरण के सम्पूर्ण ज्ञान के निमित्त पाणिनीय शास्त्रहि उपयोगी है॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सूचिपत्र

सरल व्याकरण

प्रथमभाग

RANBIR LIBRARY No.---- JAMMU

पृष्ठ

वर्णनिर्णय —— १

स्वरवर्ण —— ,,

व्यञ्जनवर्ण —— ,,

सन्धि प्रकरण —— २

स्वरसन्धि —— ,,

व्यञ्जनसन्धि —— ८

णत्वविधान —— १९

षत्वविधान —— २१

नामप्रकरण —— २४

स्वरान्त पुंलिङ्ग अकारान्तशब्द —— २५

आकारान्त —— २६

इकारान्त —— २७

ईकारान्त —— २८

उकारान्त —— ३०

ऊकारान्त —— ,,

ऋकारान्त —— ३१

ओकारान्त —— ३२

औकारान्त —— ,,

स्त्रीलिङ्ग आकारान्त —— ३३

इकारान्त —— ३५

ईकारान्त —— ,,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नामप्रकरणस्वरान्त	स्त्रीलिङ्ग	उकारान्तशब्द	३६
		ऊकारान्त	३८
		ऋकारान्त	३९
		ऐ ओ औकारान्त	,,
	क्लीवलिङ्ग	अकारान्त	४०
		आकारान्त	,,
		इकारान्त	,,
		ईकारान्त	४१
		उकारान्त	,,
		ऋकारान्त	४२
		ऐ ओ औकारान्त	,,
व्यञ्जनान्त	पुंलिङ्ग	ककारान्तशब्द	४३
		खकारान्त	,,
		चकारान्त	,,
		ञकारान्त	४४
		जकारान्त	४५
		णकारान्त	४६
		नकारान्त	,,
		थकारान्त	४७
		दकारान्त	,,
		धकारान्त	,,
		नकारान्त	४८
		पकारान्त	५२
		मकारान्त	,,
		लकारान्त	,,
		वकारान्त	,,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

		पृष्ठ
नामप्रकरण व्यञ्जनान्त पुंलिङ्ग	शकारान्त शब्द	५२
	षकारान्त	५३
	सकारान्त	५४
	हकारान्त	५६
स्त्रीलिङ्ग	चकारान्त	५८
	जकारान्त	"
	पकारान्त	"
	भकारान्त	"
	रकारान्त	"
	वकारान्त	५९
	शकारान्त	"
	षकारान्त	"
	सकारान्त	"
	हकारान्त	"
क्लीबलिङ्ग	ककारान्त से हकारान्त तक	६०
सर्व्वनाम		६३
संख्यावाचक शब्द		७०
विशेष्य विशेषण		७२
अव्यय		७३

द्वितीयभाग

	पृष्ठ
आख्यात प्रक्रिया	१
साधारण नियम	२
कर्त्तृवाच्य प्रकरण	६
लट्, लोट्, लङ्, (विधि) लिङ्.	"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

पृष्ठ

ह्वादिगण — ७
भ्वादिगण — ८
दिवादिगण — ११
स्वादिगण — १२
तनादिगण — १३
क्र्यादिगण — १५
रुधादिगण — ,,
ग्रहादिगण — १६
क्लादिगण — ४२
चुरादिगण — ५०
इड्विधान — २५
लुट्, लृट्, लृङ् — २६
(आशी) लिङ् — २८
लिट् — ३१
लुङ् — ३६
णिजन्त प्रकरण — ४५
सन्नन्त प्रकरण — ५१
यङन्त प्रकरण — ५२
कर्मवाच्य और भाववाच्य प्रकरण — ५६
नामधातु — ६०
पदव्यवस्था — ६२
लकारार्थ — ६४

तृतीयभाग

पृष्ठ

कृत्प्रकरण — १

कृत्प्रकरणसाधारणनियम — १

तव्य, अनीय, ण्यत्, यत्, क्यप् — २

केलिम, शतृ, शानच्, कसु, — ३

कानच्, स्यतृ, स्यमान, तमुन्, — ४

णमुल्, ल्यप्, — ५

क्त, क्तवतु — ६

क्त्वा, क्तिन्, — ८

णक, षक, णनट्, तच, अण, अट्, — ९

अ, अङ्, णीन्, खिउण, — १०

इन्, खङ्, ख, खट्, णिव, ख्य, ट, खनट्, लि षण, वुकञ्, णी — ११

क्विप्, वङ्, क्वनिप्, इष्णु, स्नुक, क्रु — १२

उकञ्, आलु, तुर्, ल्वरप्, र, उ, वा, ऊक्, इत्र, कार, — १३

कुर, त्र, इत्र, इ, त्रिमक्, अथु, अनि, अन — १४

अनट्, वुन्, अ, अन, आ — १५

न, यक् — १६

तद्धितप्रकरणं — १७

साधारणनियमाः — ,,

अपत्यार्थे प्रत्ययाः — १८

अर्थविशेषे प्रत्ययाः — २०

अर्थविशेषे प्रत्ययविशेषः — २३

निपातनं — २५

पुंवद्भाव — २६

स्त्रीप्रत्ययाः — २७

आप् — ,,

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

		पृष्ठ
	३ प्	३०
	४ प्	४२
समासप्रकरणं		४३
	अव्ययीभाव समास	,,
	तत्पुरुष समास	४६
	कर्म्मधारयसमास	४८
	द्विगु समास	४९
	२ अन्यय	,,
	बहुव्रीहि समास	५०
	द्वन्द समास	५२
	सर्व्वसमास साधारण विधि	५३
	पूर्व्वनिपात	५५
विभक्ति निर्णयः		१
	प्रथमा	,,
	द्वितीया	२
	तृतीया	३
	चतुर्थी	४
	पञ्चमी	५
	षष्ठी	७
	सप्तमी	११
कारक		१३
	अपादान	१४
	सम्प्रदान	१६
	करण	१७
	अधिकरण	,,
	कर्म्म	,,
	कर्त्ता	१९
	समाप्ति	२२

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ओं

वर्णनिर्णयः

अ इ उ क ख ग घ इत्यादि प्रत्येक अक्षरको वर्ण कहते हैं। वर्ण दो प्रकारके हैं। स्वर और व्यञ्जन[1]

स्वरवर्णाः

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ए ऐ ओ औ इन त्रयोदशको स्वर कहते हैं॥ स्वर दो प्रकारके हैं; ह्रस्व और दीर्घ। अ इ उ ऋ ऌ ये पांच ह्रस्व स्वर हैं। आ ई ऊ ॠ ए ऐ ओ औ इन आठोंको दीर्घ[2] स्वर कहते हैं॥ दूसरे प्रकारसे स्वरकी अच् संज्ञा भी होजाती है॥

व्यञ्जनवर्णाः

क् ख् ग् घ् ङ् च् छ् ज् झ् ञ् ट् ठ् ड् ढ् ण् त् थ् द् ध् न् प् फ् ब् भ् म् य् र् ल् व् श् ष् स् ह् ं : इन पैंतीसको व्यञ्जन कहते हैं॥ इनमेसे क् से म् पर्य्यन्त पचीसको स्पर्श वर्ण कहते हैं। सारे स्पर्शवर्ण पांच वर्गोंमे विभक्त हैं। क ख ग घ ङ इन पांचोंको कवर्ग, च छ ज झ ञ इन पांचोंको चवर्ग, ट ठ ड ढ ण इन पांचोंको टवर्ग, त थ द ध न इन पांचोंको तवर्ग, और प फ ब भ म इन पांचोंको पवर्ग कहते हैं। य र ल व इन चारोंको अन्तःस्थ वर्ण कहते हैं। श ष स ह इनका नाम ऊष्म वर्ण है। ं अनुस्वार और :[3] विसर्ग इन दोनोंको अयोगवाह बोलते हैं॥

---

(१) व्यञ्जनको हल भी कहते हैं। (२) दीर्घ ऌ कहीं प्रयोगमे नहि आता इस निमित्त परित्यक्त हुआ।
(३) विसर्ग के और भी दो रूप होते हैं जिनका नाम जिह्वामूलीय और उपध्मानीय है, स्वरूप इनका ≍ यह है। विसर्ग क ख परे होनेसे जिह्वामूलीय, और प फ परे होनेसे उपध्मानीय विकल्प करके होता है॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

व्यञ्जन और दो प्रकारसे भी विभक्त रूप हैं। वर्गके प्रथम और द्वितीय अक्षर और शषस इनकी विवार अथवा अघोष संज्ञा है। अवशिष्ट व्यञ्जनों की सम्वार अथवा घोष संज्ञा है[१]।

सन्धिप्रकरण

दोवर्ण परस्पर निकट होनेसे मिल जाते हैं, और इस मिलापको सन्धि कहते हैं। सन्धि दो प्रकारकी है; एक स्वर, दूसरी व्यञ्जन सन्धि। स्वरके साथ स्वरकी जो सन्धि होती है तिसको स्वर सन्धि कहते हैं; और व्यञ्जनके साथ व्यञ्जनकी, अथवा व्यञ्जन के साथ स्वरकी जो सन्धि होती है, तिसका नाम व्यञ्जन सन्धि है ॥

स्वरसन्धिः

एक जातिके दो स्वर मिलने से दीर्घ होजाता है यथा

मिलकर होता है	उदाहरण		
अ + अ = आ	दैत्य[२] + अरिः = (दैत्य्अ + अरिः =	दैत्य्आरिः =)	दैत्यारिः
अ + आ = आ	रत्न + आकरः = (रत्न्अ + आकरः =	रत्न्आकरः =)	रत्नाकरः
आ + अ = आ	दया + अर्णवः = (दय्आ + अर्णवः =	दय्आर्णवः =)	दयार्णवः
आ + आ = आ	महा + आशयः = (मह्आ + आशयः =	मह्आशयः =)	महाशयः
इ + इ = ई	गिरि + इन्द्रः = (गिर्इ + इन्द्रः =	गिर्ईन्द्रः =)	गिरीन्द्रः
इ + ई = ई	कवि + ईश्वरः = (कव्इ + ईश्वरः =	कव्ईश्वरः =)	कवीश्वरः
ई + इ = ई	मही + इन्द्रः = (मह्ई + इन्द्रः =	मह्ईन्द्रः =)	महीन्द्रः
ई + ई = ई	गौरी + ईशः = (गौर्ई + ईशः =	गौर्ईशः =)	गौरीशः
उ + उ = ऊ	विधु + उदयः = (विध्उ + उदयः =	विध्ऊदयः =)	विधूदयः
उ + ऊ = ऊ	लघु + ऊर्म्मिः = (लघ्उ + ऊर्म्मिः =	लघ्ऊर्म्मिः =)	लघूर्म्मिः
ऊ + उ = ऊ	वधू + उत्सवः = (वध्ऊ + उत्सवः =	वध्ऊत्सवः =)	वधूत्सवः
ऊ + ऊ = ऊ	वधू + ऊहनम् = (वध्ऊ + ऊहनम् =	वध्ऊहनम् =)	वधूहनम्

(१) पाणिनि प्रोक्त विवार और सम्वार संज्ञाओंसे इस ग्रन्थोक्त विवार और सम्वार संज्ञाका किञ्चित्प्रभेद है (२) जिस व्यञ्जनवर्णमे मात्रा अथवा हलन्तका चिह्न (्) नहि रहता उसमें अकार रहता है (३) स्वरहीन व्यञ्जन वर्ण स्वरवर्णोंके साथ संयुक्त होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिलकर	होताहै	उदाहरण
ऋ + ऋ =	ऋ (१)	पितृ + ऋणम् = (पितृऋ + ऋणम् = पितॄणम् =) पितॄणम्

अवर्णसे परे इ, उ, ऋ, लृ, होनेसे इनको मिलकर गुण (२) होजाताहै, (३) यथा

मिलकर	होताहै	उदाहरण
अ + इ =	ए	देव + इन्द्रः = (देव्अ + इन्द्रः = देव्एन्द्रः =) देवेन्द्रः
अ + ई =	ए	गण + ईशः = (गण्अ + ईशः = गण्एशः =) गणेशः
आ + इ =	ए	महा + इन्द्रः = (मह्आ + इन्द्रः = मह्एन्द्रः =) महेन्द्रः
आ + ई =	ए	रमा + ईशः = (रम्आ + ईशः = रम्एशः =) रमेशः
अ + उ =	ओ	नील + उत्पलम् = (नील्अ + उत्पलम् = नील्ओत्पलम् =) नीलोत्पलम्
अ + ऊ =	ओ	गृह + ऊर्द्धम् = (गृह्अ + ऊर्द्धम् = गृह्ओर्द्धम् =) गृहोर्द्धम्
आ + उ =	ओ	गङ्गा + उदकम् = (गङ्ग्आ + उदकम् = गङ्ग्ओदकम् =) गङ्गोदकम्
आ + ऊ =	ओ	गङ्गा + ऊर्म्मिः = (गङ्ग्आ + ऊर्म्मिः = गङ्ग्ओर्म्मिः =) गङ्गोर्म्मिः
अ + ऋ =	अर् (४)	देव + ऋषिः = (देव्अ + ऋषिः = देव्अर्षिः =) देवर्षिः
आ + ऋ =	अर्	महा + ऋषिः = (मह्आ + ऋषिः = मह्अर्षिः =) महर्षिः
अ + लृ =	अल्	तव + लृकारः = (तव्अ + लृकारः = तव्अल्कारः =) तवल्कारः

अवर्णसे परे ए ऐ ओ औ होनेसे उभय मिलकर वृद्धि (५) होती है। (६)

मिलकर	होताहै	उदाहरण
अ + ए =	ऐ	उप + एति = (उप्अ + एति = उप्ऐति =) उपैति
अ + ऐ =	ऐ	देव + ऐश्वर्य्यम् = (देव्अ + ऐश्वर्य्यम् = देव्ऐश्वर्य्यम् =) देवैश्वर्य्यम्
आ + ए =	ऐ	सदा + एव = (सद्आ + एव = सद्ऐव =) सदैव
आ + ऐ =	ऐ	महा + ऐश्वर्य्यम् = (मह्आ + ऐश्वर्य्यम् = मह्ऐश्वर्य्यम् =) महैश्वर्य्यम्

(१) ऋ + लृ की भी सन्धि किसी २ व्याकरणमे की गईहै यथा होतृ + लृकारः = होतॄकारः (वा) होत्लृकारः (२) अ इ उ ऋ लृ के स्थानमे यथाक्रम अ ए ओ अर् अल् होनेको गुण कहतेहैं (३) अक्षादि कई एक शब्दोंसे परे ऊहिन्यादि शब्द होनेसे वृद्धि होजातीहै, यथा अक्षौहिणी, स्वैरं, स्वैरिणी, प्रौहः, प्रौढः, प्रौढिः। (४) उपसर्गके अ आ से परे ऋ होनेसे उभय मिलित होकर आर् होताहै यथा (अप + ऋच्छति =) अपार्च्छति, (परा + ऋषति =) परार्षति। प्र, वत्सर, कम्बल, वसन, ऋण, दश इन शब्दोंसे परे ऋण शब्द होनेसे भी आर् होताहै यथा प्रार्णं, कम्बलार्णम् इत्यादि। अवर्णान्त उपसर्गसे परे ऋकारादि अथवा लृकारादि नाम धातु होनेसे विकल्प करके आर् आल् होताहै यथा प्र + ऋषभीयति = प्रार्षभीयति। प्र + लृकारीयति = प्राल्कारीयति। (५) अ ई उ ऋ लृ के स्थानमे यथाक्रम आ ऐ औ आर् आल् होजाना वृद्धि कहलाताहै।

(६) उपसर्गका अकार आकार लुप्त होजाताहै धातुका ए ओ परे होनेसे एध इन धातुओंके सिवा यथा (प्र + एजते) = प्रेजते = (परा + एखति) = परेखति, (अव + ओहति =) अवोहति, परोहति परन्तु (उप + एधति =) उपैधति, (अव + एति =) अवैति। उक्त अ का लोप विकल्प करके होताहै एकारादि ओकारादि नाम धातु परे होनेसे यथा उप + एडकीयति = उपेडकीयति (वा) उपैडकीयति। शब्दके अन्त्य अकार का लोप होताहै अनवधारणार्थक एव शब्द परे होनेसे यथा क्वेव भोक्ष्यसे। ओष्ठ शब्द परे होनेसे अ आ का लोप विकल्प करके होताहै यथा (बिम्ब + ओष्ठः =) बिम्बोष्ठः (वा) बिम्बौष्ठः (उमा + ओष्ठः =) उमोष्ठः (वा) उमौष्ठः परन्तु जहां समास न हो वहां नहिं होता यथा तवौष्ठः ममौष्ठः

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिलकर होताहै	४ उदाहरण
अ + ओ = औ	जल + ओघः = (जलअ + ओघः = जलओघः =) जलौघः
अ + औ = औ	चित्त + औदार्यम् = (चित्तअ + औदार्यम् = चित्तऔदार्यम् =) चित्तौदार्यम्
आ + ओ = औ	महा + ओषधिः = (महआ + ओषधिः = महऔषधिः =) महौषधिः
आ + औ = औ	सदा + औत्सुक्यम् = (सदआ + औत्सुक्यम् = सदऔत्सुक्यम् =) सदौत्सुक्यम्

इ, उ, ऋ, ऌ, के स्थान में य, व, र, ल, क्रम से होता है असवर्णी(१) स्वरों के परे

इ + अ = य	यदि + अपि = (यद्इ + अपि = यद्यपि =) यद्यपि
इ + आ = या	अति + आचारः = (अत्इ + आचारः = अत्याचारः =) अत्याचारः
इ + उ = यु	अभि + उदयः = (अभ्इ + उदयः = अभ्युदयः =) अभ्युदयः
इ + ऊ = यू	प्रति + ऊहः = (प्रत्इ + ऊहः = प्रत्यूहः =) प्रत्यूहः
इ + ऋ = यृ	मुनि + ऋषभः = (मुन्इ + ऋषभः = मुन्यृषभः =) मुन्यृषभः
इ + ए = ये	प्रति + एकम् = (प्रत्इ + एकम् = प्रत्येकम् =) प्रत्येकम्
इ + ऐ = यै	अति + ऐश्वर्यम् = (अत्इ + ऐश्वर्यम् = अत्यैश्वर्यम् =) अत्यैश्वर्यम्
इ + ओ = यो	पचति + ओदनम् = (पचत्इ + ओदनम् = पचत्योदनम् =) पचत्योदनम्
इ + औ = यौ	अति + औदार्यम् = (अत्इ + औदार्यम् = अत्यौदार्यम् =) अत्यौदार्यम्
ई + अ = य	नदी + अम्बु = (नद्ई + अम्बु = नद्यम्बु =) नद्यम्बु
ई + आ = या	देवी + आगताः = (देव्ई + आगताः = देव्यागताः =) देव्यागताः
ई + उ = यु	सखी + उक्रम् = (सख्ई + उक्रम् = सख्युक्रम् =) सख्युक्रम्
ई + ऊ = यू	पाशी + ऊर्द्धगः = (पाश्ई + ऊर्द्धगः = पाश्यूर्द्धगः =) पाश्यूर्द्धगः
ई + ऋ = यृ	वली + ऋषभः = (वल्ई + ऋषभः = वल्यृषभः =) वल्यृषभः
ई + ए = ये	गोपी + एषा = (गोप्ई + एषा = गोप्येषा =) गोप्येषा
ई + ऐ = यै	वली + ऐरावतः = (वल्ई + ऐरावतः = वल्यैरावतः =) वल्यैरावतः
ई + ओ = यो	सरस्वती + ओघः = (सरस्वत्ई + ओघः = सरस्वत्योघः =) सरस्वत्योघः
ई + औ = यौ	वाणी + औचित्यम् = (वाण्ई + औचित्यम् = वाण्यौचित्यम् =) वाण्यौचित्यम्

(१) ह्रस्व दीर्घ प्लुत की परस्पर सवर्ण संज्ञा होती है और ऋ ऌ वर्ण की भी परस्पर सवर्ण संज्ञा होती है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिलकर होता है		उदाहरण	
उ + अ =	व	अनु + अयः = (अन् उ + अयः = अन्वयः =)	अन्वयः
उ + आ =	वा	सु + आगतं = (स् उ + आगतं = स्वागतं =)	स्वागतं
उ + इ =	वि	मधु + इदं = (मध् उ + इदं = मध्विदं =)	मध्विदं
उ + ई =	वी	साधु + ईहितं = (साध् उ + ईहितं = साध्वीहितं =)	साध्वीहितं
उ + ऋ =	वृ	मधु + ऋते = (मध् उ + ऋते = मध्वृते =)	मध्वृते
उ + ए =	वे	अनु + एषणम् = (अन् उ + एषणम् = अन्वेषणम् =)	अन्वेषणम्
उ + ऐ =	वै	अनु + ऐतिह्य = (अन् उ + ऐतिह्य = अन्वैतिह्य =)	अन्वैतिह्य
उ + ओ =	वो	पचतु + ओदनम् = (पचत् उ + ओदनम् = पचत्वोदनम् =)	पचत्वोदनम्
उ + औ =	वौ	ददातु + औषधम् = (ददात् उ + औषधम् = ददात्वौषधम् =)	ददात्वौषधम्
ऊ + अ =	व	सरयू + अम्बु = (सरय् ऊ + अम्बु = सरय्वम्बु =)	सरय्वम्बु
ऊ + आ =	वा	वधू + आदिः = (वध् ऊ + आदिः = वध्वादिः =)	वध्वादिः
ऊ + इ =	वि	वधू + इन्द्रियम् = (वध् ऊ + इन्द्रियम् = वध्विन्द्रियम् =)	वध्विन्द्रियम्
ऊ + ई =	वी	वधू + ईश्वरः = (वध् ऊ + ईश्वरः = वध्वीश्वरः =)	वध्वीश्वरः
ऊ + ए =	वे	सरयू + एधितम् = (सरय् ऊ + एधितम् = सरय्वेधितम् =)	सरय्वेधितम्
ऊ + ऐ =	वै	वधू + ऐश्वर्य्यम् = (वध् ऊ + ऐश्वर्य्यम् = वध्वैश्वर्य्यम् =)	वध्वैश्वर्य्यम्
ऊ + ओ =	वो	सरयू + ओघः = (सरय् ऊ + ओघः = सरय्वोघः =)	सरय्वोघः
ऊ + औ =	वौ	वधू + औदार्य्यम् = (वध् ऊ + औदार्य्यम् = वध्वौदार्य्यम् =)	वध्वौदार्य्यम्
ऋ + अ =	र	पितृ + अनुमतिः = (पित् ऋ + अनुमतिः = पित्रनुमतिः =)	पित्रनुमतिः
ऋ + आ =	रा	पितृ + आदेशः = (पित् ऋ + आदेशः = पित्रादेशः =)	पित्रादेशः
ऋ + इ =	रि	पितृ + इच्छा = (पित् ऋ + इच्छा = पित्रिच्छा =)	पित्रिच्छा
ऋ + ई =	री	पितृ + ईहितम् = (पित् ऋ + ईहितम् = पित्रीहितम् =)	पित्रीहितम्
ऋ + उ =	रु	पितृ + उपदेशः = (पित् ऋ + उपदेशः = पित्रुपदेशः =)	पित्रुपदेशः
ऋ + ऊ =	रू	पितृ + ऊहः = (पित् ऋ + ऊहः = पित्रूहः =)	पित्रूहः
ऋ + ए =	रे	पितृ + एषणा = (पित् ऋ + एषणा = पित्रेषणा =)	पित्रेषणा
ऋ + ऐ =	रै	पितृ + ऐश्वर्य्यम् = (पित् ऋ + ऐश्वर्य्यम् = पित्रैश्वर्य्यम् =)	पित्रैश्वर्य्यम्
ऋ + ओ =	रो	पितृ + ओकः = (पित् ऋ + ओकः = पित्रोकः =)	पित्रोकः
ऋ + औ =	रौ	पितृ + औदार्य्यम् = (पित् ऋ + औदार्य्यम् = पित्रौदार्य्यम् =)	पित्रौदार्य्यम्

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिलकर होता है   उदाहरण

ऌ+ अ= ल ऌ+ अनुबन्धः = लनुबन्धः
ऌ+ आ= ला ऌ+ आकृतिः = लाकृतिः

एऐओऔ इन्के स्थानमें अय् आय् अव् आव् क्रमसे होता है स्वर परे होनेसे(१)

ए+ अ= अय ने+ अनम्= (न्ए+ अनम्= न्अयनम् =) नयनम्
ए+ आ= अया शे+ आते= (श्ए+ आते= श्अयाते =) शयाते
ए+ इ= अयि शे+ इतम्= (श्ए+ इतम्= श्अयितम् =) शयितम्
ए+ ई= अयी शे+ ईत= (श्ए+ ईत= श्अयीत =) शयीत
ए+ उ= अयु से+ उक्तम्= (स्ए+ उक्तम्= स्अयुक्तम् =) सयुक्तम्
ए+ ऊ= अयू से+ ऊहा= (स्ए+ ऊहा= स्अयूहा =) सयूहा
ए+ ऋ= अयृ ने+ ऋषयः= (न्ए+ ऋषयः= न्अयृषयः =) नयृषयः
ए+ ए= अये शे+ ए= (श्ए+ ए= श्अये =) शये
ए+ ऐ= अयै शे+ ऐ= (श्ए+ ऐ= श्अयै =) शयै
ए+ ओ= अयो से+ ओः= (स्ए+ ओः= स्अयोः =) सयोः
ए+ औ= अयौ से+ औ= (स्ए+ औ= स्अयौ =) सयौ

ऐ+ अ= आय विनै+ अकः= (विन्ऐ+ अकः= विन्आयकः =) विनायकः
ऐ+ आ= आया रै+ आ= (र्ऐ+ आ= र्आया =) राया
ऐ+ इ= आयि रै+ इ= (र्ऐ+ इ= र्आयि =) रायि
ऐ+ ई= आयी रै+ ईश्वरः= (र्ऐ+ ईश्वरः= र्आयीश्वरः =) रायीश्वरः
ऐ+ उ= आयु रै+ उदयः= (र्ऐ+ उदयः= र्आयुदयः =) रायुदयः
ऐ+ ऊ= आयू रै+ ऊहा= (र्ऐ+ ऊहा= र्आयूहा =) रायूहा
ऐ+ ए= आये रै+ ए= (र्ऐ+ ए= र्आये =) राये
ऐ+ ओ= आयो रै+ ओः= (र्ऐ+ ओः= र्आयोः =) रायोः

ओ+ अ= अव भो+ अनम्= (भ्ओ+ अनम्= भ्अवनम् =) भवनम्
ओ+ आ= अवा गो+ आ= (ग्ओ+ आ= ग्अवा =) गवा
ओ+ इ= अवि भो+ इता= (भ्ओ+ इता= भ्अविता =) भविता
ओ+ ए= अवे गो+ ए= (भ्ओ+ ए= ग्अवे =) गवे
ओ+ ओ= अवो गो+ ओः= (ग्ओ+ ओः= ग्अवोः =) गवोः

(१) कहीं यकार भी स्वर का काम देता है यथा गो+यूतिः=गव्यूतिः। क्षे+यं=क्षय्यं। जे+यं=जय्यं। क्रे+यं=क्रय्यं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

औ + अ = आव पौ + अकः = (प् औ + अकः = प् आवकः =) पावकः
औ + आ = आवा नौ + आ = (न् औ + आ = न् आवा =) नावा
औ + इ = आवि भौ + इनी = (भ् औ + इनी = भ् आविनी =) भाविनी
औ + उ = आवु भौ + उकः = (भ् औ + उकः = भ् आवुकः =) भावुकः
औ + ए = आवे नौ + ए = (न् औ + ए = न् आवे =) नावे
औ + ओ = आवो नौ + ओः = (न् औ + ओः = न् आवोः =) नावोः
औ + औ = आवौ नौ + औ = (न् औ + औ = न् आवौ =) नावौ

पदान्तस्थ[1] अय् अव् आय् आव् के अन्त वर्णका लोप[2] और विकल्प[3] होताहै (स्वर परे होनेसे)

ए + इ = अइ हरे + इह = (हर् ए + इह = हर् अइह =) हरइह
ए + उ = अउ हरे + उत्तिष्ठ = (हर् ए + उत्तिष्ठ = हर् अउत्तिष्ठ =) हरउत्तिष्ठ
ए + ए = अए हरे + एहि = (हर् ए + एहि = हर् अएहि =) हरएहि
ओ + इ = अइ विष्णो + इह = (विष्ण् ओ + इह = विष्ण् अइह =) विष्णइह
ऐ + ए = आए श्रियै + एति = (श्रिय् ऐ + एति = श्रिय् आएति =) श्रियाएति
औ + उ = आउ विष्णौ + उक्तः = (विष्ण् औ + उक्तः = विष्ण् आउक्तः =) विष्णाउक्तः

पदान्तस्थ एकार ओकारसे परे अकारका लोप होताहै

ए + अ = एऽ[4] हरे + अव = (हर् ए + अव = हर् एऽव =) हरेऽव
ओ + अ = ओऽ[5] विष्णो + अव = (विष्ण् ओ + अव = विष्ण् ओऽव =) विष्णोऽव

ओकारान्त अथवा एक स्वर मात्र अव्यय[6] शब्दको सन्धि नहीं होती यथा अहो अपेहि अ अथापि, आ एवम्, उ उत्तिष्ठ, ए एवमेतत् ऐ इहागच्छ ओ आगम्यताम्

(१) पदके जो अन्तमे हो उसे पदान्तस्थ कहतेहैं। विभक्त्यन्त शब्दको पद कहतेहैं। विभक्ति नाम और धातुके परे लगती हैं जिनका आगे वर्णन होगा ॥ (२) वर्णका जाता रहना लोप वा लोपश्च कहलाताहै लोपश्च होनेसे फेर सन्धि नहिं होती॥ (३) जो एकवार हो एकवार न हो उसे विकल्प कहतेहैं ॥
(४) ऽ यह लुप्त अकार का चिन्ह है ॥ (५) गो शब्दसे परे अकारका लोप विकल्प करके होताहै और जिस पक्षमे लोप नहिं होता उसमे गोसे परे अ का आगमहोताहै यथा (गो + अजिनं =) गोऽजिनं (वा) गवाजिनं॥ परन्तु इन्द्र वा अन्तशब्द परे होनेसे नित्य अ का आगम होताहै यथा गवेन्द्रः गवान्तः कई शब्द ऐसे हैं जिन्के टि का लोपहोताहै (अन्त्यस्वर अथवा स्वरके सहित अन्त्य व्यञ्जन को टि कहतेहैं) यथा (हल + ईषा =) हलीषा ॥ (६) परन्तु सीमा, व्याप्ति, अथवा ईषदर्थ होनेसे, किम्वा क्रियाके साथ योग होनेसे अव्यय आकारको सन्धि होती है यथा (आ + अध्ययनात् =) आध्ययनात् (आ + एकदेशात् =) ऐकदेशात् (आ + आलोचितम् =) आलोचितम् (आ + इहि =) एहि ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

द्विवचन[१] ईकारान्त ऊकारान्त और एकारान्त शब्दकी सन्धि नहिं होती

हरी+ एतौ= हरीएतौ (यहां ईकारको यकार न हुआ)

विष्णू+ अमू= विष्णूअमू (—ऊ——व——न)

गंगे+ अत्र= गंगेअत्र (यहां अकारका लोप नहि हुआ)

इति स्वरसन्धिः

अथ व्यञ्जनसन्धिः

त् थ् और द् को च् होता है च छ परे होनेसे।

(यथा) महत्+ चक्रम्= महच्चक्रम्, महत्+ छत्रम्= महच्छत्रम्

एतद्+ चन्द्रमण्डलम्= एतच्चन्द्रमण्डलम्, एतद्+ छविः= एतच्छविः

शपथ्+ छिन्नम्= शपच्छिन्नम्

त् द् और ध् को ज् होता है ज झ परे होनेसे।

भवत्+ जीवनम्= भवज्जीवनम्, महत्+ झञ्झनम्= महज्झञ्झनम्

विपद्+ जालम्= विपज्जालम्, तद्+ झनत्कारः= तज्झनत्कारः

समिध्+ झङ्कारः= समिज्झङ्कारः

न को ञ होता है ज झ परे होनेसे

महान्+ जयः= महाञ्जयः, गच्छन्+ झटिति= गच्छञ्झटिति

च्+ न्= च्ञ .... याच्+ ना= याच्ञा

ज्+ न्= ज्ञ .... यज्+ नः= यज्ञः

---

(१) अदस् शब्दके ईकारान्त पदको भी सन्धि नहिं होती यथा अमी अश्वाः, पदान्त इ ऊ ऋ को समास मे न हो तो विकल्प करके ह्रस्व और सन्धि भाव होजाता है जो असवर्णी स्वर परे हो यथा चक्रि अत्र (वा) चक्र्यत्र, मधु एतत् (वा) मध्वेतत् कर्त्रि इदं (वा) कर्त्रिदं पदान्त आ ई ऊ ऋ को ऋ ऌ परे होने से विकल्प करके ह्रस्व और सन्धि भाव होता है यथा ब्रह्म ऋषि (वा) ब्रह्मर्षि, दधि ऋषि (वा) दध्यर्षि। वधू ऋकार (वा) वध्वृकारः, होतृ ऋकारः (वा) होतृकारः॥ उ अव्ययको इतिशब्द परे होनेसे विकल्प करके सन्धि होती है यथा उ इति (वा) विति वर्गीय वर्णसे परे उ अव्ययको विकल्प करके व होता है स्वर परे होनेसे यथा किम् उक्तं (वा) किम्वुक्तं (वा) किमुक्तं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

त् द् को ट् होताहै ट ठ परे होनेसे।

उत् + टलति = उट्टलति, सत् + ठकारः = सट्ठकारः

तद् + टीका = तट्टीका, एतद् + ठक्कुरः = एतट्ठक्कुरः

त् और द् को ड् होताहै ड ढ परे होनेसे।

उत् + डीनः = उड्डीनः, उत् + ढौकते = उड्ढौकते

तद् + डिण्डिमः = तड्डिण्डिमः, एतद् + ढक्का = एतड्ढक्का

न् को ण् होताहै ड् ढ परे होनेसे।

महान् + डामरः = महाण्डामरः, राजन् + ढौकसे = राजण्ढौकसे

ष् + न् = ष्ण .... आकृष् + नः = आकृष्णः

ष् + थ् = ष्ठ .... षष् + थः = षष्ठः

त् द् न् को ल् होताहै ल् परे होनेसे।

उत् + लिखति = उल्लिखति, तद् + लीलायितम् = तल्लीलायितम्, महान् + लाभः = महाँल्लाभः (१)

स्वरके पीछे यदि दो व्यञ्जन हों (अथवा अन्त्य एक व्यञ्जन हो) तो सर्व्व व्यञ्जनको (र् ह् को छोड़कर) द्वित्व भी होजाताहै और झ ढ ध घ भ को द्वित्व होनेसे प्रथम वर्ण यथाक्रम ज ड द ग ब होजाताहै।

यथा (दधि + आनय) = (द्ध्य् + आनय) = (द्ध् ध्यानय) = (दद् ध्यानय) = दद्ध्यानय (वा) दध्यानय।

वर्गीय वर्णसे परे य् व् ल् को विकल्प करके द्वित्व होताहै।

यथा (दधि + आनय) = दध्यानय (वा) (दध्य्यानय)

स्वर पूर्व्वक र् ह् से परे ह भिन्न व्यञ्जनको विकल्पकरके द्वित्व होताहै (और कहीं श ष स् को भी)। यथा (गौरि + अत्र) = गौर्य्यत्र, पार्श्श्व म्।

य् व् ल् से परे उनको विकल्प करके द्वित्व होताहै।

यथा (नव + लकारः) = नवल्कारः (वा) नवल्ल्कारः।

व्यञ्जन से परे जो दो वर्ण एक वर्गके हों तो उनमेसे पहिलेका लोप होजाताहै। यथा (नव + ऋद्धिः) (नवर्द्धिः)

द्वित्व होनेसे (नवर्द्द्धिः) यहां ध् से पूर्व्व द् का लोप होनेसे सिद्धरूप नवर्द्धिः हि रहा।

द् को न् होताहै (शषभिन्न) विवार वर्ण परे होनेसे।

यथा तद् + स्वादयति = तन्स्वादयति

(१) न् के स्थानमे जो ल् होताहै वह अनुनासिक हि होताहै और अनुनासिकका यह चिन्ह ँ पूर्व्व वर्णके ऊपर लगताहै।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ह्रस्वस्वरसे परे पदान्त ङ् ण् न् को द्वित्व होता है स्वर परे होने से।

प्रत्यङ् + आत्मा = प्रत्यङ्ङात्मा, सुगण् + इह = सुगण्णिह, स्मरन् + उवाच = स्मरन्नुवाच

पदान्त न् + च् = ंश्च .... पश्यन् + चकितः = पश्यंश्चकितः

.... न् + छ् = ंश्छ धावन् + छागः = धावंश्छागः

.... न् + ट् = ंष्ट उद्यन् + टङ्कारः = उद्यंष्टङ्कारः

.... न् + ठ् = ंष्ठ महान् + ठक्कुरः = महांष्ठक्कुरः

.... न् + त्(1) = ंस्त पतन् + तरुः = पतंस्तरुः

.... न् + थ् = ंस्थ स्पृशन् + थुध्यति = स्पृशंस्थुध्यति

.... न् + श् = ंञ्छ (वा) ञ्छ, ञ्श, न्श। महान् + शब्दः = महांञ्छब्दः

(वा) महाञ्छब्दः, महाञ्शब्दः, महान्शब्दः

नृन् शब्दके अन्त्य न के स्थानमे ः भी होजाताहै जो पकार उसके परे हो।

यथा नृन् + पाहि = नॄंः पाहि।

पुम् शब्दसे परे वर्गीय प्रथम दो वर्णोंमेसे कोई हो और उससे परे स्वर वा सम्वार वर्ण हो तो पुंसे परे स् आताहै परन्तु ख्या परे होनेसे नहिं आता यथा पुंस्कोकिलः पुं-ख्यानम् (स्वर सम्वार वर्ण परे न होनेसे) पुंक्षीरम्

अपदान्त न् को अनुस्वार होताहै श ष स ह परे होनेसे।

दन् + शनम् = दंशनम्, ग्रन् + षते = ग्रंषते

मीमान् + सते = मीमांसते, रन् + हते = रंहते

तथा म् को अनुस्वार होताहै स् परे होनेसे।

रम् + स्यते = रंस्यते

तथा न् को ङ् होताहै क् ख् ग् घ् परे होनेसे।

आशन् + कते = आशङ्कते, प्रेन् + खणीयम् = प्रेङ्खणीयम्

आलिन् + गति = आलिङ्गति, अन् + घते = अङ्घते

तथा ञ् होताहै च् छ् ज् झ् परे होनेसे।

वन् + चयति = वञ्चयति

(1) न+त प्रभृति से परे विकार वर्ण हो तो उनके बीचमे स् नहिं आता यथा सन्त्सरुः। और प्रशान् शब्दके न् से परे भी स् का आगम नहिं होता यथा प्रशान्तनोति॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वाग् + छुति = वाञ्छुति

रन् + जयति = रञ्जयति

नम ण् होता है ट् ठ् ड् ढ् परे होने से। वन् + टयति = वण्टयति

उत्कन् + ठते = उत्कण्ठते

मन् + डयति = मण्डयति

म् होता है प् फ् ब् भ् परे होने से। कन् + पते = कम्पते

दन् + फति = दम्फति, आलन् + बते = आलम्बते, जन् + भते = जम्भते

अपदान्त म् को न् होता है त् परे होने से। गम् + ता = गन्ता

पदान्त म् को अनुस्वार होता है अन्तस्थ अथवा उष्म[१] वर्ण परे हो

सत्वरम् + याति = सत्वरंयाति, करुणम् + रोदिति = करुणं[२] रोदिति जैसे

विद्याम् + लभते = विद्यांलभते, तम् + वदति = तंवदति

शय्यायाम् + शेते = शय्यायांशेते, तम् + षष्ठः = तंषष्ठः

कष्टम् + सहते = कष्टंसहते, मधुरम् + हसति = मधुरं हसति

तथा अनुस्वार होता है स्पर्श वर्ण परे होने से;

(अथवा) जो वर्ग परे हो तिसका पञ्चम वर्ण होता है।

किम् + करोषि = किंकरोषि (वा) किङ्करोषि

गृहम् + गच्छ = गृहंगच्छ (वा) गृहङ्गच्छ

क्षिप्रम् + चलति = क्षिप्रंचलति (वा) क्षिप्रञ्चलति

शत्रुम् + जहि = शत्रुंजहि (वा) शत्रुञ्जहि

नदीम् + तरति = नदीं तरति (वा) नदीन्तरति

धनम् + ददाति = धनंददाति (वा) धनन्ददाति

स्तनम् + धयति = स्तनंधयति (वा) स्तनन्धयति

गुरुम् + नमति = गुरुंनमति (वा) गुरुन्नमति

(१) पदान्त म् को सानुनासिक य्, व्, ल्, म्, न्, भी यथाक्रम होजाता है जो ह पूर्वक य् व् ल म् न् परे हों यथा (किम् + ह्यः =) किँय्ह्यः (किम् + ह्वलयति =) किँव्ह्वलयति (किम् + ह्लादयति =) किँल्ह्लादयति (किम् + ह्मलयति =) किम्ह्मलयति (किम् + ह्नुते =) किन्ह्नुते। ङ् अथवा ण् से परे श ष स हो तो ङ् से परे क् ख् और ण् से परे ट् ठ् का आगम विकल्प करके होता है, यथा प्राङ् + षष्ठः = प्राङ्क्षष्ठः (वा) प्राङ्ख्षष्ठः, सुगण् + साधुः = सुगण्ट्साधुः (वा) सुगण्ठ्साधुः। ड्, ढ्, न् से परे स हो तो स के पूर्व त् का आगम विकल्प करके होता है यथा मधुलिट् + सहते = मधुलिट्त्सहते, सन् + सः = सन्त्सः॥

(२) परन्तु सम् + राट् का सम्राट् ही होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चन्द्रम् + पशुपति = चन्द्रंपशुपति (वा) चन्द्रम्पशुपति

किम् + फलम् = किंफलम् (वा) किम्फलम्

सत्यम् + ब्रूयात् = सत्यंब्रूयात् (वा) सत्यम्ब्रूयात्

मधुरम् + भाषते = मधुरंभाषते (वा) मधुरम्भाषते

शास्त्रम् + मीमांसते = शास्त्रंमीमांसते (वा) शास्त्रम्मीमांसते

पदान्तम् को अनुस्वार अथवा सानुनासिक यवल होता है यवल परे होनेसे।

सम् + यन्तः = संयन्तः (वा) सय्ँयन्तः

सम् + वत्सरः = संवत्सरः (वा) सव्ँवत्सरः

यम् + लोकम् = यंलोकम् (वा) यँल्लोकम्

ह्रस्वस्वर(१)से परे छ को च्छ होताहै। सित + छत्रम् = सितच्छत्रम्

परि + छदः = परिच्छदः, अव + छेदः = अवच्छेदः

पदान्त क को ग् होताहै स्वर और सघोषवर्ण परे होनेसे

दिक् + अन्तः = दिगन्तः, वाक् + आडम्बरः = वागाडम्बरः

वाक् + इन्द्रियम् = वागिन्द्रियम्, वाक् + ईशः = वागीशः

सम्यक् + उक्तम् = सम्यगुक्तम्, धिक् + ऋणकारिणम् = धिगृणकारिणम्

प्राक् + एव = प्रागेव, धिक् + ऐश्वर्यमत्तम् = धिगैश्वर्यमत्तम्

सम्यक् + ओजः = सम्यगोजः, वाक् + औचित्यम् = वागौचित्यम्

दिक् + गजः = दिग्गजः, प्राक् + घनोदयः = प्राग्घनोदयः

वाक् + जालम् = वाग्जालम्, सम्यक् + झङ्कारः = सम्यग्झङ्कारः

सम्यक् + डयते = सम्यग्डयते, सम्यक् + ढौकते = सम्यग्ढौकते

वाक् + दानम् = वाग्दानम्, धिक् + धनगर्वितम् = धिग्धनगर्वितम्

वाक् + बाहुल्यम् = वाग्बाहुल्यम्, दिक् + भागः = दिग्भागः

धिक् + याचकम् = धिग्याचकम्, वाक् + रोधः = वाग्रोधः

धिक् + लोभिनम् = धिग्लोभिनम्, सम्यक् + वदति = सम्यग्वदति, दिक् + हस्ती = दिग्हस्ती

(१) कोइयोंके मतमे दीर्घसे परेभी छ को च्छ होताहै यथा चेच्छिद्यते। पदान्त दीर्घसे परे विकल्प करके च्छ होताहै यथा लक्ष्मी-छाया, लक्ष्मीच्छाया। आ, मा, उपसर्गसे परे च्छ नित्य होताहै यथा आच्छादयति, माच्छिदत्। (२) [illegible] से परे ह को घ भी होजाताहै यथा दिग्घस्ती।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पदान्त त् प् थ् को द् होता है स्वर तथा ग् घ् द् ध् ब् भ् य् र् व् ह् परे होने से

जगत् + अन्तः = जगदन्तः; जगत् + आदिः = जगदादिः

जगत् + इन्दुः = जगदिन्दुः; जगत् + ईशः = जगदीशः

भवत् + उक्तं = भवदुक्तं, भवत् + ऊहनं = भवदूहनं

भवत् + ऋणं = भवदृणं, जगत् + एतत् = जगदेतत्

महत् + ऐश्वर्यम् = महदैश्वर्यम्, महत् + ओजः = महदोजः

जगत् + औषधं = जगदौषधम्, अग्निमथ् + आसनम् = अग्निमदासनम्

समिध् + अत्र = समिदत्र

बृहत् + गहनम् = बृहद्गहनम्, बृहत् + घटः = बृहद्घटः

भवत् + दर्शनम् = भवद्दर्शनम्, महत् + धनुः = महद्धनुः

जगत् + बन्धुः = जगद्बन्धुः; महत् + भयम् = महद्भयम्

बृहत् + यानम् = बृहद्यानम्, बृहत् + रथः = बृहद्रथः

महत् + वनम् = महद्वनम्, तत् + हविः = तद्‍हविः[1]

पदान्त च् को ज्, ट् को ड् और प् भ् को ब होता है स्वर और सम्वार वर्ण परे होनेसे।

अच् + अन्तः = अजन्तः, अच् + वत् = अज्वत्

परिव्राट् + अयम् = परिव्राडयम्, परिव्राट् + गच्छति = परिव्राड्गच्छति

परिव्राट् + वदति = परिव्राड्वदति, परिव्राट् + हसति = परिव्राड्हसति[2]

अप् + इन्धनः = अबिन्धनः, अप् + घटः = अब्घटः, अप् + जः = अब्जः

अप् + भक्त = अब्भक्त, अप् + वासः = अब्वासः, अप् + हरणम् = अब्हरणम्[3]

ककुभ् + ईशः = ककुबीशः

पदान्त क् को ग् अथवा ङ् होता है न् अथवा म[4] परे होने से

दिक् + नागः = दिग्नागः (वा) दिङ्नागः, प्राक् + मुखः = प्राग्मुखः (वा) प्राङ्मुखः

च् को ज ञ .... अच् + नालि = अज्नालि (वा) अञ्नालि

अच् + मध्यम् = अज्मध्यम् (वा) अञ्मध्यम्

---

(१) त् द् से परे ह् को ध भी होजाता है यथा तद्धविः (२) ड् से परे ह् को ढ भी हो जाता है यथा परिव्राड्ढसति
(३) ब से परे ह् को भ् भी होजाता है यथा अब्भरणम् (४) मात्र किम्वा मय प्रत्यय परे होने से पदान्तस्थित वर्गीय प्रथम वर्ण के स्थान में केवल पञ्चम वर्ण होता है यथा वाक् + मयम् = वाङ्मयम्, अच् + मात्रम् = अञ्मात्रम्, मधुलिट् + मात्रं = मधुलिण्मात्रम्, चित् + मयम् = चिन्मयम्, अप् + मयम् = अम्मयम्॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ट को ड् ण	मधुलिट् + नदति = मधुलिड्नदति (वा) मधुलिण्नदति[1]
	मधुलिट् + मत्तः = मधुलिड्मत्तः (वा) मधुलिण्मत्तः
त को द् न्	जगत् + नाथः = जगद्नाथः (वा) जगन्नाथः
	भवत् + मतम् = भवद्मतम् (वा) भवन्मतम्
प को ब् म्	अप् + नदी = अब्नदी (वा) अम्नदी
	अप् + मानम् = अब्मानम् (वा) अम्मानम्
क + ह = ग्घ भी होता है	दिक् + हस्ती = दिग्घस्ती
च् + ह = ज्झ	अच् + हलौ = अज्झलौ
ट् + ह = ड्ढ	षट् + हलानि = षड्ढलानि
त + ह = द्ध	तत् + हविः = तद्धविः
प + ह = ब्भ	अप् + हरणम् = अब्भरणम्

पदान्त क च् ट् त् द् प से परे श को छ भी होता है स्वर परे होने से

वाक् + शूरः = वाक्छूरः (पक्षे) वाक्शूरः

षट् + शूराः = षट्छूराः (वा) षट्शूराः

जगत् + शरण्यः = जगच्छरण्यः (वा) जगच्शरण्यः[2]

तद् + शरीरम् = तच्छरीरम् (वा) तच्शरीरम्

ककुप् + शासनम् = ककुप्छासनम् (वा) ककुप्शासनम्

विसर्ग को स[3] होता है त थ[4] परे होने से

कः + तनोति = कस्तनोति, सः + थूत्करोति = सस्थूत्करोति

---

(१) पदान्त ट् से पर नवति और नगरी शब्दों के न को भी ण हो जाता है यथा । षट् + नवतिः = षण्णवतिः, (षट् + नगर्यः = षण्णगर्यः और षष् + नाम् इसका षण्णाम् बनता है (२) पदान्त त् को च् होता है श पर होने से । त् को च् और श को छ नहीं होता जो उस श के साथ र् युक्त हो यथा उत्श्रोतति (३) नमः, पुरः, तिरः के विसर्ग को स होता है कृधातु परे होने से यथा नमस्करोति, पुरस्कारः तिरस्करिणी। अः को अस होता है कर, कार, कान्त, काम, कुम्भ, क, कल्प, काम्य, पाश, और पात्र शब्द परे होने से यथा श्रेयस्करः, पयस्कारः, अयस्कान्तः, मनस्कामः, यशस्कः, यशस्कल्पः, यशस्काम्यः, यशस्पाशः, पयस्पात्रम्, परन्तु कल्प से पूर्व अव्यय होने से विसर्ग का स नहीं होता यथा प्रातःकल्पं। और काम्य परे होने से धात्ववयव निष्पन्न विसर्ग को भी स नहीं होता यथा गीःकाम्य (यहां गिर् से गीः बना है)। नमस्कारः, मेदस्पिण्डः, कस्कः, भास्करः, अहस्करः, वाचस्पतिः, दिवस्पतिः, अयस्पदः, शिरस्पदः, अयस्कालः इन शब्दों में भी विसर्ग के स्थान में स हुआ है। (४) विसर्ग को स नहीं होता जो त्स उससे परे हो यथा शठः + त्सरति = शठःत्सरति खड्गः + त्सरुः = खड्गःत्सरुः॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

……विसर्गको ष् होता है ट ठ परे होनेसे।

कः + टीकते = कष्टीकते, कः + ठक्कुरः = कष्ठक्कुरः

……श् होता है च् छ् परे होनेसे।

रामः + चरति = रामश्चरति, मेघः + छादयति = मेघश्छादयति

……श ष स भी क्रमसे होता है श ष स परे होनेसे।

कः शेते (पक्षे) कश्शेते, कः षष्ठः कष्षष्ठः

कः सरति कस्सरति

अः + अ = ओऽ   नरः + अयम् = नरोऽयम्

अः को ओ होता है सञ्चार वर्ण परे होनेसे।

शोभनः + गन्धः = शोभनोगन्धः, नूतनः + घटः = नूतनोघटः

सद्यः + जातः = सद्योजातः, मधुरः + झङ्कारः = मधुरोझङ्कारः

नवः + डमरुः = नवोडमरुः, गजः + ढौकते = गजोढौकते

मूर्द्धन्यः + णकारः = मूर्द्धन्योणकारः, निर्वाणः + दीपः = निर्वाणोदीपः

अश्वः + धावति = अश्वोधावति, उन्नतः + नगः = उन्नतोनगः

दृढः + बन्धः = दृढोबन्धः, अकृतः + भयः = अकृतोभयः

अतीतः + मासः = अतीतोमासः

कृतः + यत्नः = कृतोयत्नः, शान्तः + रोषः = शान्तोरोषः

कृतः + लोभः = कृतोलाभः, शीतः + वायुः = शीतोवायुः

रामः + हसः = रामोहसः

(१) निः, आविः, बहिः, दुः, प्रादुः, द्विः त्रिः चतुः इन शब्दोंके विसर्गको ष् होता है क, ख, प, फ, परे होनेसे यथा निष्कामः, निष्खेटः, निष्पीडितः, निष्फलः, आविष्कृतम्, बहिष्कृतः, दुष्कर्म, प्रादुष्कृतम्, द्विष्करोति, त्रिष्करोति, चतुष्कोणम् इत्यादि॥ भ्रातुः + पुत्र के विसर्गको भी ष् होता है यथा भ्रातुष्पुत्रः। हविः, सर्पिः, बर्हिः, अर्चिः, रोचिः, शोचिः, आयुः धनुः, चक्षुः, वपुः, यजुः इत्यादि के विसर्गको विकल्प करके ष होता है क प परे होनेसे यथा हविष्पतति इत्यादि। परन्तु समासमे नित्य ष् होता है यथा हविष्पानम्। इः उः को इष् उष् होता है तकारादि तद्धित प्रत्यय परे होनेसे यथा अर्चिः त्वम् = अर्चिष्ट्वम्, चतुष्टयम्। क, ख, परे होनेसे विसर्ग जिह्वामूलीय भी हो जाता है जिसका रूप यह ✕ है; और प फ परे होनेसे उपध्मानीय होजाता है जिसका रूप ✕ यह है यथा कः करोति (वा) क✕करोति, कः फलति (वा) क✕फलति। परन्तु ऊष्मवर्णों से परे म् हो तो नहि होता यथा [illegible] सोमनः, रामः प्लातां॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अकारसे परे विसर्ग का लोप वा अथवा य होता है अकारभिन्न स्वर परे होनेसे

(लोप वा होनेसे फेर सन्धि नहीं होती)

कुतः + आगतः = कुतआगतः (वा) कुतयागतः
नरः + इव = नरइव .... नरयिव
कः + ईहते = कईहते .... कयीहते
चन्द्रः + उदेति = चन्द्रउदेति .... चन्द्रयुदेति
इतः + ऊर्द्धम् = इतऊर्द्धम् .... इतयूर्द्धम्
देवः + ऋषिः = देवऋषिः .... देवयृषिः
उच्चारितः + ऌकारः = उच्चारितऌकारः उच्चारितयॢकारः
कः + एषः = कएषः .... कयेषः
कुतः + ऐक्यम् = कुतऐक्यम् .... कुतयैक्यम्
रक्तः + ओष्ठः = रक्तओष्ठः .... रक्तयोष्ठः
राज्ञः + औदार्य्यम् = राज्ञऔदार्य्यम् राज्ञयौदार्य्यम्

आकारसे परे विसर्ग का लोप वा अथवा य होता है स्वर परे होनेसे।

अश्वाः + अमी = अश्वाअमी (वा) अश्वायमी
गजाः + इमे = गजाइमे .... गजायिमे
ताराः + उदिताः = ताराउदिताः ताराय़ुदिताः
आगताः + ऋषयः = आगताऋषयः आगतायृषयः
नराः + एते = नराएते .... नरायेते

आकारसे परे विसर्ग का लोप वा होता है सघोषवर्ण परे होनेसे।

हताः + गजाः = हतागजाः, कृताः + जटाः = कृताजटाः
पुत्राः + जाताः = पुत्राजाताः, मधुराः + झङ्काराः = मधुराझङ्काराः
नवाः + डमरवः = नवाडमरवः, गजाः + ढौकन्ते = गजाढौकन्ते
निर्वाणाः + दीपाः = निर्वाणादीपाः, अश्वाः + धावन्ति = अश्वाधावन्ति

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उन्नताः + नगाः = उन्नतानगाः, इष्टाः + वन्याः = इष्टावन्याः

नराः + भीताः = नराभीताः, अतीताः + मासाः = अतीतामासाः

छात्राः + यतन्ते = छात्रायतन्ते, पन्नाः + रथ्याः = पन्नारथ्याः

नराः + लभन्ते = नरालभन्ते, वाताः + वान्ति = वातावान्ति

बालकाः + हसन्ति = बालकाहसन्ति

इकारादि स्वरवर्णोंसे परे विसर्गको र होताहै स्वर और सञ्चार वर्ण परे होनेसे

कविः + अयम् = कविरयम्, गतिः + इयम् = गतिरियम्

रविः + उदेति = रविरुदेति, श्रीः + असौ = श्रीरसौ

सुधीः + एषः = सुधीरेषः, वन्धुः + आगतः = वन्धुरागतः

गुरुः + उवाच = गुरुरुवाच, वधूः + एषा = वधूरेषा

भूः + इयम् = भूरियम्, मातुः + अश्वेयः = मातुरश्वेय

उद्वितः + आहूय = उद्वितराहूय, रवेः + उदयः = रवेरुदयः

नैः + ऊर्ज्जं = नैरूर्ज्जं, विधोः + अस्तगमनम् = विधोरस्तगमनम्

प्रभोः + आदेशः = प्रभोरादेशः, गौः + अयम् = गौरयम्

ऋषिः + गच्छति = ऋषिर्गच्छति, हविः + घ्राणम् = हविर्घ्राणम्

गुरुः + जयति = गुरुर्जयति, कृतैः + कङ्कारैः = कृतैर्कङ्कारैः

नवैः + उमरुभिः = नवैर्उमरुभिः, गौः + ढौकते = गौर्ढौकते

रवेः + दर्शनम् = रवेर्दर्शनम्, निः + धनः = निर्धनः

दुः + नीतिः = दुर्नीतिः, निः + बन्धः = निर्बन्धः

निः + भयः = निर्भयः, मुहुः + मुहुः = मुहुर्मुहुः

वहिः + योगः = वहिर्योगः, विधुः + लीयते = विधुर्लीयते

वायुः + वाति = वायुर्वाति, शिशुः + हसति = शिशुर्हसति

अकारसे परे रेफजात विसर्गको र होताहै स्वर और सञ्चार वर्ण परे होनेसे

पुनः + अपि = पुनरपि, पुनः + आगतः = पुनरागतः

(१) पुनः प्रातः अन्तः स्वः प्रभृति पदका विसर्ग, और ऋकारान्त शब्दके सम्बोधनके एकवचनके पदका विसर्ग, रेफजात विसर्ग अर्थात् रस्थानीय विसर्ग है॥ पदान्त अहन् शब्दके विसर्गको र होताहै, पर रात्रि, रूप अथवा रथान्तर शब्द परे होनेसे नहीं होता यथा अहरहः। अतएव पफ परे होनेसे रेफ विकल्प करके होताहै यथा अहः पति अहर्पति, अहः पति॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रातः + इहागतः = प्रातरिहागतः, प्रातः + एव = प्रातरेव

भ्रातः + आगच्छ = भ्रातरागच्छ, पितः + अनुमन्यस्व = पितरनुमन्यस्व

स्वः + गतः = स्वर्गतः, मातः + देहि = मातर्देहि

अन्तः + धानम् = अन्तर्धानम्, पितः + नमस्ते = पितर्नमस्ते

दुहितः + याहि = दुहितर्याहि, भ्रातः + लुनीहि = भ्रातर्लुनीहि

जामातः + वद = जामातर्वद, भ्रातः + हस = भ्रातर्हस

विसर्गस्थानीय रेफ को लोप होता है र परे होनेसे और पूर्व स्वर को दीर्घ होता है।

पितर् + रक्त = पितारक्त, निर् + रसः = नीरसः

मातर् + रोदनम् = मातारोदनम्, विधुर् + राजते = विधूराजते

सः एषः इनपदोंके विसर्ग का लोपश् होता है अकार भिन्न स्वर अथवा व्यञ्जन् परे होनेसे।

सः + आगतः = सआगतः, सः + इच्छति = सइच्छति

सः + ईहते = सईहते, सः + उवाच = सउवाच

सः + करोति = सकरोति, सः + गच्छति = सगच्छति

सः + चलति = सचलति, सः + हसति = सहसति

एषः + आयाति = एषआयाति, एषः + पति = एषपति

एषः + धावति = एषधावति, एषः + रोदिति = एषरोदिति

एषः + वदति = एषवदति, एषः + शेते = एषशेते

भोः भगोः अघोः इन पदोंका विसर्ग लोपश् होता है स्वर[1] और सम्वार वर्ण परे होनेसे।

भोः + अम्बरीष = भोअम्बरीष, भोः + ईशान = भोईशान

भोः + उमापते = भोउमापते, भोः + गदाधरः = भोगदाधर

भोः + जनमेजय = भोजनमेजय, भोः + दामोदर = भोदामोदरः

भोः + माधव = भोमाधव, भोः + यदुपते = भोयदुपते

भगोः + नमस्ते = भगोनमस्ते, अघोः + याहि = अघोयाहि

(१) भोः, भगोः, अघोः, इनके विसर्गको कोईयोंके मतमे य् भी विकल्प करके होता है स्वर परे होनेस यथा भो अच्युत भो यच्युतः॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

णत्वविधान

ऋ ॠ र् ष् से परे न् को ण होता है। यथा

नृ + नाम् = नृणाम्, नॄ + नाम् = नॄणाम्

चतुर् + नाम् = चतुर्णाम्, पुष् + नाति = पुष्णाति

तथा स्वर, कवर्ग, पवर्ग, य् व् ह् और अनुस्वार का व्यवधान होने से भी न को ण होता है।(1) यथा

कर् + अनम् = करणम्, हरी + नाम् = हरीणाम्, गुरु + ना = गुरुणा

पर् + एन = परेण, अर्क + एन = अर्केण, मूर्ख + एन = मूर्खेण

मृग + एन = मृगेण, दीर्घ + एन = दीर्घेण, दर्प + एन = दर्पेण

रेफ + एन = रेफेण, गर्भ + एन = गर्भेण, द्रुम + एन = द्रुमेण

रय + एन = रयेण, गर्व + एन = गर्वेण, ग्रह + एन = ग्रहेण

बृंह + अनम् = बृंहणम्॥

परन्तु पदान्त न् को ण नहीं होता। यथा

नरान्, हरीन्, गुरून्, भ्रातॄन्, ग्रहान्, द्रुमान्, मृगान्, वृषान्,

तथा तवर्ग(2) प और म युक्त न को ण नहीं होता। यथा

कृन्तति, ग्रन्थनम्, क्रन्दः, रुन्धन्ति, तृप्नोति, तृम्भाति,

तथा जो एक पदमे ऋ ॠ र् ष् हो और अन्य पदमे न् हो तो उसको ण नहीं होता।(3) यथा

नृ - यानम्, वृष - यानम्, सुस्वर - गानम्, गिरि - गहनम्,

---

(1) एतद्व्यतिरिक्त अन्य वर्णका व्यवधान होनेसे न को ण नहीं होता यथा अर्चना, मूर्च्छना, अर्जनम्, किरीटेन, रुड़ेन, दृढेन, आर्त्तेन, अर्थेन, विमर्दन, अर्हैन, दिर्लेन, स्पर्शेन, रसेन

(2) नभिन्न

(3) यदि अन्य पदस्थित न, विभक्ति स्थाने जात अथवा विभक्ति युक्त हो, अथवा स्त्रीलिङ्ग के ई प्रत्यय के साथ मिलित हो, तो उसके स्थानमे विकल्प करके ण होता है। यथा; प्रभावेण, (वा) प्रभावेन; प्रभावाणाम्, (वा) प्रभावानाम्; नगरयायिणा = (वा) नगरयायिना; नगरयायिणी (वा) नगरयायिनी। परन्तु युवन् शब्दसे परे विभक्ति युक्त न होने-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से, और भगिनी प्रभृति शब्दों के न को, ण नहिं होता; यथा, क्षुभ्नाति, क्षत्रियघ्ना, शत्रुघ्नानाम्, पितृभगिनी, हरकामिनी, हरिभामिनी, चोरयामिनी, क्षत्रियघ्नी।

यदि अन्य पद एकस्वर विशिष्ट अथवा कवर्ग युक्त होतो न् को नित्यहि ण होता है। यथा प्रभुणा, वृत्रहणः, श्रीकामेण, स्वर्गगामिणा, परिपाकेण। परन्तु पक्व शब्द युक्त न् को ण नहिं होता यथा परिपक्वेन, परिपक्वानि, परिपक्वानाम्।

ओषधिवाचक और वृक्ष वाचक शब्दों से परे वन शब्द के न को विकल्प करके ण होता है; (शस्य के पक जाने सेहि जिन उद्भिदों का जीवन शेष होता है उनको ओषधि कहते हैं) यथा (ओषधिवाचक) व्रीहिवणम् (वा) व्रीहिवनम्, दूर्वावणम् (वा) दूर्वावनम्, रम्भावणम् (वा) रम्भावनम् हरिद्रावणम् (वा) हरिद्रावनम्, आर्द्रकवणम् (वा) आर्द्रकवनम्। (वृक्षवाचक) लोध्रवणम् (वा) लोध्रवनम्, बदरीवणम् (वा) बदरीवनम्। परन्तु वे शब्द द्विस्वर अथवा त्रिस्वर नहीं तो उनसे परे वन के न् को ण नहिं होता यथा देवदारुवनम्, उदुम्बरवनम् (यहां दो तीन से अधिक स्वर हैं)।

शरादि शब्दों से परे वन के न् को नित्य ण होता है। यथा, शरवणम्, इक्षुवणम्, प्लक्षवणम् आम्रवणम्, खदिरवणम्।

प्र, निर्, अन्तर्, और अग्रे, इन शब्दों से परे भी वन के न् को नित्य ण होता है। यथा, प्रवणम्, निर्वणम्, अन्तर्वणम्, अग्रेवणम्।

अन्यपदस्थित पान शब्द के न् को, रप्रभृति के परे होनेसे, विकल्प करके ण होता है। यथा, क्षीरपाणम् (वा) क्षीरपानम्, नीरपाणम् (वा) नीरपानम्, विषपाणम् (वा) विषपानम्, कषायपाणम् (वा) कषायपानम्।

वयस् अर्थमे त्रि, चतुर् शब्द से परे हायन के न् को ण होता है। यथा, त्रिहायणो वत्सः, चतुर्हायणी गौः।

प्रादि कई एक शब्द से परे अह्न शब्द के न् को ण होता है यथा प्राह्णः, पूर्वाह्णः, अपराह्णः।

निम्नलिखित शब्दों में भी न को ण हुआ है।

परायणम्, पारायणम्, उत्तरायणम्, चान्द्रायणम्, नारायणः, अग्रणीः, ग्रामणीः। शूर्पणखा, प्रणसः, द्रुणसः, खरणसः, वाध्रीणसः।

गिरिनदी, स्वर्नदी, गिरिनितम्ब, गिरिनख, गिरिनद्ध, चक्रनदी, चक्रनितम्ब, तूर्यमान, माषोन, आग्रयन, इन शब्दों के न् को विकल्प करके ण होता है। यथा, गिरिणदी इत्यादि।

पहिले पदके अन्तमे ष् होनेसे पर पदके न् को ण नहिं होता। यथा, निष्पानम्, हविष्पानम् आयुष्कामेन, निष्कामानाम्, दुष्विना, सर्पिष्पायिना।

प्र, परा, परि, निर्, इन चार उपसर्गों से और अन्तर् शब्दसे परे नदादि धातुओं के न् को ण होता है यथा प्रणदति; प्रणामः; प्रणश्यति; (नश् धातु के श् को ष् होनेसे न को ण नहिं होता यथा प्रनष्टः इत्यादि) परिणयः, निर्णयः; प्रणोदः; प्राणः; अन्तर्हणनम् (हन् धातु के ह को घ होनेसे न को ण नहिं होता यथा प्रघ्नन्ति, शत्रुघ्नः।

तथा यदि हन् धातु का न्, म अथवा व् से युक्त हो तो उसे विकल्प करके ण होता है। यथा, प्रहण्मि (वा) प्रहन्मि, प्रहण्वः (वा) प्रहन्वः।

तथा निंस, निक्ष, निन्द, इन तीन धातुओं के न् को विकल्प करके ण होता है। यथा प्रणिंसितव्यम्, (वा) प्रनिंसितव्यम्, प्रणिक्षणम् (वा) प्रनिक्षणम्, प्रणिन्दति (वा) प्रनिन्दति।

तथा हिनु और मीना के न् को ण होता है यथा प्रहिणोति, प्रहिणुतः, प्रमीणाति, प्रमीणन्ति।

तथा लोट् की आनि विभक्ति के न् को ण होता है। यथा, प्रभवाणि, परिवहाणि, निर्वपाणि, अन्तर्वपाणि।

तथा गद्, पत्, दा, धा, हन्, नद्, पद्, शाम्, दो, सो, दे, धे, मा, या, वा, द्रा, प्सा, वप्, वह्, चि, दिह्, इन धातुओं के पूर्व वर्ती नि उपसर्ग को णि हो जाता है। यथा प्रणिगदति, प्रणिपतति, प्रणिददाति, प्रणिधानम् इत्यादि॥—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रादिसे परे कृत् प्रत्यय के न को भी ण होता है। यथा प्रयाणम्, निर्याणम्, अन्तर्याणीयं, आपणम्, प्रेङ्खणम्, परिहीणः,

परन्तु जिन धातुओं के आदि में व्यञ्जन वर्ण हों और उनकी उपधा मे अर्थात् अन्त्य वर्ण के पूर्व नामी स्वर हों तो उनसे परे कृत् प्रत्यय के न् को विकल्प करके ण् होता है (अ, आ भिन्न सारे स्वरों को नामी कहते हैं) यथा, प्रकोपणम्, परिगोपणीयम्।

तथा णिजन्त धातुओं के उत्तर कृत् प्रत्यय के न् को विकल्प करके ण् होता है। यथा, प्रयापणम्, वा प्रयापनम्

परन्तु भा, भू, पू, कम्, गम्, प्याय, वेप्, कम्प, इन धातुओं के उत्तर कृत् प्रत्यय के न को ण नहिं होता। यथा, परिभानीयम्, परिभवनीयम्, परिपवनीयम्, परिकमनीयम्, परिगमनीयम्, परिप्यायनीयम्, परिवेपनीयम्, परिकम्पनीयम्,

कृत् प्रत्यय के न् को व्यञ्जन वर्ण मे युक्त होने से भी ण नहिं होता। यथा, प्रभग्नः परिमग्नः, निर्विग्नः,।

षत्वविधान

इकारादि स्वर क, र, अथवा र् से परे प्रत्यय के स्[१] को ष होता है। यथा

मुनि + सु = मुनिषु, नदी + सु = नदीषु

साधु + सु = साधुषु, वधू + सु = वधूषु

भ्रातृ + सु = भ्रातृषु, नरे + सु = नरेषु

अग्ने + सीत् = अग्नेषीत्, गो + सु = गोषु

नौ + सु = नौषु, दिक् + सु = दिक्षु

प्राङ्ख् + सु = प्राङ्खुषु, चतुर् + सु = चतुर्षु

तथा ····· अनुस्वार[२] और विसर्ग के व्यवधान होनेसे भी प्रत्यय के स को ष होता है। यथा

हवींं + सि = हवींषि, धनूं + सि = धनूंषि

आशीः + सु = आशीःषु, आयुः + सु = आयुःषु

(३)

इति सन्धिप्रकरणम्

(१) सात प्रत्यय के स को ष नहि होता; यथा अग्निसात्

(२) क्लीब लिङ्ग की प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन मे जो अनुस्वार होता है तद्भिन्न अनुस्वार का व्यवधान हो तो स को ष् नहि होता यथा पुंस् शब्द का पुंसु यहां पुंषु नहि होता।

(३) षोपदेश धातु को अभ्यस्त करने से यदि धातु का दूसरा स, इ, उ, ए, ओ, इ न वार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वर्णों से परे हो तो उसके स्थान मे ष होता हैं। सञ्ज, सद, सह, साधु, सिच्, सिध, सिव्, सु, सू, सेव, सो, स्तम्भ, स्तु, स्तुभ, स्तै, स्था, स्निह, स्नु, स्मि, स्वञ्ज, स्वद स्वप स्विद इत्यादि षोपदेश धातु हैं। यथा सिषेच:, तुष्टुभे, सेषेव्यते, परन्तु धातु के उत्तर विहित सन् प्रत्यय के स को ष होने से धातु के स को ष नहि होता। यथा सिसिक्षति। धातु को होता है यथा तुष्टूषति। यङ् प्रत्यय परे होने से सिच् धातु के स को ष् नहि होता यथा सेसिच्यते। ण्यन्त धातुओं मे केवल स्विद, स्वद, और सह धातु के स को ष नहि होता सन् प्रत्यय के स को ष होने से, और सबों को होता है, यथा सिषेदयिषति, सिस्वादयिषति, सिसहयिषति (अन्यथा) सुष्वापयिषति ॥

इकारान्त (नि, वि, परि, प्रति, अति, अधि, अपि, अभि,) और उकारान्त (सु, अनु,) उपसर्ग के परिस्थित स्वादि धातु के स को ष होता है। सु, तुदादिगणीय सू, सो, स्तु, स्तुभ, स्था, सेनि, सिध, सिच, सञ्ज, स्वञ्ज, सद, स्तम्भ ये त्रयोदश धातु स्वादि हैं यथा अभिषुणोति, प्रतिषेधति, अनुषीदति, अनुष्टभ्नोति। परन्तु लृट् और लृङ् विभक्ति और सन् प्रत्यय परे होने से नहि होता, यथा अभिसोष्यति, अभ्यसोष्यत्, अभिसो-ष्यत्। और गमनार्थ सिध धातु को नहि होता, यथा गृहं प्रतिसेधति। तथा प्रति पूर्वक सद धातु को नहि होता यथा प्रतिसीदति। आलम्बन और सामीप्य अर्थ मे अव पूर्वक स्तम्भ धातु को भी होता हैं यथा यष्टिमवष्टभ्य आस्ते (यष्टिमालम्ब्यति-ष्ठतीत्यर्थ:), गौ: (गो: समीपे वर्त्तते इत्यर्थ:)। अट् का व्यवधान होने से भी स् को ष होता है यथा अभ्यषुणोत् इत्यादि; परि, नि, वि, पूर्वक स्तु और स्वञ्ज धातु को विकल्प करके होता है यथा पर्य्यष्टावीत् (वा) पर्य्यस्तावीत्; पर्य्य-ष्वजत पर्य्यस्वजत ॥

परि, नि, वि, पूर्वक सेव, सिव, सह धातु के स् को ष होता है यथा परिषेवते, विषहते (पर सह के स्थान मे सोढ होने से ष् नहि होता यथा परिसोढा) अट् के व्यवधान होने से भी होता है परन्तु सेव धातु को नित्य और सिव सह धातु को विकल्प करके यथा पर्य्य-षेवत, पर्य्यषीव्यत (वा) पर्य्यसीव्यत, न्यषहत (वा) न्यसहत। ण्यन्त करने से लुङ् विभक्ति मे सिव और सह धातु के स को ष् नहि होता; यथा पर्य्यसीषिवत् पर्य्यसी-सहत् ॥

इकारान्त उकारान्त उपसर्ग से परे सेनि, सिध, सिच्, सञ्ज, स्वञ्ज, सद, सेव, धातु अभ्यस्त होने से दोनो स को ष होता है यथा अभिषिषेणयिषति, निषिषेध, अभिषिषेचयिषति, (यङ् प्रत्यय होने से नहि होता यथा अभिसेसिच्यते) परिषष्वज्यते (लिट विभक्ति मे स्वञ्ज और सद धातु के द्वितीय स को ष नहि होता यथा परिषस्वजे, निषसाद)

इकारान्त उकारान्त उपसर्ग से परे अभ्यस्त स्था और स्तम्भ धातु के स् को त का व्यवधान होने से भी ष होता है, यथा अनुतष्ठौ, अभितष्टम्भ (प्रतिलब्ध और निलब्ध इन दोनों के स को ष नहि होता। और ण्यन्त करने से लुङ् विभक्ति मे स्तम्भ के स को ष नहि होता यथा पर्य्यतस्तम्भत्) ॥

परि पूर्वक स्कृ धातु के स् को ष् होता है। यथा परिष्करोति। अट् के व्यवधान होने से वि-कल्प करके होता है यथा पर्य्यष्करोत् (वा) पर्य्यस्करोत्, पर्य्यष्कार्षीत्, (वा) पर्य्यस्कार्षीत् ॥

अनु, वि, परि, अभि, नि, पूर्वक स्यन्द धातु के स को विकल्प करके ष् होना होता है यथा

6199.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अनुष्यन्दते (वा) अनुसन्दते, निष्यन्दते (वा) निसन्दते (प्राणी कर्त्ता होने से ष् नहि होता यथा अनुसन्दते मत्स्यः)॥

परि पूर्वक स्कन्द धातु के स् को विकल्प करके ष् होता है यथा परिष्कन्दति (वा) परिस्कन्दति। निष्ठाभिन्न कृत प्रत्यय परे होने से वि पूर्वक स्कन्द धातु के स् को विकल्प करके ष् होता है यथा विष्कन्ता (वा) विस्कन्ता, विष्कन्तुम् (वा) विस्कन्तुम् (निष्ठा होने से) विस्कन्नः, विस्कन्नवान्।

निर्, नि, वि, पूर्वक स्फुर और स्फुल धातु के स् को विकल्प करके ष् होता है, यथा निःष्फुरति, (वा) निःस्फुरति, निःष्फुलति (वा) निःस्फुलति॥

वि पूर्वक स्कम्भ धातु के स् को ष् होता है यथा विष्कभ्नाति विष्कम्भकः॥

सु, वि, निर्, दुर् उपसर्ग के परवर्ती स्वप् के स्थान में कृत सुप् के स् को ष् होता है यथा सुषुप्तः, दुःषुप्तः॥

इकारान्त उकारान्त उपसर्ग और प्रादुः शब्द के परवर्त्ती अस् धातु के स् को ष् होता है यथा निषन्ति, प्रादुःषन्ति। परन्तु सकार त थ म व के साथ युक्त होने से ष् नहि होता अभिस्त, प्रतिस्थ, अभिस्मः, अनुस्वः।

वस् धातु के स्थान में उस् होने से उस के स को ष होता है यथा उषितः ऊषुः॥

घस् धातु के घ् को क् होने से उसके स को ष् होता है यथा जक्षतुः॥

सह धातु निष्पन्न साह शब्द साट् और साड् होने से स् को ष् होता है यथा तुराषाट्, तुराषाड् (अन्यथा) तुरासाहौ

समास होने से अङ्गुलि शब्द के परस्थित सङ्ग शब्द के स् को ष् होता है यथा अङ्गुलिषङ्गः॥

सु, वि, निर्, दुर् उपसर्ग के परस्थित सम शब्द के स् को ष् होता है यथा सुषमा, दुःषमा, विषमः, निःषमा॥

संज्ञा अर्थ में अ आ भिन्न स्वर के परस्थित सेना शब्द के स को ष होता है, यथा सुषेणः (अन्यथा) कुरुसेना।

भूमि और दिवि शब्द के परवर्त्ती स्थ शब्द के स् को ष् होता है यथा भूमिष्ठः दिविष्ठः और युधि से परे स्थिर के स् को ष् होता है यथा युधिष्ठिरः

समास में मातृ पितृ शब्द के परवर्ती स्वसृ शब्द के प्रथम स् को ष् होता है यथा मातृष्वसा, पितृष्वसा (विभक्ति का लोप न होने से विकल्प करके होता है यथा मातुःष्वसा, मातुःस्वसा। (असमासे) मातुःस्वसा पितुःस्वसा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अथ नाम प्रकरणम्

प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी ये सात विभक्तियां हैं। शब्द के आगे यहि सात विभक्तियें लगती हैं। विभक्ति युक्त शब्द को पद कहते हैं ॥

प्रत्येक विभक्ति के तीन तीन वचन हैं; एकवचन, द्विवचन, बहुवचन शब्द मे एकवचन की विभक्ति लगाने से एक वस्तु जानी जाती है, द्विवचन की विभक्ति लगाने से दो वस्तु, और बहुवचन मे दो से अधिक सब संख्या समझी जाती हैं ॥

विभक्तियों का स्वरूप और अर्थ (१)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	अर्थ	भाषाविभक्ति
प्रथमा	ः	औ	अः	कर्त्ता	०, ने
द्वितीया	अम्	औ	अः	कर्म्म	को
तृतीया	आ	भ्याम्	भिः	करण	से, द्वारा
चतुर्थी	ए	भ्याम्	भ्यः	सम्प्रदान	को, अर्थ, निमित्त
पञ्चमी	अः	भ्याम्	भ्यः	अपादान	से
षष्ठी	अः	ओः	आम्	सम्बन्ध	का, की
सप्तमी	इ	ओः	सु	आधार	मे

किन किन शब्दों मे कौन कौनसी विभक्तियां लग कर कैसे कैसे पद होते हैं सो क्रम से लिखा जाता है। सम्बोधन मे भी प्रथमा विभक्ति होती है परंतु एकवचन मे उसके स्वरूप की कुछ विभिन्नता है इसी लिये एकवचन के रूप (२) पृथक लिखे जावेंगे; जहां पृथक न लिखे हों वहां समझना कि कुछ विभिन्नता नहि है।

(१) संस्कृत वैयाकरण लोग इन विभक्तियों का रूप इत् के साथ इस प्रकार लिखते हैं (१) सु औ जस् २ अम् औट् शस् ३ टा भ्याम् भिस् ४ ङे भ्याम् भ्यस् ५ ङसि भ्याम् भ्यस् ६ ङस् ओस् आम् ७ ङि ओस् सुप्।
(२) सम्बोधन के एकवचन की विभक्ति को सि कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विभक्ति का योग होने से, कहीं शब्द का, कहीं विभक्ति का, कोई अंश रूपान्तर प्राप्त अथवा लुप्त होता है । कहां किस प्रकार रूपान्तर हुआ है यह निम्न लिखित प्रयोगों से ही जाना जा सकता है ॥

स्वरान्त शब्द

पुँल्लिङ्ग

अकारान्त नरशब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नरः	नरौ	नराः
द्वितीया	नरम्	नरौ	नरान्
तृतीया	नरेण	नराभ्याम्	नरैः
चतुर्थी	नराय	नराभ्याम्	नरेभ्यः
पञ्चमी	नरात्	नराभ्याम्	नरेभ्यः
षष्ठी	नरस्य	नरयोः	नराणाम्
सप्तमी	नरे	नरयोः	नरेषु
सम्बोधन	नर	नरौ	नराः

प्रायः सारे अकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्द नर शब्द की न्याई हैं ॥

(१) अल्पप्रभृति और द्वितीय तृतीयभिन्न । अल्प प्रभृति के प्रथमा के बहुवचन मे दो प्रकार के रूप होते हैं यथा, अल्पे, अल्पाः । अल्पप्रभृति शब्द ये हैं; अल्प, प्रथम, चरम, अर्द्ध, कतिपय, द्वय, त्रय, द्वितीय, तृतीय, चतुष्टय, इत्यादि । द्वितीय तृतीय शब्द के केवल चतुर्थी, पञ्चमी और सप्तमी के एक वचन मे दो प्रकार के रूप होते हैं यथा

	चतुर्थी	पञ्चमी	सप्तमी
द्वितीय	द्वितीयस्मै द्वितीयाय	द्वितीयस्मात् द्वितीयात्	द्वितीयस्मिन् द्वितीये
तृतीय	तृतीयस्मै तृतीयाय	तृतीयस्मात् तृतीयात्	तृतीयस्मिन् तृतीये

कई एक और अकारान्त शब्दों के रूप भी कुछ विलक्षण होते हैं यथा निर्ज्जर मे जरा शब्द जो स्वरादि विभक्ति परे होने से विकल्प करके जरस् होजाता है यथा निर्ज्जरः, निर्ज्जरौ (वा) निर्ज्जरसौ इत्यादि । कोई पण्डित टा विभक्ति के स्थान मे इन और ङसि के स्थान मे आत् करते हैं, इससे तृतीयैकवचन के रूप निर्ज्जरसिन वा निर्ज्जरेण और पञ्चम्येकवचन के निर्ज्ज

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्मात वा निर्ङ्गरान् रूपहोते हैं ॥ पादशब्द के स्थान मे पद, दन्त के स्थान मे दत्, यूष के स्थान मे यूषन्, मास के स्थान मे मास्, आसन के स्थान मे आसन्, उदक के स्थान मे उदन्, हृदय के स्थान मे हृद्, शीर्ष के स्थान मे शीर्षन्, दोष के स्थान मे दोषन् विकल्प करके होता है शसादि विभक्ति, तद्धित का स्वर यकार, और स्त्री लिङ्ग का ईप् प्रत्यय परे होने से यथा पादः, पादौ, पादाः, पादम्, पादौ, पादान्, वा पदः, पादेन (वा) पदा, पादाभ्याम् (वा) पद्भ्याम्, इत्यादि एवं दन्तः, दन्तान् (वा) दतः, दन्ताभ्याम् (वा) दद्भ्याम् इत्यादि एवं यूषः, यूषान् (वा) (शब्दान्त अन् के अ का नित्य लोप होता है शसादि स्वर, तद्धित स्वर और यकार परे होने से और ईकार और ङि प्रत्यय परे होने से विकल्प करके होता है, परम्, व, का संयोग होने से (यथा ब्रह्मन्, यज्वन्, प्रभृति मे) इन स्थानों मे अ का लोप नहि होता इस नियमानुसार यूष्णः इत्या, तथा यूषेण (वा) यूष्णा, (शब्दान्त न् का लुप होता है और विराम मे भिस्नङ्सादि विभक्ति परे होने से, लुप होने से फेर सन्धि नहि होती, अतएव) यूषभ्याम् इत्यादि एव मासः, मासौ, मासः, (वा) मासान्, मासेषु वा मासेषु इत्यादि एवं अह्नः (संख्यावाचक और वि साय शब्दों के परे अह्न के स्थान मे अहन् विकल्प करके होता है ङि विभक्ति परे होने से यथा) द्व्यह्नि (वा) द्व्यहनि ।

आकारान्त सोमपा शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सोमपाः	सोमपौ	सोमपाः
द्वितीया	सोमपाम्	सोमपौ	सोमपः
तृतीया	सोमपा	सोमपाभ्याम्	सोमपाभिः
चतुर्थी	सोमपे	सोमपाभ्याम्	सोमपाभ्यः
पञ्चमी	सोमपः	सोमपाभ्याम्	सोमपाभ्यः
षष्ठी	सोमपः	सोमपोः	सोमपाम्
सप्तमी	सोमपि	सोमपोः	सोमपासु
सम्बोधन	सोमपाः		

हाहा शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	हाहाः	हाहौ	हाहाः
द्वितीया	हाहाम्	हाहौ	हाहान्
तृतीया	हाहा	हाहाभ्याम्	हाहाभिः
चतुर्थी	हाहै	हाहाभ्याम्	हाहाभ्यः

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पञ्चमी	हाहाः	हाहाभ्याम्	हाहाभ्यः
षष्ठी	हाहाः	हाहौः	हाहाम्
सप्तमी	हाहे	हाहौः	हाहासु
सम्बोधन	हाहाः		

धातु वाले आकारान्त शब्द के रूप सोमपा की न्याई होते हैं न कि अन्य के हाहा की न्याई

इकारान्त मुनिशब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मुनिः	मुनी	मुनयः
द्वितीया	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
चतुर्थी	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
पञ्चमी	मुनेः	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
षष्ठी	मुनेः	मुन्योः	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनौ	मुन्योः	मुनिषु
सम्बोधन	मुने		

पति (१) सखि (२) विना सारे इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द के रूप मुनि शब्द की न्याई होते हैं॥

पति शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पतिः	पती	पतयः
द्वितीया	पतिम्	पती	पतीन्
तृतीया	(३) पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
चतुर्थी	पत्ये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
पञ्चमी	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
षष्ठी	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
सप्तमी	पत्यौ	पत्योः	पतिषु
सम्बोधन	पते		

(१) परन्तु समासान्त पतिशब्द के रूप मुनिशब्द की न्याई होते हैं यथा श्रीपतिना इत्यादि।

(२) (डति प्रत्ययान्त) कति, यति, तति शब्द बहुवचनान्त ही होते हैं, इनके आगे जस् शस् विभक्ति का लुक् होता है यथा कति, कति, कतिभिः, कतिभ्यः, कतिभ्यः, कतीनाम्, कतिषु एवं यति तति।

(३) तृतीयादि विभक्ति में पति सखि शब्द कहीं मुनि शब्द की न्याई भी होते हैं यथा पतिना नीयमाना याःपरः शुक्रो नइच्छति; सीतायाः पतये नमः नष्टेमृते प्रव्रजिते क्लीबे च पतिते पतौ इत्यादि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सखिशब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सखा	सखायौ	सखायः
द्वितीया	सखायम्	सखायौ	सखीन्
तृतीया	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
चतुर्थी	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पञ्चमी	सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
षष्ठी	सख्युः	सख्योः	सखीनाम्
सप्तमी	सख्यौ	सख्योः	सखिषु
सम्बोधन	सखे		

ईकारान्त सुधीशब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सुधीः	सुधियौ	सुधियः
द्वितीया	सुधियम्	सुधियौ	सुधियः
तृतीया	सुधिया	सुधीभ्याम्	सुधीभिः
चतुर्थी	सुधिये	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
पञ्चमी	सुधियः	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
षष्ठी	सुधियः	सुधियोः	सुधियाम्
सप्तमी	सुधियि	सुधियोः	सुधीषु
सम्बोधन	हे सुधीः		

(१) धातु के ई को इय् और ऊ को उव् हो जाता है विभक्ति का स्वर परे होने से। (यहां धी धातु है और धी धः प्रकृतिस्वर है)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सेनानीशब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सेनानीः	सेनान्यौ(१)	सेनान्यः
द्वितीया	सेनान्यम्	सेनान्यौ	सेनान्यः
तृतीया	सेनान्या	सेनानीभ्याम्	सेनानीभिः
चतुर्थी	सेनान्ये	सेनानीभ्याम्	सेनानीभ्यः
पञ्चमी	सेनान्यः(२)	सेनानीभ्याम्	सेनानीभ्यः
षष्ठी	सेनान्यः(२)	सेनान्योः	सेनान्याम्
सप्तमी	सेनान्याम्(३)	सेनान्योः	सेनानीषु
सम्बोधन	सेनानीः		

अग्रणी ग्रामणी प्रभृति कई एक शब्दों के सिवा प्राय सारे ईकारान्त शब्दों के सुधी शब्द की न्याई रूप होते हैं। अग्रणी प्रभृति के रूप सेनानी की न्याई होते हैं। प्रधी प्रभृति के रूप भी सेनानी की न्याई होते हैं परन्तु सप्तमी के एकवचन मे प्रध्यि इस प्रकार रूप होताहै। वातप्रमी प्रभृति कई एक शब्द हैं जिन्के रूप सेनानी की न्याई होते हैं; केवल इतना विशेष है कि द्वितीया के एकवचन मे वातप्रमीम् द्वितीयाके बहुवचन मे वातप्रमीन् और सप्तमी के एकवचन मे वातप्रम्यि इस प्रकार रूप होतेहैं।

---

(१) कारकादि धातु, अध्ययादिधातु, और अनेकस्वरधातु के ईको य और ऊको व नहि होता है (इय् उव् नहिं होता) विभक्ति का स्वर परे होने से; परन्तु उस ई ऊ के पूर्व यदि धातु के व्यञ्जन वर्ण संयुक्त हों तो उन्को यव नहि होता, इय् उव् होता है; और सुधीशब्द के ई को य् नहिं होता और दृन्भू, पुनर्भू, वर्षाभू, करभू, कार भू इन्के सिवा भूशब्द के ऊ को व् नहिं होता। कारकादि धातु के शब्द सेनानी ग्रामणी प्रभृति हैं, अध्ययादि धातु के शब्द प्रधीः इत्यादि, अनेकस्वर धातु के शब्द दिधीः वेवीः इत्यादि, संयुक्त धातु के शब्द यवक्रीः प्रभृति, भूधातु के शब्द स्वभूः इत्यादि

(२) नी वा उस्का आदेश नी और सखी के यसे परे पञ्चमी षष्ठी के ङसः विभक्ति को उः होजाताहै विकल्प करके यथा सुत्युः वा सुत्यः, लून्युः (वा) लून्यः, सख्युः (वा) सख्यः।

(३) नी से परे ङि विभक्ति को आम् होजाता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उकारान्त साधु शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	साधुः	साधू	साधवः
द्वितीया	साधुम्	साधू	साधून्
तृतीया	साधुना	साधुभ्याम्	साधुभिः
चतुर्थी	साधवे	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
पञ्चमी	साधोः	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
षष्ठी	साधोः	साध्वोः	साधूनाम्
सप्तमी	साधौ	साध्वोः	साधुषु
सम्बोधन	साधो		

सर्व(१) उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द साधु शब्द की न्याई हैं ॥

ऊकारान्त प्रतिभू शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	प्रतिभूः	प्रतिभुवौ	प्रतिभुवः
द्वितीया	प्रतिभुवम्	प्रतिभुवौ	प्रतिभुवः
तृतीया	प्रतिभुवा	प्रतिभूभ्याम्	प्रतिभूभिः
चतुर्थी	प्रतिभुवे	प्रतिभूभ्याम्	प्रतिभूभ्यः
पञ्चमी	प्रतिभुवः	प्रतिभूभ्याम्	प्रतिभूभ्यः
षष्ठी	प्रतिभुवः	प्रतिभुवोः	प्रतिभुवाम्
सप्तमी	प्रतिभुवि	प्रतिभुवोः	प्रतिभूषु
सम्बोधन	प्रतिभूः		

(१) क्रोष्टु शब्द के रूप कुछ विलक्षण हैं यथा—

१	२	३	४	५	६	७	८
क्रोष्टा	क्रोष्टारम्	क्रोष्ट्रा (वा) क्रोष्टुना,	क्रोष्ट्रे क्रोष्टवे	क्रोष्टुः (वा) क्रोष्टोः	क्रोष्टुः (वा) क्रोष्टोः,	क्रोष्टरि (वा) क्रोष्टौ,	क्रोष्टो
क्रोष्टारौ	क्रोष्टारौ	क्रोष्टुभ्याम्	क्रोष्टुभ्याम्	क्रोष्टुभ्याम्	क्रोष्ट्रोः (वा) क्रोष्ट्वोः,	क्रोष्ट्रोः (वा) क्रोष्ट्वोः	
क्रोष्टारः	क्रोष्टून्	क्रोष्टुभिः	क्रोष्टुभ्यः	क्रोष्टुभ्यः	क्रोष्टूनाम्	क्रोष्टुषु	

सानु शब्द के स्थान मे स्नु विकल्प करके होता है शसादि विभक्ति, तद्धित स्वर यकार और ईप् परे होने से ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दृन्भू, पुनर्भू, वर्षाभू, करभू, काराभू, सुलू, खलपू, हूहू, प्रभृति शब्दों के सिवाय (२२ पृ १ पं) प्राय सारे ऊकारान्त शब्दों के रूप प्रतिभू शब्द की न्याई होते हैं।

सुलूशब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सुलूः	सुल्वौ	सुल्वः
द्वितीया	सुल्वम्	सुल्वौ	सुल्वः
तृतीया	सुल्वा	सुलूभ्याम्	सुलूभिः
चतुर्थी	सुल्वे	सुलूभ्याम्	सुलूभ्यः
पञ्चमी	सुल्वः	सुलूभ्याम्	सुलूभ्यः
षष्ठी	सुल्वः	सुल्वोः	सुल्वाम्
सप्तमी	सुल्वि	सुल्वोः	सुलूषु
सम्बोधन	सुलूः		

दृन्भू प्रभृति[1] के रूप भी इसी प्रकार

ऋकारान्तदातृशब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दाता	दातारौ	दातारः
द्वितीया	दातारम्	दातारौ	दातॄन्
तृतीया	दात्रा	दातृभ्याम्	दातृभिः
चतुर्थी	दात्रे	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
पञ्चमी	दातुः	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
षष्ठी	दातुः	दात्रोः	दातॄणाम्
सप्तमी	दातरि	दात्रोः	दातृषु
सम्बोधन	दातः		

पितृ भ्रातृ देवृ जामातृ सव्येष्टृ नृ शब्दों के सिवाय सारे ऋकारान्त शब्द

(१) हूहू, अतिचमू प्रभृति शब्दों के रूप भी सुलू की न्याई होते हैं, परन्तु धातु न होने से जो ईकारान्त, ऊकारान्त शब्द के आगे अम् विभक्ति को म् और शस् को न् हो जाता है इसलिये इन दो विभक्तियों में हूहूम् और हूहून् रूप होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

धातृशब्द की न्याईं होतेहैं॥

भ्रातृशब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भ्राता	भ्रातरौ	भ्रातरः
द्वितीया	भ्रातरम्	भ्रातरौ	भ्रातॄन्

इनके सिवाय और सारी विभक्तियों मे दातृ शब्द की न्याईं रूप होते हैं। पितृ, देवृ, जामातृ, सव्येष्टृ, और नृ शब्द भ्रातृ शब्द की न्याईं; केवल नृ शब्द की षष्ठी के बहुवचन मे नृणाम्, और नॄणाम् ये दो रूप होते हैं॥

(१) ओकारान्त गोशब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गौः	गावौ	गावः
द्वितीया	गाम्	गावौ	गाः
तृतीया	गवा	गोभ्याम्	गोभिः
चतुर्थी	गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः
पञ्चमी	गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः
षष्ठी	गोः	गवोः	गवाम्
सप्तमी	गवि	गवोः	गोषु
सम्बोधन	गौः		

सारे पुल्लिङ्ग ओकारान्त शब्द इसी प्रकार होते हैं।

औकारान्त ग्लौशब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	ग्लौः	ग्लावौ	ग्लावः
द्वितीया	ग्लावम्	ग्लावौ	ग्लावः
तृतीया	ग्लावा	ग्लौभ्याम्	ग्लौभिः
चतुर्थी	ग्लावे	ग्लौभ्याम्	ग्लौभ्यः

(१) ऐकारान्त रैशब्द मात्र है जिसके रूप इस प्रकार होते हैं यथा (प्र) राः रायौ रायः (द्वि) रायम् रायौ रायः (तृ) राया राभ्याम् राभिः (च) राये राभ्याम् राभ्यः (पं) रायः राभ्याम् राभ्यः (ष) रायः रायोः [illegible] (स) रायि रायोः रासु (सं) हे राः

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पञ्चमी	ग्लावः	ग्लोभ्याम्	ग्लोभ्यः
षष्ठी	ग्लावः	ग्लावोः	ग्लावाम्
सप्तमी	ग्लावि	ग्लावोः	ग्लोषु
सम्बोधन	ग्लौः		

सारे पुंलिङ्ग औकारान्त शब्द इसी प्रकार होते हैं।

स्त्रीलिङ्ग

आकारान्त लता शब्द

	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लता	लते	लताः
द्वितीया	लताम्	लते	लताः
तृतीया	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
चतुर्थी	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पञ्चमी	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
षष्ठी	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
सप्तमी	लतायाम्	लतयोः	लतासु
सम्बोधन	लते		

अम्बा[1], द्वितीया[2], तृतीया[3], जरा[4] भिन्न सारे आकारान्त[5] स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप लता शब्द की न्याई होते हैं।

(१) अम्बा शब्द के सम्बोधन के एकवचन मे "अम्ब" इस प्रकार पद होता है, इतना ही विशेष है; और सब विभक्तियों मे इसके लता शब्द की न्याई रूप होते हैं। अक्का और अल्ला शब्दो के रूप भी अम्बा की न्याई होते हैं॥

(२) द्वितीया तृतीया शब्द की चतुर्थी पञ्चमी षष्ठी सप्तमी के एकवचन मे केवल विशेष है यथा

चतुर्थी	पञ्चमी	षष्ठी	सप्तमी
द्वितीयस्यै (वा)	द्वितीयस्याः (वा)	द्वितीयस्याः (वा)	द्वितीयस्याम् (वा)
द्वितीयायै	द्वितीयायाः	द्वितीयायाः	द्वितीयायाम्

इसी प्रकार तृतीया के रूप॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(३) जराशब्द के रूप ये हैं।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	जरा	जरसौ, जरे	जरसः, जराः
द्वितीया	जरसम्, जराम्	जरसौ, जरे	जरसः, जराः
तृतीया	जरसा, जरया	जराभ्याम्	जराभिः
चतुर्थी	जरसे, जरायै	जराभ्याम्	जराभ्यः
पञ्चमी	जरसः, जरायाः	जराभ्याम्	जराभ्यः
षष्ठी	जरसः, जरायाः	जरसोः, जरयोः	जरसाम्, जराणाम्
सप्तमी	जरसि, जरायाम्	जरसोः, जरयोः	जरासु
सम्बोधन	जरे		

(४) निशा, नासिका, पृतना इन तीनों शब्दों के रूप लताशब्द की न्याई तो होते हैं, पर द्वितीया के बहुवचन से लेकर सप्तमी के बहुवचन तक विकल्प करके निम्नलिखित रूप भी होते हैं यथा

विभक्ति	निशा	नासिका	पृतना
शस्	निशः	नसः	पृतः
टा	निशा	नसा ॥	पृता
भ्याम्	निड्भ्याम्	नोभ्याम्	पृद्भ्याम्
भिस्	निड्भिः	नोभिः	पृद्भिः
ङे	निशे	नसे	पृते
भ्याम्	निड्भ्याम्	नोभ्याम्	पृद्भ्याम्
भ्यस्	निड्भ्यः	नोभ्यः	पृद्भ्यः
ङसि	निशः	नसः	पृतः
भ्याम्	निड्भ्याम्	नोभ्याम्	पृद्भ्याम्
भ्यस्	निड्भ्यः	नोभ्यः	पृद्भ्यः
ङस्	निशः	नसः	पृतः
ओस्	निशोः	नसोः	पृतोः
आम्	निशाम्	नसाम्	पृताम्
ङि	निशि	नसि	पृति
ओस्	निशोः	नसोः	पृतोः
सुप्	निट्सु[6], निट्त्सु	नःसु	पृत्सु

* शब्द के अन्त शकार छकार को और राज्, भ्राज, यज् सृज्, मृज्, व्रश्च शब्दों के ज और च् को ष होता है हल परे होने से और पदान्त मे और परिव्राज शब्द के ज को ष होता है पदान्त मे और ष को ड् होता है पदान्त मे और स, भ, परे होने से वैयों के मत मे निजभ्याम् निज्भिः, निजप्सु, निच्षु ये रूप भी होते हैं (

[6] उपरोक्त नियमों से ड् होकर निम्नलिखित नियमानुसार ट् होता है।

लॅ वर्ग के पहिले चार वर्णों को यथाक्रम वर्ग का पहिला वर्ण होता है विचार वर्ण परे होने से॥

॥ स, र को विसर्ग होता है हल परे होने से और पदान्त मे (पीछे सन्धि के नियमानुसार ओ हो जाता है)

(५) स्त्रीलिङ्ग के आ प्रत्ययान्त शब्द हि लता शब्द की न्याई होते हैं। जो आ प्रत्ययान्त नहिं, यथा गोपा प्रभृति शब्द, उन्के रूप पुंलिङ्ग के सोमपा की न्याई होते हैं॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इकारान्तमतिशब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	मती	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मत्यै, मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पञ्चमी	मत्याः, मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
षष्ठी	मत्याः, मतेः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम्, मतौ	मत्योः	मतिषु
सम्बोधन	मते		

सारे इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द इसी प्रकार।

ईकारान्तनदीशब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	नदि		

स्त्री लिङ्ग के ई[1] प्रत्ययान्त प्राय[2] सारे शब्द नदी शब्द की न्याई हैं तदतिरिक्त के रूप श्री शब्द की न्याई होते हैं। यथा,

(१) स्त्रीप्रत्ययप्रकरणमेंदेखो
(२) स्त्रीशब्दके रूपविशेषहैंयथा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः
द्वितीया	स्त्रियम्, स्त्रीम्	स्त्रियौ	स्त्रियः, स्त्रीः
तृतीया	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः
चतुर्थी	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
पञ्चमी	स्त्रियाः	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
षष्ठी	स्त्रियाः	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
सप्तमी	स्त्रियाम्	स्त्रियोः	स्त्रीषु
सम्बोधन	स्त्रि		

समासान्त स्त्री शब्द पुल्लिङ्ग होने से उसके रूप ऐसे होते हैं

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अतिस्त्रिः	अतिस्त्रियौ	अतिस्त्रयः
द्वितीया	अतिस्त्रिम्, अतिस्त्रियम्	अतिस्त्रियौ	अतिस्त्रियः, अतिस्त्रीन्
तृतीया	अतिस्त्रिणा	अतिस्त्रिभ्याम्	अतिस्त्रिभिः
चतुर्थी	अतिस्त्रये	अतिस्त्रिभ्याम्	अतिस्त्रिभ्यः
पञ्चमी	अतिस्त्रेः	अतिस्त्रिभ्याम्	अतिस्त्रिभ्यः
षष्ठी	अतिस्त्रेः	अतिस्त्रियोः	अतिस्त्रीणाम्
सप्तमी	अतिस्त्रौ	अतिस्त्रियोः	अतिस्त्रिषु
सम्बोधन	अतिस्त्रे		

समासान्त स्त्री शब्द नपुंसक होने से उसके रूप ऐसे होते हैं

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अतिस्त्रि	अतिस्त्रिणी	अतिस्त्रीणि
द्वितीया	अतिस्त्रि	अतिस्त्रिणी	अतिस्त्रीणि
तृतीया	अतिस्त्रिणा	अतिस्त्रिभ्याम्	अतिस्त्रिभिः
चतुर्थी	अतिस्त्रये, अतिस्त्रिणे	अतिस्त्रिभ्याम्	अतिस्त्रिभ्यः
पञ्चमी	अतिस्त्रेः, अतिस्त्रिणः	अतिस्त्रिभ्याम्	अतिस्त्रिभ्यः
षष्ठी	अतिस्त्रेः, अतिस्त्रिणः	अतिस्त्रियोः, अतिस्त्रिणोः	अतिस्त्रीणाम्
सप्तमी	अतिस्त्रौ, अतिस्त्रिणि	अतिस्त्रियोः, अतिस्त्रिणोः	अतिस्त्रिषु
सम्बोधन	अतिस्त्रे, अतिस्त्रि		

समासान्त स्त्री शब्द स्त्रीलिङ्ग होने से उसके रूप ऐसे होते हैं

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अतिस्त्रिः	अतिस्त्रियौ	अतिस्त्रयः
द्वितीया	अतिस्त्रिम्	अतिस्त्रियौ	अतिस्त्रीः, अतिस्त्रियः
तृतीया	अतिस्त्रिया	अतिस्त्रिभ्याम्	अतिस्त्रिभिः
चतुर्थी	अतिस्त्रियै, अतिस्त्रये	अतिस्त्रिभ्याम्	अतिस्त्रिभ्यः
पञ्चमी	अतिस्त्रियाः, अतिस्त्रेः	अतिस्त्रिभ्याम्	अतिस्त्रिभ्यः
षष्ठी	अतिस्त्रियाः, अतिस्त्रेः	अतिस्त्रियोः	अतिस्त्रीणाम्
सप्तमी	अतिस्त्रियाम्, अतिस्त्रौ	अतिस्त्रियोः	अतिस्त्रिषु
सम्बोधन	अतिस्त्रि, अतिस्त्रे		

स्त्री शब्द के रूप नदी शब्द की न्याईं होते हैं।

श्री शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	श्रीः	श्रियौ	श्रियः
द्वितीया	श्रियम्	श्रियौ	श्रियः
तृतीया	श्रिया	श्रीभ्याम्	श्रीभिः
चतुर्थी	श्रियै, श्रिये	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
पञ्चमी	श्रियाः, श्रियः	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
षष्ठी	श्रियाः, श्रियः	श्रियोः	श्रीणाम्, श्रियाम्
सप्तमी	श्रियाम्, श्रियि	श्रियोः	श्रीषु
सम्बोधन	श्रीः		

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इसी प्रकार धी भी ह्री प्रभृति शब्द। लक्ष्मी तरी तन्त्री अवी प्रभृति शब्द स्त्री लिङ्ग के ई प्रत्ययान्त नहिं है इसलिये उनकी प्रथमा के एक वचन मे विसर्ग होता है यथा लक्ष्मीः, और सब विभक्तियों मे इनके रूप नदी शब्द की न्याई होते हैं। वातप्रमी ग्रामणी सेनानी प्रभृति शब्दों के रूप पुंलिङ्ग की न्याई होते हैं।

उकारान्त-धेनुशब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेन्वै, धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पञ्चमी	धेन्वाः, धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेन्वाः, धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेन्वाम्, धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु
सम्बोधन	धेनो		

सारे उकारान्त स्त्री लिङ्ग शब्द इसी प्रकार हैं। (२)

(१) प्रधी शब्द के रूप लक्ष्मी शब्द की न्याई होते हैं, पर कोइयों के मत मे पुंलिङ्ग की न्याई भी होते हैं। यदि "प्रकृष्टा धी रिति प्रधीः" इस प्रकार समास मे हो तो इसके रूप लक्ष्मी शब्द की न्याई हि होते हैं केवल इतना विशेष है कि द्वितीया के एकवचन मे उसका रूप "प्रध्यम्" और द्वितीया के बहुवचन मे "प्रध्यः" होता है। सुधी शब्द के "सुष्ठु धीर्यस्याः" अथवा "सुष्ठु ध्यायति" इस प्रकार समास होने से, श्री शब्द की न्याई रूप होते हैं। पर कोइयों के मत मे पुंलिङ्ग की न्याई रूप होते हैं। "सुष्ठु धी" इस प्रकार समास होने से तो उसके श्री शब्द की न्याई हि रूप होते हैं।

(२) क्रोष्टु शब्द स्त्रीलिङ्ग मे क्रोष्ट्री हो जाता है और इसके रूप इस प्रकार होते हैं।

	एकवचन	द्वि॰	बहु॰
प्रथमा	क्रोष्ट्री	क्रोष्ट्र्यौ	क्रोष्ट्र्यः

इत्यादि नदी वत्

गुरु लघु प्रभृति शब्द नित्य स्त्री लिङ्ग नहि हैं इसलिये स्त्री लिङ्ग मे होने से भी साधु शब्द की न्याई होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ऊकारान्त वधूशब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वितीया	वधूम्	वध्वौ	वधूः
तृतीया	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
चतुर्थी	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
पञ्चमी	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
षष्ठी	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
सप्तमी	वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु
सम्बोधन	वधु		

भ्रू, भू, सुभ्रू प्रभृति भिन्न सारे (१) ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के वधूशब्द की न्याईं रूप होते हैं। (२८०पृष्ठका १पर्य्याय देखो)

भूशब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भूः	भुवौ	भुवः
द्वितीया	भुवम्	भुवौ	भुवः
तृतीया	भुवा	भूभ्याम्	भूभिः
चतुर्थी	भुवै, भुवे	भूभ्याम्	भूभ्यः
पञ्चमी	भुवाः, भुवः	भूभ्याम्	भूभ्यः
षष्ठी	भुवाः, भुवः	भुवोः	भूणाम्, भुवाम्
सप्तमी	भुवाम्, भुवि	भुवोः	भूषु
सम्बोधन	भूः		

(१) पुनर्भू शब्द के रूप सत्तूशब्द की न्याईं होते हैं केवल इतना विशेष है कि सम्बोधन के एकवचन में "पुनर्भु" और षष्ठी के बहुवचन में पुनर्भूणाम् इस प्रकार रूप होते हैं। वर्षाभू शब्द पुनर्भू शब्द की न्याईं है, पर इसका अर्थ यदि भेक हो तो कोइयों के मत में धिका रूप "हे वर्षाभूः" इस प्रकार होता है। पुनर्नवा अर्थ में तो "हे वर्षाभु" इस प्रकार रूप हि होता है। स्वयम्भू, प्रतिभू, खलपू प्रभृति शब्द के रूप पुंलिङ्ग की न्याईं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भ्रू और सुभ्रू शब्दों के रूप भी ऐसे हि होते हैं; केवल सुभ्रू शब्द के सम्बोधन के एकवचन मे "सुभ्रु" इस प्रकार पद होता है (१)

ऋकारान्त दुहितृ शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दुहिता	दुहितरौ	दुहितरः
द्वितीया	दुहितरम्	दुहितरौ	दुहितॄः
तृतीया	दुहित्रा	दुहितृभ्याम्	दुहितृभिः
चतुर्थी	दुहित्रे	दुहितृभ्याम्	दुहितृभ्यः
पञ्चमी	दुहितुः	दुहितृभ्याम्	दुहितृभ्यः
षष्ठी	दुहितुः	दुहित्रोः	दुहितॄणाम्
सप्तमी	दुहितरि	दुहित्रोः	दुहितृषु
सम्बोधन	दुहितः		

स्वसृ शब्द के सिवाय सारे (२) ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द इसी प्रकार होते हैं

स्वसृ शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
द्वितीया	स्वसारम्	स्वसारौ	स्वसॄः

इनके सिवाय और सब विभक्तियों मे दुहितृ शब्द के तुल्य।

ऐ ओ औकारान्त स्त्री लिङ्ग शब्द के रूप पुंलिङ्ग की न्याई होते हैं। अतएव सुरैशब्द रैशब्द के तुल्य, द्यो शब्द गोशब्द के तुल्य, और नौ शब्द ग्लौशब्द के तुल्य हैं।

---

(१) यथा "विमानना सुभ्रु कुतः पितुर्गृहे" इति कुमारः। परन्तु सिद्धान्त कौमुदी के मत मे यह पद अशुद्ध है हे सुभ्रूः होना चाहिये।

(२) अर्थात् मातृ, ननान्दृ और यातृ शब्द

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्लीबलिङ्ग

अकारान्त-फलशब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि

और विभक्तियों मे पुंलिङ्ग अकारान्त शब्द की न्याई ॥

प्रायः[(१)] सारे अकारान्त क्लीव लिङ्ग शब्द इसी प्रकार ।

आकारान्त-श्रीपाशब्द

क्लीव लिङ्ग मे आकारान्त शब्द के रूप अकारान्त फल शब्द की न्याई होते हैं यथा श्रीपम् इत्यादि ।

इकारान्त वारिशब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पञ्चमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बोधन	वारे, वारि		

(१) अजर शब्द के रूप पुंलिङ्ग के निर्जर शब्द की न्याई होते हैं प्रथमा और द्वितीया मे विशेष है यथा

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अजरम्	अजरसी, अजरे	अजरांसि, अजराणि
द्वितीया	अजरम्, अजरसम्	अजरसी, अजरे	अजरांसि, अजराणि

२९ ह्र॰ प॰ के अनुसार हृदय, उदक, आस्य, मांस, को शसादि स्वर परे होने से हृद्, उदन्, आसन्, मांस्, आदेश विकल्प करके होता है अतएव इनके दूसरे रूप इस प्रकार भी होते हैं यथा हृन्दि, हृदा, हृद्भ्याम् इत्यादि । आसानि, आस्ना, आसभ्यां इत्यादि । मांसि, मांसा, मांभ्यां इत्यादि ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दधि, अस्थि, अस्थि, सक्थि, भिन्न सारे इकारान्त क्लीव लिङ्ग विशेष्य शब्द के रूप इसी प्रकार हैं ॥

दधि-शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दधि	दधिनी	दधीनि
द्वितीया	दधि	दधिनी	दधीनि
तृतीया	(१) दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः
चतुर्थी	दध्ने	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
पञ्चमी	दध्नः	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
षष्ठी	दध्नः	दध्नोः	दध्नाम्
सप्तमी	दध्नि, दधनि	दध्नोः	दधिषु
सम्बोधन	दधे, दधि		

अक्षि, अस्थि और सक्थि शब्द भी इसी प्रकार हैं।

ईकारान्त-सुधीशब्द

क्लीव लिङ्ग मे ईकारान्त शब्द इकारान्त होजाते हैं । अतएव सुधी शब्द के रूप सुधि सुधिनी सुधीनि प्रभृति होते हैं (३)

उकारान्त-मधुशब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पञ्चमी	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्

(१) उक्त पुंस्क इ ई उ, ऊ ऋकारान्त क्लीव लिङ्ग शब्दों के, टादि स्वर परे होने से विकल्प करके पुंलिङ्ग की न्याई भी रूप होते हैं यथा (च) अनादये (वा) अनादिने, इत्यादि। जिस शब्द का अर्थ पुंलिङ्ग हो उसे उक्त पुंस्क कहते हैं।

(२) दधि प्रभृति शब्दान्त समस्त पद के भी ऐसे हि रूप होते हैं यथा अति दध्ना

(३) विशेषण अर्थात् उक्त पुंस्क होने से टादि विभक्ति मे सुधिया (वा) सुधिना इस प्रकार दो दो रूप बनेंगे । इसी प्रकार प्रधी शब्द के रूप प्रध्या (वा) प्रधिना प्रभृति बनेंगे ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
संबोधन	मधो; मधु		

सारे उकारान्त क्लीब लिङ्ग विशेष्य शब्दों के ऐसे हि रूप होते हैं । (१)

ऋकारान्त-धातृशब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धातृ	धातृणी	धातॄणि
द्वितीया	धातृ	धातृणी	धातॄणि
तृतीया	धातृणा (वा) धात्रा (२)	धातृभ्याम्	धातृभिः
चतुर्थी	धातृणे, धात्रे	धातृभ्याम्	धातृभ्यः
पञ्चमी	धातृणः; धातुः	धातृभ्याम्	धातृभ्यः
षष्ठी	धातृणः; धातुः	धातृणोः; धात्रोः	धातॄणाम्
सप्तमी	धातृणि, धातरि	धातृणोः; धात्रोः	धातृषु
सम्बोधन	धातः; धातृ		

इसी प्रकार ज्ञातृ कर्त्रादि शब्दों के रूप होते हैं

क्लीब लिङ्ग ऐकारान्त शब्दों के रूप इकारान्त की न्याई, और ओकारान्त औकारान्त शब्दों के रूप उकारान्त की न्याई होते हैं। यथा अतिरै, प्ररै, उपगो, प्रद्यो, अतिनौ शब्दों के प्रथमैक वचन अतिरि, प्ररि, उपगु, प्रद्यु, अतिनु होते हैं इत्यादि ।

परन्तु आदि और रूप में ऐ को आ हो जाता है अतिराभ्याम्, अतिरासु

अतिरै अतिरि है शा द्वितीया में भ्यां भिस भ्यस सु हो को ऐ इ कार

(१) स्वादु प्रभृति विशेषण शब्दों के टादि स्वर परे होने से दो दो रूप होंगे यथा (च॰) स्वादुने (वा) स्वादवे। पीलु एक वृक्ष का नाम है जिस्के फल का नाम भी पीलु है, जहां फल अर्थ है वहां पीलुना इस प्रकार एक रूप हि बनेगा क्यों कि फल नित्य क्लीब है । शसादि परे होनेसे सानु शब्द को स्नु आदेश भी हो जाता है यथा सानूनि (वा) स्नूनि सानुना, स्नुना, सानुभ्याम्, स्नुभ्याम् इत्यादि। प्रियक्रोष्टु शब्द के रूप इस प्रकार होते हैं यथा

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
(प्रथमा द्विती॰)	प्रियक्रोष्टु	प्रियक्रोष्टुनी	प्रियक्रोष्टूनि
तृतीया	प्रियक्रोष्टुना, प्रियक्रोष्ट्रा	प्रियक्रोष्टुभ्याम्	प्रियक्रोष्टुभिः
चतुर्थी	प्रियक्रोष्टुने, प्रियक्रोष्टवे प्रियक्रोष्ट्रे	प्रियक्रोष्टुभ्याम्	प्रियक्रोष्टुभ्यः
(पंचमी षष्ठी)	प्रियक्रोष्टुनः; प्रियक्रोष्टुः प्रियक्रोष्टोः इत्यादि		

स्वादोः साधुवत् दातृवत् मधुवच्च त्रीणि त्रीणि रूपाणि एवं खल्वा, खलुना, तथा खल्वादयः

(२) दूसरे रूप पुंलिंग की न्याई, उक्त पुंस्क होने से रूप हैं ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

व्यञ्जनान्त शब्द

पुंलिङ्ग

ककारान्त-सर्व्वशक शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्व्वशक (वा) सर्वशग्	सर्व्वशको	सर्व्वशकः
द्वितीया	सर्व्वशकम्	सर्व्वशको	सर्व्वशकः
तृतीया	सर्व्वशका	सर्व्वशग्भ्याम्	सर्व्वशग्भिः
चतुर्थी	सर्व्वशके	सर्व्वशग्भ्याम्	सर्व्वशग्भ्यः
पञ्चमी	सर्व्वशकः	सर्व्वशग्भ्याम्	सर्व्वशग्भ्यः
षष्ठी	सर्व्वशकः	सर्व्वशकोः	सर्व्वशकाम्
सप्तमी	सर्व्वशकि	सर्व्वशकोः	सर्व्वशक्षु (वा) सर्व्वशग्तु
सम्बोधन	सर्व्वशक (वा) सर्व्वशग्		

सब ककारान्त इसी प्रकार

खकारान्त-चित्रलिख् शब्द

खकारान्त शब्दों के रूप भी ककारान्त की न्याई होते हैं केवल स्वर विभक्तियों मे ख के स्थान मे क नहि होता यथा;

चित्रलिक (वा) चित्रलिग्, चित्रलिखौ इत्यादि

चकारान्त-जलमुच् शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	जलमुक (वा) जलमुग्	जलमुचौ	जलमुचः
द्वितीया	जलमुचम्	जलमुचौ	जलमुचः
तृतीया	जलमुचा	जलमुग्भ्याम्	जलमुग्भिः

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चतुर्थी	जलमुचे	जलमुग्भ्याम्	जलमुग्भ्यः
पञ्चमी	जलमुचः	जलमुग्भ्याम्	जलमुग्भ्यः
षष्ठी	जलमुचः	जलमुचोः	जलमुचाम्
सप्तमी	जलमुचि	जलमुचोः	जलमुक्षु
सम्बोधन	जलमुक् (वा) जलमुग्		

सारे चकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों के ऐसे हि रूप हैं। परन्तु कई एक समस्त शब्द जिन्का अन्त पद अच् (वा) अनच् हैं उन्के, और सहस्र प्रभृति के रूप कुछ विशेष होते हैं। यथा

प्राच्-शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	प्राङ्	प्राञ्चौ	प्राञ्चः
द्वितीया	प्राञ्चम्	प्राञ्चौ	प्राञ्चः

और विभक्तियों मे जलमुच् की न्याई (१)

छकारान्त-सर्वप्राछ्शब्द

छकारान्त शब्द के छ को ट् (वा) ड् होता है स विभक्ति मे,ड् होता है भ परे होने से, और ट् होता है सुप् मे; स्वरादि विभक्ति परे होने से छ को विकल्प करके श होता है। यथा सर्वप्राट् (वा) सर्वप्राड्, सर्वप्राछौ, (वा) सर्वप्राशौ, सर्वप्राड्भ्याम्, सर्वप्राट्सु।

(१) प्रानच् शब्द प्राच् की न्याई, केवल इतना विशेष है, कि शसादि स्वर विभक्तियों मे च् के पूर्व न् होता है और भस के पूर्व न्च के स्थान मे ङ् होता है (और सुप् विभक्ति को विकल्प करके त् भी होता है) यथा प्राञ्चः, प्राङ्भ्याम्, प्राङ्सु (वा) प्राङ्त्सु।
ऊनच्, उदनच्, शब्दों के रूप प्रानच् की न्याई होते हैं। प्रत्यच् शब्द " और " तक प्राच की न्याई और शसादि स्वर परे होने से प्रतीच् रूप धारण करता है यथा प्रत्यङ्, प्रत्यञ्चौ, प्रत्यञ्चः। प्रतीचः, प्रतीचा, प्रत्यग्भ्याम्, प्रतीचोः, प्रतीचाम्, प्रतीचि, प्रत्यक्षु, इसी प्रकार विष्वद्र्यङ् और देवद्र्यङ्।
* अच् के अकार का लोप होता है और पूर्व स्वर दीर्घ होता है शसादि स्वरान्त द्वित स्वर यकार अथवा स्त्री ईप् परे होने से) तिर्यच्, अमुमुयच्, अदमुयच्, उदच्, इनके स्थान मे यथाक्रम तिरश्च्, अमुमुईच्, अदमुईच्, उदीच् आदेश होता है शसादि स्वर (तद्धित स्वर यकार और स्त्री ईप्) परे होने से। यथा तिर्यङ्, तिरश्चः, तिरश्चो, तिर्यग्भ्याम्, तिर्यक्षु। अमुमुयङ्, अमुमुईचः, अमुमुयग्भ्याम्, अमुमुयक्षु। एवं अदमुईचः इत्यादि। उदीचः, उदग्भ्याम्, उदक्षु॥ अदद्र्यङ् अदद्रीचः। विष्वद्र्यङ्, विष्वद्रीचः। सम्यच् के रूप; सम्यङ्, समीचः इत्यादि। सध्यच् के रूप; सध्र्यङ्, सध्रीचः इत्यादि। सहस्र के रूप। सहस्रट् (वा) सहस्रड्, सहस्रौ, सहस्रः, सहस्रड्भ्याम् सहस्रट्सु (वा) सहस्रट्त्सु।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जकारान्त–ऋत्विज्शब्द (१)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	ऋत्विक् (वा) ऋत्विग्	ऋत्विजौ	ऋत्विजः
द्वितीया	ऋत्विजम्	ऋत्विजौ	ऋत्विजः
तृतीया	ऋत्विजा	ऋत्विग्भ्याम्	ऋत्विग्भिः
चतुर्थी	ऋत्विजे	ऋत्विग्भ्याम्	ऋत्विग्भ्यः
पञ्चमी	ऋत्विजः	ऋत्विग्भ्याम्	ऋत्विग्भ्यः
षष्ठी	ऋत्विजः	ऋत्विजोः	ऋत्विजाम्
सप्तमी	ऋत्विजि	ऋत्विजोः	ऋत्विक्षु

राज (२) प्रभृति कई एक शब्द भिन्न सारे जकारान्त शब्दों के ऐसे हि रूप होते हैं। ऊर्ज्ज शब्द के पहिले जकार का लोप होजाता है सभादि विभक्ति मे, और सब प्रकार से इसके रूप ऋत्विज् की न्याई होते हैं। यथा ऊर्क् (वा) ऊर्ग्, ऊर्ज्जम्, ऊर्ग्भ्याम्, ऊर्क्षु।

तिरस् पूर्वक अच् का तिर्य्यच् होता है। अदस् पूर्वक अच् के अमुमुयच्, अदमुयच् और अदद्र्यच् येतीन शब्द होते हैं। उत् पूर्वक अच् का उदच् होता है) सम् पूर्वक अच् का सम्यच् होता है) सह पूर्वक अच् का सध्र्यच् होता है)

(१) ऋतु पूर्वक युज् का ऋत्विज् होता है

(२) राज, सम्राज्, देवराज्, विराज्, विश्वराज्, विभ्राज्, परिव्राज्, देवेज्, विश्वसृज्, परिमृज्, भ्रस्ज प्रभृति शब्दों के ज् को ट् (वा) ड् होता है स विभक्ति मे, ड् होता ... है भादि विभक्ति मे, और ट होता है सुप् मे; और सब विभक्तियों मे ऋत्विज् की न्याई रूप होते है (यथा) राट्, राड् राजौ राड्भिः राट्सु (वा) राट्त्सु (११८ २५.)। एवं सम्राजादि। (विभ्राज् शब्द मे "टुभ्राज्" धातु का ग्रहण है, अन्यत्र भ्राजादीओं मे क् ग् हि होता है यथा विभ्राक्, विभ्राग्भ्याम्।) विश्वराज् के ज् को ट ड् होने से विश्व के अ को दीर्घ होता है यथा विश्वाराट्, विश्वराजौ, विश्वाराड्भ्याम्। अपदान्त स् को ज् परे होने से ज हो जाता है इसलिये भ्रस्ज के रूप, भृट्, भृड्, भृज्जौ, भृड्भ्याम्, भृट्सु इस प्रकार होते हैं। युज् शब्द के रूप यथा, युङ्, युञ्जौ, युञ्जः। युञ्जम् युञ्जौ युजः इत्यादि जलमुचवत्। खन् ज् के रूप; यथा खन्, खञ्जौ खञ्जा खम्भ्याम् खन्सु। अवयाज् शब्द के रूप यथा, अवयाः, अवयाजौ, अवयोभ्याम्, अवयःसु, हे अवयाः (वा) अवय (अवयाज् को अवयस् होता है स भ् परे होने से)(समासान्त युज् शब्द के रूप युङ्, युञ्जौ प्रभृति नहि होते, जलमुच् की न्याई होते हैं यथा अश्वयुक्, अश्वयुजौ। युजिर समाधौ धातु के रूप भी युङ् प्रभृति नहि होते युक् प्रभृति होते हैं)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

णकारान्त-सुगण्शब्द

यथा

(१) प्र.१ सुगण्   द्व. सुगणौ   ब.व. सुगणः

तृ.द्व. सुगण्भ्याम्, स.ब. सुगण्सु (वा) सुगण्ट्सु (वा) सुगण्ट्त्सु

इसी प्रकार सब णकारान्त

नकारान्त-भूम्हन्शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भूम्हन् (वा) भूम्हद्	भूम्हनौ	भूम्हनः
द्वितीया	भूम्हनम्	भूम्हनौ	भूम्हनः
तृतीया	भूम्हना	भूम्हद्भ्याम्	भूम्हद्भिः
चतुर्थी	भूम्हने	भूम्हद्भ्याम्	भूम्हद्भ्यः
पञ्चमी	भूम्हनः	भूम्हद्भ्याम्	भूम्हद्भ्यः
षष्ठी	भूम्हनः	भूम्हनोः	भूम्हनाम्
सप्तमी	भूम्हनि	भूम्हनोः	भूम्हत्सु
सम्बोधन	भूम्हन्-द्		

अन्, स्यन्, मन्, वन्, तवन्, प्रत्ययान्त और महत् भिन्न सारे नकारान्त शब्दों के भूम्हन् की न्याईं रूप होते हैं। और इन्के भी सु से और इनक प्रथम पांच विभक्तियों मे रूप भेद हैं, अगली विभक्तियों मे सब भूम्हन् की न्याईं होते हैं। यथा

अन्प्रत्ययान्त-पावन्शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पावन्	पावनौ	पावनः
द्वितीया	पावनम्	पावनौ	पावनः

आगे भूम्हन् की न्याईं

स्न्प्रत्ययान्त शब्दों के रूप भी अन्प्रत्ययान्त वालों की न्याईं होते हैं

(१) सुगाणत्, सुगाणौ, सुगाणः, सुगाणत्सु, प्रभृति होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अभ्यस्त[१]धातु और जक्षत्, दरिद्रत्, शासत्, चकासत्, दीध्यत्, वेव्यत् भिन्न सारे अत् और स्यत् प्रत्ययान्त शब्दों के धावत् शब्द की न्याई रूप होते हैं। अभ्यस्त प्रभृति के रूप भूभृत् की न्याई होते हैं॥

मत् वत् और नवत् प्रत्ययान्त शब्द सब अत् प्रत्ययान्त धावत् की न्याई होते हैं; केवल प्रथमा के एकवचन मे नकार के पहिले अकार को दीर्घ होजाता है, पर सम्बोधन मे नहि होता[२], यथा श्रीमत् का श्रीमान्; ज्ञानवत् का ज्ञानवान्; प्रज्ञावत् का प्रज्ञावान्, श्रुतवत् का श्रुतवान्, कृतवत् का कृतवान् इत्यादि।

महत् शब्द के त् के पूर्व अ को पहिली पांचो विभक्तियों मे दीर्घ होता है यथा महान्, महान्तौ, महान्तः, महान्तम्, महान्तौ, हे महन्; और सब विभक्तियों मे भूभृत् की न्याई॥

थकारान्त-अग्निमथ् शब्द

थकारान्त शब्द सारे तकारान्त भूभृत् की न्याई होते हैं, (स्वरादि विभक्तियों मे थ् का थ् हि रहता है) यथा अग्निमत् (वा) अग्निमद्, अग्निमथौ इत्यादि

दकारान्त-सुहृद् शब्द

दकारान्त शब्द सारे[३] तकारान्त भूभृत् की न्याई होते हैं (स्वरादि विभक्तियों मे दकार हि रहता है) यथा सुहृत् (वा) सुहृद्, सुहृदौ इत्यादि

धकारान्त-वीरुध् शब्द

धकारान्त शब्द सारे तकारान्त भूभृत् की न्याई होते हैं (स्वरादि विभक्तियों मे धकार हि रहता है) यथा वीरुत् (वा) वीरुद्, वीरुधौ इत्यादि।

(१) अभ्यस्त धातु वे हैं जिन्के पूर्व भाग को द्वित्व होता है यथा ददत्, दधत्, बिभ्रत् इत्यादि

(२) भगवत्, अघवत्, भवत् इन तीन शब्दों के सम्बोधन के एकवचन मे विकल्प करके हे भगोः, अघोः, भोः ये रूप भी होते हैं।

(३) पादान्त शब्द के पाद को पद् होजाता है शसादि स्वर परे होने से यथा सुपात् (वा) सुपाद्, सुपदः, सुपाद्भ्याम् इत्यादि।

(४) बुध् शब्द के ब् को भ् होजाता है सभादि विभक्ति परे होने से यथा भुत् (वा) भुद्, बुधौ, भुद्भ्याम् भुत्सु।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नकारान्त

नकारान्त शब्द तीन प्रकार के हैं। इन् भागान्त, अन् भागान्त और हन् भागान्त

इन् भागान्त-गुणिन् शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गुणी	गुणिनौ	गुणिनः
द्वितीया	गुणिनम्	गुणिनौ	गुणिनः
तृतीया	गुणिना	गुणिभ्याम्	गुणिभिः
चतुर्थी	गुणिने	गुणिभ्याम्	गुणिभ्यः
पञ्चमी	गुणिनः	गुणिभ्याम्	गुणिभ्यः
षष्ठी	गुणिनः	गुणिनोः	गुणिनाम्
सप्तमी	गुणिनि	गुणिनोः	गुणिषु
सम्बोधन	गुणिन्		

पथिन् मथिन् ऋभुक्षिन् भिन्न सारे इन् भागान्त शब्द गुणिन् शब्द की न्याईं हैं।

पथिन्-शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पन्थाः	पन्थानौ	पन्थानः
द्वितीया	पन्थानम्	पन्थानौ	पथः
तृतीया	पथा	पथिभ्याम्	पथिभिः
चतुर्थी	पथे	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
पञ्चमी	पथः	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
षष्ठी	पथः	पथोः	पथाम्
सप्तमी	पथि	पथोः	पथिषु

मथिन् शब्द भी इसी प्रकार। ऋभुक्षिन् शब्द पथिन् शब्द की न्याईं है, केवल प्रथम पांच विभक्तियों मे कुछ रूप भेद है; यथा ऋभुक्षाः, ऋभुक्षाणौ, ऋभुक्षाणः, ऋभुक्षाणम्, ऋभुक्षाणौ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अन्भागान्त-लघिमन्शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लघिमा	लघिमानौ	लघिमानः
द्वितीया	लघिमानम्	लघिमानौ	लघिम्नः
तृतीया	लघिम्ना	लघिमभ्याम्	लघिमभिः
चतुर्थी	लघिम्ने	लघिमभ्याम्	लघिमभ्यः
पञ्चमी	लघिम्नः	लघिमभ्याम्	लघिमभ्यः
षष्ठी	लघिम्नः	लघिम्नोः	लघिम्नाम्
सप्तमी	लघिम्नि, (वा) लघिमनि,	लघिम्नोः	लघिमसु
सम्बोधन	लघिमन्		

आत्मन्, युवन्, मघवन्, श्वन्, अर्य्यमन्, अर्वन्, प्रभृति[१] भिन्न सारे अन्भागान्त शब्द लघिमन् शब्द की न्याई होते हैं।

आत्मन्-शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
द्वितीया	आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मनः
तृतीया	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
चतुर्थी	आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
पञ्चमी	आत्मनः	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
षष्ठी	आत्मनः	आत्मनोः	आत्मनाम्
सप्तमी	आत्मनि	आत्मनोः	आत्मसु
सम्बोधन	आत्मन्		

(१) जिन अन्नन्त शब्दों का अकार संयुक्त म् अथवा व् के साथ मिला हुआ हो उन्के रूप आत्मन् शब्द की न्याई होते हैं। यथा यज्वन् शब्द के रूप; यज्वा, यज्वानौ, यज्वानः, यज्वनः, यज्वभ्याम् इत्यादि। ब्रह्मणः, ब्रह्मभ्याम्। इत्यादि जो ऐसे नहिं हैं उन्के रूप लघिमन् शब्द की न्याई होते हैं यथा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राजा, राजानौ, राजानः, राज्ञः राजभ्याम् इत्यादि।
जिस धातु के अन्त में र् (वा) व् हो और उसके पूर्व इ, उ, अथवा ऋ हो तो अन् का जहां अकार लोप होता है अर्थात् शसादि स्वर परे होने से (बहुलं) उस इ, उ, ऋ को दीर्घ होता है यथा परिदिवा, परिदीव्नः, परिदिवभ्याम्।
समस्त अहन् शब्द के रूप लघिमन् शब्द की नाई होते हैं पर भादि विभक्ति परे होने से न् के स्थान में उ हो जाता है यथा दीर्घाह्नोभ्याम्।

युवन्-शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	युवा	युवानौ	यूवानः
द्वितीया	युवानम्	युवानौ	यूनः
तृतीया	यूना	युवभ्याम्	युवभिः
चतुर्थी	यूने	युवभ्याम्	युवभ्यः
पञ्चमी	यूनः	युवभ्याम्	युवभ्यः
षष्ठी	यूनः	यूनोः	यूनाम्
सप्तमी	यूनि	यूनोः	युवसु
सम्बोधन	युवन्		

मघवन्-शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मघवा	मघवानौ	मघवानः
द्वितीया	मघवानम्	मघवानौ	मघोनः
तृतीया	मघोना	मघवभ्याम्	मघवभिः
चतुर्थी	मघोने	मघवभ्याम्	मघवभ्यः
पञ्चमी	मघोनः	मघवभ्याम्	मघवभ्यः
षष्ठी	मघोनः	मघोनोः	मघोनाम्
सप्तमी	मघोनि	मघोनोः	मघवसु
सम्बोधन	मघवन्		

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्वन्-शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	श्वा	श्वानौ	श्वानः
द्वितीया	श्वानम्	श्वानौ	शुनः
तृतीया	शुना	श्वभ्याम्	श्वभिः
चतुर्थी	शुने	श्वभ्याम्	श्वभ्यः
पञ्चमी	शुनः	श्वभ्याम्	श्वभ्यः
षष्ठी	शुनः	शुनोः	शुनाम्
सप्तमी	शुनि	शुनोः	श्वसु
सम्बोधन	श्वन्		

अर्य्यमन् लघिमन् की न्याई है केवल औ, जस् अम् और विभक्तियों मे इसके म् का अकार दीर्घ नहिं होता यथा अर्य्यमा, अर्य्यमणौ, अर्य्यमणः, अर्य्यमणम्, अर्य्यमणौ, अर्य्यम्णः, इत्यादि (१)

अर्वन् शब्द की प्रथमा का एकवचन अर्वा है; और (२) सब विभक्तियों मे इसके रूप नकारान्त धावत् शब्द की न्याई होते हैं यथा अर्वन्तौ, अर्वन्तः, अर्वतः अर्वद्भ्याम् इत्यादि।

हन्भागान्त-वृत्रहन्शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वृत्रहा	वृत्रहणौ	वृत्रहणः
द्वितीया	वृत्रहणम्	वृत्रहणौ	वृत्रघ्नः
तृतीया	वृत्रघ्ना	वृत्रहभ्याम्	वृत्रहभिः
चतुर्थी	वृत्रघ्ने	वृत्रहभ्याम्	वृत्रहभ्यः
पञ्चमी	वृत्रघ्नः	वृत्रहभ्याम्	वृत्रहभ्यः
षष्ठी	वृत्रघ्नः	वृत्रघ्नोः	वृत्रघ्नाम्
सप्तमी	वृत्रघ्नि (वा) वृत्रहणि	वृत्रघ्नोः	वृत्रहसु
सम्बोधन	वृत्रहन्		

(२) परन्तु अर्वन् का यदि नञ् के साथ समास हो तो उसके रूप आत्मन् शब्द की न्याई होते हैं यथा अनर्वा अनर्वाणौ, अनर्वाणः, अनर्वणः, अनर्वभ्याम् इत्यादि

(१) पूषन् शब्द अर्य्यमन् की न्याई है पर शसादि स्वर विभक्तियों मे षन का विकल्प करके पूष भी हो जाता है यथा पूष्णः (वा) पूषः।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सारे हन् भागान्त शब्दों के ऐसे हि रूप होते हैं । हन् के स्थान मे घ्न होने से न को ण नहि होता ।

पकारान्त-गुप्शब्द

यथा । गुप् (वा) गुब् [प्र॰] गुपौ [२व॰] गुब्भ्याम् [२व॰] गुप्सु [स॰व॰]

मकारान्त-प्रशाम्शब्द

स भ् के पूर्व म् को न् होजाता है । यथा प्रशान् [प्र॰१], प्रशामौ [२व॰], प्रशान्भ्याम् [त॰२], प्रशान्सु [स॰व॰] (वा) प्रशान्त्सु ।

लकारान्त-कमल्शब्द

यथा कमल् [प्र॰] कमलौ [२व॰] कमल्षु [स॰व॰]

वकारान्त-सुदिव्शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सुद्यौः	सुदिवौ	सुदिवः
द्वितीया	सुदिवम्	सुदिवौ	सुदिवः
तृतीया	सुदिवा	सुद्युभ्याम्	सुद्युभिः
चतुर्थी	सुदिवे	सुद्युभ्याम्	सुद्युभ्यः
पञ्चमी	सुदिवः	सुद्युभ्याम्	सुद्युभ्यः
षष्ठी	सुदिवः	सुदिवोः	सुदिवाम्
सप्तमी	सुदिवि	सुदिवोः	सुद्युषु

शकारान्त-विशशब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	विट् (वा) विड्	विशौ	विशः
द्वितीया	विशम्	विशौ	विशः

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तृतीया	विशा	विड्भ्याम्	विड्भिः
चतुर्थी	विशे	विड्भ्याम्	विड्भ्यः
पञ्चमी	विशः	विड्भ्याम्	विड्भ्यः
षष्ठी	विशः	विशोः	विशाम्
सप्तमी	विशि	विशोः	विट्सु

दृश, स्पृश, प्रभृति[1] भिन्न सारे शकारान्त शब्द विश शब्द की न्याई होते हैं

दृश्, स्पृश्, शब्दों के श को क् और ग् यथा क्रम होता है जहां विश् के श् को ट् और ड् होता है यथा दृक् (वा) दृग्, दृशौ, दृग्भ्याम्, दृक्षु

षकारान्त–द्विष्शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	द्विट् (वा) द्विड्	द्विषौ	द्विषः
द्वितीया	द्विषम्	द्विषौ	द्विषः
तृतीया	द्विषा	द्विड्भ्याम्	द्विड्भिः
चतुर्थी	द्विषे	द्विड्भ्याम्	द्विड्भ्यः
पञ्चमी	द्विषः	द्विड्भ्याम्	द्विड्भ्यः
षष्ठी	द्विषः	द्विषोः	द्विषाम्
सप्तमी	द्विषि	द्विषोः	द्विट्सु (वा) द्विड्त्सु

दोष प्रभृति शब्दों के सिवा सारे षकारान्त शब्द द्विष् शब्द की न्याई होते हैं।

---

(१) क्विन् प्रत्ययान्त शब्द दृश की न्याई और तद्भिन्न विश की न्याई होते हैं। दृश, स्पृश् शब्द समासान्त होने से भी उनके वैसे हि रूप होते हैं यथा ईदृक्, तादृक्, कीदृक्, एतादृक्, भवादृक्; बहुस्पृक्, मर्म्मस्पृक्, घृतस्पृक्, इत्यादि।
पुरोडाश शब्द के रूप सभादि विभक्ति परे होने से पुरोडस की न्याई होते हैं; यथा पुरोडाः, पुरोडाशौ, पुरोडोभ्याम्, पुरोडःसु।
नश शब्द के रूप विश की न्याई भी और दृश की न्याई भी दोनो प्रकार के होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दोष-शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दोः	दोषौ	दोषः
द्वितीया	दोषम्	दोषौ	दोषः(वा)दोषणः
तृतीया	दोषा(वा)दोष्णा	दोर्भ्याम्	दोर्भिः
चतुर्थी	दोषे(वा)दोष्णे	दोर्भ्याम्	दोर्भ्यः
पञ्चमी	दोषः(वा)दोष्णः	दोर्भ्याम्	दोर्भ्यः
षष्ठी	दोषः(वा)दोष्णः	दोषोः(वा)दोष्णोः	दोषाम्(वा)दोष्णाम्
सप्तमी	दोषि(वा)दोष्णि	दोषोः(वा)दोष्णोः	दोःषु(वा)दोष्सु

सजुष् प्रभृति शब्द, जिन्के अन्त्यस् को इकारादि स्वर निमित्तक षू हुआ है(पृ. २१), इन्के ष् को विसर्ग होजाता है सुप् विभक्ति मे, और र होजाता है भादि विभक्ति मे और पूर्व स्वर दीर्घ होजा है यथा सजूः सजुषौ सजूर्भ्याम् सजूःषु(वा)सजूष्षु (१)

दधृष[(२)] प्रभृति शब्द के षू को दृश् शब्दवत् क् ग् होता है सभादि विभक्ति परे होने से यथा दधृक्(वा)दधृग्, दधृषौ, दधृग्भ्याम्, दधृक्षु।

सान्त शब्दों के क् अथवा षू[(३)] का लोप होता है सभादि विभक्ति परे होने से, और उन विभक्तियों मे उन्के रूप षान्त अथवा कान्त शब्दों की न्याई होते हैं। यथा; नत शब्द का, नट्(वा)नड्, नक्(वा) नग, नसौ, नड्भ्याम्(वा)नग्भ्याम्, नट्सु(वा)नक्षु। इसी प्रकार गोरक्ष शब्द।

सकारान्त-वेधस्शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वेधाः	वेधसौ	वेधसः
द्वितीया	वेधसम्	वेधसौ	वेधसः
तृतीया	वेधसा	वेधोभ्याम्	वेधोभिः

(१) सन प्रत्यय के ष् वाले शब्दों के भी ऐसे हि रूप होते हैं यथा पिपठीः पिपठिषौ पिपठीर्भ्याम् इत्यादि
(२) अर्थात् क्विन् प्रत्ययान्त शब्द।
(३) जो क् के साथ सम् प्रत्यय के ष् का योग हो तो ष् का हि लोप होता है; यथा पिपित्स शब्द का, पिपक (वा) पिपग्।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चतुर्थी	वेधसे	वेधोभ्याम्	वेधोभ्यः
पञ्चमी	वेधसः	वेधोभ्याम्	वेधोभ्यः
षष्ठी	वेधसः	वेधसोः	वेधसाम्
सप्तमी	वेधसि	वेधसोः	वेधःसु, वेधस्सु
सम्बोधन	वेधः		

(१) प्रायः सारे शब्द जिनके अन्तमे अस् है, उन्के रूप वेधस् शब्द की न्याई होते हैं। जिनके अन्तमे इस्, उस् है उन्के रूप भी कुछ ऐसे हि होते हैं, कुछ नहि; यथा; सुपिस् शब्द के—सुपीः, सुपिसौ, सुपीर्भ्याम्, सुपीःषु (वा) सुपीष्षु। एवं सुतस् शब्द

विद्वस्-शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वितीया	विद्वांसम्	विद्वांसौ	विदुषः
तृतीया	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
चतुर्थी	विदुषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
पञ्चमी	विदुषः	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
षष्ठी	विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
सप्तमी	विदुषि	विदुषोः	विद्वत्सु
सम्बोधन	विद्वन्		

(२) सारे वस् प्रत्ययान्त शब्द विद्वस् शब्द की न्याई होते हैं।

(१) अस् यदि धातु का अवयव हो तो सु विभक्ति मे विसर्ग के पूर्व ह्रस्व अकार हि रहता है यथा सुवस् शब्द का—सुवः। अनेहस्, उशनस्, पुरुदंशस् इन तीन शब्दों के सु विभक्ति मे, अनेहा, उशना, पुरुदंशा, ये रूप होते हैं, और उशनस् के सम्बोधन मे उशनः, उशन, उशनन् ये तीन रूप होते हैं। उक्थशास् शब्द के रूप कुछ वेधस् शब्द की न्याई होते हैं कुछ नहि यथा, उक्थशाः, उक्थशासौ, उक्थशोभ्याम्, उक्थशःसु, हे उक्थशाः (वा) उक्थशः।

(२) वस् के पूर्व यदि इ हो तो उस इ को लोप होता है जहां व का उ हो जाता है यथा सेदिवान्, सेदुषः, सेदिवद्भ्याम् इत्यादि। वस् के पूर्व यदि निमित्त न् हो तो उस न् का म होता है जहां व का उ होजाता है यथा जगन्वान्, जग्मुषः, जगन्वद्भ्याम् इत्यादि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लघीयस्-शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लघीयान्	लघीयांसौ	लघीयांसः
द्वितीया	लघीयांसम्	लघीयांसौ	लघीयसः
तृतीया	लघीयसा	लघीयोभ्याम्	लघीयोभिः
चतुर्थी	लघीयसे	लघीयोभ्याम्	लघीयोभ्यः
पञ्चमी	लघीयसः	लघीयोभ्याम्	लघीयोभ्यः
षष्ठी	लघीयसः	लघीयसोः	लघीयसाम्
सप्तमी	लघीयसि	लघीयसोः	लघीयःसु, लघीयस्सु
सम्बोधन	लघीयन्		

सारे ईयस् प्रत्ययान्त शब्द इसी प्रकार हैं

शब्द के अन्त्य स के पूर्व यदि व्यञ्जन वर्ण होतो स का लोप होता है सभादि विभक्ति मे यथा हिन्स शब्द के-हिन् हिन्सौ हिन्भ्याम् हिन्सु(१)

हकारान्त-मधुलिह्शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मधुलिट्(वा)मधुलिड्	मधुलिहौ	मधुलिहः
द्वितीया	मधुलिहम्	मधुलिहौ	मधुलिहः
तृतीया	मधुलिहा	मधुलिड्भ्याम्	मधुलिड्भिः
चतुर्थी	मधुलिहे	मधुलिड्भ्याम्	मधुलिड्भ्यः
पञ्चमी	मधुलिहः	मधुलिड्भ्याम्	मधुलिड्भ्यः
षष्ठी	मधुलिहः	मधुलिहोः	मधुलिहाम्
सप्तमी	मधुलिहि	मधुलिहोः	मधुलिट्सु(वा) मधुलिट्त्सु

द्रुहादि(२) स्वेतवाह और अनडुह शब्दों के सिवा सारे हकारान्त शब्दों के इसी प्रकार रूप होते हैं।

(१) पुंस शब्द के रूप औट् विभक्ति तक विलक्षण हैं यथा, पुमान्, पुमांसौ, पुमांसः। पुमांसम्, पुमांसौ, पुंसः, पुंसा, पुंभ्याम्, पुंसु(वा) पुंस्सु, हेपुमन्। क्विन् प्रत्ययान्त स्रंस ध्वंस शब्दों के अनुस्वार का लोप होजाता है और सभादि विभक्तियों मे तकारान्त शब्द की न्याई इन्के रूप होते हैं यथा, ध्वत्(वा) ध्वद् ध्वसौ. ध्वसः. ध्वद्भ्याम् इत्यादि ।

(२) दकारादि हान्त शब्द के ह को क् ग् होता है सु मे, क होता है सुप मे और ग होता है भादि विभक्तियों मे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और सभादि मे ह का ध् भी होजाता है यथा दुह का धुक् (वा) धुग्, दुहौ, धुग्भ्याम्, धुक्षु। मुह, स्नुह, स्निह, मधुलिह शब्द की न्याई और विकल्प करके दुहादि की न्याई भी होते हैं यथा मुक् (वा) मुग्, मुग्भ्याम्, मुक्षु इत्यादि
द्रुह, द्दह, के रूप मुह के दोनो रूप की न्याई होते हैं, पर द को ध दुह की न्याई होजाता है यथा ध्रुक्, ध्रुग्, ध्रुट्, ध्रुड्। जिस शब्द के उत्तरपद मे वाह हो उसके वा को ऊ होजाता है शसादि स्वर विभक्तियों मे (और स्त्री के ई मे) और वह ऊ पूर्व पद के अन्त्य अकार के साथ मिल कर औ होता है, जो पूर्व पद का अन्त्य वर्ण अन्य हो तो उसकी ऊ के साथ यथा नियम सन्धि होती है यथा विश्ववाट् (वा) विश्ववाड्, विश्ववाहौ, विश्ववाहः, विश्वौहः, विश्ववाड्भ्याम् इत्यादि। भूवाट्, भ्वूहः इत्यादि। एवं वारिवाट्, शालिवाट् इत्यादि। श्वेतवाह् और अनडुह के रूप कुछ विलक्षण हैं यथा

॰॰ जिन धातुओं मे पञ्चम स्वर हो और अन्त मे उनके घ्, ढ्, ध् (वा) भ् हो तो सभादि विभक्तियों मे उनके आदि ग्, ड्, द्, ब् के स्थान क्रम से घ्, ढ्, ध्, भ् होजाते हैं

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	श्वेतवाः	श्वेतवाहौ	श्वेतवाहः
द्वितीया	श्वेतवाहम्	श्वेतवाहौ	श्वेतवाहः, श्वेतौहः
तृतीया	श्वेतवाहा, श्वेतौहा	श्वेतवोभ्याम्	श्वेतवोभिः
चतुर्थी	श्वेतवाहे, श्वेतौहे	श्वेतवोभ्याम्	श्वेतवोभ्यः
पञ्चमी	श्वेतवाहः, श्वेतौहः	श्वेतवोभ्याम्	श्वेतवोभ्यः
षष्ठी	श्वेतवाहः, श्वेतौहः	श्वेतवाहोः, श्वेतौहः	श्वेतवाहाम्, श्वेतौहाम्
सप्तमी	श्वेतवाहि, श्वेतौहि	श्वेतवाहोः, श्वेतौहः	श्वेतवःसु, श्वेतवस्सु
धि	श्वेतवाः, (वा) श्वेतवः		

अनडुह-शब्द

प्रथमा	अनड्वान्	अनड्वाहौ	अनड्वाहः
द्वितीया	अनड्वाहम्	अनड्वाहौ	अनडुहः
तृतीया	अनडुहा	अनडुद्भ्याम्	अनडुद्भिः
चतुर्थी	अनडुहे	अनडुद्भ्याम्	अनडुद्भ्यः
पञ्चमी	अनडुहः	अनडुद्भ्याम्	अनडुद्भ्यः
षष्ठी	अनडुहः	अनडुहोः	अनडुहाम्
सप्तमी	अनडुहि	अनडुहोः	अनडुत्सु
धि	अनड्वन्		

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्त्रीलिङ्ग

हलन्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप पुंलिङ्ग की नाईं होते हैं, इसलिये प्रत्येक प्रकार के स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूपों का फेर दिखाना अनावश्यक है। कोई २ शब्द अथवा जिनमे कुछ विशेष है, उन्ही के रूप आगे दिखाये जाते हैं

चकारान्त-वाच् शब्द

वाक् (वा) वाग्, वाचौ, वाग्भ्याम्, वाक्षु (जलमुच् शब्दवत्)

जकारान्त-स्रज् शब्द

यथा स्रक् (वा) स्रग्, स्रजौ, स्रग्भ्याम्, स्रक्षु, इत्यादि ऋत्विज्वत्

पकारान्त-अप् शब्द

इसका केवल बहुवचन है

प्रथमा	आपः
द्वितीया	अपः
तृतीया	अद्भिः
चतुर्थी	अद्भ्यः
पञ्चमी	अद्भ्यः
षष्ठी	अपाम्
सप्तमी	अप्सु

भकारान्त-ककुभ् शब्द

यथा ककुप् (वा) ककुब्, ककुभौ, ककुब्भ्याम्, ककुप्सु इत्यादि गुप् शब्दवत्।

रकारान्त-गिर् शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गीः	गिरौ	गिरः

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

द्वितीया	गिरम्	गिरौ	गिरः
तृतीया	गिरा	गीर्भ्याम्	गीर्भिः
चतुर्थी	गिरे	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
पञ्चमी	गिरः	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
षष्ठी	गिरः	गिरोः	गिराम्
सप्तमी	गिरि	गिरोः	गीर्षु

एवं पुर, धुर् शब्द यथा पूः पुरौ पूर्भ्याम् पूर्षु इत्यादि

वकारान्त—दिव् शब्द

यथा द्यौः, दिवौ, द्युभ्याम्, द्युषु, इत्यादि सुदिववत्

शकारान्त—दिश् शब्द

यथा दिक् (वा) दिग्, दिशौ, दिग्भ्याम्, दिक्षु, इत्यादि दृशवत्

षकारान्त—त्विष् शब्द

यथा त्विट् (वा) त्विड्, त्विषौ, त्विड्भ्याम्, त्विट्सु (वा) त्विट्त्सु इत्यादि द्विषवत्

सकारान्त—आशिस् शब्द

यथा आशीः, आशिषौ, आशीर्भ्याम्, आशीःषु (वा) आशीष्षु (सजुषवत्)

हकारान्त—उष्णिह् शब्द

यथा उष्णिक् (वा) उष्णिग्, उष्णिहौ, उष्णिग्भ्याम्, उष्णिक्षु, इत्यादि ।

उपानह् शब्द के रूप सभादि विभक्तियों मे धकारान्त की न्याई होते हैं। यथा उपानत् (वा) उपानद्, उपानहौ, उपानद्भ्याम्, उपानत्सु,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्लीवलिङ्ग

क्लीव लिङ्ग मे प्रथमा और द्वितीया के रूप एक से होते हैं; इसलिये केवल एक के रूप आगे दिखलाए जाते हैं। तृतीयादि विभक्तियों के रूप पुंलिङ्ग की न्याईं होते हैं, इसलिये उनका दिखलाना अनावश्यक समझा गया; पर जहां इन विभक्तियों मे रूप विशेष हैं वे पर्याय मे दिखलाए जायंगे।

क्लीव लिङ्ग मे "औ" विभक्ति को ई और जस् शस् को इ होजाता है; और इ होने से अन्त्य हल् के पूर्व प्रायशः न् आजाता है, और उस के पूर्व स्वर को कहीं दीर्घ होजाता है जैसा कि आगे दिखलाया जाता है।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
ककारान्त सर्वशक् शब्द	सर्वशक्, सर्वशग्	सर्वशकी	सर्वशङ्कि
खकारान्त चित्रलिख्	चित्रलिक्, चित्रलिग्	चित्रलिखी	चित्रलिङ्खि
गकारान्त सुवल्ग्(१) श.	सुवल्क्	सुवल्गी	सुवल्गि
चकारान्त वाच् शब्द	वाक्, वाग्	वाची	वाञ्चि
(२) प्राच् शब्द	प्राक्, प्राग्	प्राची	प्राञ्चि
(१) प्रत्यच् शब्द	प्रत्यक्, प्रत्यग्	प्रतीची	प्रत्यञ्चि
(२) तिर्यच् शब्द	तिर्यक्, तिर्यग्	तिरश्ची	तिर्यञ्चि
(२) उदच् शब्द	उदक्, उदग्	उदीची	उदञ्चि
(३) गवाच् शब्द (गनौ)	गवाक्, गवाग्	गोची	
	गोअक्, गोअग्		
	गोक्, गोग्		
	गवाङ्	गवाञ्ची	गवाञ्चि
	गोअङ्	गोअञ्ची	गोअञ्चि
	गोङ्	गोञ्ची	गोञ्चि

(१) टादि स्वर मे सुवल्गा इत्यादि। भादि मे सुवल्भ्याम् इत्यादि। सुपि— सुवल्क्षु

(२) पूजार्थ होनेसे १ वचन के अन्त्य क् को ङ् होता है और २ वचन के रूप बहुवचन की न्याईं पर अन्त्य इ दीर्घ होती है।

(३) टादि स्वर परे होने से गवाक् शब्द के चार चार रूप होते हैं यथा गोचा, गवाञ्चा गोअञ्चा गोञ्चा। भादि मे छय रूप यथा; गवाग्भ्याम्, गोअग्भ्याम्, गोग्भ्याम्, गवाङ्भ्याम्, गोअङ्भ्याम्, गोङ्भ्याम्, सप्तमे नव रूप यथा; गवाङ्क्षु, गोअङ्क्षु, गोङ्क्षु, गवाङ्षु, गोअङ्षु, गोङ्षु, गवाक्षु, गोअक्षु, गोक्षु। सब समेत ९ रूप; फिर कोई २ सर्त का द्वित्व होकर ५२० रूप होते हैं, पर व्यवहार मे इतने कभी नहि आते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जकारान्त अस्रज्‌श०	अस्रक्	अस्रजी	अस्रञ्जि
ऊर्ज्ज्[२] शब्द	ऊर्क्, ऊर्ग्	ऊर्ज्जी	ऊन्र्ज्जि[३], ऊर्ज्जि
तकारान्त-हरित्‌श०	हरित्, हरिद्	हरिती	हरिन्ति
यकृत्[४]-शब्द	यकृत्	यकृती	यकृन्ति
शकृत्[५]-शब्द	शकृत्	शकृती	शकृन्ति
गतवत्-शब्द	गतवत्	गतवती	गतवन्ति
भवत्[६]-शब्द	भवत्	भवन्ती	भवन्ति
ददत्[७]-शब्द	ददत्	ददती	ददन्ति, ददति
भविष्यत्[८]-शब्द	भविष्यत्	भविष्यती	भविष्यन्ति
महत्-शब्द	महत्	महती	महान्ति[९]
थकारा० अग्निमथ्‌श०	अग्निमत्, द्	अग्निमथी	अग्निमन्थि
दकारान्त हृद्-शब्द	हृद्	हृदी	हृन्दि
नकारान्त(अन्नन्त[११]) नामन्-शब्द	नाम[१०]	नाम्नी, नामनी	नामानि
मनन्त कर्मन्-शब्द	कर्म	कर्म्मणी	कर्म्माणि
वनन्त पर्वन्‌श०	पर्व	पर्वणी	पर्वाणि
हनन्त बहुवृत्रहन्	बहुवृत्रह	बहुवृत्रघ्नी	बहुवृत्रहाणि
इनन्त स्थायिन्	स्थायि	स्थायिनी	स्थायीनि

(१) शसादि विभक्तियोंमे अस्रज् शब्द का असन् भी विकल्प करके होता है यथा असानि, अस्ना, असभ्याम् असनि, असस

(२) सभादि विभक्तियोंमे एक ज् का लोप होता है यथा ऊर्ग्भ्याम्, ऊर्क्षु

(३) बहु के साथ समास होने से "बहूर्ज्जि" इस प्रकार रूप होगा

(४) शसादि विभक्तियोंमे यकृत् का यकन् भी विकल्प करके होता है यथा यकानि यक्ना यकभ्याम् यकसु

(५) तथा ———— शकृत् का शकन् भी ———— तथा

(६) अन्त के पूर्व यदि अ (वा) आ हो तो भ्वादि दिवादि और चुरादि गणीय धातुओं के शब्दों मे अ और त के बीच न् आता है क्लीवलिङ्ग की ई विभक्ति अथवा स्त्रीलिङ्ग का ई प्रत्यय परे होने से; तुदादि गणीय धातुमे और अदादि मे आ के पीछे विकल्प करके, और अन्य गणीय धातुओं मे कहीं आता है कहीं नहि यथा (भ्वादि) भवन्ती (दिवादि) दीव्यन्ति (चुरादि) चोरयन्ती (तुदादि) तुदती (वा) तुदन्ती (अदादि) अदती, भाती (वा) भान्ती (स्वादि) सुन्वती, (रुधादि) रुन्धती, (तनादि) तन्वती (क्र्यादि) क्रीणती (वा) क्रीणन्ती

(७) परन्तु अभ्यस्त धातु के शब्दोंमे ई परे होने से न् नहि आता और जस् शस् की ई परे होने से विकल्प करके आता है

(८) उक्त शतृ प्रत्ययान्त शब्दोंके सिवा और सारे अत् प्रत्ययान्त शब्दों के रूप भविष्यत् शब्द की न्याई होते हैं

(९) महत् शब्द का ह युक्त अकार दीर्घ होजाता है इ परे होने से

(१०) सम्बोधन के एक वचन मे नकारान्त शब्द के न का लोप विकल्प करके होता है यथा हे ब्रह्मन्, हे ब्रह्म

(११) अहन् शब्द के रूप विशेष हैं यथा (प्र० द्वि०) अहः, अह्नी (वा) अहनी, अहानि (तृतीयादि स्वर मे) अह्ना इत्यादि (आदिमे) अहोभ्याम् इत्यादि (सुपि) अहःसु (वा) अहस्सु (द्वि० से) अह्नि (वा) अहनि। संख्यावाचक शब्द, वि (वा) साय के साथ अहन् का समास होने से अकारान्त पुंलिङ्ग की न्याई रूप होते हैं यथा सायाह्नः, सायाह्नौ, सायाह्नाः इत्यादि; पर ङि के तीन रूप होते हैं यथा सायाह्ने, सायाह्नि, वा सायाहनि। अन्य शब्दों के साथ समास होने से इस अन्नन्त पुंलिङ्ग की न्याई रूप होते है यथा दीर्घाहा, दीर्घाहानौ, दीर्घाहानः, दीर्घाहानं, दीर्घाह्नः; दीर्घाहोभ्याम्, दीर्घाहःसु, दीर्घाहस्सु।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पकारान्त-स्वप् शब्द (१)	स्वप्	स्वपी	स्वाम्पि, स्वम्पि
रकारान्त-वार् शब्द (२)	वाः	वारी	वारि
वकारान्त सुदिव् श०	सुद्यु	सुदिवी	सुदिवि
शकारान्त विश शब्द	विट्(वा) विड्	विशी	विंशि
षकारान्त दोष् शब्द	दोः	दोषी	दोंषि
पिपठिष्-शब्द	पिपठीः	पिपठिषी	पिपठिषि
सकारान्त-असन्त पयस्-शब्द	पयः	पयसी	पयांसि
वसन्त-विद्वस् श०	विद्वत्	विदुषी	विद्वांसि
इवसन्त-सेदिवस् श०	सेदिवत्	सेदुषी	सेदिवांसि
ईयसन्त-गरीयस् श०	गरीयः	गरीयसी	गरीयांसि
इसन्त हविस् श० (३)	हविः	हविषी	हवींषि
उसन्त धनुस् श० (४)	धनुः	धनुषी	धनूंषि
सुपुंस शब्द (५)	सुपुम्	सुपुंसी	सुपुमांसि
हकारान्त लिह्-शब्द	लिट्, लिड्	लिही	लिंहि
स्वनडुह्-शब्द	स्वनडुत्-द्	स्वनडुही	स्वनड्वांहि

(१) तृतीयादि मे स्वपा, स्वब्भ्याम् इत्यादि
(२) तृतीयादि मे वारा, वार्भ्याम् इत्यादि
(३) तृतीयादि मे हविषा, हविर्भ्याम् इत्यादि
(४) तृतीयादि मे धनुषा, धनुर्भ्याम् इत्यादि
(५) तृतीयादि मे पुंस शब्दवत्

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सर्बनाम

रूपों के वैलक्षण्य अनुसार सर्बनाम शब्द सारे पाँच गणों मे विभक्त हैं । यथा; सर्बादि, अन्यादि, पूर्बादि यदादि और इदमादिगण ।

सर्बादि[1] । सर्ब, विश्व, उभ, उभय, भवत्, त्वत्[2] त, एक, एकतर, सम, सिम, नेम ।

अन्यादि । अन्य, अन्यतर, इतर, कतर, कतम्, एकतम, यतर, यतम ।

पूर्बादि । पूर्ब, पर, अवर, अपर, दक्षिण, उत्तर, अधर, अन्तर, स्व ।

यदादि । यद्, तद्, त्यद्, एतद्, किम्, द्वि ।

इदमादि । इदम्, अदस्, युष्मद्, अस्मद् ।

सर्बादि अन्यादि और पूर्बादि अकारान्त सर्बनाम शब्दों के रूप सामान्य अकारान्त शब्द की न्याईं होते हैं; केवल प्रथमा और षष्ठी के बहुवचन मे और चतुर्थी पञ्चमी और सप्तमी के एकवचन मे रूपों का वैलक्षण्य है ।

(१) सर्बादि शब्द अपने अपने मुख्य अर्थों मे हि सर्बनाम होते हैं, गौण अर्थ अथवा संज्ञा मे इन्के रूप पूर्बोक्त नियमानुसार साधारण होते हैं । द्वन्द समास, तृतीया तत्पुरुष समास, अथवा तृतीया समास के अर्थ मे भी ये सर्बनाम नहि होते गौण अर्थ यथा अति सर्बाय जितं सर्बं येन तस्मै जितसर्बाय इत्यादि संज्ञा यथा, सर्बाय शिवाय; द्वन्द समासे यथा वर्णाश्रमेतराणाम्; तृतीया तत्पुरुषे यथा कालावराय; तृतीया असमासार्थे यथा कालेन पूर्बाय इत्यादि । मुख्य अर्थ इन्के ये हैं; (सर्ब विश्व) सब (उभ दोनों उभय) दो अवयव वाला (भवत्) आप (त्वत्, त्व) अन्य (एक) कोई (एकतर) दोनो मे से एक (सम) सब (सिम) पूरा (नेम) आधा (अन्य) दूसरा (अन्यतर) और कोई (इतर) दूसरा (कतर) दोनो में से कौन (कतम) बहुतों मे से कौन (एकतम) बहुतों मे से एक (यतर) दोनों मे से जो (यतम) बहुतों मे से जो (पूर्ब) पहिला, पूर्ब दिशा वा देश (पर) पिछला काल, दिशा वा देश (अवर) पिछला, पश्चिम (अपर) दूसरा, उरला (दक्षिण) दहना, दक्षिण दिशा (उत्तर) पिछला, उत्तर दिशा (अधर) निचला (अन्तर) बाहिर और आच्छादन (स्व) अपना, परज्ञाति वा धन नहि (यद्) जो (तद्, त्यद्) वह, सो (एतद्) यह (किम्) क्या, कौन (द्वि) दो (इदम्) यह (अदस्) वह (अस्मद्) मैं (युष्मद्) तुम ।

* पर द्वन्द होने से भी जस् विभक्ति मे सर्बादिगण विकल्प करके सर्बनाम होते हैं

(२) (वा) त्व

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सर्वादिगण

सर्व-शब्द

पुंलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

क्लीबलिङ्ग

प्रथमा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि

तृतीयादि विभक्तियों मे पुंलिङ्ग की न्याई।

स्त्रीलिङ्ग

प्रथमा	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वितीया	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
तृतीया	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
चतुर्थी	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
षष्ठी	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्
सप्तमी	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु

विश्व उभय त्व एक[1] एकतर सम सिम नेम[2] इन सब शब्दों के रूप सर्व शब्द की न्याई हैं

उभ शब्दः केवल द्विवचन है, इस्के रूप भी उक्त प्रकार। कोइयों के मत मे उभयशब्द का द्विवचन नहिं है।

(१) संख्या मे एक शब्द का द्विवचन, बहुवचन नहिं।

(२) पुंलिङ्ग जस् विभक्ति मे नेम का रूप विकल्प करके नेमाः भी होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भवत् शब्द के रूप वत प्रत्ययान्त शब्द की न्याईं होते हैं और स्त्रीलिङ्ग मे नदी शब्द की न्याईं यथा

(पुं) भवान्, भवन्तौ, भवन्तः, भवन्तं, भवन्तौ, भवतः, भवता, भवद्भ्याम् इत्यादि

(स्त्री) भवती, भवत्यौ, भवत्यः (क्लीब) भवत्, भवती, भवन्ति इत्यादि

त्वत् शब्द को कोई तकारान्त मानते हैं और कोई अकारान्त अर्थात् त्व; अकारान्त होने से इसके रूप सर्व शब्द की न्याईं होंगे, तकारान्त होने से भूभृत् की न्याईं

अन्यादि

अन्यादि शब्दों के रूप सर्वादि की न्याईं होते हैं; केवल क्लीब लिङ्ग की प्रथमा और द्वितीया के एकवचन मे अन्नम् के स्थान मे त् द् होजाता है यथा अन्यत्, अन्यद्, अन्यतरत् द् इत्यादि

पूर्वादि

पूर्वादि शब्द के रूप भी सर्वादि की न्याईं होते हैं केवल इतना विशेष है कि पुंलिङ्ग के जस्, ङसि, ङि, विभक्तियों मे विकल्प करके सामान्य अकारान्त शब्द की न्याईं भी रूप होते हैं यथा पूर्वे (वा) पूर्वाः पूर्वस्मात् (वा) पूर्वात्, पूर्वस्मिन् (वा) पूर्वे इत्यादि

यदादि

यदादि शब्द अकारान्त होजाते हैं यथा य, त, त्य, एत[(१)], क, इ और इनके रूप सर्वादि की न्याईं होते हैं; केवल इतना विशेष है कि क्लीबलिङ्ग की प्रथमा और द्वितीया के एकवचन मे अन्नम् के स्थान मे द् (वा) त् होता है पर किम् शब्द का किम हि रहता है और प्रथमा के एकवचन मे तद्, त्यद्, एतद् के पुंलिङ्ग मे सः स्यः एषः और स्त्री लिङ्ग मे सा स्या एषा ये रूप होते हैं।

द्वि[(२)] शब्द का केवल द्विवचन है ॥

(१) जब किसी वाक्य मे एक वार "एत" आचुका हो और द्वितीय वार उसकी फेर विवक्षा हो तो उस वार एत के स्थान मे एन भी होजाता है द्वितीया मे तृतीया के एकवचन मे और षष्ठी के द्विवचन मे अर्थात् (पुं) एनं, एनौ, एनान्, एनेन, एनयोः (स्त्री) एनां, एने, एनाः, एनया, एनयोः (क्लीब) एनत्, एनद्, एने, एनानि इत्यादि। यथा "एतेन व्याकरणमधीतमेनं हितोपदेशं पाठय"

(२) परन्तु अय, तय, तीय प्रत्यय लगने से द्वि, त्रि शब्द के सब वचन होते हैं, पर पुंलिङ्ग की जस् विभक्ति मे अय तय प्रत्ययान्त के रूप सर्व की न्याईं भी होंगे और नर की न्याईं भी यथा द्वये (वा) द्वयाः; त्रये (वा) त्रयाः; द्वितये (वा) द्वितयाः; त्रितये (वा) त्रितयाः और द्वितीय, तृतीय शब्दों के चतुर्थी, पञ्चमी और सप्तमी के एक वचन मे दो दो रूप होंगे यथा द्वितीयस्मै (वा) द्वितीयाय, द्वितीयस्मात् (वा) द्वितीयात्, द्वितीयस्मिन् (वा) द्वितीये, (स्त्री) द्वितीयस्यै (वा) द्वितीयायै, द्वितीयस्याः (वा) द्वितीयायाः, द्वितीयस्याम् (वा) द्वितीयायाम्।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इदमादि

इदमादि प्रत्येक शब्द के रूप पृथक् पृथक् हैं यथा;

इदम्-शब्द

पुंलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम्	इमौ	इमान्
तृतीया	अनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः	एषु

क्लीबलिङ्ग

प्रथमा, द्वितीया	इदम्	इमे	इमानि

तृतीयादि विभक्तियों मे पुंलिङ्ग की न्याई

स्त्रीलिङ्ग

	ए॰	द्वि॰	ब॰
प्रथमा	इयम्	इमे	इमाः
द्वितीया	इमाम्	इमे	इमाः
तृतीया	अनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पञ्चमी	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
षष्ठी	अस्याः	अनयोः	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	अनयोः	आसु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अदस्-शब्द

पुंलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	असौ	अमू	अमी
द्वितीया	अमुम्	अमू	अमून्
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
पञ्चमी	अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
षष्ठी	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु

क्लीवलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा, द्वितीया	अदः	अमू	अमूनि

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	असौ	अमू	अमूः
द्वितीया	अमूम्	अमू	अमूः
तृतीया	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
चतुर्थी	अमुष्यै	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
पञ्चमी	अमुष्याः	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
षष्ठी	अमुष्याः	अमुयोः	अमूषाम्
सप्तमी	अमुष्याम्	अमुयोः	अमूषु

युष्मद्-शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम् (१)	युवाम् (१)	यूयम् (१)
द्वितीया	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः

(१) च, वा, एवं, इन तीन अव्ययों के योग मे युष्मद् शब्द के-त्वा, ते, वाम्, वः और अस्मद् शब्द के मा, मे, नौ, नः, इन पदों का प्रयोग नहिं होता। यथा गुरुः कृपया त्वां मां च उपदिशति—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

	ए॰	द्वि॰	ब॰
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

अस्मद्-शब्द

प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

युष्मद् अस्मद् शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों मे एक से हैं

सकदाचिदपि तव मम च वचनं नस्पृशोति; तदाश्रयं विना युवयोरावयोश्च गतिर्नास्ति; तेनैवं क्रियमाणे युष्माकमस्माकंच का हानिः, इन स्थलों मे त्व मा च उपदिशति इत्यादि नहि होंगे। इसी प्रकार वा और एव के योग मे भी वाक्य के अथवा श्लोक पाद के आरम्भ मे भी इन पदों का प्रयोग नहि होता, यथा (वाक्यारम्भे) तव पुस्तकं गृहाण, मम पुस्तकं देहि, युष्माकं प्रीतिर्वर्द्धते, अस्माकं सकाशमागच्छ, इन स्थलों मे ते पुस्तकं गृहाण इत्यादि प्रयोग नहि होंगे। (श्लोकपादारम्भे) त्वां सरतति यत्नेन, मां सद्वेष्टि निरन्तरम्, तवैव दोषो नैवात्र, मम दोषोऽस्ति कश्चन। इस श्लोक मे त्वा, मा, ते, मे नहि होंगे गौण युष्मद्, अस्मद् शब्दों के रूप विलक्षण हैं यथा

(त्वामतिक्रान्तः) अतियुष्मत् शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अतित्वम्	अतित्वाम्	अतियूयम्
द्वितीया	अतित्वाम्	अतित्वाम्	अतित्वान्
तृतीया	अतित्वया	अतित्वाभ्याम्	अतित्वाभिः
चतुर्थी	अतितुभ्यम्	अतित्वाभ्याम्	अतित्वभ्यम्
पञ्चमी	अतित्वत्	अतित्वाभ्याम्	अतित्वत्
षष्ठी	अतितव	अतित्वयोः	अतित्वाकम्
सप्तमी	अतित्वयि	अतित्वयोः	अतित्वासु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(युवामतिक्रान्तः) अतियुष्मत् शब्द

प्रथमा	अतित्वम्	अतियुवाम्	अतियूयम्
द्वितीया	अतियुवाम्	अतियुवाम्	अतियुवान्
तृतीया	अतियुवया	अतियुवाभ्याम्	अतियुवाभिः
चतुर्थी	अतितुभ्यम्	अतियुवाभ्याम्	अतियुवभ्यम्
पञ्चमी	अतियुवत्	अतियुवाभ्याम्	अतियुवत्
षष्ठी	अतितव	अतियुवयोः	अतियुवाकम्
सप्तमी	अतियुवयि	अतियुवयोः	अतियुवासु

(युष्मानतिक्रान्तः) अतियुष्मत् शब्द

प्रथमा	अतित्वम्	अतियुष्माम्	अतियूयम्
द्वितीया	अतियुष्माम्	अतियुष्माम्	अतियुष्मान्
तृतीया	अतियुष्मया	अतियुष्माभ्याम्	अतियुष्माभिः
चतुर्थी	अतितुभ्यम्	अतियुष्माभ्याम्	अतियुष्मभ्यम्
पञ्चमी	अतियुष्मत्	अतियुष्माभ्याम्	अतियुष्मत्
षष्ठी	अतितव	अतियुष्मयोः	अतियुष्माकम्
सप्तमी	अतियुष्मयि	अतियुष्मयोः	अतियुष्मासु

(मामतिक्रान्तः) अत्यस्मद् शब्द

	एकव·	द्विव·	बहुव·
प्रथमा	अत्यहम्	अतिमाम्	अतिवयम्
द्वितीया	अतिमाम्	अतिमाम्	अतिमान्
तृतीया	अतिमया	अतिमाभ्याम्	अतिमाभिः
चतुर्थी	अतिमह्यम्	अतिमाभ्याम्	अतिमभ्यम्
पञ्चमी	अतिमत्	अतिमाभ्याम्	अतिमत्
षष्ठी	अतिमम	अतिमयोः	अतिमाकम्
सप्तमी	अतिमयि	अतिमयोः	अतिमासु

(आवामतिक्रान्तः) अत्यस्मद् शब्द

प्रथमा	एकव·	द्विव·	बहुवचन
प्रथमा	अत्यहम्	अत्यावाम्	अतिवयम्
द्वितीया	अत्यावाम्	अत्यावाम्	अत्यावान्
तृतीया	अत्यावया	अत्यावाभ्याम्	अत्यावाभिः
चतुर्थी	अतिमह्यम्	अत्यावाभ्याम्	अत्यावभ्यम्
पञ्चमी	अत्यावत्	अत्यावाभ्याम्	अत्यावत्
षष्ठी	अतिमम	अत्यावयोः	अत्यावाकम्
सप्तमी	अतिमयि	अत्यावयोः	अत्यावासु

(अस्मानतिक्रान्तः) अत्यस्मद् शब्द

प्रथमा	अत्यहम्	अत्यस्माम्	अतिवयम्
द्वितीया	अत्यस्माम्	अत्यस्माम्	अत्यस्मान्
तृतीया	अत्यस्मया	अत्यस्माभ्याम्	अत्यस्माभिः
चतुर्थी	अतिमह्यम्	अत्यस्माभ्याम्	अत्यस्मभ्यम्
पञ्चमी	अत्यस्मत्	अत्यस्माभ्याम्	अत्यस्मत्
षष्ठी	अतिमम	अत्यस्मयोः	अत्यस्माकम्
सप्तमी	अत्यस्मयि	अत्यस्मयोः	अत्यस्मासु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

संख्या वाचक

एक शब्द-एकवचनान्त

एक शब्द तीनो लिङ्गो मे सर्व शब्द की न्याई है

द्वि शब्द-द्विवचनान्त

	पुंलिङ्ग	क्लीवलिङ्ग और स्त्री लिङ्ग
प्रथमा	द्वौ	द्वे
द्वितीया	द्वौ	द्वे
तृतीया	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
चतुर्थी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
पञ्चमी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
षष्ठी	द्वयोः	द्वयोः
सप्तमी	द्वयोः	द्वयोः

त्रि शब्द-बहुवचनान्त

	पुंलिङ्ग	क्लीवलिङ्ग	स्त्री लिङ्ग
प्रथमा	त्रयः	त्रीणि	तिस्रः
द्वितीया	त्रीन्	त्रीणि	तिस्रः
तृतीया	त्रिभिः	त्रिभिः	तिसृभिः
चतुर्थी	त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः
पञ्चमी	त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः
षष्ठी	त्रयाणाम्	त्रयाणाम्	तिसृणाम्
सप्तमी	त्रिषु	त्रिषु	तिसृषु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चतुर् शब्द-बहुवचनान्त

	पुंलिङ्ग	क्लीबलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
प्रथमा	चत्वारः	चत्वारि	चतस्रः
द्वितीया	चतुरः	चत्वारि	चतस्रः
तृतीया	चतुर्भिः	चतुर्भिः	चतसृभिः
चतुर्थी	चतुर्भ्यः	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः
पञ्चमी	चतुर्भ्यः	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः
षष्ठी	चतुर्णाम्	चतुर्णाम्	चतसृणाम्
सप्तमी	चतुर्षु	चतुर्षु	चतसृषु

(पञ्चन्, षष्, सप्तन् और अष्टन् शब्द — तीनों लिङ्गों में समान हैं)

पञ्चन् शब्द-बहुवचनान्त

प्र.	द्वि.	तृ.	च.	पं.	ष.	स.
पञ्च,	पञ्च,	पञ्चभिः,	पञ्चभ्यः,	पञ्चभ्यः,	पञ्चानाम्,	पञ्चसु

षष् शब्द-बहुवचनान्त

प्र.	द्वि.	तृ.	च.	पं.	ष.	स.
षट्	षट्	षड्भिः	षड्भ्यः	षड्भ्यः	षण्णाम्	षट्सु

सप्तन् शब्द-पञ्चन् की न्याईं

अष्टन् शब्द-बहुवचनान्त

प्र.	द्वि.	तृ.	च.	पं.	ष.	स.
अष्टौ(वा)	अष्टौ,	अष्टाभिः	अष्टाभ्यः	अष्टाभ्यः	अष्टानाम्	अष्टासु
अष्ट	अष्ट	अष्टभिः	अष्टभ्यः	अष्टभ्यः		अष्टसु

नवन् दशन् प्रभृति सारे नकारान्त संख्यावाचक शब्दों के रूप पञ्चन् की न्याईं होते हैं।

इन के सिवा[1] और जितने संख्यावाचक शब्द हैं सबों के रूप उनके लिङ्ग और अन्त्य वर्ण के अनुसार यथा नियम होते हैं। यथा; विंश-

(१) ये शब्द भी समासान्त गौण होने से इनके रूप, लिङ्ग और अन्त्य वर्ण के अनुसार होते हैं यथा प्रियत्रिः मनुष्यः (अर्थात् तीन पियारे हों जिसको वह मनुष्य) प्रियत्रिः स्त्री, प्रियत्रिकुलं, प्रियतिस्रौ मनुष्यौ (अर्थात् जिन दो मनुष्यों को तीन स्त्रीयें प्यारी हों) प्रियतिस्रकुलं। समासान्त चतुर् को चत्वार् होजाता है सु, अम्, औ विभक्तियों मे यथा प्रियचत्वाः, प्रियचत्वारौ, प्रियचत्वारः; प्रियचत्वारम्, प्रियचत्वारौ, प्रियचतुरः; प्रियचतुरा इत्यादि।
समासान्त षष् शब्द के षान्त शब्द की न्याईं रूप होते हैं। नान्त संख्या वाचक शब्द उत्तर पद होने से, उनके रूप अनन्त शब्द की न्याईं होते हैं, पर समासान्त अष्टन् शब्द के रूप अनन्त की न्याईं भी होते हैं और विकल्प करके हाहा शब्द की न्याईं, और बहुवचन मे सामान्य अष्टन् की न्याईं भी होते हैं। यथा (प्र.) प्रियाष्टा, प्रियाष्टानौ, प्रियाष्टानः (अथवा) प्रियाष्टाः, प्रियाष्टौ, प्रियाष्टाः (वा) प्रियाष्टौ (द्वि) प्रियाष्टानम्, प्रियाष्टानौ, प्रियाष्टनः, (अथवा) प्रियाष्टाम्। प्रियाष्टौ प्रियाष्टाः प्रियाष्टान् (वा) प्रियाष्टौ, (तृ.) प्रियाष्टना, प्रियाष्टभ्याम्, प्रियाष्टभिः (अथवा) प्रियाष्टाभ्याम्, प्रियाष्टाभिः इत्यादि।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ति, षष्टि, सप्तति, अशीति, नवति प्रभृति शब्द स्त्रीलिङ्ग और इकारान्त हैं, इनके रूप मति शब्द की न्याई होते हैं। त्रिंशत्, चत्वारिंशत्, पञ्चाशत् शब्द तकारान्त और स्त्रीलिङ्ग हैं, इनके रूप भूभृत् शब्द की न्याई होते हैं। शत, सहस्र प्रभृति शब्द अकारान्त और क्लीव लिङ्ग हैं इनके रूप फल शब्द की न्याई होते हैं; विंशति अवधि सारे संख्या वाचक शब्द एकवचनान्त हैं, बहुवचन के विशेषण होने से भी इन्का एकवचनान्त हि प्रयोग होता है। यथा विंशतिः पुरुषाः, त्रिंशत् स्त्रियः, सहस्रं फलानि इत्यादि (१)

विशेष्य विशेषण

जिससे केवल किसी वस्तु वा व्यक्ति का बोध हो उसको विशेष्य पद कहते हैं। यथा, गृहम्, जलम्, वृक्षः, लता, नौका, वस्त्रम्, पुस्तकम्, पृथिवी, चन्द्रः, सूर्य्यः, नक्षत्रम्, शिशुः इत्यादि जिस से विशेष्य की अवस्था और गुण जाना जाय उस को विशेषण पद कहते हैं। विशेषण पद प्राय विशेष्य के पूर्व होता है; यथा नूतनं गृहम्, निर्म्मलं जलम्, फलवान् वृक्षः, पुष्पिता लता, भग्ना नौका, छिन्नं वस्त्रम्, उत्तमं पुस्तकं, गोलाकारा पृथिवी, शीतलः चन्द्रः, प्रदीप्तः सूर्य्यः, उज्ज्वलं नक्षत्रं, धार्म्मिकः पुरुषः, सुशीलः शिशुः।

विशेष्य शब्द कोई पुंलिङ्ग, कोई स्त्रीलिङ्ग और कोई क्लीव लिङ्ग हैं। विशेष्य शब्द का जो लिङ्ग, विशेषण शब्द का भी वही लिङ्ग होता है; यथा, सुन्दरः शिशुः, सुन्दरी कन्या, सुन्दरं गृहम्, उज्ज्वलः शशी, उज्ज्वलं नक्षत्रम्, उज्ज्वला दीपशिखा, बुद्धिमान् पुरुषः, बुद्धिमती स्त्री, निर्म्मला बुद्धिः, निर्म्मलं जलम् ॥

विशेष्य पद का जो वचन हो विशेषण पद का भी वही वचन होता है, अर्थात् विशेष्य पद एकवचनान्त हो तो विशेषण पद भी एकवचनान्त होता है, विशेष्य पद द्विवचनान्त हो तो विशेषण पद भी द्विवचनान्त होता है, विशेष्य पद बहुवचनान्त हो तो विशेषण पद भी बहुवचनान्त होता है, यथा बलवान् सिंहः, बलवन्तौ सिंहौ, बलवन्तः सिंहाः; वेगवती नदी, वेगवत्यौ नद्यौ, वेगवत्यः नद्यः, निविडं वनम्, निविडे वने, निविडानि वनानि।

विशेष्य पद की जो विभक्ति विशेषण पद की भी वही विभक्ति होती है; यथा सुन्दरः शिशुः, सुन्दरं शिशुम्, सुन्दरेण शिशुना, सुन्दराय शिशवे, सुन्दरात् शिशोः, सुन्दरस्य शिशोः, सुन्दरे शिशौ, निर्म्मलं जलम्, निर्म्मलेन जलेन, निर्म्मलाय जलाय, निर्म्मलात् जलात्, निर्म्मलस्य जलस्य, निर्म्मले जले,

(१) परन्तु जहां किसी संख्या का द्विगुण, बहुगुण अर्थ हो वहां द्विवचन, बहुवचन भी हो जाता है यथा विंशती, विंशतयः शतानि, सहस्राणि इत्यादि। कहीं [illegible] बहुवचन देखा जाता है यथा "पञ्चा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अव्यय शब्द

अव्यय शब्दों के उत्तर सब विभक्तियों का लोप होजाता है, और उनका रूप जैसा का वैसा रहता है (१) इसीलिये उनको अव्यय कहते हैं। अव्यय बहुत हैं, पर जो व्याकरणों में प्रायशः गिने गए हैं और जो व्यवहार में आते हैं उनको अर्थ के साथ नीचे लिखते हैं

अव्यय	अर्थ	अव्यय	अर्थ
अ	संबोधन, निषेध, अधिक्षेप, अभाव	अत्र	यहां
		अथ, अथो	इससे, अनन्तर, अब
अकस्मात्	अचानचक	अथकिम्	फेर कैसे, हां
अग्रतस्	पहिले	अथवा	वा, या
अग्रे	पहिले	अद्द (३)	आश्चर्य प्रभृति द्योतक
अङ्ग	सम्बोधन	अद्धा	सचमुच
अङ्के	सम्बोधन, पुनरर्थ	अद्य	आज
अचिरम्, अचिरात्, अचिरेण	शीघ्र	अद्यत्वे	अब
अजस्रम्	लगातार	अध, अधस्, अधस्तात्	नीचे
अज्ञानतस्	नजानकर		
अञ्जसा	शीघ्र	अधि (३)	अधिकार, गति (४)
अतस्	इससे, इसकारण	अधुना	अब
अति (३) (२)	अतिक्रम	अनु (३)	पश्चात्
अतीव	बहुत		

(१) पर अन्तस् र् का विसर्ग तो हो हि जाता है पदान्त अथवा हल परे होने से
(२) [illegible]

(१) इस अव्यय के आगे करण क्रिया लगता है
(२) अपि के अकार का कहीं विकल्प करके लोप भी होजाता है यथा अपिधानं वा पिधानं वा सम्भावना, निन्दा, प्रश्न, ज्ञा और समुच्चय अर्थों में अपि की उपसर्ग संज्ञा नहिं होती
(३) इस अव्यय के आगे हो जाता लगता है भूषण अर्थ में
(४) अव के आदि अकार का कहीं विकल्प करके लोप भी होजाता है यथा अवगाहः (वा) वगाहः

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ऋधक्	सत्यम्
ॠ	वाक्यारम्भ, रक्षा, निन्दा, भय
ऌ	देवमाता, भूमि, पर्वत
ॡ	देवनारी, नार्यान्या, माता
ए	सम्बोधन, स्मृति, असूया, अनुकम्पा, आमन्त्रण
एकत्र	एकस्थान में, इकट्ठे
एकदा	एकसमय
एकधा	एकबार, एकप्रकार
एकपदे	अकस्मात्, एकबारहि
एतर्हि	अब
एव	हि, केवल, भी
एवम्	ऐसे, इसीप्रकार, और
एहि	आओ, आरम्भकरो
ऐ	सम्बोधन, स्मरण, आमन्त्रण
ओ	सम्बोधन, स्मरण, अनुकम्पा
ओं	प्रणव, ईश्वरका एकशब्द, हां
औ	सम्बोधन, विरोध, निर्णय
कम्	जल, शिर, सुख, मङ्गल
कच्चन कच्चित्	क्या जो, क्योंकर जो, जो कभी
कथम्	कैसे, क्योंकर
कथञ्चन कथञ्चित्	किसी प्रकार से
कथन्नाम	क्योंकर नव
कथाच	अनादर

कदा	कब
कदाचित्	कभी
कर्हि	कब
कर्हिचित्	किसी समय
कवाली केवाली केवासी	(भूतः) मारा गया
का कु	(१) खोटा अर्थ द्योतक
किङ्किल	क्या सच
किन्नु	और
किञ्चन किञ्चित्	कुछ
किम्	प्रश्नबोधक शब्द
किन्तु	परन्तु, पर, भी
किन्नु	परक्या, पर क्योंकर
किमु	क्या
किमु किमुत	तो क्या
किमुत	या क्या
किमुह	क्या, क्योंकर
किंवा	अथवा, या
किंस्वित्	स्याद्, या ऐसा होगा, या शायद
किल	निस्सन्देह, निश्चय, पादपूर्णार्थ शब्द
कुतस्	कहां से क्योंकर
कुत्र	कहां

(१) ये नाम के आगे लगते हैं, यथा, कापुरुष, कोष्ण, कुकर्म

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुत्रचित्	कहीं
कुविद्	बहुत, प्रशंसा
कुषत् / कूपत्	बहुत अच्छे प्रकार से
कृतम्	बहुत हुआ, बस
क्व	कहां
क्वचित्	कहीं
क्षमा	सहिष्णुता, अपराध मार्जना
खलु	निश्चय, पादपूरणार्थ शब्द
च	और, पादपूरणार्थ शब्द
चनस्	अन्न
चन / चित् (१)	सामान्य अर्थ द्योतक प्रत्यय
चिरम् (२)	बहुत काल
चिरात्राय	बहुत काल से
चेत्	जो
चैव	और भी
जातु	कभी
जोषम्	चुपचाप, सुख से
ज्योक्	शीघ्र, भूयः
झगिति / झटिति	शीघ्र
तत (तद्)	इसलिये, तब
ततस्	वहां से
तत्र	वहां

तथा	वैसे, तैसे, और
तथाहि	जैसे दिखलाया गया
तथैव	वैसे हि, उसी प्रकार
तदा / तदानीम्	तब
तस्मात्	उस लिये
तर्हि	तब
तावत्	सारा, यहां तक, इतना
ताली (भूतः)	फैला हुआ
तिरस् / तिर्यक्	टेढ़ा, तिर्छा
तु	तो, पर पादपूरणार्थ शब्द
तुम्	किसी को तुम कहना
तूष्णीकाम् / तूष्णीम्	चुपचाप
तेन	तिस से, तिस लिये
त्वै	पर, क्यों कर, विशेष, वितर्क
दिवा	दिन
दिष्ट्या	भाग्य से
दुःसमम् / दुष्ठु	बुराई से, कष्ट से
दुर् (३)	दुर्गति, कष्ट
दूरम्	दूर
दोषा	सन्ध्या के समय
घ	हिंसा, प्रातिलोम्य पादपूरणार्थ शब्द
द्वै	वितर्क
द्राक् / द्राङ्	शीघ्र

(१) ये किम् प्रभृति शब्दों के आगे लगते हैं।

(२) विभक्त्यन्त होकर भी यह शब्द अव्यय होता है: यथा, चिराय, चिरेण, चिरात्, चिरस्य, चिरे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

धिक्	धिक्कार, घृणा
न, नञ्	नहिं, न
नकिम्, नकीम्, नकिर्	वर्ज्जन, कुछ नहिं
नक्तम्	रात
नतु	पर नहिं
ननु	जो
नमस्	नमस्कार
नवा	या नहिं, जो नहिं
नवरम्	केवल
नह	न, प्रत्यारम्भ
नहि	न
नाना	बहुतेरे
नाम	प्रकाश्य, सम्भावना, क्रोध, उपगम, कुत्सन, निन्दन, विस्मय, स्मरण, विकल्प
नास्ति	न होना
नि (उ)	बहुत करके, बीच, नीचे, विरुद्ध
निकषा	निकट
निकामम्	इच्छापूर्वक, नवीन, बहुत
निर् (उ)	निर्गत, रहित
नीचैस्	नीचे, अल्प
नु	जो, सन्देह, पादपूरणार्थशब्द

नुकम्	वा, या
नुवा	शायद, या जो
नूनं	निश्चय
नो	नहिं
नोचेत्	जो नहिं
न्वै	शायद, नुवा
परम्	पीछे
परन्तु	किन्तु
परश्वस्	परसों
परा (उ)	उलटा, ऊपर
परि (उ)	चारों ओर
परितस्	चारों ओर से
परेद्यवि, परेद्युस्	परदिन
पर्य्याप्तम्	बहुत होगया, पूर्ण हुआ
पशु	अच्छा, ठीक
पशु (भूतः)	मारा गया
पश्चात्	पीछे
पश्य, पश्यत	देखो
पाट्, प्याट्	सम्बोधन
पाणौ (करणं)	विवाह
पुनर्	फेर
पुरतस्, पुरस्, पुरस्तात्	साम्हने, आगे, पहिले
पुरा	पहिले, पूर्व

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पूर्वेद्युस	पहिलेसे	बहिस्	बाहर
पूर्वेद्युस	पहिलेदिन,कलसे पहिलादिन	भवन्	होवो
पृथक्	अलग,स्वतन्त्र	भगोस्, भोस्	सम्बोधन
प्र (उ)	पहिला;प्रकर्ष	भाजक्	शीघ्र
प्रगे	प्रातःकाल	भुवर्	अन्तरीक्षलोक
प्रतान्	विस्तारसे	भूर्	पृथिवी
प्रताम्, प्रशाम्	थकावट	भूयस्	फेर,वारम्वार,बहुत
		भृशं	बहुत
प्रशान्	सामर्थ्य	मनाक्	थोड़ा
प्रति (उ)	फेर,उलटा,पर,को	मंक्षु	शीघ्र
प्रतिदिनम्	दिन दिन,हररोज़,	मा,माङ्, मास्म	मत,नहि,न
प्रत्युत	उलटा,उसके विरुद्ध		
प्रभाते	प्रातःकाल	माकिम्, माकीम्, माकिर्	नहि,वर्जन
प्रवाह्णिका, प्रवाहुकं	एकसमय,ऊर्द्ध		
प्रसह्य	बलसे	माचिरम्	देरनहो
प्राक्	पहिले	मिथस्, मिथो	आपसमे,परस्पर
प्रातर्	प्रातःकाल		
प्रादुस् (भूत)	प्रकट होना	मिथुर्	जोड़ा
प्राध्वम्	विरुद्ध,लगातार	मिथ्या	झूठ
प्राध्वम् (कृत)	यथाक्रम बांधागया	मुधा	वृथा
प्रायस्	बहुतकरके	मुहुस्	वारम्वार
प्राह्णे	दुपहरके पहिले	मृषा	झूठ
प्रेत्य	मृत्युकेपीछे, परलोकमे	यत (यद्)	जो
फट्	तन्त्रका शब्द	यतस्	जहांसे, जिसलिये
बदि	कृष्णपक्ष	यत्र	जहां
बलवत्, बलात्	बलपूर्वक	यथा	जैसे, अनादर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यथा कथाच	किसीप्रकारसे, कभी
यथाक्रम्	एकके पीछे दूसरा
यथा तथा	ठीक, जहां तहां
यदा	जब
यद्वा	वा
यदि	जो
यावत्	जितना, सारा
युक्	बुरा
युक्तम्	ठीक, उचित
युगपत् (पद)	एकसाथ, एकसमय, इकट्ठे
युत्	बुरा
येन	जिसकरके, जिसहेतु
रात्रौ	रातको
रे रै	अवज्ञापूर्वक सम्बोधन
वत्	न्याई, तुल्य
वत	खेद
वषट्	हवनका शब्द
वा	अथवा, या, विकल्प करके
वाह्	हवनका शब्द
वद्	सदृश, जैसा
वाव	केवल
वि (उ)	विशेषकरके, विगत
विना	सिवा, छरते
विभाषा	विकल्पकरके

विष्वक्	सारेमें
विषु	नाना
विहायसा	आकाशमें
वृथा	अनर्थक, मुधा
वेट्	जो, हवनका शब्द
वै	सचमुच, पादपूरणार्थ शब्द
वौषट्	हवनका शब्द
शनैस्	धीरे धीरे
शश्वत्	सदा, नित्य
शुकम्	शीघ्र
श्रद्धा (करणं)	मानना, विश्वासकरना
श्रौषट्	हवनका शब्द
श्वस्	कल, अनागत दिवस
सकृत्	एकबार
सत्तु	शीघ्र
संवत्	बरस
सत्रा सह सहितम् साकम् सार्द्धम्	साथ
सत्	अच्छा, यथार्थ
सत् (कार)	शिष्टाचार, सन्मान
सततम्	सदा
सदा	सर्वदा, नित्य
सद्यस्	त्वरित

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सनत्, सना, सनात्	सदा, नित्य
सनुतर्	अन्तर्द्धान
सपदि	त्वरित, शीघ्र
सम् (३)	सम्यक्, मिलकर
समन्ततस्	चारों ओरसे, पूरा
समम्	समान, साथ
समया	निकट
समीपम्, समीपे	निकट
समीचीनम्	अच्छा, पूरा
समुपजोषम्	आनन्दसे
सम्प्रति	अब, हालमे
सम्मुखम्	साम्हने
सम्यक्	अच्छा, पूरा
सर्वतस्	सबओर, सबप्रकारसे
सर्वत्र	सबस्थानमे
सर्वदा	सदा
सहसा	शीघ्र, एकबारहि, हड़वड़ीसे
साक्षात्	प्रकाश्यरूपसे, प्रत्यक्ष

साक्षात् (भावः) प्रकाश्य होना	
साचि	टेढ़ेपनसे
सामि	आधा, समान
साम्प्रतम्	अब, ठीकसमयपर
सायम्	सायङ्काल
सु (३)	अच्छा
सुकम्	बहुत
सुचिरम्	बहुतदेरसे
सुदि	शुक्लपक्ष
सुष्ठु	अच्छा
सूपत्	प्रश्न, प्रशंसा (वाचकशब्द)
स्म	भूतकालद्योतक वा पादपूरणार्थक शब्द
स्यात्	जो होवे
स्वधा	पितरोंको दानका शब्द
स्वयम्	आप
स्वर्	स्वर्ग
स्वस्ति	मङ्गल
स्वाहा	देवताओंको हविदान का शब्द
स्वित् (१)	प्रश्न वा सन्देह द्योतक प्रत्यय
स्वी (करणं)	मानना, अङ्गीकार

(३) उपसर्गों के वे अर्थ लिखेगये हैं जो वे प्रायशः द्योतन करते हैं, वस्तुतः उन्के अपने अर्थ नहि, वे धातुओं के साथ मिलकर उन धातुओं के अनेक प्रकार के अर्थ करदेते हैं। कोई २ उपसर्ग स्वतन्त्र भी लगता है, यथा, अति, अधि, अनु, अन्तर, अप, अभि, आ, उप, परि और प्रति।

(१) यह और अव्ययों को लगता है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ह	पादपूरणार्थक शब्द, खेद
हा	हर्ष विषाद विस्मय-द्योतक शब्द
हाहा, हाहो	खेद
हन्त	हर्ष, विषाद, अनुकम्पा, वाक्यारम्भ
हि	हि, निश्चय, हेतु, पादपूरणार्थक शब्द
हिम्	चौंक जानेका शब्द
हिरुक्	सिवा, बिना, वर्ज्जन
ही	विस्मय, दुःख, हेतु
हुम्	असन्तोषप्रकाशक हुङ्कार, मन्त्रका शब्द
ह्रीं	मन्त्र का बीजमन्त्र

हे	सम्बोधन
हेतोः, हेतौ	इसलिये, इसकारण
हे, हो, हंहो	सम्बोधन
हुं	मन्त्रका शब्द
ह्यस्	कल्ह, विगतदिवस
इत्यादि (१)	

इति प्रथमभागः

(१) कृदन्त के क्त्वा, तोसुन्, कसुन्, मान्त, ए, ऐ, ओ, औ वर्णान्त प्रत्यय और तद्धित के थाल्, च्वि, शस्, वत्, कृत्वसुच् प्रभृति प्रत्यय जिन शब्दों के आगे लगें वे सब अव्यय होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सरलव्याकरण

संस्कृतका

हिन्दीभाषामें

श्रीनवीनचन्द्ररायकर्तृकप्रणीत

द्वितीयभाग

मित्रविलासयन्त्रलाहौरमें

पण्डितश्रीमुकुन्दरामयन्त्राध्यक्षने छापा

सम्वत् १९२८ विक्रम सन १८७२ ईस्वी

द्वितीयसंस्करण १५०० कापी

मूल्य ।/

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

द्वितीयभाग

अथ आख्यात प्रक्रिया।

१ क्रियावाचक शब्दोंको धातु कहते हैं। यथा भू, स्था, गम, दृश, रुद, हृष, इत्यादि। धातुके उत्तर दश विभक्तियें होतीहैं। यथा लट् १, लोट् २, लङ् ३, विधिलिङ् ४, लृट् ५, लृङ् ६, लुट् ७, आशीर्लिङ् ८, लिट् ९, लुङ् १०। विभक्तियोंके तीन पुरुष होतेहैं, प्रथम १, मध्यम २, और उत्तम ३। अस्मद् शब्दके योगमे उत्तम पुरुष लगताहै, युष्मद्मे मध्यम और तद्भिन्न सारे शब्दोंमे प्रथम पुरुष। हरएक पुरुषमे तीन तीन वचन होतेहैं एकवचन, द्विवचन, बहुवचन॥

२ सारी विभक्तियें दोभागों मे विभक्तहैं। प्रथमभागको परस्मैपद कहते हैं, दूसरे को आत्मनेपद। प्रत्येक विभक्ति के अठारे आकार हैं, परस्मैपदमे नव, और आत्मने पदमे नव। इसी लिये सब विभक्तियों के एकसौ अस्सीस्वरूपहैं, नव्वे परस्मैपदमे, और नव्वे आत्मनेपदमे। एकसौ अस्सी आकारोंके प्रत्येक को भी विभक्ति कहते हैं॥

(१) धातु की विभक्तियोंको तिङ् भी कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

विभक्तियों की आकृति

		प्रथम पुरुष			मध्यम पुरुष			उत्तम पुरुष			काल
		एक.	द्वि.	बहु.	एक.	द्वि.	बहु.	एक.	द्वि.	बहु.	
लट्	परस्मै.	ति	तः	अन्ति	सि	थः	थ	मि	वः	मः	वर्तमाने
	आत्मने.	ते	आते	अन्ते	से	आथे	ध्वे	ए	वहे	महे	
लोट्	परस्मै.	तु(१)	ताम्	अन्तु	हि(१)	तम्	त	आनि	आव	आम	आशीः
	आत्मने.	ताम्	आतां	अन्ताम्	स्व	आथां	ध्वम्	ऐ	आवहै	आमहै	प्रेरणयोः
लङ्	परस्मै.	त्	ताम्	अन्	ः	तम्	त	अम्	व	म	अतीत
	आत्मने.	त	आतां	अन्त	थाः	आथां	ध्वम्	इ	वहि	महि	अनद्यतने
विधि	परस्मै.	यात्	यातां	युः	याः	यातम्	यात	याम्	याव	याम	विधि
लिङ्	आत्म.	ईत	ईयातां	ईरन्	ईथाः	ईयाथां	ईध्वम्	ईय	ईवहि	ईमहि	संभावनयोः
लृट्	परस्मै.	स्यति	स्यतः	स्यन्ति	स्यसि	स्यथः	स्यथ	स्यामि	स्यावः	स्यामः	भविष्यति
	आत्म.	स्यते	स्येते	स्यन्ते	स्यसे	स्येथे	स्यध्वे	स्ये	स्यावहे	स्यामहे	
लृङ्	परस्मै.	स्यत्	स्यतां	स्यन्	स्यः	स्यतम्	स्यत	स्यम्	स्याव	स्याम	क्रियातिक्रमे
	आत्म.	स्यत	स्येतां	स्यन्त	स्यथाः	स्येथां	स्यध्वं	स्ये	स्यावहि	स्यामहि	कश्चिद्विवक्षौ
लुट्	परस्मै.	ता	तारौ	तारः	तासि	तास्थः	तास्थ	तास्मि	तास्वः	तास्मः	श्वोभा
	आत्म.	ता	तारौ	तारः	तासे	तासाथे	ताध्वे	ताहे	तास्वहे	तास्महे	विन्यर्थे
आशी	परस्मै.	यात्	यास्तां	यासुः	याः	यास्तं	यास्त	यासं	यास्व	यास्म	आशिषि
लिङ्	आत्म.	सीष्ट	सीयास्तां	सीरन्	सीष्ठाः	सीयास्थां	सीध्वं	सीय	सीवहि	सीमहि	
लिट्	परस्मै.	अ	अतुः	उः	थ	अथुः	अ	अ	व	म	परोक्षे
	आत्म.	ए	आते	इरे	से	आथे	ध्वे	ए	वहे	महे	अतीते
लुङ्	परस्मै.	त्	ताम्	अन्	ः	तम्	त	अम्	व	म	भूत
	आत्म.	त	आतां	अन्त	थाः	आथां	ध्वम्	इ	वहि	महि	सामान्ये

धातुविभाग।

१ संस्कृतधातु सारे दश गणोंमे विभक्त हैं; यथा तुदादि, भ्वादि, दिवादि, स्वादि, तनादि, क्र्यादि, रुधादि, अदादि, ह्वादि, और चुरादि॥

(१) तु और हि के स्थानमे तात् भी विकल्प करके होता है आशिषि अर्थमे

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साधारणनियम

४ विभक्तिका अकार एकार परे होनेसे पूर्व वर्त्ती अकारका लोप होताहै। यथा भव + अन्ति = भवन्ति, सेव + ए = सेवे।

५ विभक्तिका म और व परे होनेसे पूर्व वर्त्ती अकारको आ होताहै यथा भव + वः = भवावः, भव + मः = भवामः।

६ अकारके परस्थित आते, आथे, आताम्, आथाम्, इन विभक्तियों के आकारके स्थान मे इकार होताहै। यथा, सेव + आते = सेवेते, सेव + आथे = सेवेथे, सेव + आताम् = सेवेताम्, सेव + आथाम् = सेवेथाम्।

७ अकारके परस्थित विधिलिङ् के युः के स्थानमे इयुः, और याम् के स्थानमे इयम् होताहै। तद्भिन्न सारे या भाग के स्थानमे इ होताहै। यथा भव + युः = भवेयुः, भव + याम = भवेयम्, भव + यात् = भवेत्। भव + यातम् = भवेतम।

८ अकार और उ, नु, इन आगमों के पर स्थित हि विभक्तिका लोप होताहै। यथा भव + हि = भव, कुरु + हि = कुरु, शृणु + हि = शृणु। परन्तु नु किसी और वर्ण के साथ संयुक्त होनेसे हिकालोप नहिं होता। यथा, आप्नु + हि = आप्नुहि।

९ वर्गोका प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, वर्ण अथवा श, ष, स, ह, इन वर्णोंके परस्थित हिके स्थान मे धि होताहै। यथा, विद् + हि = विद्धि।

१० अकार भिन्न वर्णोके परस्थित अन्त, अन्ताम्, अन्ते, इन विभक्तियोंके न् को लोप होताहै। यथा; आस् + अन्त = आसत, आस + अन्ताम् = आसताम्, आस् + अन्ते = आसते। धातु अभ्यस्त(१) होनेसे अन्ति और अन्तु विभक्तियोंके न को भी लोप होताहै। यथा; जुहु + अन्ति = जुह्वति, जुहु + अन्तु = जुह्वतु।

११ अभ्यस्त धातु के परस्थित लङ् के अन् के स्थानमे उः होताहै। वह उः परे होनेसे अन्त्य स्वर को गुण होताहै; यथा, अजुहु + अन् = अजुहवुः।

(१) जिनधातुओंका द्वित्व होताहै उन्हे और जक्षादिको अभ्यस्त करतेहैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१२ लङ्, लुङ्, और लृङ्, विभक्ति परे होनेसे धातु के आदिमे अकार होताहै। यथा, अभवत्, अभूत्, अभविष्यत्। परन्तु मा और मास्म शब्द के योग मे नहिं होता। यथा, मा भवत्। मास्मभूत्।

१३ लङ्, लुङ्, और लृङ्, विभक्तियों मे धातु के आदिस्थित इ ई के स्थान मे ऐ, उ ऊ के स्थान मे औ, और ऋ के स्थान मे आर् होताहै। यथा, (इन्द) ऐन्दीत्, (ईह) ऐहिष्ट, (उख) औखीत्, (ऊह) औहिष्ट, (ऋच्छ) आर्छत्। परन्तु मा और मास्म शब्द के योगमे नहिं होता; यथा, मा ईहिष्ट, मास्म ऋच्छत्।

१४ व्यञ्जन वर्णसे परे लङ् के त्, और स्:, इन दोनो विभक्तियों का लोप होताहै। यथा; अवेद् + त् = अवेत्।

१५ स्वर परे होनेसे धातुके अन्तस्थित इ, ई, के स्थानमे इय् और उ, ऊ, के स्थानमे उव् होताहै[1] (१ भा॰ २८ पृ॰ १ प॰)। यथा; अधि + इ + अते = अधीयते, इ + आय = इयाय, स्तु + अन्ति = स्तुवन्ति, उ + ओष = उवोष।

१६ जिस धातुमे एकसे अधिक स्वर हों[2] उसके इ ई के स्थानमे इय् नहिं होता[3]। यथा; दि धी + आते = दिध्याते, निनी + ए = निन्ये। (१भा॰ २९पृ॰ ५प॰)

१७ च्, छ्, ज्, श, ष्, द्, ह्[4], ञ्, इन सब वर्णोंसे परे स होनेसे दोनो मिलकर क्ष् होजाताहै। यथा; वच् + स्यति = वक्ष्यति, प्रच्छ + स्यति = प्रक्ष्यति, यज + स्यति = यक्ष्यति, वश् + सि = वक्षि, द्वेष + सि = द्वेक्षि, चक्ष् + से = चक्षे, रोह् + स्यति = रोक्ष्यति, जक्ष् + सन्तुः = जक्षन्तुः

१८ छ् अथवा श[5] ष् के परे त् होनेसे दोनो मिलकर ष्ट् होताहै और थ होनेसे ष्ठ होताहै। यथा; प्रच्छ् + ता = प्रष्टा, दृश् + ता = द्रष्टा, ददृश् + थ = ददृष्ठ।

१९ छ्, श, ष, त से परे ध् होनेसे, छ् श ष् त के स्थानमे ड् और ध के स्थानमे ढ् होताहै। यथा; अप्रच्छ् + ध्वम् = अप्रड्ढ्वम्, अवेश + ध्वम् =

(१) जो गुण वृद्धि होने वाले धातु हों तो नहिं होता। (२) अभ्यस्त होनेसे जो एकसे अधिक स्वर विशिष्ट होजावे तो उसका भी इस नियम मे ग्रहण है (पर इ धातु को छोड़कर) (३) इ ई संयुक्त वर्णोंसे मिले होनेसे इय् होताहै। (४) पर नहू के हकारको ध होताहै त, थ, ध, स परे होने से। (५) प्रच्छ के च् का लोप होताहै तादि परे होनेसे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अवेड्ढम्, अवेष् + ध्वम् = अवेड्ढम्, चक्ष् + ध्वे = चड्ढ्वे।

२० च्, ज्, के स्थानमे क् होताहै त्[१] अथवा थ् परे होनेसे, और ग् होताहै ध् परे होनेसे। यथा; मोच् + ता = मोक्ता, योज् + ता = योक्ता, निज्+ध्वे=निग्ध्वे

२१ परन्तु मृज्, सृज्, यज्, भ्रस्ज् इन धातुओंके जकार से परे त् होनेसे दोनो मिलकर ष्ट होताहै, थ होने से ष्ठ होताहै, और जो ध् हो, तो ज् के स्थानमे ड् और ध् के स्थानमे ढ् होताहै। यथा; यज + ता = यष्टा, असृज् + थाः = असृष्ठाः; अयज् + ध्वं = अयड्ढ्वम्, भ्रस्ज् + ता = भ्रष्टा॥

२२ हकारसे परे त्, थ्, ध्, के स्थानमे ढ होताहै और हकार का लोप होताहै लुप्त हकारके पूर्वस्थित ह्रस्व स्वर[२] दीर्घ होते हैं[१] यथा; अगुह् + तः = अगूढः, लिह् + तः = लीढः।

२३ परन्तु दह्, दिह्, दुह्, धातुओंके हकारसे परे त्, थ्, अथवा ध् होनेसे, दोनो मिलकर ग्ध् होताहै। यथा; दह् + ता = दग्धा, दिह् + ता = दिग्धा, दुह् + ता = दुग्धा, अदह् + थाः = अदग्धाः।

२४ और मुह्, द्रुह्, स्नुह्, स्निह् धातुओं के हकारसे परे त्, थ्, अथवा ध् होने से दोनो मिलकर ग्ध होताहै; अथवा हकार का लोप होताहै, और त्, थ्, ध्, के स्थानमे ढ होताहै, और लुप्त हकारका पूर्वस्थित ह्रस्व स्वर दीर्घ होताहै। यथा; मुह् + तः = मुग्धः, मूढः।

२५ विभक्ति का स् अथवा ध्[४] परे होनेसे, अथवा विभक्ति का लोप होने से, धातुके आदि ग्, द्, ब्, को यथाक्रम घ्, ध्, भ्, होताहै जो उसका अन्त्यवर्ण ह्, ध, (वा) भ् हो। यथा; गाह् + स्यते = घास्यते, दह् + स्यति = धक्ष्यति, दम्भ् + सति = धीप्सति, बुध् + स्यते = भोत्स्यते।

२६ स् को त् होताहै ऌट्, ऌङ्, लृङ् और सन् प्रत्ययके स् परे होनेसे और द् अथवा लोप होताहै विभक्ति का ध् परे होनेसे यथा वस् + स्यामि = वत्स्यामि, असेविस् + ध्वम् = असेविड्ढ्वम् (वा) असेविध्वम्।

२७ धकारसे परे त् थ् अथवा ध होने से दोनो मिलकर द्ध होताहै। यथा, सिध् + तम् = सिद्धम्।

२८ भकार से परे त् थ् अथवा ध् होनेसे दोनो मिलकर ब्ध होताहै। यथा;

(१) भ्रस्ज्के अन्त्य ज् का लोप होताहै तादि परे होनेसे। (२) ऋकारभिन्न। यथा; तृह् + तः = तृढः।
(२) सह् और वह् धातुओंके लुप्त हकारके पूर्वमें अकारको ओकार होताहै। (४) अन्त्यवर्णका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आरभ् + तम् = आरब्धम्, लभ् + तम् = लब्धम्।

२९ दको त् होता है त थ् स परे होनेसे। यथा; वेद् + ता = वेत्ता, विद् + थः = वित्थ, छेद् + स्यति = छेत्स्यति।

३० ध को त् और भ् को प् होता है स् परे होनेसे। यथा; सेध् + स्यति = सेत्स्यति, लभ् + स्यते = लप्स्यते।

३१ उत् उपसर्गसे परे स्था और स्तम्भ धातुके स् को लोप होता है यथा; उत्थानम्, उत्तम्भनम्।

३२ पदान्त र् और स् के स्थानमे : (विसर्ग) होता है।

३३ पदान्त वर्ग के तृतीय और चतुर्थ वर्ण के स्थानमे प्रथम वर्ण होता है

३४ पदान्त च् और ज् के स्थानमे क् होता है[1]

३५ पदान्त छ् श ष् और ह् के स्थानमे ट् होता है।

३६ परन्तु दकारादि धातुके पदान्त ह् के स्थानमे क् होता है।

३७ लट्, लोट्, लङ्, विधि लिङ्, भिन्न विभक्तियोंमे एकारान्त, ऐकारान्त, और ओकारान्त धातु आकारान्त होजाते हैं।

कर्तृवाच्य

कर्तृ वाच्यमे धातु तीन प्रकारके होते हैं; परस्मै पदी, आत्मने पदी और उभयपदी। परस्मै पदी धातुके उत्तर परस्मै पद की विभक्तियें लगती हैं, आत्मने पदी धातुके उत्तर आत्मनेपद की, और उभय पदीके उत्तर उभय पदकी। कर्तृवाच्य होने से कर्तृ पदमे विभक्ति का जो वचन हो क्रिया पदमे भी विभक्तिका वहि वचन होता है।

लट्, लोट्, लङ्, (विधि) लिङ्.

लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, इन चारों विभक्तियों मे प्रत्येक गणकी धातुओंके भिन्न २ प्रकार रूप होते हैं इसी निमित्त इन चारों विभक्तियोंमे हर एक गण के धातुओंके रूप पृथक् पृथक् दिखलाये जावेंगे, और २ विभक्तियोंमे गण भेद देतुक रूपका भेद नहिं होता, इसीलिये उन प्रत्येक विभक्तियों मे सब गणके धातुओंके रूप इकट्ठे दिखाये जावेंगे।

(१) परन्तु पदान्त सृज् धातुके ज् के स्थानमे ट् होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुदादिगण

२८ लङादि चारों विभक्तियों मे तुदादिगणीय धातुओं के उत्तर अ होता है। अकार अन्त्य वर्ण मे मिलजाता है।

स्पृश् धातु (परस्मैपदी) अर्थ, छूना

विभक्ति	प्रथमपुरुष			मध्यमपुरुष			उत्तमपुरुष		
	ए.	द्वि.	ब.	ए.	द्वि.	ब.	ए.	द्वि.	ब.
लट्	स्पृशति	स्पृशतः	स्पृशन्ति	स्पृशसि	स्पृशथः	स्पृशथ	स्पृशामि	स्पृशावः	स्पृशामः
लोट्	स्पृशतु	स्पृशतां	स्पृशन्तु	स्पृश	स्पृशतं	स्पृशत	स्पृशानि	स्पृशाव	स्पृशाम
लङ्	अस्पृशत्	अस्पृशतां	अस्पृशन्	अस्पृशः	अस्पृशतं	अस्पृशत	अस्पृशम्	अस्पृशाव	अस्पृशाम
विधिलिङ्	स्पृशेत्	स्पृशेताम्	स्पृशेयुः	स्पृशेः	स्पृशेतम्	स्पृशेत	स्पृशेयम्	स्पृशेव	स्पृशेम

विज् धातु (आत्मनेपदी) अर्थ, भयकाना और चलना

लट्	विजते	विजेते	विजन्ते	विजसे	विजेथे	विजध्वे	विजे	विजावहे	विजामहे
लोट्	विजताम्	विजेताम्	विजन्तां	विजस्व	विजेथां	विजध्वम्	विजै	विजावहै	विजामहै
लङ्	अविजत	अविजेतां	अविजन्त	अविजथाः	अविजेथां	अविजध्वं	अविजे	अविजावहि	अविजामहि
विधिलिङ्	विजेत	विजेयातां	विजेरन्	विजेथाः	विजेयाथां	विजेध्वम्	विजेय	विजेवहि	विजेमहि

तुद् धातु (उभयपदी) अर्थ, पीड़ना।

लट्	तुदति	तुदतः	तुदन्ति	तुदसि	तुदथः	तुदथ	तुदामि	तुदावः	तुदामः
	तुदते	तुदेते	तुदन्ते	तुदसे	तुदेथे	तुदध्वे	तुदे	तुदावहे	तुदामहे
लोट्	तुदतु	तुदतां	तुदन्तु	तुद	तुदतं	तुदत	तुदानि	तुदाव	तुदाम
	तुदताम्	तुदेताम्	तुदन्ताम्	तुदस्व	तुदेथां	तुदध्वम्	तुदै	तुदावहै	तुदामहै
लङ्	अतुदत्	अतुदतां	अतुदन्	अतुदः	अतुदतं	अतुदत	अतुदम्	अतुदाव	अतुदाम
	अतुदत	अतुदेतां	अतुदन्त	अतुदथाः	अतुदेथां	अतुदध्वं	अतुदे	अतुदावहि	अतुदामहि
लिङ्	तुदेत्	तुदेताम्	तुदेयुः	तुदेः	तुदेतम्	तुदेत	तुदेयम्	तुदेव	तुदेम
	तुदेत	तुदेयातां	तुदेरन्	तुदेथाः	तुदेयाथां	तुदेध्वम्	तुदेय	तुदेवहि	तुदेमहि

२९ लङादि चार विभक्तियों मे इष् धातु के स्थान मे इच्छ, प्रच्छ के स्थानमे पृच्छ, मस्ज के स्थानमे मज्ज, भ्रस्ज के स्थान मे भृज्ज, लस्ज के स्थान मे लज्ज

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

व्यच् के स्थानमे विच, और व्रश्च के स्थानमे वृश्च, विछ् के स्थानमे विछाय् और त्वर्ह् के स्थानमे तृह् होता है। यथा; इच्छति, ऋच्छति, मज्जति, भ्रज्जति, लज्जते, विचति, वृश्चति, विच्छायति, तृहति इत्यादि।

५० तथा मुच्, सिच्, लिप्, लुप्, कृत्, विद्, खिद्, पिश्, धातुओंके स्थानमे क्रमसे मुञ्च्, सिञ्च्, लिम्प्, लुम्प्, कृन्त्, विन्द्, खिन्द्, पिंश् होते हैं। यथा; मुञ्चति इत्यादि।

५१ तथा दृ, धृ, पृ, मृ, धातुओंके ऋ के स्थानमे रिय् होता है। यथा; म्रियते इत्यादि।

५२ तथा कॄ, गॄ, धातुओंके ॠ के स्थानमे इर् होता है। यथा; किरति इत्यादि(१) (क्षि) क्षियति इत्यादि। (ध्रु) ध्रुवति (कु) कुवते (धू) धुवति (ऋच्छ्) ऋच्छति (मिच्छ्) मिच्छति। (ओख) ओखति (लङ्मे) औखत् इत्यादि।

भ्वादिगण

५३ लडादि चार विभक्तियों मे भ्वादि गणीय धातुओंके उत्तर अ होता-है (अ अन्त्यवर्णमे मिल जाता है)

	प्र. पुरुष			म. पुरुष			उ. पुरुष		
	ए.	द्वि.	ब.	ए.	द्वि.	ब.	ए.	द्वि.	ब.
				वद (पं) बोलना					
लट्	वदति	वदतः	वदन्ति	वदसि	वदथः	वदथ	वदामि	वदावः	वदामः
लोट्	वदतु	वदताम्	वदन्तु	वद	वदतम्	वदत	वदानि	वदाव	वदाम
लङ्	अवदत्	अवदतां	अवदन्	अवदः	अवदतं	अवदत	अवदम्	अवदाव	अवदाम
लिङ्	वदेत्	वदेताम्	वदेयुः	वदेः	वदेतम्	वदेत	वदेयम्	वदेव	वदेम
				सेव (आत्) सेवाकरना					
लट्	सेवते	सेवेते	सेवन्ते	सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे	सेवे	सेवावहे	सेवामहे
लोट्	सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्	सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्	सेवै	सेवावहै	सेवामहै
लङ्	असेवत	असेवेतां	असेवन्त	असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्	असेवे	असेवावहि	असेवामहि
लिङ्	सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्	सेवेथाः	सेवेयाथां	सेवेध्वम्	सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि

(१) गॄ के रकारको ल् भी होजाता है परन्तु धातु के होने मे न र, अतएव इसके दो दो रूप होते हैं यथा गिरति (वा) गिलति इत्यादि।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

त्रै[1] (आत्) पालना

लट् त्रायते त्रायेते त्रायन्ते त्रायसे त्रायेथे त्रायध्वे त्राये त्रायावहे त्रायामहे

प्रथम पुरुष			मध्यम पुरुष			उत्तम पुरुष		
ए.	द्वि.	ब.	ए.	द्वि.	ब.	ए.	द्वि.	ब.

धाव (उभ) दौड़ना

लट् धावति धावतः धावन्ति धावसि धावथः धावथ धावामि धावावः धावामः

धावते धावेते धावन्ते धावसे धावेथे धावध्वे धावे धावावहे धावामहे

४४ लडादि चार विभक्तियों मे भ्वादि गणीय धातुओं के अन्त्य स्वर और लघु[2] उपधा[3] को गुण होता है॥

जि (पं) जयति जयतः जयन्ति जयसि जयथः जयथ जयामि जयावः जयामः

भू (पं) भवति भवतः भवन्ति भवसि भवथः भवथ भवामि भवावः भवामः

स्मृ (पं) स्मरति स्मरतः स्मरन्ति स्मरसि स्मरथः स्मरथ स्मरामि स्मरावः स्मरामः

दे (आत्) दयते दयेते दयन्ते दयसे दयेथे दयध्वे दये दयावहे दयामहे

षिधू[4] (पं) सेधति सेधतः सेधन्ति सेधसि सेधथः सेधथ सेधामि सेधावः सेधामः

शुच (पं) शोचति शोचतः शोचन्ति शोचसि शोचथः शोचथ शोचामि शोचावः शोचामः

वृत (आत्) वर्त्तते वर्त्तेते वर्त्तन्ते वर्त्तसे वर्त्तेथे वर्त्तध्वे वर्त्ते वर्त्तावहे वर्त्तामहे

४५ लडादि चार विभक्तियों मे रञ्ज्, सञ्ज्, स्वञ्ज्, दंश्, धातुओं के नकार का लोप होता है। यथा; रजति, रजते, सजति, सजते, दशति, इत्यादि।

४६ तथा निम्नलिखित धातु रूपान्तरापन्न हो जाते हैं। यथा;

धातु	निर्विभक्तिकरूप	सविभक्तिकरूप
दृश	पश्य	पश्यति
सद्	सीद	सीदति
शद्	शीय	शीयते
ष्ठिव्	ष्ठीव	ष्ठीवति

(१) लोट् के मध्यम पुरुष के एक वचन मे त्रायस्व और त्रायहि दोनो दृष्ट होते हैं।

(२) ह्रस्व स्वर को लघु कहते हैं और दीर्घ को गुरु। अनुस्वार, विसर्ग अथवा संयुक्त वर्ण परे होने से ह्रस्व स्वर भी गुरु कहलाता है। (३) शब्द के अन्त्य वर्ण से पूर्व वर्ण को उपधा कहते हैं। (४) धातु पाठ मे इस धातु को षिधु लिखा है, पर सारे धातु जिनके आदि मे ष् (वा) ण है उनके उस ष् को स् और ण को न् हो जाता है इसलिये यहां षादि धातु को सादि और णादि को नादि समझा गया है॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पा	पिब	पिबति
ध्मा	धम	धमति
म्ना	मन	मनति
क्रम् (परस्मै०)	क्राम (वा) क्राम्य	क्रामति, क्राम्यति
गुह	गूह	गूहति — ते
गम्	गच्छ	गच्छति
दा	यच्छ	यच्छति
यम	यच्छ	यच्छति
ऋ	ऋच्छ	ऋच्छति, आर्च्छत् (लङ्)
कृप्	कल्प	कल्पते
सञ्ज	सज	सजति। ते
स्था	तिष्ठ	तिष्ठति
कित	चिकित्स	चिकित्सति
गुप् (निन्दायाम्)	जुगुप्स	जुगुप्सते
तिज (सहने)	तितिक्ष	तितिक्षते
बध्	बीभत्स	बीभत्सते
घ्रा	जिघ्र	जिघ्रति
मान्	मीमांस	मीमांसते
कम्	कामय	कामयते
गुप (रक्षणे)	गोपाय	गोपायति
पण (स्तुतौ)	पणाय	पणायति
पन	पनाय	पनायते
धूप	धूपाय	धूपायति
विच्छ्	विच्छाय	विच्छायति
ऋत्	ऋतीय	ऋतीयते

५७ तथा सृधातुको विकल्पकरके धाव भी होता है। यथा; सरति, धावति

५८ तथा क्रम (आत्म) को क्रम्य भी होता है। यथा; क्रमते, क्रम्यते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

४९ तथा आ उपसर्ग के योगमे चम् धातुके स्थानमे चाम् होता है।
यथा, आचामति इत्यादि।

५० जिन धातुओं की उपधामे उर् हो उन्की उ को दीर्घ होता है। यथा,
(कुर्द) कूर्दते, इत्यादि।
(मुर्छि(१)) मूर्छते, इत्यादि
(हुर्छ) हूर्छते, इत्यादि।
(धोर्ऋ) धोरति, इत्यादि।

दिवादिगण

५१ लडादि चार विभक्तियों मे दिवादि गणीय धातुओं के उत्तर य आगम होता है।

नृत (प) नाचना

	प्र॰			म॰			उ॰		
लट्	नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति	नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ	नृत्यामि	नृत्यावः	नृत्यामः
लोट्	नृत्यतु	नृत्यताम्	नृत्यन्तु	नृत्य	नृत्यतम्	नृत्यत	नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम
लङ्	अनृत्यत्	अनृत्यतां	अनृत्यन्	अनृत्यः	अनृत्यतं	अनृत्यत	अनृत्यम्	अनृत्याव	अनृत्याम
लिङ्	नृत्येत्	नृत्येताम्	नृत्येयुः	नृत्येः	नृत्येतम्	नृत्येत	नृत्येयम्	नृत्येव	नृत्येम

विद् (आत्) होना, विद्यमानता

लट्	विद्यते	विद्येते	विद्यन्ते	विद्यसे	विद्येथे	विद्यध्वे	विद्ये	विद्यावहे	विद्यामहे
लोट्	विद्यताम्	विद्येताम्	विद्यन्ताम्	विद्यस्व	विद्येथां	विद्यध्वम्	विद्यै	विद्यावहै	विद्यामहै
लङ्	अविद्यत	अविद्येतां	अविद्यन्त	अविद्यथाः	अविद्येथां	अविद्यध्वं	अविद्ये	अविद्यावहि	अविद्यामहि
लिङ्	विद्येत	विद्येयातां	विद्येरन्	विद्येथाः	विद्येयाथां	विद्येध्वम्	विद्येय	विद्येवहि	विद्येमहि

५२ लडादि चार विभक्तियोंमे दिव, सिव, ष्ठिव, जन, व्यध, मिद, धातुओं के स्थानमे यथाक्रम दीव, सीव, ष्ठीव, जा, विध, मेद, होते हैं। यथा, दीव्यति, सीव्यति, ष्ठीव्यति, जायते, विध्यति, मेद्यति इत्यादि।

(१) धातुपाठमे यह धातु "मुर्छि" कहागया है। इ अनुबन्ध वास्ते सारे धातुओं की उपधामे न् आजाता है; इसलिये यहां भी छ के पूर्व न् हुआ और न का सन्धिके नियमानुसार ङ् होगया; अतएव सिद्ध रूप मङ्क् हुआ। इसी प्रकार सब इदित धातुओं मे जानना॥

CC-0. In Public Domain: Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

५३ तथा (दिवादिगणीय) ॠकारान्त धातुओंके ॠके स्थानमे ईर होता है। यथा (जॄ) जीर्यति; (दॄ) दीर्यति॥

५४ तथा शमादि[1] धातुओंके अकार के स्थान मे आकार होताहै। यथा; शाम्यति इत्यादि। भ्रमको विकल्प करके। यथा; भ्राम्यति (वा) भ्रम्यति।

५५ तथा ——— ओकारान्त धातुओंके ओकारका लोप होताहै। यथा; (सो) स्यति, स्यतः, स्यन्ति।

५६ तथा भ्रंश् के अनुस्वार का लोप होताहै। यथा; भ्रश्यति (रन्ज्) रज्यति[2], रज्यते। (मा) मायते। (अस्) अस्यति, आस्यत(लङ्) (ई) ईयते, ऐयत(लङ्) (ऋध्) ऋध्यति, आर्ध्यत(लङ्)

स्वादिगण

५७ लडादि चार विभक्तियों मे स्वादि गणीय धातुओंके उत्तर नु होताहै।

५८ ति, सि, मि, तु, आनि, आव, आम, ऐ, आवहै, आमहै, त्, :, अम् ये विभक्तियें परे होनेसे नु को नो होताहै।

सु (उभय) कूटना

	प्र.			म.			उ.		
लट्	सुनोति	सुनुतः	सुन्वन्ति	सुनोषि	सुनुथः	सुनुथ	सुनोमि	सुनुवः[3]	सुनुमः
	सुनुते	सुन्वाते	सुन्वते	सुनुषे	सुन्वाथे	सुनुध्वे	सुन्वे[2]	सुनुवहे	सुनुमहे
लोट्	सुनोतु	सुनुताम्	सुन्वन्तु	सुनु	सुनुतम्	सुनुत	सुनवानि	सुनवाव	सुनवाम
	सुनुताम्	सुन्वाताम्	सुन्वताम्	सुनुष्व	सुन्वाथाम्	सुनुध्वम्	सुनवै	सुनवावहै	सुनवामहै
लङ्	असुनोत्	असुनुतां	असुन्वन्	असुनोः	असुनुतम्	असुनुत	असुनवम्	असुनुव[3]	असुनुम[3]
	असुनुत	असुन्वातां	असुन्वत	असुनुथाः	असुन्वाथां	असुनुध्वं	असुन्वि	असुनुवहि	असुनुमहि
लिङ्	सुनुयात्	सुनुयातां	सुनुयुः	सुनुयाः	सुनुयातं	सुनुयात	सुनुयाम्	सुनुयाव	सुनुयाम
	सुन्वीत	सुन्वीयातां	सुन्वीरन्	सुन्वीथाः	सुन्वीयाथां	सुन्वीध्वं	सुन्वीय	सुन्वीवहि	सुन्वीमहि

(१) शम्, श्रम्, तम्, क्षम्, दम्, क्लम्, मद्। (२) ४५ वां नियम देखो। (३) नु व्यञ्जन वर्णमे मिलित न होवे तो नु के उकारका विकल्प करके लोप होताहै व् म् परे होनेसे यथा सुन्वः, सुन्मः, सुन्वहे, सुन्महे, असुन्व, असुन्म, असुन्वहि, असुन्महि।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

५९ जो उ धातुके अन्त्यहल्के साथ संयुक्त हो तो आनि, आव, आम, ऐ, आवहै, आमहै, अम्, इनके सिवा विभक्तिका स्वर वर्ण परे होनेसे उ के स्थानमे उव् होताहै॥

आप् (प) व्याप्ति

	प्र.			म.			उ.		
लट्	आप्नोति	आप्नुतः	आप्नुवन्ति	आप्नोषि	आप्नुथः	आप्नुथ	आप्नोमि	आप्नुवः	आप्नुमः
लोट्	आप्नोतु	आप्नुताम्	आप्नुवन्तु	आप्नुहि	आप्नुतम्	आप्नुत	आप्नवानि	आप्नवाव	आप्नवाम
लङ्	आप्नोत्	आप्नुताम्	आप्नुवन्	आप्नोः	आप्नुतम्	आप्नुत	आप्नवम्	आप्नुव	आप्नुम
लिङ्	आप्नुयात्	आप्नुयाताम्	आप्नुयुः	आप्नुयाः	आप्नुयातम्	आप्नुयात	आप्नुयाम्	आप्नुयाव	आप्नुयाम

अश् (आत्म) व्याप्ति

लट्	अश्नुते	अश्नुवाते	अश्नुवते	अश्नुषे	अश्नुवाथे	अश्नुध्वे	अश्नुवे	अश्नुवहे	अश्नुमहे
लोट्	अश्नुताम्	अश्नुवाताम्	अश्नुवताम्	अश्नुष्व	अश्नुवाथाम्	अश्नुध्वम्	अश्नवै	अश्नवावहै	अश्नवामहै
लङ्	आश्नुत	आश्नुवाताम्	आश्नुवत	आश्नुथाः	आश्नुवाथाम्	आश्नुध्वम्	आश्नुवि	आश्नुवहि	आश्नुमहि
लिङ्	आश्नुवीत	आश्नुवीयाताम्	आश्नुवीरन्	आश्नुवीथाः	आश्नुवीयाथाम्	आश्नुवीध्वम्	आश्नुवीय	आश्नुवीवहि	आश्नुवीमहि

६० लडादि चार विभक्तियों मे श्रु(१) धातुके स्थानमे शृ, धिवि(२) के स्थानमे धि, और कृव के स्थानमे कृ होताहै। यथा; शृणोति धिनोति कृणोति।

६१ तथा ——— दम्भ्, स्कम्भ्, स्तम्भ्, स्कुम्भ्, और स्तुम्भ् धातुओं के म् का लोप होताहै उ परे होनेसे। यथा; दभ्नोति इत्यादि।

तनादि गण

६२ लडादि चार विभक्तियोंमे तनादिगणीय धातु के उत्तर उ होताहै; और वह उ अन्त्य वर्णमे मिलजाताहै।

६३ ति, सि, मि, तु, आनि, आव, आम, ऐ, आवहै, आमहै, त्, :, अम्, ये विभक्तियें परे होने से उ के स्थान मे ओ होता है।

(१) पाणिनीय धातुपाठ मे श्रु धातु को भ्वादिगणमे पढ़ा है, पर इसके रूप स्वादि की न्याईं होनेसे यहां यह स्वादिगण मे गृहीत हुआ है॥

(२) धिव्, कृव धातु धातुपाठमे धिवि कृवि कही गई हैं पर इदित होनेसे भी लडादि चार विभक्तियों मे इनके व के पूर्व न नहि होता॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तन् (उभ) विस्तारकरना

	प्र.			म.			उ.		
लट्	तनोति	तनुतः	तन्वन्ति	तनोषि	तनुथः	तनुथ	तनोमि	तनुवः[1]	तनुमः
	तनुते	तन्वाते	तन्वते	तनुषे	तन्वाथे	तनुध्वे	तन्वे	तनुवहे	तनुमहे
लोट्	तनोतु	तनुताम्	तन्वन्तु	तनु	तनुतम्	तनुत	तनवानि	तनवाव	तनवाम
	तनुताम्	तन्वाताम्	तन्वताम्	तनुष्व	तन्वाथाम्	तनुध्वम्	तनवै	तनवावहै	तनवामहै
लङ्	अतनोत्	अतनुतां	अतन्वन्	अतनोः	अतनुतं	अतनुत	अतनवम्	अतनुव	अतनुम
	अतनुत	अतन्वातां	अतन्वत	अतनुथाः	अतन्वाथां	अतनुध्वं	अतन्वि	अतनुवहि	अतनुमहि
लिङ्	तनुयात्	तनुयातां	तनुयुः	तनुयाः	तनुयातं	तनुयात	तनुयाम्	तनुयाव	तनुयाम
	तन्वीत	तन्वीयातां	तन्वीरन्	तन्वीथाः	तन्वीयाथां	तन्वीध्वं	तन्वीय	तन्वीवहि	तन्वीमहि

कृ (उभय) करना

८४ ति, सि, मि, तु, आनि, आव, आम, ऐ, आवहै, आमहै, त्, :, अम्, ये विभक्तियें परे होने से कृ धातु के स्थानमे कर् होता है; अन्य विभक्तियें परे होने से कुर् होताहै ॥

८५ विभक्ति का म् (मि भिन्न) य व् परे होनेसे कृ धातु के पर स्थित उकार का लोप होताहै॥

लट्	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति	करोषि	कुरुथः	कुरुथ	करोमि	कुर्वः	कुर्मः
	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे
लोट्	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु	कुरु	कुरुतम्	कुरुत	करवाणि	करवाव	करवाम
	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वतां	कुरुष्व	कुर्वाथां	कुरुध्वम्	करवै	करवावहै	करवामहै
लङ्	अकरोत्	अकुरुतां	अकुर्वन्	अकरोः	अकुरुतं	अकुरुत	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म
	अकुरुत	अकुर्वातां	अकुर्वत	अकुरुथाः	अकुर्वाथां	अकुरुध्वं	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि
लिङ्	कुर्यात्	कुर्यातां	कुर्युः	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम
	कुर्वीत	कुर्वीयातां	कुर्वीरन्	कुर्वीथाः	कुर्वीयाथां	कुर्वीध्वं	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि

८६ लडादि चार विभक्तियों मे धातु के उपधा इ, उ, ऋ को विकल्प करके गुण होताहै। यथा; (क्षिण) क्षिणोति (वा) क्षेणोति, क्षिणुते (वा) क्षेणुते (ऋण) ऋणोति (वा) अर्णोति॥

(१) जो उ संयुक्त वर्णसे मिलित न हो तो उसका विकल्प करके लोप होताहै। यथा; तन्वः तन्मः इत्यादि।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्र्यादि गण

६७ लङादि चार विभक्तियोंमे क्र्यादि गणीय धातु के उत्तर ना आगम होताहै।

६८ अन्य भिन्न स्वर वर्ण परे होनेसे ना के आकार का लोप होताहै॥

६९ ति, सि, मि, त, तु, :, भिन्न व्यञ्जन वर्ण परे होनेसे ना के स्थानमे नी होताहै।

क्री (क्रय) मोल लेना

लट् { क्रीणाति क्रीणीतः क्रीणन्ति क्रीणासि क्रीणीथः क्रीणीथ क्रीणामि क्रीणीवः क्रीणीमः
{ क्रीणीते क्रीणाते क्रीणते क्रीणीषे क्रीणाथे क्रीणीध्वे क्रीणे क्रीणीवहे क्रीणीमहे

लोट् { क्रीणातु क्रीणीताम् क्रीणन्तु क्रीणीहि क्रीणीतम् क्रीणीत क्रीणानि क्रीणाव क्रीणाम
{ क्रीणीताम् क्रीणाताम् क्रीणताम् क्रीणीष्व क्रीणाथाम् क्रीणीध्वम् क्रीणै क्रीणावहै क्रीणामहै

लङ् { अक्रीणात् अक्रीणीताम् अक्रीणन् अक्रीणाः अक्रीणीतम् अक्रीणीत अक्रीणाम् अक्रीणीव अक्रीणीम
{ अक्रीणीत अक्रीणाताम् अक्रीणत अक्रीणीथाः अक्रीणाथाम् अक्रीणीध्वम् अक्रीणि अक्रीणीवहि अक्रीणीमहि

लिङ् { क्रीणीयात् क्रीणीयाताम् क्रीणीयुः क्रीणीयाः क्रीणीयातम् क्रीणीयात क्रीणीयाम् क्रीणीयाव क्रीणीयाम
{ क्रीणीत क्रीणीयाताम् क्रीणीरन् क्रीणीथाः क्रीणीयाथाम् क्रीणीध्वम् क्रीणीय क्रीणीवहि क्रीणीमहि

७० हि विभक्तिमे व्यञ्जन वर्णके परस्थित ना के स्थानमे आन होताहै, और हि का लोप होताहै। यथा; अशान, पुषाण, स्तभाण।

७१ लङादि चार विभक्तियोंमे ग्रह धातुके स्थानमे गृह, ज्याके स्थानमे जि ज्ञाके स्थानमे जा, और खव् के स्थानमे खौ होताहै। यथा; गृह्णाति, जिनाति जानाति, खौनाति इत्यादि।

७२ तथा प्वादि धातुओंका अन्त्यवर्ण ह्रस्व होताहै। यथा; (पू) पुना-ति (धू) धुनाति इत्यादि।

७३ तथा —— क्र्यादि गणीय धातुओंके उपधा नकार का लोप होताहै। यथा; (बन्ध) बध्नाति, (ग्रन्थ) ग्रथ्नाति, (स्तम्भ) स्तभ्नाति।

रुधादि गण

७४ लङादि चार विभक्तियोंमे रुधादि गणीय धातुके अन्त्यस्वरसे परे न आताहै।

(१) प्वादि धातु ये हैं। यथा; पू, लू, स्तॄ, कॄ, वॄ, धू, शॄ, पॄ, वॄ, भॄ, मॄ, दॄ, जॄ, झॄ, धॄ, नॄ, कॄ, गॄ, री, ली, व्ली, प्ली, ली, लू को विकल्प करके ह्रस्व होताहै।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

८५ ति, सि, मि, तु, आनि, आव आम, ऐ, आवहै, आमहै, त, :, अम्, इन विभक्तियोंमे न से परे अकार होता है।

रुधू (उभय) रोकना

लट् { रुणद्धि रुन्द्धः रुन्धन्ति रुणत्सि रुन्द्धः रुन्द्ध रुणध्मि रुन्ध्वः रुन्ध्मः
रुन्द्धे रुन्धाते रुन्धते रुन्त्से रुन्धाथे रुन्द्ध्वे रुन्धे रुन्ध्वहे रुन्ध्महे

लोट् { रुणद्धु रुन्द्धाम् रुन्धन्तु रुन्द्धि रुन्द्धम् रुन्द्ध रुणधानि रुणधाव रुणधाम
रुन्द्धाम् रुन्धाताम् रुन्धताम् रुन्त्स्व रुन्धाथाम् रुन्द्ध्वम् रुणधै रुणधावहै रुणधामहै

लङ् { अरुणत्(१)/द् अरुन्द्धाम् अरुन्धन् अरुणत्(२) अरुन्द्धम् अरुन्द्ध अरुणधम् अरुन्ध्व अरुन्ध्म
अरुन्द्ध अरुन्धाताम् अरुन्धत अरुन्द्धाः अरुन्धाथाम् अरुन्द्ध्वम् अरुन्धि अरुन्ध्वहि अरुन्ध्महि

लिङ् { रुन्ध्यात् रुन्ध्याताम् रुन्ध्युः रुन्ध्याः रुन्ध्यातम् रुन्ध्यात रुन्ध्याम् रुन्ध्याव रुन्ध्याम
रुन्धीत रुन्धीयाताम् रुन्धीरन् रुन्धीथाः रुन्धीयाथाम् रुन्धीध्वम् रुन्धीय रुन्धीवहि रुन्धीमहि

भुज (आत्म) खाना

लट् भुङ्क्ते भुञ्जाते भुञ्जते भुङ्क्षे भुञ्जाथे भुङ्ग्ध्वे भुञ्जे भुञ्ज्वहे भुञ्ज्महे

८६ लङादि चार विभक्तियों मे धातु के उपधा न् का लोप होता है, न का आगम होने से। यथा

हिन्स (पं) हिंसा करना

लट् हिनस्ति हिंस्तः हिंसन्ति हिनस्सि हिंस्थः हिंस्थ हिनस्मि हिंस्वः हिंस्मः

८७ ति, सि, मि, तु, त, :, इन विभक्तियोंमे तृह धातु के न् के स्थानमे ने होता है॥

लट् तृणेढि तृण्ढः तृंहन्ति तृणेक्षि तृण्ढः तृण्ढ तृणेह्मि तृंह्वः तृंह्मः

(उन्द्) उनत्ति, उन्तः, उन्दन्ति, औनत् (भञ्ज) भनक्ति, भङ्क्ते (रिच्) रिणक्ति, रिङ्क्ते (शिष्) शिनष्टि, अशिनट्

अदादि गण

अद् (पं) खाना

लट् अत्ति अत्तः अदन्ति अत्सि अत्थः अत्थ अद्मि अद्वः अद्मः
लोट् अत्तु अत्ताम् अदन्तु अद्धि अत्तम् अत्त अदानि अदाव अदाम

(१) पदान्त वर्ण यदि वर्ग का प्रथम हो तो विकल्प करके तृतीय भी होता है॥ (२) लङ् के १ विभक्ति मे धातु के अन्तस्थित द् ध् के स्थानमे विकल्प करके र् होता है और र् को : होता है और उससे दोनों सिद्ध होते हैं। यथा,- अरुणः अरुणत्।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

७८ अद् धातुके परस्मैपद लङ्के त् के स्थानमे अत् और : के स्थानमे अः होताहै

लङ्. आदत् आत्ताम् आदन् आदः आत्तम् आत्त आदम् आद्व आद्म
लिङ्. अद्यात् अद्याताम् अद्युः अद्याः अद्यातम् अद्यात अद्याम् अद्याव अद्याम

आस् (आत्) बैठना

लट् आस्ते आसाते आसते आस्से आसाथे आध्वे (वा आद्ध्वे) आसे आस्वहे आस्महे
लोट् आस्ताम् आसाताम् आसताम् आस्स्व आसाथाम् आध्वम् (वा आद्ध्वम्) आसै आसावहै आसामहै
लङ्. आस्त आसाताम् आसत आस्थाः आसाथाम् आध्वम् (वा आद्ध्वम्) आसि आस्वहि आस्महि
लिङ्. आसीत आसीयातां आसीरन् आसीथाः आसीयाथां आसीध्वम् आसीय आसीवहि आसीमहि

७९ आकारान्त धातुसे परस्मैपद लङ्. के अन् के स्थानमे विकल्प करके उः होताहै, और वह उः परे होनेसे आकारका लोप होताहै॥

या (पं) प्राप्त होना

लट् याति यातः यान्ति यासि याथः याथ यामि यावः यामः
लोट् यातु याताम् यान्तु याहि यातम् यात यानि याव याम
लङ्. अयात् अयाताम् अयुः (अयान्) अयाः अयातम् अयात अयाम् अयाव अयाम
लिङ्. यायात् यायाताम् यायुः यायाः यायातम् यायात यायाम् यायाव यायाम

८० ति, सि, मि, तु, आनि, आव, आम, ऐ, आवहै, आमहै, त, :, अम्, इन् विभक्तियों मे अदादि गणीय धातुओं के अन्त्यस्वर और उपधा लघु स्वर को गुण होताहै।

निन्ज (आत्) शुद्ध करना

लट् निङ्क्ते निञ्जाते, निञ्जते। निङ्क्षे, निञ्जाथे, निङ्ग्ध्वे। निञ्जे निञ्ज्वहे। निञ्ज्महे। लङ्. अनिङ्क्त इत्यादि।
लिङ्. निञ्जीत। लोट् निङ्क्ताम् इत्यादि।

मृज् (पं) परिष्कार करना।

८१ मृज्की ऋको वृद्धि होती है ति, सि, मि, तु, आनि, आव, आम, ऐ, आवहै, आमहै, त, :, अम् विभक्तियों मे। परन्तु अजादि विभक्तियों मे वि-

(१) धमि नहलादि विभक्ति परे होनेसे सको विकल्प करके द्वित्व होताहै यथा आस्से इत्यादि॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विकल्प करके होती है।

लट् मार्ष्टि, मृष्टः, मार्जन्ति, मार्क्षि, मृष्ठः, मृष्ठ। मार्ज्मि, मृज्वः, मृज्मः
(मृजन्ति)

लङ् अमार्ट्, अमृष्टाम् अमृजन् अमार्ट् अमृष्टम् अमृष्ट अमार्जम् अमृज्व अमृज्म
(अमार्ड्, अमार्जन्)

लोट् मृड्ढि

द्विष् (पं) द्वेष करना

लट् द्वेष्टि द्विष्टः द्विषन्ति द्वेक्षि द्विष्ठः द्विष्ठ द्वेष्मि द्विष्वः द्विष्मः

लोट् द्वेष्टु द्विष्टाम् द्विषन्तु द्विड्ढि द्विष्टम् द्विष्ट द्वेषाणि द्वेषाव द्वेषाम

८२ द्विष धातुके लङ् के अन्के स्थानमे विकल्प करके उः होता है॥

लङ् अद्वेट् अद्विष्टाम् अद्विषुः अद्वेट् अद्विष्टम् अद्विष्ट अद्वेषम अद्विष्व अद्विष्म
((वा)अद्वेड्, अद्विषन्, अद्वेड्)

लिङ् द्विष्यात् द्विष्याताम् द्विष्युः द्विष्याः द्विष्यातम् द्विष्यात द्विष्याम द्विष्याव द्विष्याम

८३ लट्, लोट्, लङ्, इनके व्यञ्जनादि[१] विभक्ति परे होनेमे रुद्, स्वप्, श्वस्, अन्, जक्ष्, धातुके उपर इ होती है॥

रुद (पं) रोना

लट् रोदिति रुदितः रुदन्ति रोदिषि रुदिथः रुदिथ रोदिमि रुदिवः रुदिमः

लोट् रोदितु रुदिताम् रुदन्तु रुदिहि रुदितम् रुदित रोदानि रोदाव रोदाम

८४ रुदादि धातुओंके लङ् के त् के स्थानमे ईत्, अत्, और ः के स्थानमे ईः, और "अः" होता है॥

लङ् अरोदीत् अरुदिताम् अरुदन् अरोदीः अरुदितम् अरुदित अरोदम् अरुदिव अरुदिम
(अरोदत्, अरोदः)

लिङ् रुद्यात् रुद्याताम् रुद्युः रुद्याः रुद्यातम् रुद्यात रुद्याम् रुद्याव रुद्याम

८५ लङादि चार विभक्तियोंमे जक्ष, जागृ, दरिद्रा, चकास, शास, इन पांच धातुओंकी अभ्यस्त संज्ञा होती है।

लट् जक्षिति जक्षितः जक्षति जक्षिषि, जक्षिथः, जक्षिथ, जक्षिमि, जक्षिवः, जक्षिमः

लोट् जक्षितु जक्षिताम् जक्षतु जक्षिहि जक्षितम् जक्षित जक्षाणि जक्षाव जक्षाम

लङ् अजक्षीत् अजक्षिताम् अजक्षुः अजक्षीः अजक्षितम् अजक्षित अजक्षम् अजक्षिव अजक्षिम
(अजक्षत्, अजक्षः)

लिङ् जक्ष्यात् जक्ष्याताम् जक्ष्युः जक्ष्याः जक्ष्यातम् जक्ष्यात जक्ष्याम् जक्ष्याव जक्ष्याम

जागृ (पं) जागना

लट् जागर्ति जागृतः जाग्रति जागर्षि जागृथः जागृथ जागर्मि जागृवः जागृमः

(१) लङ्का "त्" और ":" भिन्न॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लोट् जागर्तु जागृताम् जाग्रतु जागृहि जागृतम् जागृत जागराणि जागराव जागराम

लङ् अजागः अजागृताम् अजागरुः अजागः अजागृतम् अजागृत अजागरम् अजागृव अजागृम

लिङ् जागृयात् जागृयाताम् जागृयुः जागृयाः जागृयातम् जागृयात जागृयाम् जागृयाव जागृयाम

दरिद्रा (पं) दरिद्र होना

८५ ति, सि, मि, तु, तु, :, भिन्न व्यञ्जनादि विभक्ति परे होनेसे दरिद्रा धातुके आ के स्थानमे इ होताहै।

८६ अन्ति, अन्तु, अन्, विभक्तियोंमे दरिद्रा धातुके आकारका लोप होताहै॥

लट् दरिद्राति दरिद्रितः दरिद्रति दरिद्रासि दरिद्रिथः दरिद्रिथ दरिद्रामि दरिद्रिवः दरिद्रिमः

लोट् दरिद्रातु दरिद्रिताम् दरिद्रतु दरिद्रिहि दरिद्रितम् दरिद्रित दरिद्राणि दरिद्राव दरिद्राम

लङ् अदरिद्रात् अदरिद्रिताम् अदरिद्रुः अदरिद्राः अदरिद्रितम् अदरिद्रित अदरिद्राम् अदरिद्रिव अदरिद्रिम

लिङ् दरिद्रियात् दरिद्रियाताम् दरिद्रियुः दरिद्रियाः दरिद्रियातम् दरिद्रियात दरिद्रियाम् दरिद्रियाव दरिद्रियाम

चकास् (पं) दीप्ति

लट् चकास्ति चकास्तः चकासति चकास्सि चकास्थः चकास्थ चकास्मि चकास्वः चकास्मः

लोट् चकास्तु चकास्ताम् चकासतु चकाद्धि (वा) चकाधि चकास्तम् चकास्त चकासानि चकासाव चकासाम

८८ चकास्, शास् धातुओंके स् का लोप अथवा द् होताहै लङ् कीत्, :, विभक्तिमे

लङ् अचकात् (वा) अचकाद् अचकास्ताम् अचकासुः अचकाः (वा) अचकात् अचकास्तम् अचकास्त अचकासम् अचकास्व अचकास्म

लिङ् चकास्यात् चकास्याताम् चकास्युः चकास्याः चकास्यातम् चकास्यात चकास्याम् चकास्याव चकास्याम

शास् (पं) अनुशासन

८९ ति, सि, मि, तु, त, :, भिन्न व्यञ्जनादि विभक्ति परे होनेसे शास् धातुके स्थानमे शिष् होताहै।

लट् शास्ति शिष्टः शासति शास्सि शिष्ठः शिष्ठ शास्मि शिष्वः शिष्मः

९० हि विभक्तिके सहित शास् धातुके स्थानमे शाधि होताहै॥

लोट् शास्तु शिष्टाम् शासतु शाधि शिष्टम् शिष्ट शासानि शासाव शासाम

लङ् अशात् (अशाद्) अशिष्टाम् अशासुः अशात् (अशाः) अशिष्टम् अशिष्ट अशासम् अशिष्व अशिष्म

लिङ् शिष्यात् शिष्याताम् शिष्युः शिष्याः शिष्यातम् शिष्यात शिष्याम् शिष्याव शिष्याम

(१) आ पूर्वक शास् धातु आत्मने पद होनेसे आशास्ते (वा) आशिष्टे प्रभृति रूप बनेंगे क्योंकि कोइ यों के मतमे आत्मने पदमे भी शास् को शिष् होताहै

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शी (आत्) सोना

९१ लङादि चार विभक्तियों मे शीधातु के स्थान मे शे होताहै।

९२ अन्ते अन्ताम् और अत विभक्ति मे शी धातुके स्थानमे शेर् होताहै।

लट्	शेते	शयाते	शेरते	शेषे	शयाथे	शेध्वे	शये	शेवहे	शेमहे
लोट्	शेताम्	शयाताम्	शेरताम्	शेष्व	शयाथाम्	शेध्वम्	शयै	शयावहै	शयामहै
लङ्	अशेत	अशयाताम्	अशेरत	अशेथाः	अशयाथाम्	अशेध्वम्	अशयि	अशेवहि	अशेमहि
लिङ्	शयीत	शयीयाताम्	शयीरन्	शयीथाः	शयीयाथाम्	शयीध्वम्	शयीय	शयीवहि	शयीमहि

सू (आत) प्रसव

लट्	सूते	सुवाते	सुवते	सूषे	सुवाथे	सूध्वे	सुवे	सूवहे	सूमहे

९३ लोट् की ऐ, आवहै, आमहै, विभक्तियों मे सूधातु को गुण नहि होता।

लोट्	सूताम्	सुवाताम्	सुवताम्	सूष्व	सुवाथाम्	सूध्वम्	सुवै	सुवावहै	सुवामहै
लङ्	असूत	असुवाताम्	असुवत	असूथाः	असुवाथाम्	असूध्वम्	असुवि	असूवहि	असूमहि
लिङ्	सुवीत	सुवीयाताम्	सुवीरन्	सुवीथाः	सुवीयाथाम्	सुवीध्वम्	सुवीय	सुवीवहि	सुवीमहि

इ (पं) जाना

९४ अन्ति और अन्तु विभक्तियों मे इ धातु के स्थान मे य होताहै।[1]

लट्	एति	इतः	यन्ति[2]	एषि	इथः	इथ	एमि	इवः	इमः
लोट्	एतु	इताम्	यन्तु[2]	इहि	इतम्	इत	अयानि	अयाव	अयाम
लङ्	ऐत्	ऐताम्	आयन्	ऐः	ऐतम्	ऐत	आयम्	ऐव	ऐम
लिङ्	इयात्	इयाताम्	इयुः	इयाः	इयातम्	इयात	इयाम्	इयाव	इयाम

९५ लङादि चार विभक्तियों मे अस् और हन् धातुओं के रूप कुछ विलक्षण होते हैं। यथा;

(१) मा और मास्मशब्द पूर्व के होनेसे अन् विभक्ति मे य होताहै यथा मा यन् मास्मयन्।

(२) स्मरणार्थ इ धातु के रूप भी ऐसेहि होते हैं केवल इतना विशेष है कि अन्ति, अन्तु के पूर्व इ को इ य् होताहै। यथा इयन्ति, इयन्तु; और यह धातु नित्य अधि उपसर्ग पूर्व कहि होताहै. यथा; अध्येति इत्यादि।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अस्(१) (प) होना

लट्	अस्ति	स्तः	सन्ति	असि	स्थः	स्थ	अस्मि	स्वः	स्मः
लोट्	अस्तु	स्ताम्	सन्तु	एधि	स्तम्	स्त	असानि	असाव	असाम
लङ्	आसीत्	आस्ताम्	आसन्	आसीः	आस्तम्	आस्त	आसम्	आस्व	आस्म
लिङ्	स्यात्	स्याताम्	स्युः	स्याः	स्यातम्	स्यात	स्याम्	स्याव	स्याम

हन् (प) मारना

लट्	हन्ति	हतः	घ्नन्ति	हंसि	हथः	हथ	हन्मि	हन्वः	हन्मः
लोट्	हन्तु	हताम्	घ्नन्तु	जहि	हतम्	हत	हनानि	हनाव	हनाम
लङ्	अहन्	अहताम्	अघ्नन्	अहन्	अहतम्	अहत	अहनम्	अहन्व	अहन्म
लिङ्	हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात	हन्याम्	हन्याव	हन्याम

विद् (प) जानना

लट्	वेत्ति	वित्तः	विदन्ति(२)	वेत्सि	वित्थः	वित्थ	वेद्मि	विद्वः	विद्मः(३)
लोट्	वेत्तु	वित्ताम्	विदन्तु	विद्धि	वित्तम्	वित्त	वेदानि	वेदाव	वेदाम(४)

६६ विद धातु से लङ् के अन्के स्थानमे विकल्प करके उः होताहै

लङ्	अवेत् अवेद्	अवित्ताम्	अविदुः अविदन्	अवेः(५)	अवित्तम्	अवित्त	अवेदम्	अविद्व	अविद्म
लिङ्	विद्यात्	विद्याताम्	विद्युः	विद्याः	विद्यातम्	विद्यात	विद्याम्	विद्याव	विद्याम

(१) अस् धातु केवल लङादि चार विभक्तियोंमे होता है; और विभक्तियोंमे यह भू होजाता है (लिट् मे आमन्त प्रभृति धातुके उत्तर भी अस् धातु लगताहै जिसका वर्णन आगे होगा) उपसर्ग विशेषके योगमे अस् धातु आत्मनेपद भी होजाताहै यथा व्यतिस्ते; अतएव आत्मनेपद अस् धातुके रूप नीचे दिखलाए जाते हैं। लट् — स्ते, साते, सते। से, साथे, ध्वे। हे, स्वहे, स्महे॥ लोट् — स्ताम्, साताम्, सताम्। स्व, साथाम्, ध्वम्। असै, असावहै, असामहै॥ लङ् — आस्त, आसाताम्, आसत। आस्थाः, आसाथाम्, आध्वम्। आसि, आस्वहि, आस्महि॥ लिङ् — सीत, सीयाताम्, सीरन्। सीथाः, सीयाथाम्, सीध्वम्। सीय, सीवहि, सीमहि॥

(२) सम् उपसर्गके साथ विद् धातु आत्मनेपद होजाताहै, और अन्ते, अन्ताम्, अन्त परे होनेसे विद्को विद्र् भी होजाताहै। यथा; संविदते (वा) संविद्रते इत्यादि॥

(३) लट् मे विद् धातुके और एक प्रकार रूप भी होते हैं। यथा; वेद, विदतुः, विदुः, वेत्थ, विदथुः, विद, वेद, विद्व, विद्म।

(४) लोट् मे विद् धातुको विकल्पकरके विदाङ्कु होताहै और उसके रूप कृ धातुकी न्याइ होतेहैं। यथा विदाङ्कुरोतु, विदाङ्कुरुताम्, विदाङ्कुर्वन्तु, विदाङ्कुरु, विदाङ्कुरुतम्, विदाङ्कुरुत, विदाङ्करवाणि, विदाङ्करवाव, विदाङ्करवाम।

(५) लङ् की: विभक्तिमे धातुके अन्तस्थित द के स्थानमे र भी होताहै तिससे अवेः (वा) अवेत् ये दो पद होतेहैं॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

६७ ति, सि, मि, तु, त्, ; विभक्तियोंमे धातुके अन्त्य उकारको वृद्धि होती है। यथा; नौति, नुतः, नुवन्ति, नौतु, नुताम्, नुवन्तु, अनौत्, अनुताम्, अनुवन्, नुयात्, इत्यादि॥

६८ तथा ———— स्तु, रु, तु, इन धातुओंके उत्तर विकल्प करके ई होती है, और ई परे होनेसे इन विभक्तियोंमे उकारको गुण होता है।(१) यथा;

(स्तु)

स्तवीति (स्तौति)	स्तुतः	स्तुवन्ति	स्तवीषि (स्तौषि)	स्तुथः	स्तुथ	स्तवीमि (स्तौमि)	स्तुवः	स्तुमः
स्तुते	स्तुवाते	स्तुवते	स्तुषे	स्तुवाथे	स्तुध्वे	स्तुवे	स्तुवहे	स्तुमहे

६९ तथा ऊर्णु, धातुके अन्त्य उ को विकल्प करके गुण भी होता है; त्, ;, विभक्तियोंमे नित्य गुण होता है

लट्। ऊर्णोति (वा) ऊर्णौति, ऊर्णुतः, ऊर्णुवन्ति इत्यादि।
ऊर्णुते ऊर्णुवाते, ऊर्णुवते इत्यादि।

लङ्। और्णोत्, और्णुताम्, और्णुवन् इत्यादि
और्णुत, और्णुवाताम्, और्णुवत इत्यादि

लोट्। ऊर्णुहि

लिङ्। ऊर्णुयात्

ब्रू (उभ) कहना

७० ति, सि, मि, तु, त्, ; इन विभक्तियोंमे ब्रूधातुके उत्तर ई होती है(२)

लट्	ब्रवीति	ब्रूतः	ब्रुवन्ति	ब्रवीषि	ब्रूथः	ब्रूथ	ब्रवीमि	ब्रूवः	ब्रूमः
	ब्रूते	ब्रुवाते	ब्रुवते	ब्रूषे	ब्रुवाथे	ब्रूध्वे	ब्रुवे	ब्रूवहे	ब्रूमहे

लोट्			लङ्			लिङ्		
ब्रवीतु	ब्रूताम्	ब्रुवन्तु	अब्रवीत्	अब्रूताम्	अब्रुवन्	ब्रूयात्	ब्रूयाताम्	ब्रूयुः

वच् धातु (३)

लट् वक्ति वक्तः ———— वक्षि वक्थः वक्थ। वच्मि, वच्वः वच्मः

(१) पाणिनि के मतमे ई का आगम लट्, लोट्, लङ् की अवशिष्ट हलादि विभक्तियोंमे भी विकल्प करके होताहै (और उ को उव होताहै) यथा स्तुवीतः, स्तुवीते इत्यादि। (२) ब्रूधातुके ति, तः, अन्ति, सि, थः इन पाञ्च विभक्तियोंके सहित यथाक्रम आह, आहतुः, आहुः, आत्थ, आहथुः ये पाञ्च रूप भी होतेहैं। यह धातु केवल लड़ादि चार विभक्तियोंमेहि होताहै। आगे वच् धातु इसका काम देताहै॥(३) वच् धातुके अन्ति, अन्तु विभक्तिके रूप नहि होते लड़ादि विभक्तियोंमे यह धातु उभय पद होताहै॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दुह (उभ) दोहना

लट् { दोग्धि दुग्धः दुहन्ति धोक्षि दुग्धः दुग्ध दोह्मि दुह्वः दुह्मः
दुग्धे दुहाते दुहते धुक्षे दुहाथे धुग्ध्वे दुहे दुह्वहे दुह्महे

लोट् { दोग्धु दुग्धाम् दुहन्तु दुग्धि दुग्धम् दुग्ध दोहानि दोहाव दोहाम
दुग्धाम् दुहाताम् दुहताम् धुक्ष्व दुहाथाम् धुग्ध्वम् दोहै दोहावहै दोहामहै

लङ् { अधोक् (वा) अधोट् अदुग्धाम् अदुहन् अधोक् अदुग्धम् अदुग्ध अदोहम् अदुह्व अदुह्म
अदुग्ध अदुहाताम् अदुहत अदुग्धाः अदुहाथाम् अधुग्ध्वम् अदुहि अदुह्वहि अदुह्महि

लिङ् { दुह्यात् दुह्याताम् दुह्युः दुह्याः दुह्यातम् दुह्यात दुह्याम् दुह्याव दुह्याम
दुहीत दुहीयाताम् दुहीरन् दुहीथाः दुहीयाथाम् दुहीध्वम् दुहीय दुहीवहि दुहीमहि

लिह (उभ) चाटना

लट् { लेढि लीढः लिहन्ति लेक्षि लीढः लीढ लेह्मि लिह्वः लिह्मः
लीढे लिहाते लिहते लिक्षे लिहाथे लीढ्वे लिहे लिह्वहे लिह्महे

इङ् (आत्) पढ़ना

लट् अधीते(१) अधीयाते अधीयते अधीषे अधीयाथे अधीध्वे अधीये अधीवहे अधीमहे

लोट् अधीताम् अधीयाताम् अधीयताम् अधीष्व अधीयाथाम् अधीध्वम् अध्ययै अध्ययावहै अध्ययामहै

१०१ लङ् विभक्ति मे ऐकार से परे य होता है विभक्ति का स्वर परे होने से।

लङ् अध्यैत अध्यैयाताम् अध्यैयत अध्यैथाः अध्यैयाथाम् अध्यैध्वम् अध्यैयि अध्यैवहि अध्यैमहि

लिङ् अधीयीत अधीयीयाताम् अधीयीरन् अधीयीथाः अधीयीयाथाम् अधीयीध्वम् अधीयीय अधीयीवहि अधीयीमहि

ईड् (आत्) स्तुति करना

१०२ लट्, लोट्, और लङ् को स् और ध् परे होने से ईड् और ईश धातु के उत्तर ई होती है।

१०३ ड से परे विभक्ति के त् को ट् और थ् को ठ् होता है और ट ठ के पूर्व ड् को ट् होता है।

(१) इ धातु का प्रयोग अधि उपसर्ग पूर्व करि होता है॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लट् ईट्टे ईडाते ईडते ईडिषे ईडाथे ईडिध्वे ईडे ईड्वहे ईड्महे
लोट् ईट्टाम् ईडाताम् ईडताम् ईडिष्व ईडाथाम् ईडिध्वम् ईडै ईडावहै ईडामहै
लङ् ऐट्ट ऐडाताम् ऐडत ऐट्ठाः ऐडाथाम् ऐडिध्वम् ऐडि ऐड्वहि ऐड्महि
लिङ् ईडीत ईडीयाताम् ईडीरन् ईडीथाः ईडीयाथाम् ईडीध्वम् ईडीय ईडीवहि ईडीमहि

ईश (आत्म) ऐश्वर्य करना

लट् ईष्टे ईशाते ईशते ईशिषे ईशाथे ईशिध्वे ईशे ईश्वहे ईश्महे
लोट् ईष्टाम् ईशाताम् ईशताम् ईशिष्व ईशाथाम् ईशिध्वम् ईशै ईशावहै ईशामहै
लङ् ऐष्ट ऐशाताम् ऐशत ऐष्ठाः ऐशाथाम् ऐशिध्वम् ऐशि ऐश्वहि ऐश्महि
लिङ् ईशीत ईशीयाताम् ईशीरन् ईशीथाः ईशीयाथाम् ईशीध्वम् ईशीय ईशीवहि ईशीमहि

वश् (पं) इच्छा करना और वशमे करना

१०४ ति, सि, मि, तु, आनि, आव, आम, ऐ, आवहै, आमहै, त, ; अम् एतद्भिन्न विभक्तियोंमे वश् धातुके स्थानमे उश् होता है॥

लट् वष्टि उष्टः उशन्ति वक्षि उष्ठः उष्ठ वश्मि उश्वः उश्मः
लोट् वष्टु उष्टाम् उशन्तु उड्ढि उष्टम् उष्ट वशानि वशाव वशाम
लङ् अवट् औष्टाम् औशन् अवट् औष्टम् औष्ट अवशम् औश्व औश्म
लिङ् उश्यात् उश्याताम् उश्युः उश्याः उश्यातम् उश्यात उश्याम् उश्याव उश्याम

चक्ष्(२) (आत्म) कहना

१०५ त, थ, ध, स, परे होनेसे चक्ष् धातुके स्थानमे चष् होता है।

लट् चष्टे चक्षाते चक्षते चक्षे चक्षाथे चड्ढ्वे चक्षे चक्ष्वहे चक्ष्महे
लोट् चष्टाम् चक्षाताम् चक्षताम् चक्ष्व चक्षाथाम् चड्ढ्वम् चक्षै चक्षावहै चक्षामहै
लङ् अचष्ट अचक्षाताम् अचक्षत अचष्ठाः अचक्षाथाम् अचड्ढ्वम् अचक्षि अचक्ष्वहि अचक्ष्महि
लिङ् चक्षीत चक्षीयाताम् चक्षीरन् चक्षीथाः चक्षीयाथाम् चक्षीध्वम् चक्षीय चक्षीवहि चक्षीमहि

(१) चक्ष धातुके रूप लटादि चार विभक्तियोंमे होते हैं। लिट् मे चक्ष् भी होता है और विकल्प करके ख्या (ञा) क्शा भी होते हैं। और सब विभक्तियोंमे चक्ष् के स्थानमे ख्या वा क्शा ही होते हैं। और ख्या क्शा के रूप उभयपद हैं। (२) पाणिनी व्याकरणमे इसका नाम इड् है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इ[1] विधान

१०६ लुट्, ल्रट्, ल्रङ्, विभक्तियोंमे धातुके उत्तर इ आता है।

१०७ आशीर्लिङ् के आत्मने पदमे ———— तथा ————

१०८ लिट्की थ, व, म, से, ध्वे, वहे, महे, विभक्तियोंमे तथा ————

१०९ लुङ् विभक्तिमे विहित स प्रत्यय परे होनेसे ———— तथा ————

विकल्प

११० रध[2] प्रभृति धातुओंको विकल्प करके इ होता है[3]

१११ इष, रिष्, रुष, लुभ्, सह; धातुके उत्तर लुट् विभक्तिमे तथा ————

११२ कृत्, चृत्, छृद्, तृद्, नृत्, धातुके उत्तर ल्रट् और ल्रङ् विभक्तिमे और आशीर्लिङ् के आत्मने पदमे ———— तथा ————

११३ वृधातु और ऋकारान्त धातुके उत्तर लुङ्के और आशीर्लिङ् के आत्मने पदमे ———— तथा ————

निषेध

११४ कईएक धातुओंके उत्तर इ नहि होता, ऐसे धातुओंको अनिट् धातु कहते हैं। ये आकारादि क्रमसे नीचे लिखे जाते हैं।

दरिद्रा भिन्न सारे आकारान्त[4] धातु अनिट् हैं।

श्रि, श्वि, भिन्न सारे इकारान्त ———— तथा ————

डी, शी, ही, धी, वेवी, भिन्न सारे ईकारान्त ———— तथा ————

यु, रु, नु, स्नु (आत्), क्षु, क्ष्णु, ऊर्णु, भिन्न सारे उकारान्त धातु अनिट् हैं

---

(१) पाणिनीय व्याकरणमे इसका नाम इट् है। (२) रध्, नश्, तृप्(दिवादि) दृप(दिवादि) द्रुह्, मुह्, स्नुह्, स्निह्, स्वरति, सूति, सूयति, धूञ्, क्लिश्. पर परस्मै पद होनेसे उसके उत्तर इ नहि होता और निर पूर्वक कुष धातु और (धातुपाठमे) ऊदित सब धातु। यथा तञ्चू (वा) तञ्च् (रुधादि), त्रश्च्, अञ्जू (रुधादि), मृज्, स्यन्द्, क्लिद्, सिध् (भ्वादि), त्रप्, गुप (भ्वादि परस्मै), क्षम्, अश (स्वादि), क्लिश (क्र्यादि), वृत्, तृद्, दल्, ग्लह्, गाह्, माह्, गुह्, तृह् (तुदादि और रुधादि) (वा) तृंह् (तुदादि), बृह् (वा) बृंह्, स्तृह्, स्तृंह्:— गुह्के उको ऊ होता है इ आनेसे। (३) धृ धातुके लुङ्की परस्मै पदीमे पाणिनीयमतानुसार नित्य इ होता है, पर वो पदेवके मतमे विकल्प करके।

(४) प, पै, ओकारान्त धातु लुङादि विभक्तियोंमे आकारान्त होजाते हैं, इसलिये वे भी अनिट् हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

[१] वृ, जागृ, भिन्न सारे ऋकारान्त धातु —— तथा

कान्तमे — केवल शक् (स्वादिगणीय) धातु —— तथा

चान्तमे — पच्, मुच्, रिच् (रुधादि), वच्, विच् (रुधादि, जुहोत्यादि), सिच् —— तथा

छान्तमे — प्रछ् —— तथा

जान्तमे — त्यज्, निज्, भज्, भञ्ज्, भुज् (तुदादि, रुधादि), भ्रस्ज्, (तुदादि) मस्ज्, यज्, युज्, रञ्ज्, रुज्, विज्, (जुहोत्यादि), सञ्ज्, सृज्, स्वञ्ज् —— तथा

दान्तमे — अद्, क्षुद्, खिद्, छिद्, तुद्, नुद्, पद्, भिद्, विद् (दिवादि, तुदादि, और रुधादि), शद्, सद्, स्कन्द्, (भुवादि, पं), स्विद् (दिवादि) हद्, —— तथा

धान्तमे — क्रुध्, क्षुध्, बन्ध्, बुध् (दिवादि, आत्म), युध्, राध्, रुध्, व्यध्, शुध् (दिवादि), साध् (स्वादि), सिध् (दिवादि), —— तथा

नान्तमे — मन् (दिवादि, आत्म), हन् —— तथा

पान्तमे — आप्, क्षिप्, छुप्, तप् (भुवादि, दिवादि, चुरादि) तिप्, लिप्, लुप् (तुदादि), वप्, शप्, सृप्, स्वप्, —— तथा

भान्तमे — यभ्, रभ्, लभ्, —— तथा

मान्तमे — गम्, नम्, यम्, रम्, क्रम् (आत्म) —— तथा

शान्तमे — क्रुश्, दंश्, दिश् (तुदादि) रुश्, (तुदादि), स्पृश् (तुदादि) दृश् (भुवादि) मृश्, रिश्, लिश्, विश्, —— तथा

षान्तमे — कृष् (भुवादि, तुदादि), त्विष्, तुष्, दुष्, पुष्, शुष् (दिवादि) श्लिष्, द्विष्, पिष्, शिष् (रुधादि), विष्, (भुवादि, जुहोत्यादि और क्र्यादि), —— तथा

सान्तमे — घस्, वस् (भुवादि) —— तथा

हान्तमे — दह्, दिह्, नह्, मिह्, रुह्, वह्, दुह्, लिह्, (अदादि) तथा

प्रति प्रसव

११५ लिट् विभक्तिमे अनिट् धातुके उत्तर इ होताहै[२]

(१) वृधातु के उत्तर थ भिन्न लिट् विभक्तिमे इ नहि होता; थ विभक्तिमे भी वरणार्थ वृधातु को इ होताहै। (२) पर कृ, सृ, भृ, स्तु, द्रु, स्रु, श्रु, धातुओंसे इ नहि होता।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

११६ लिट् की "थ" विभक्तिमे दृश्, सृज्, स्वरान्त[1] और अकारयुक्त[2] धातुके उत्तर विकल्प करके इ होताहै।

११७ ऋ, स्व, स्तृ धातुओंको लुट् विभक्तिमे विकल्प करके इ होताहै।

११८ लृट्, लृङ्, लुङ्के परस्मैपदमे वृत्, वृध्, शृध् के उत्तर इ नहि होता; लुङ् विभक्तिमे पत् के उत्तर इ नहि होता।

११९ लुङ् के परस्मै पदमे, विहित स परे होनेसे स्तु और स्नु धातुके उत्तर इ होताहै।

१२० लुङ् के और आशीर्लिङ् के आत्मने पदमे संयोगादि ऋकारान्त धातुके उत्तर विकल्प करके इ होताहै।

१२१ लृट् और लृङ् के परस्मै पदमें गम् धातुके उत्तर इ होताहै। और स्यन्द के उत्तर नहि होता।

१२२ लृट् और लृङ् विभक्तिमे हन् धातु और ऋकारान्त धातुके उत्तर इ होताहै।

लुट्, लृट्, लृङ्,

१२३ लुट्, लृट्, और लृङ् विभक्तियों मे धातुके अन्त्य स्वर और उपधा लघु स्वर को गुण होताहै[3]

भू (पं) होना

लुट्	भविता	भवितारौ	भवितारः	भवितासि	भवितास्थः	भवितास्थ	भवितास्मि	भवितास्वः	भवितास्मः
लृट्	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः
लृङ्	अभविष्यत्	अभविष्यताम्	अभविष्यन्	अभविष्यः	अभविष्यतम्	अभविष्यत	अभविष्यम्	अभविष्याव	अभविष्याम

---

(१) ऋ और जागृ धातुके उत्तर इ नित्य होताहै; इसके सिवा ऋकारान्त धातुके उत्तर इ नहिं होता, पर सं-स्कृ और स्तृ से उत्तर इ विकल्प करके होताहै, व्ये के उत्तर इ नित्य होताहै।

(२) अद् और घस धातुके उत्तर नित्य इ होताहै।

(३) परन्तु कु (वा) कू, गु (वा) गू, धु (वा) धू, नु (वा) नू, धू, कुच्, गुज्, कुट्, चुट्, छुट् (वा) कुट्, लुट्, त्रुट्, पुट्, मुट् (वा) मुड् (वा) तुड्, स्फुट्, लुठ्, कुड्, कुड् (वा) कुड्, खुड्, वुड्, चुड्, त्रुड्, चुड्, वुड्, भुड्, खुड्, स्थुड्, स्फुड्, गुड्, ब्रुड्, जुड्, तुड्, पुड्, लुड्, कुड्, छिप्, गुर्, छुर्, स्फुर्, (वा) स्फुल्, धुव्, कुड्, और विज् धातुओंके स्वर को गुण नहि होता। यथा (कु) कुता (कू) कुविता (कुट्) कुटिता॥ ऊर्णु शब्दके अन्त्य उको विकल्प करके गुण होताहै; यथा ऊर्णविता (वा) ऊर्णुविता॥ मृज्की ऋको वृद्धि होतीहै; यथा मार्जिता (वा) मार्ष्टा।

	लुट्			लृट्			लृङ्		
चल	चलिता	चलितारौ	चलितारः	चलिष्यति	चलिष्यतः	चलिष्यन्ति	अचलिष्यत्	अचलिष्यताम्	अचलिष्यन्
शी	शयिता	शयितारौ	शयितारः	शयिष्यते	शयिष्येते	शयिष्यन्ते	अशयिष्यत	अशयिष्येताम्	अशयिष्यन्त

१२४ लुट्, लृट्, और लृङ् विभक्तियोंमे ग्रह धातुके उत्तर विहित इ दीर्घ होता है।

ग्रह	ग्रहीता	ग्रहीतारौ	ग्रहीतारः	ग्रहीष्यति	ग्रहीष्यतः	ग्रहीष्यन्ति	अग्रहीष्यत्	अग्रहीष्यताम्	अग्रहीष्यन्

१२५ लुट्, लृट्, और लृङ् विभक्तियोंमे वृ और ॠकारान्त धातुके उत्तर विहित इ विकल्प करके दीर्घ होता है।

तॄ	तरीता	तरीतारौ	तरीतारः	तरीष्यति	तरीष्यतः	तरीष्यन्ति	अतरीष्यत्	अतरीष्यताम्	अतरीष्यन्
(वा)	तरिता	तरितारौ	तरितारः	तरिष्यति	तरिष्यतः	तरिष्यन्ति	अतरिष्यत्	अतरिष्यताम्	अतरिष्यन्

१२६ दीधी, वेवी और दरिद्रा धातुके अन्त्य स्वरको लोप होता है विहित इ परे होनेसे। यथा, दीधिता दरिद्रिता, दरिद्रिष्यति, अदरिद्रिष्यत्।

१२७ लुडादि विभक्तियोंमे कम्, गुप्, धूप्, विछ्, पण्, पन्, ऋत् धातुओंके कामय प्रभृति आदेश भी (४८ वां नियम देखो) विकल्प करके हो जाते हैं; यथा, कमिता (वा) कामयिता गोप्ता, (वा) गोपिता, (वा) गोपायिता इत्यादि।

अनिट् धातु

	(या)	(जि)	(श्रु)	(ह्वे)	(वच्)	(प्रच्छ्)	(मन्)	(लभ्)
लुट्	याता	जेता	श्रोता	ह्वाता	वक्ता	प्रष्टा	मन्ता	लब्धा
लृट्	यास्यति	जेष्यति	श्रोष्यति	ह्वास्यति	वक्ष्यति	प्रक्ष्यति	मंस्यते	लप्स्यते
लृङ्	अयास्यत्	अजेष्यत्	अश्रोष्यत्	अह्वास्यत्	अवक्ष्यत्	अप्रक्ष्यत्	अमंस्यत	अलप्स्यत

	(वस्)	(वह्)	(दह्)	(गम्)	(हन्)	(कृ)
लुट्	वस्ता	वोढा	दग्धा	गन्ता	हन्ता	कर्ता
लृट्	वत्स्यति	वक्ष्यति	धक्ष्यति	गमिष्यति	हनिष्यति	करिष्यति
लृङ्	अवत्स्यत्	अवक्ष्यत्	अधक्ष्यत्	अगमिष्यत्	अहनिष्यत्	अकरिष्यत्

१२८ मि, मी, दी, की इ ई को आ होता है, और ली की ई को विकल्प करके आ होता है। यथा, माता, मास्यति, दाता, लाता (वा) लेता।

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१२९ लुट् लृट् और लृङ् विभक्तिमे दृश् और सृज् धातुके ऋ के स्थानमे र् होता है[1] यथा द्रष्टा, द्रक्ष्यति, स्रष्टा, असृक्ष्यत्, इत्यादि।

१३० अस् के स्थानमे भू, ब्रू के स्थानमे वच् और चक्ष के स्थानमे ख्या होता है; और अद्, अज को विकल्प करके घस्, वी, होता है।

१३१ लृङ् विभक्तिमे अधि पूर्व्वक इ धातुके स्थानमे विकल्प करके गी होता है गी के ईकार का गुण नहिं होता। यथा; अध्यगीष्यत (वा) अध्यैष्यत।

१३२ मस्ज् और अनिट् नश् धातु के स्वर से परे न् आता है; यथा मंक्ता, नंष्टा (नश् सेट् होने से तो नशिता होता है।

विकल्पितेट् धातु

धातु	लुट्	लृट्	धातु	लुट्	लृट्
(रध)	रधिता, रद्धा	रधिष्यति, रत्स्यति	(सू)	सविता सोता	सविष्यते सोष्यते

आशीर्लिङ्

परस्मैपद

भू भूयात् भूयास्ताम् भूयासुः भूयाः भूयास्तम् भूयास्त भूयासम् भूयास्व भूयास्म

भिद् भिद्यात् भिद्यास्ताम् भिद्यासुः भिद्याः भिद्यास्तम् भिद्यास्त भिद्यासम् भिद्यास्व भिद्यास्म

१३३ आशीर्लिङ् के परस्मैपदमे दा[2], धा, पा[2], मा, गा, स्था, हा, के आकार के स्थानमे एकार होता है[3] यथा; देयात्, देयास्ताम् इत्यादि।

१३४ तथा ——— धातुके अन्तस्थित इ, उ, दीर्घ होते हैं[4]। यथा (जि) जीयात् (श्रु) श्रूयात् इत्यादि।

१३५ तथा ——— धातुके अन्तस्थित ऋ के स्थानमे रि[5] होता है। यथा; (कृ) क्रियात् (भृ) भ्रियात् इत्यादि।

(१) कृष, तृप, दृप, मृश, सृप, स्पृश, धातुओंकी ऋके स्थानमे विकल्पकरके र् होताहै। यथा क्रष्टा, कर्ष्टा; क्रक्ष्यति कर्क्ष्यति इत्यादि। इ परे होनेसे ऋ को र् नहि होता। यथा; तर्पिता, दर्पिता॥ मस्ज् धातुके र् को विकल्पकरके ऋ और गुण भी होताहै; यथा भ्रष्टा (वा) भर्ष्टा।

(२) दा (छेदन) पा (पालन) दै (शोधन) केआ को ए नहि होता। (३) जिस धातुकी आदिमे संयुक्त वर्ण हो उसके आकारके स्थानमे विकल्पकरके एकार होता है। यथा (स्ना) स्नेयात् (वा) स्नायात् (ग्ला) ग्लेयात् (वा) ग्लायात्। स्था धातुको नित्य; स्थेयात्। ज्याको जी होताहै। यथा जीयात्। दरिद्राका आकार लुप्त होताहै; (४) उपसर्ग पूर्व्वक इ धातुको दीर्घ नहि होता। धातुके उपधास्थित इ उ को भी दीर्घ होताहै यथा दरिद्र्यात्। (५) हृ की ऋ को रि (वा) ऊर् होताहै। यथा, र् र् परे होनेसे। यथा; (कुर्) कूर्य्यात्, (दिव्) दीव्यात्। ह्रियात् (वा) हूर्य्यात्।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१३६ नथा——संयोगादि ऋकारान्त धातुके और ऋ, जागृ धातुओंके ऋकारके स्थानमे अर् होताहै। यथा; (स्मृ) स्मर्यात् (ऋ) अर्यात्, (जागृ) जागर्यात्।

१३७ नथा——धातुके अन्तस्थित ॠ के स्थानमे ईर् होताहै, और ॠकार पवर्गसे परे होनेसे, ऊर् होताहै। यथा; (तॄ) तीर्यात् (पॄ) पूर्यात्।

१३८ नथा——ग्रह्, प्रच्छ्, व्यध्, भ्रस्ज्, व्रश्च्, व्यच्, और वज् धातुओंके स्थानमे गृह्, पृच्छ्, विध्, भृज्, वृश्च्, विच् और इज् यथा क्रम होताहै। यथा, गृह्यात्, विध्यात् इत्यादि।[1]

१३९ नथा——वच्, वद्, वप्, वश्, वस्, वह्, स्वप्, धातुओंके अकार सहित व के स्थानमे उ होताहै। यथा; उच्यात्, उप्यात् इत्यादि।

१४० नथा——ह्वे को हू, व्ये को वी, और वे को ऊ होताहै। यथा हूयात्, वीयात्, ऊयात् इत्यादि।

१४१ नथा——शास् धातुके स्थानमे शिष् और अज के स्थानमे वी होताहै। यथा; शिष्यात्, वीयात्

१४२ नथा——धातुके उपधा नकारका लोप होताहै[2]। यथा; (मन्थ) मथ्यात्

१४३ नथा——जन्, खन्, सन् को विकल्प करके जा, खा, सा, होताहै। यथा; जन्यात् (वा) जायात् इत्यादि।

आत्मने पद

धातु	प्र॰			म॰			उ॰		
सेव्	सेविषीष्ट	सेविषीयास्ताम्	सेविषीरन्	सेविषीष्ठाः	सेविषीयास्थाम्	सेविषीध्वम्[3]	सेविषीय	सेविषीवहि	सेविषीमहि

१४४ आशीर्लिङ् के आत्मने पदमे धातुके अन्त्यस्वर[4] और उपधा लघु स्वर को गुण होताहै। यथा; (शी) शायिषीष्ट (धुन्) धोनिषीष्ट

(१) आशीर्लिङ्मे गुप प्रभृतिको आय प्रभृति भी होतेहैं (१२० वा नियमको देखो) यथा; गुप्यात् (वा) गोपाय्यात्
(२) इदित धातुके नकारको लोप नहि होता। (३) अ आ भिन्न स्वरसे परे षीध्वम् को षीढ्वम् होताहै, और ह् य् व् र् ल् से परे सेट् षीध्वम् को विकल्प करके षीढ्वम् होताहै।
(४) दीधी, वेवी के अन्त्य स्वरका लोप होताहै। यथा; दीधिषीष्ट। अन्त्य ऋ को ईर् होताहै जो इट् परे न हो। यथा; तीर्षीष्ट

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१४५ तथा (१) ग्रह धातु के उत्तर विहित इ दीर्घ होता है। यथा, ग्रहीषीष्ट (कम) कमिषीष्ट (वा) कामयिषीष्ट (३० पृ० प० देखो)

अनिट् धातु

(दा) दासीष्ट (त्रै) त्रासीष्ट (वह) वक्षीष्ट

१४६ आशीर्लिङ् के आत्मने पदमे अनिट् धातु के अन्तस्थित ऋकार को गुण (२) नहि होता। यथा; (कृ) कृषीष्ट (मृ) मृषीष्ट

१४७ आशीर्लिङ् के आत्मने पदमे अनिट् धातु के उपधा लघु (३) स्वर को गुण नहि होता। यथा; (भुज) भुक्षीष्ट

विकल्पितेट् धातु

(स्तृ) स्तरिषीष्ट, स्तीर्षीष्ट (वृ) वरिषीष्ट, वृषीष्ट (४) इत्यादि

लिट्

१४८ लिट् विभक्तिमे धातु अभ्यस्त होता है। (अर्थात् धातु को द्वित्व होता है) यथा दद धातु का दद दद

१४९ अभ्यस्त करने से पूर्व्वभाग के आदि स्वर से परे जो उसका अंश हो, वह लोप हो जाता है। यथा; द दद

१५० परस्मै पद के प्रथम और उत्तम, पुरुष के एक वचन मे धातु के उपधा लघु स्वर को गुण (५) होता है।

१५१ तथा (६) धातु के उपधा अकार और अन्त्य स्वर को वृद्धि होती है।

१५२ परस्मै पद के मध्यम पुरुष के एक वचन मे अन्त्य स्वर और उपधा लघु स्वर (७) को गुण होता है।

धातु	प्र०			म०			उ०	
दद (आत्)	ददे	ददाते	ददिरे	ददिषे	ददाथे	ददिध्वे (८)	ददे	ददिवहे	ददिमहे

(१) तॄ धातु का इ विकल्प करके दीर्घ होता है। यथा; तरिषीष्ट (वा) तरीषीष्ट। (२) कृ प्रभृति को भी गुण नहि होता (२६ पृ० ३पं० देखो) (३) भ्रज्ज् के र को विकल्प करके अ और गुण होता है (२९ पृ० १९ देखो) यथा; भर्क्षीष्ट (वा) भ्रक्षीष्ट। (४) वृषीष्ट प्रभृति भी होती हैं।

(५) गुह् के उ को ऊ होता है। यथा; जुगूह, जगृहिथ, इत्यादि। (६) कोइयों के मतमे उत्तम पुरुष के एकवचन मे विकल्प करके गुण वृद्धि होती है। यथा जुनाव (वा) जुनव, पपाच (वा) पपच

(७) पर कुच् से लेकर विज धातु पर्य्यन्त (२६ पृ० ३ प० देखो) को गुण नहि होता

(८) हलन्त धातु के इट् से परे ध्वे को विकल्प करके ढ्वे भी होता है। यथा ददिढ्वे, पेचिढ्वे इत्यादि। और इन धातु से उकारान्त ऋकारान्त धातु से परे ध्वे को ढ्वे होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१५३ अभ्यस्तधातुके पूर्वभागका दीर्घस्वर ह्रस्व होता है

नी (उभ०) प्रापणे; नू (पं) स्तुतिः सेव्

निनाय निन्यतुः निन्युः
निन्ये निन्याते निन्यिरे

नुनाव नुनुवतुः नुनुवुः

सिषेवे सिषेवाते सिषेविरे
(१ भा० २१ पृ० ३ प०)

विद् (पं) जानना

विवेद विविदतुः विविदुः विवेदिथ विविदथुः विविद विवेद विविदिव विविदिम

इष् (पं) इच्छाकरना

इयेष ईषतुः ईषुः इयेषिथ ईषथुः ईष इयेष ईषिव ईषिम

इ (पं) जानना

इयाय ईयतुः ईयुः इययिथ / इयेथ ईयथुः ईय इयाय इययिव इययिम

शश् (पं) हिंसाकरना

शशाश शशशतुः शशशुः शशशिथ शशशथुः शशश शशाश शशशिव शशशिम

१५४ अभ्यस्त धातुके पूर्वभागमे वर्गका द्वितीय वर्ण होनेसे प्रथमवर्ण होताहै, और चतुर्थ वर्ण होनेसे तृतीय वर्ण होताहै। यथा; (छिद्) चिच्छेद, चिच्छिदतुः; (भिद्) बिभेद बिभिदतुः इत्यादि

१५५ तथा ——— क ख् के स्थानमे च्, और ग्, घ्, के स्थानमे ज् होताहै। यथा (क्री) चिक्राय, चिक्रयिथ (वा) चिक्रेथ; (खद्) चखाद् चखदतुः (गद्) जगाद, जगदतुः (घस्) जघास इत्यादि

१५६ तथा ——— ऋ ॠ ऌ होनेसे उसके स्थानमे अ होताहै यथा (नृत्) ननर्त, ननृततुः (सृ) ससार, सस्रतुः; (कृप्) चक्लृपे इत्यादि

१५७ तथा ——— ह होनेसे उसके स्थानमे ज होताहै। यथा; (हस्) जहास, जहसतुः जहसुः इत्यादि।

१५८ तथा ——— संयुक्तवर्ण होनेसे तिसके अन्त्यव्यञ्जन वर्णका लोप होताहै। यथा; (श्रि) शिश्राय, शिश्रयिथ; (स्रु) सुस्राव; (श्लिष्) शिश्लेष इत्यादि।

१५९ तथा ——— स्क, स्ख, स्त, ष्ठ (२), स्न, स्प, स्फ, स्म, होनेसे आदिवर्ण

(१) ए ऐ का ह्रस्व इ, और ओ औ का ह्रस्व उ होताहै। (२) ष्ठिव् (वा) ष्ठीव् धातुके पूर्वभागमे त (वा) ट होताहै। यथा; तिष्ठेव (वा) टिष्ठेव तिष्ठीव (वा) टिष्ठीव।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

का लोप होताहै। यथा; (स्खल्) चस्खाल, (श्चुत्) चुश्चोत (स्तु) तु-
ष्टाव, (स्फुर्) पुस्फोर।

१९० आकारान्त धातुसे परे लिट् परस्मैपदके, प्रथम और उत्तम पुरुषके एक वचन के स्थानमे औ होताहै।

१९१ लिट् विभक्तिमे आकारान्त धातुके आकारका लोप होताहै, परन्तु थ विभक्ति मे "इ" न होनेसे लोप नहिं होता

या (पं) जाना

प्र.			म.			उ.		
ययौ	ययतुः	ययुः	ययिथ ययाथ	ययथुः	यय	ययौ	ययिव	ययिम

स्था (पं) रहना

तस्थौ	तस्थतुः	तस्थुः	तस्थिथ तस्थाथ	तस्थथुः	तस्थ	तस्थौ	तस्थिव	तस्थिम

१९२ लिट् विभक्ति परे होनेसे भू धातुको द्वित्व होकर बभूव् होताहै।

बभूव	बभूवतुः	बभूवुः	बभूविथ	बभूवथुः	बभूव	बभूव	बभूविव	बभूविम

१९३ परस्मैपदके प्रथम और उत्तम पुरुषके एक वचन भिन्न लिट् विभक्ति मे (१) ऋकारान्त धातुके ऋके स्थानमे अर् होताहै।

(कृ)	चकार	चकारतुः	चकरुः	चकरिथ	चकरथुः	चकर	चकार	चकरिव	चकरिम

१९४ तथा ——— संयोगादि ऋकारान्त धातुके ऋके स्थानमे अर् होताहै

धातु	प्र.			म.			उ.		
(स्मृ)	सस्मार	सस्मारतुः	सस्मरुः	सस्मरिथ सस्मर्थ	सस्मरथुः	सस्मर	सस्मार	सस्मरिव	सस्मरिम

१९५ परस्मैपदके एकवचन भिन्न लिट् विभक्तिमे धातुके (२) उपधान कार का विकल्प करके लोप होताहै। यथा,

दन्श् धातु			सन्ज् धातु			स्वन्ज् धातु
ददंश	ददंशतुः	ददंशुः	ससञ्ज	ससञ्जतुः	ससञ्जुः	सस्वञ्जे
	ददशतुः	ददशुः		ससजतुः	ससजुः	सस्वजे

(१) पॄ, शॄ, दॄ को विकल्प करके अर् नहि भी होता। यथा; पपरिव (वा) पप्रिव इत्यादि।

(२) इदित धातुके न को लोप नहि होता।

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१६६ अश[1] धातु, ऋकारादि धातु[2], और अकारादि संयोगान्त धातुके पूर्वभाग के स्थानमे आन् होताहै।

अश् धातु			ऋत्			अर्च		
आनशे	आनशाते	आनशिरे	आनर्त	आनृततुः	आनृतुः	आनर्च	आनर्चतुः	आनर्चुः

१६७ लिट् विभक्तिमे द्युत् और व्यथ् धातुओंके पूर्वभागके स्थानमे यथाक्रम दि और वि होताहै। यथा; दिद्युते, दिद्युताते। विव्यथे इत्यादि।

१६८ तथा व्यध् को विध् और व्यच् को विच् होताहै, परन्तु परस्मैपदके एकवचनमे परभाग व्यध्, व्यच् हि रहताहै। यथा; विव्याध विविधतुः, विव्याच, विविचतुः, इत्यादि।

१६९ तथा ———————— अध्ययनार्थ इ धातु के स्थानमे गा होताहै। यथा अधिजगे, अधिजगाते, अधिजगिरे।

१७० जिन धातुओंकी आदि और अन्तमे असंयुक्त व्यञ्जन वर्ण हों और मध्यमे अकार हो, लिट्[3] विभक्तिमे उन धातुओंके[4] पूर्व भागका लोप होताहै, और पर भागके अकारके स्थानमे एकार होताहै; परन्तु परस्मैपदके प्रथम और उत्तम पुरुष के, एक वचनमे नहिं होता।

धातु	प्र०			म०			उ०		
चल	चचाल	चेलतुः	चेलुः	चेलिथ	चेलथुः	चेल	चचाल	चेलिव	चेलिम

१७१ लिट् विभक्तिमे अभ्यस्त त्रृ को तेर, फल्को फेल, भज्को भेज, त्रप्को त्रेप्, और (हिंसार्थ) राध्को रेध् होताहै; और जृ को जेर, फल को फेल, स्तन् को स्तेन, भ्रम् को भ्रेम, वम् को वेम, स्यम् को स्येम, त्रस् को त्रेस, ग्रन्थ् को ग्रेथ्, श्रन्थ् को श्रेथ्, दम्भ् को देभ्, राज को रेज, भ्राज् को भ्रेज्, भ्राश् को भ्रेश, भ्लाश् को भ्लेश, और (कोइयोंके मतमे) स्तन् को स्तेन्, स्यम् को स्येम विकल्पकरके होताहै; परन्तु प्रथम और उत्तम पुरुष, के एक वचनमे नहि होता। यथा, ततार, तेरतुः, तेरिथ; जजार, जजरतुः (वा) जेरतुः, जजरिथ (वा) जेरिथ इत्यादि।

(१) स्वादिगणीय। क्योंकि क्र्यादि गणीय अश धातु का रूप तो "आश" होताहै। (२) ऋ धातुके रूप तो पूर्व नियमानुसार हि होंगे। यथा आर, आरतुः, आरुः, आरिथ, आरिव, इत्यादि ऋच्छ् धातुकी ऋको गुण होताहै। यथा; आनर्च्छ, आनर्च्छतुः इत्यादि। (३) थ विभक्तिमे धातु के उत्तर इ रूप विना नहिं होता। (४) शशू, दद, वकारादि, और जिन धातुओंके पूर्व भाग का रूपान्तर होताहै तद्भिन्न।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

८२ लिट् विभक्तिमे गम्, खन्, जन्, घस, और हन् धातुओंके परभागके अकारका लोप होताहै। परन्तु परस्मै पदके एकवचनमे नहिं होता।

धातु	प्र.	म.	उ.
गम	जगाम जग्मतुः जग्मुः	जगमिथ (जगन्थ) जग्मथुः जग्म	जगाम जग्मिव जग्मिम
खन्	चखान चख्नतुः चख्नुः	चखनिथ (चखन्थ) चख्नथुः चख्न	चखान चख्निव चख्निम
जन्	जज्ञे जज्ञाते जज्ञिरे	जज्ञिषे जज्ञाथे जज्ञिध्वे	जज्ञे जज्ञिवहे जज्ञिमहे
घस (१)	जघास जक्षतुः जक्षुः	जघसिथ जक्षथुः जक्ष	जघास जक्षिव जक्षिम

८३ लिट् विभक्तिमे हन् धातुके परभागके ह के स्थानमे घ होताहै।

हन् जघान् जघ्नतुः जघ्नुः जघन्थ (वा) जघनिथ जघ्नथुः जघ्न जघान जघ्निव जघ्निम

८४ लिट् विभक्तिमे दे और जि धातुके परभागके स्थान मे गि, दी के परभागके स्थानमे दीय् और हि धातु के परभागके स्थान मे घि और चि धातुके परभागके स्थान मे विकल्प करके कि होताहै। यथा; दिग्ये, जिगाय, दिदीये, जिघाय, चिकाय (वा) चिचाय चिच्यिव (वा) चिक्यिव जिग्यतुः इत्यादि।

८५ लिट् काय्यपरे होनेसे दृश और सृज (२) धातुके परभाग के ऋ के स्थान मे र् होताहै; परन्तु द् होनेसे नहिं होता।

(दृश) ददर्श ददृशतुः ददृशुः ददर्शिथ (दद्रष्ठ) ददृशथुः ददृश ददर्श ददृशिव ददृशिम

(सृज) ससर्ज ससृजतुः ससृजुः ससर्जिथ (सस्रष्ठ) ससृजथुः ससृज ससर्ज ससृजिव ससृजिम

८६ तथा इ न आनेसे मज्ज् और नश धातुओंके स्वरके पीछे न् आता है। यथा ममंक्थ, ननंष्ठ

८७ लिट् मे अज धातुके स्थानमे वी होताहै; पर थ, व, म विभक्ति परे होनेसे विकल्प करके; यथा विवाय, विव्यतुः, विवयिथ, विवेथ (वा) आजिथ, विविव, आजिव।

८८ लिट्मे मृज् धातु को वृद्धि होतीहै परस्मैके एकवचनमे; अन्य विभक्तियोंमे विकल्प करके। यथा ममार्ज, ममार्जतुः (वा) ममृजतुः ममार्जिथ, ममार्ष्ठ (कोइयोंके मतमे ममृष्ठ भी होताहै।

(१) लिट् मे अद् धातुके स्थानमे विकल्प करके घस होताहै; यथा, जघास (वा) आद जक्षे (वा) आदे।

(२) कृष, तृप्, दृप, मृश, सृप, स्पृश, धातुओंके ऋके स्थानमे विकल्प करके र् होताहै। यथा; (कृष) चक्रष्ठ, चकर्ष्ठ, (मृश) मम्रष्ठ, ममर्ष्ठ इत्यादि।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१७९ लिट्मे —— ग्रह् धातुके स्थानमे गृह् होताहै; परन्तु परस्मैपदके एकवचनमे नहिं होता[1]। यथा; जग्राह, जगृहतुः, जग्रहिथ, इत्यादि।

१८० तथा —— ह्वे धातुके स्थानमे हू, और श्वि के स्थानमे विकल्प करके शू होताहै। यथा; जुहाव, जुहुवतुः, शिश्वाय (वा) शुशाव, शिश्वेथ (वा) शिश्वयिथ (वा) शुशोथ (वा) शुशविथ

१८१ तथा —— वच्, वद्, वप्, वश्, वस्, वह्, और स्वप्, धातुओंके पूर्वभागके व् और अ के स्थानमे उ होताहै, और परस्मैपदके एकवचन भिन्नविभक्तियोंमे परभागके व् और अ के स्थानमे भी उ होताहै। यथा; (वच्) उवाच, ऊचतुः, ऊचुः; (वस्) उवास, ऊषतुः (१ आ. २५ सू.) (स्वप्) सुष्वाप, सुषुपतुः।

१८२ तथा —— यज् धातुके पूर्वभागके स्थानमे इ होताहै; और परस्मैपदके एकवचन भिन्न विभक्तियोंमे पर भागके य और अ के स्थानमे भी इ होताहै। यथा; इयाज ईजतुः ईजुः इत्यादि।

१८३ तथा —— ज्या धातुके पूर्वभागको जि होताहै। यथा; जिज्यौ, जिज्याथ (वा) जिज्यिथ, जिज्यिव इत्यादि। ज्यो धातु (आत्) जिज्ये इत्यादि।

१८४ लिट् के एकवचनमे, मि, मी धातुओंके आकारान्त की न्याईं रूप होतेहैं; और ली के विकल्प करके। यथा; ममौ, ममाथ (वा) ममिथ, मम्यिव; ललौ (वा) लिलाय, ललाथ (वा) ललिथ (वा) लिलेथ (वा) लिलयिथ, लिल्यिव।

१८५ तथा —— परस्मैपदमे व्ये के एकारको आ नहिं होता। यथा; विव्याय, विव्ययिथ, विव्यतुः, विव्ये।

१८६ तथा, —— तथा, वे को द्वित्व होकर उ वय् भी होताहै; और परस्मै. के एक वचन भिन्न विभक्तियोंमे ऊय्, (वा) ऊव् भी होते हैं। यथा; ववौ (वा) उवाय, ववतुः (वा) ऊयतुः (वा) ऊवतुः; वविथ (वा) ववाथ (वा) उवयिथ, वविव (वा) ऊविव (वा) ऊयिव,

(१) कोइयोंके मतमे प्रछ् को भी पृछ् होताहै। यथा पपृछतुः। भ्रस्ज् को लडादि विभक्तियोंमे विकल्प करके भर्ज्ज् भी होताहै। यथा; बभ्रज्ज (वा) बभर्ज्ज।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(आत्मने) ववे (वा) ऊवे (वा) ऊये, इत्यादि।

१८७ लिट्मे प्याय् का द्वित्व रूप पिप्य होताहै। यथा; पिप्ये, पिप्यिषे, इत्यादि।

१८८ तथा गृ के र् को ल भी होताहै। यथा; जगार (वा) जगाल, इत्यादि।

१८९ तथा रध् और जभ् धातुओंके अ से परे न् आताहै स्वर परे होने से; पर इ परे होनेसे रध् मे न् विकल्प करके होताहै। यथा; ररन्ध, ररन्धतुः, ररन्धिथ (वा) ररद्ध, ररन्धिव (वा) रेध्व; जजम्भ,

१९० तथा अय्, दय्, आस्, धातुके उत्तर आम् होताहै।

१९१ आम् के उत्तर भू, कृ, अस्, इन तीन धातुओंका प्रयोगहोकर लिट् का कार्य्य होताहै। यथा; (अय्) अयाम्बभूव, अयाञ्चक्रे, अयामास, (दय) दयाम्बभूव, दयाञ्चक्रे, दयामास, (आस) आसाम्बभूव, आसाञ्चक्रे, आसामास आसामासतुः; इत्यादि।

१९२ जिन धातुओंके आदिमे अ, आ, भिन्न (९ पृ. २ प.) गुरु स्वरहैं,[२] लिट् विभक्तिमे उनके उत्तर भी आम् होकर भू कृ अस् का प्रयोग होताहै। यथा; ईह्, ईहाम्बभूव, ईहाम्बभूवतुः; इन्द्, इन्दाञ्चकार, इन्दाञ्चक्रतुः इत्यादि।

१९३ लिट् विभक्तिमे ह्, भी, ह्री, भृ, धातुओंके उत्तर विकल्प करके आम् और भू प्रभृति का प्रयोग होताहै; और आम् परे होनेसे इन धातुओं को गुण और अभ्यास होताहै। यथा; जुहवाम्बभूव, जुहवाञ्चकार जुहवामास, जुहाव।

१९४ तथा —— जागृ, दरिद्रा, काश, कास, उष, विद्[३] धातुओंके[४] उत्तर विकल्प करके आम् और भू प्रभृति का प्रयोग होताहै।

(१) कर्तृवाच्यमे आम्के उत्तर प्रयुज्यमान भू और अस् धातु परस्मैपदहि रहतेहैं; कृधातु परस्मै पद धातुमे परस्मैपद आत्मने पद धातुमे आत्मनेपद, और उभय पदमे उभय पद होताहै।

(२) ऋच्छ और ऊर्णु, धातु भिन्न क्योंकि इनके रूप आनर्च्छ ऊर्णुनाव, ऊर्णुनविथ (वा) ऊर्णुनुविथ ऊर्णुनु वे प्रभृति होतेहैं। (३) अदादि गणीय। (४) कम् (आत्) गुप, धूप, विच्छ्, पण, पन्, और ऋत् (आत) धातुओंके आदिष्ट रूप (४८ नियम) सेभी आम और भू प्रभृतिका प्रयोग विकल्पकरके होताहै। यथा; चकमे (वा) कामयाञ्चक्रे, जुगोप (वा) गोपायाञ्चकार, दुधूप (वा) धूपायाञ्चकार, विविच्छ (वा) विच्छायाञ्चकार, पेणे (वा) पणायाञ्चकार, पेने (वा) पनायाञ्चकार, आनर्ते (वा) ऋतीयाञ्चक्रे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१९५ आम् परे होनेसे धातु के अन्त्य और उपधालघु स्वर को गुण होताहै, पर विद्का नहीं
१९६ प्रथम और उत्तम पुरुषके एक वचन भिन्न लिट् विभक्तिमे जागृ धातुके ऋके स्थान मे आर् होताहै

जागृ (प) जागना

जागरांबभूव	जागरांचकार	जागरामास	जजागार(१)
जागरांबभूवतुः	जागरांचक्रतुः	जागरामासतुः	जजागरतुः
जागरांबभूवुः	जागरांचक्रुः	जागरामासुः	जजागरुः

लुङ्

सेट् धातु

१९७ लुङ् विभक्तिमे (सेट्) धातु के उत्तर स् होताहै।
१९८ त्, :, इन दोनो विभक्तियों मे सकारसे परे ई होती है।
१९९ इ और ई इन दोनोंके मध्यवर्ती सकार को लोप होता है।
२०० सकारसे परे अन् के स्थानमे उः होताहै

धातु	प्र॰	म॰	उत्तम पुरुष
क्रम्	अक्रमीत्, अक्रमिष्टाम्, अक्रमिषुः	अक्रमीः अक्रमिष्टम् अक्रमिष्ट	अक्रमिषं अक्रमिष्व अक्रमिष्म

२०१ इट् परे होनेसे परस्मैपदमे, धातुका उपधा अकार विकल्प करके दीर्घ होता है(२) यथा (गद) अगादीत्, अगदीत्, अगादिष्टाम् अगदिष्टाम् ॥
२०२ तथा, रान्त, लान्त, वद्, व्रज् धातुओंका अकार नित्य दीर्घ होताहै। यथा; अचारीत्, अचालीत् अवादीत्, इत्यादि।
२०३ तथा ___ धातुके अन्तस्थित स्वरको वृद्धि होती है। यथा; (लू) अलावीत् अलाविष्टाम्, (नृ) अनारीत्, अनारिषुः इत्यादि
२०४ लुङ् के परस्मैपदमे धातुके उपधालघु स्वरको गुण(३) होता है(४) यथा

रुद्	अरोदीत् अरोदिष्टाम् अरोदिषुः	अरोदीः अरोदिष्टम् अरोदिष्ट	अरोदिषम् अरोदिष्व अरोदिष्म

२०५ लुङ् के आत्मने पदमे धातुके अन्त्यस्वर और उपधा लघुस्वर को गुण(६) होताहै।

---

(१) इसके प्रथम ज का लोप भी होजाताहै यथा जागार जागरतुः इत्यादि ॥ (२) ह्मयान्त धातु क्षण, श्वस, श्वि और एकारेत् अर्थात् कख, कग, रग, लग, ह्रग, स्थग, ह्मल्, ह्वल्, कट, चस, क्नथ, मथ, चन्, मद हस भिन्न। (३) ऊः की वृद्धि नहि होती। यथा अगुवीत्; ऊर्णु, के विकल्पकरके गुण वृद्धि होती है यथा और्णवीत्, और्णावीत्, दीधी, वेवी के अन्त्यस्वरका लोप होता है इ परे होनेसे यथा अदीधिष्ट दरिद्रा के आ का विकल्प करके लोप होता है। यथा; अदरिद्रीत् (वा) अदरिद्रासीत् श्वि और जागृको गुण होताहै वृद्धि नहि होती। यथा; अश्वयीत्, अजागरीत्। (४) कुचादिको गुण नहि होता (१० २३५० देखो)। (५) मृज् धातुको वृद्धि होती है यथा अमार्जीत्, अमार्जिष्टम् इत्यादि (अनिट्पक्षमे अमार्क्षीत् और कोईयोंके मतमे अमाक्षीत् यह भी)। (६) कुचादिको गुण नहि होता (१० ९०३५० देखो)

और्णावीत्

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

(शी) अशायिष्ट अशायिषाताम् अशायिषत अशायिष्ठाः अशायिषाथाम् अशायिढ्वम् अशायिषि अशायिष्वहि अशायिष्महि

(द्युत्) अद्योतिष्ट अद्योतिषाताम् अद्योतिषत अद्योतिष्ठाः अद्योतिषाथाम् अद्योतिढ्वम् अद्योतिषि अद्योतिष्वहि अद्योतिष्महि

२०६ लुङ् के परस्मै पदमे भू धातुके उत्तर सम्बन्धि कार्य नहिं होते केवल अन् के स्थानमे वन् और अम् के स्थानमे वम् होता है

(भू) अभूत् अभूताम् अभूवन् अभूः अभूतम् अभूत अभूवम् अभूव अभूम

२०७ तनादिगणीय धातुओं के न ण को आत्मने पद के मध्यम पु० और अन्य पुरुष मे विकल्प करके लोप होता है, और लोप पक्षमे स का भी लोप होता है। यथा; अतनिष्ट (वा) अतत अतनिष्ठाः (वा) अतथाः। न के लोप होने से सन् धातु के अकार को विकल्प करके दीर्घ होता है। यथा असात (वा) असनिष्ट, असाथाः (वा) असनिष्ठाः। आत्मने पद इ धातु और ॠकारान्त धातुओं से उत्तर इ को विकल्प करके दीर्घ होता है। यथा; अवरिष्ट, अवरीष्ट, अस्तरिष्ट, अस्तरीष्ट। ग्रह के इ को दीर्घ होता है; यथा; अग्रहीत्, अग्रहीष्टाम्। गुह् के उ को ऊ होता है। यथा; अगूहीत् अगूहिषाम्।

अनिट् धातु

२०८ सपरे होनेसे, परस्मै पदमे अनिट् धातुके अन्त्य[1] और उपधा लघु स्वर को वृद्धि होती है।

२०९ तथा, आत्मने पदमे धातुके अन्तस्थित ऋ[3] और उपधा लघु स्वर को गुण नहिं होता।

२१० न, थ, ध,[4] परे होने से वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, वर्ण, श, ष, स और ह्रस्व स्वर से परे स् को लोप होता है॥

धातु	प्र०	म०	उ०
(कृ)	अकार्षीत् अकार्ष्टाम् अकार्षुः	अकार्षीः अकार्ष्टम् अकार्ष्ट	अकार्षम् अकार्ष्व अकार्ष्म
	अकृत अकृषाताम् अकृषत	अकृथाः अकृषाथाम् अकृढ्वम्	अकृषि अकृष्वहि अकृष्महि
(शप्)	अशाप्सीत् अशाप्ताम् अशाप्सुः	अशाप्सीः अशाप्तम् अशाप्त	अशाप्सम् अशाप्स्व अशाप्स्म
	अशप्त अशप्साताम् अशप्सत	अशप्थाः अशप्साथाम् अशब्ध्वम्	अशप्सि अशप्स्वहि अशप्स्महि

(१) अ आ भिन्न स्वर से परे ध्वम् को ढ्वम् हो जाता है; पर ह य् व् र् ल से परे सेट् ध्वम् को विकल्प करके ढ्वम् होता है। (२) लुङ् मे मि, मी, दी धातु आकारान्त होजाते हैं और ली विकल्प करके। गु धातु को वृद्धि नहि होती और धु को विकल्प करके (३) लुङ् के आत्मने पद मे ऋ, ॠ, कों ऋर्, ॠ को ईर् और ह, ह्व, की ऋर्, ॠ को ऊर् होता है अनिट् स परे होने से; यथा; अस्तीर्ष्ट इत्यादि; अहूर्ष्ट इत्यादि कु धातु को भी गुण नहि होता। यथा; अकुष्ट (४) स् को न् होता है ध् परे होने से। यथा; (तन्) अतन्ध्वम्।

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दंश् अदाङ्क्षीत् अदांष्टां अदाङ्क्षुः अदांक्षीः अदांष्टं अदांष्ट अदाङ्क्षं अदाङ्क्ष्व अदांक्ष्म

वह् अवाक्षीत् अवोढां अवाक्षुः अवाक्षीः अवोढम् अवोढ अवाक्षम् अवाक्ष्व अवाक्ष्म अवोढ अवक्षाताम् अवक्षत अवोढाः अवक्षाथाम् अवोढ्वं अवक्षि अवक्ष्वहि अवक्ष्महि

नह् अनात्सीत् अनाद्धाम् अनात्सुः अनात्सीः अनाद्धम् अनाद्ध अनात्सम् अनात्स्व अनात्स्म

नस् अवात्सीत् अवाताम् अवात्सुः अवात्सीः अवात्तम् अवात्त अवात्सम् अवात्स्व अवात्स्म

२११ परस्मै पदमे नम्, यम्, रम्, और आकारान्त धातुको तः भिन्न विभक्तिमे ससे पहिले स् और इ होता है। यथा; अनंसीत्, अनंसिष्टाम्, अज्ञासीत्, अज्ञासिषुः।

२१२ लुङ् के परस्मै पदमे दा, धा, स्था, के उत्तर सको लोप होता है, और आत्मने पदमे आकारके स्थानमे इकार होता है।

(दा) अदात्, अदाताम्, अदुः[1] अदाः अदातम् अदात् अदाम् अदाव अदाम अदित अदिषाताम् अदिषत अदियाः अदिषाथाम् अदिढ्वम् अदिषि अदिष्वहि अदिष्महि

२१३ लुङ् विभक्तिमे इ धातुके स्थानमे गा होताहै। अदिक्षत

२१४ परस्मै पदमे इ स्थानीय गा और पा धातुके स्को लोप होताहै। यथा; अगात् अगाताम् अगुः अपात् अपाताम् अपुः इत्यादि

२१५ घ्रा, धे, छो, शो, सो, धातुओंका परस्मै पदमे, विकल्प करके स् लोप होता है; सलोप होनेसे इनके दा धातुके न्याइ रूप होतेहैं, और न होनेसे ज्ञाधातुके तुल्य होतेहैं। यथा; अघ्रासीत् अघ्रासिष्टाम् अघ्रासिषुः; अघ्रात्, अघ्राताम्, अघ्रुः।

२१६ लुङ् विभक्तिमे अध्ययनार्थ इ धातुके स्थानमे विकल्पकरके गी होताहै, और गीके ईकारको गुण नहिं होता। यथा, अध्यगीष्ट, अध्यगीषाताम्, अध्यगीषत; अध्यैष्ट, अध्यैषाताम्, अध्यैषत

२१७ लुङ् विभक्तिमे अजधातुके स्थानमे विकल्पकरके वी होती है। यथा; अवैषीत् (वा) आजीत्

(आशीर्लिङ् और) लुङ् विभक्तिमे हन् धातुको वध् होताहै। यथा; अवधीत्, अवधिष्टाम्।

२१८ अनिट् मज्ज धातुके स्वरसे परे न आताहै (१३२ देखो)। अमाङ्क्षीत्।

२१९ भ्रज्जधातुके र को विकल्प करके अर होताहै। यथा; अभ्राक्षीत् (वा) अभार्क्षीत्, अभ्रष्ट (वा) अभर्ष्ट।

---

(१) सका लोप होनेसे भी आकारान्त धातुके परे अन् को उस् होताहै।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

२२० लुङ् विभक्तिमे पुषादि[1] और ऌदित[2] धातुओं के उत्तर अ होता है[3]

धातुः	प्र.	म.	उ.
(पुष)	अपुषत् अपुषताम् अपुषन्	अपुषः अपुषतम् अपुषत	अपुषम् अपुषाव अपुषाम
(गम)[4]	अगमत् अगमताम् अगमन्	अगमः अगमतम् अगमत	अगमम् अगमाव अगमाम

२२१ लुङ् विभक्तिमे वच् धातुके स्थान मे वोच्, पत् के स्थानमे पप्त और अस् के स्थान मे आस्थ और शास् (पं) के स्थानमे शिष् होता है।

वच्	पत्	अस
अवोचत् अवोचताम् अवोचन्	अपप्तत् अपप्तताम् अपप्तन्	आस्थत् आस्थताम् आस्थन्

२२२ लुङ् विभक्तिमे नश् धातुके स्थानमे विकल्प करके नेश् होता है।
यथा, अनेशत् अनेशताम् अनेशन् अनशत् अनशताम् अनशन्

२२३ तथा द्रु, श्रि, स्रु, धेट्कम् धातु अभ्यस्त होते हैं और सारे अभ्यस्त कार्य्य उनमे होते हैं।

द्रु	श्रि	स्रु
अदुद्रुवत् अदुद्रुवताम् अदुद्रुवन्	अशिश्रियत् अशिश्रियताम् अशिश्रियन्	असुस्रुवत् असुस्रुवताम् असुस्रुवन्

२२४ लुङ् विभक्तिमे भिदादि[5] इरित[6] धातुओंके उत्तर विकल्प करके अ होता है

भिद्	रुध्
अभिदत् अभिदताम् अभिदन्	अरुधत् अरुधताम् अरुधन्
अभैत्सीत् अभैत्ताम् अभैत्सुः	अरौत्सीत् अरौद्धाम् अरौत्सुः

२२५ तथा द्युतादि[7] धातु से भी विकल्प करके अ और परस्मै पद होते हैं और दूसरे पक्षमे आत्मने पद। यथा अद्युतत् (वा) अद्योतिष्ट

(१) पुषादि धातु ये हैं, असु, उच्, ऋधु, कुप्, कुस्, कृश्, क्रुध्, क्लिदू, क्ष्विद्, क्षुध्, क्षम्, गुप्, गृधु, जसु, डिप्, णभ, णश्, तसु, तुभ्, तृष्, तृप्, तृष्, दसु, दुष्, द्रुह्, भृशु, भ्रंशु, मसी, मुस्, मुहू, यसु, युप्, रधू, रुप्, रुष्, लुभ, लुट्, वसु, विस्, बुस्, शुध्, शुष्, श्लिष्, षिधू, ष्णिहू, ष्विद्, हृष्,

(२) ऌ, ञि न धातुओंमे इत् गयाहै वे ये हैं आपू, गम, घस, सिधू, मुचु, लुप्, विद्, विषू, शकू, शदू, शिषू, षदू, सृपू । लुङ् मे अद् धातु के स्थानमे घस् धातु होता है।

(३) आत्मने पदमे लिप्, सिच्, ह्वे, धातुओंके उत्तर विकल्प करके होता है। (४) सम् पूर्वक गम् धातु आत्मने पद होता है। और तब इस्के म का विकल्प करके लोप होता है लुङ् (और आशीलिङ्) मे यथा; समगंस्त (वा) समगत (५) भिदादि धातु सब इरित हैं यथा: उर्द्, तृद्, क्षुद्, च्युत (वा) श्चुत, छृद्, छिद्, छृद्, तुद्, त्रद्, दृश्, उर्द्, निज्, विच्, विज्, रुह्, बुध्, तुद्, भिद्, युज्, रिच्, रुध्, शुच्, श्चुत, स्कन्द्, स्फुट्। (६) मृश्, स्पृश्, कृष्,

(७) द्युतादि धातु ये हैं यथा द्युत, लुभ, रुच्, घुट्, शुभ, ध्वंस, भ्रंस, मिद्, रुट्, लुट्, लुठ्, वृत्, वृध्, शुभ्, शृधु, श्वित, ष्विद्, स्यन्द्, स्रंभ्, स्रंस्।

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२२६ अपरे होनेसे ऋ ॠ और ऌ ॡ को गुण होताहै। यथा; असरत्, आरत्, अजरत् इत्यादि

२२७ अपरे होनेसे दृश् धातुके स्थानमे दर्श होताहै; अभिन्न पदमे द्राश होताहै। यथा; अदर्शत्, अदर्शताम्, अदर्शन्, अद्राक्षीत्, अद्राष्टाम्, अद्राक्षुः

२२८ ख्यादि धातुओं के अन्त्य स्वरका लोप होताहै। यथा; अख्यत्, अस्थत्, अह्वत् इत्यादि

२२९ अ होनेसे धातुके उपधा न् का लोप होताहै। यथा; अस्रभत्, अस्यदत्, अस्कदत्, अभ्रशत्

२३० लुङ् विभक्तिमे दिशादि धातुके उत्तर स होताहै; परन्तु सनिमित्तक गुण और इ प्रभृति कार्य्य नहि होते। यथा; दिश, अदिक्षत्, अदिक्षताम् अदिक्षन् (एवं) अदिक्षत् अधुक्षत् इत्यादि[1]

२३१ लिह्, दिह्, गुह्, दुह्‌धातुओंसे परे विकल्पकरके अका लोप होताहै त, थाः, वहि, ध्वम् विभक्तियोंमे यथा। अलीढ, अलीढ़ा, अलिह्वहि, अलीढ्वम्।

२३२ जन्, बुध, पद्, पूर, और दीप धातुसे लुङ् के आत्मने पदके "त" के स्थानमे विकल्प करके इ होताहै, और वह इ परे होनेसे बुधके स्थानमे बोध होताहै। यथा; अजनि, अजनिष्ट; अबोधि, अबुद्ध, अपादि, अपूरि, अपूरिष्ट; अदीपि, अदीपिष्ट।

ह्वादिगण

२३३ लङादि चार विभक्तियोंमे ह्वादिगणीय धातु अभ्यस्त होतेहैं; और लिट् प्रकरणमे अभ्यस्त धातुके पूर्व्वभागके जो २ कार्य्य निर्दिष्ट हुएहैं, वे सब यहांभी होतेहैं।

२३४ ति, सि, मि, तु, आनि, आव, आम, पे, आवहै आमहै, त, :, इनविभक्तियोंमे ह्वादिगणीय धातु के अन्त्यस्वर और उपधा लघुस्वर को गुण होता है।

हु (पं) हवनकरना

२३५ हुधातुके उकारके स्थानमें व् होताहै, अति अतु विभक्ति परे होनेसे। और उकारका विकल्प करके लोप भी होजाताहै वः, मः, विभक्ति परे होनेसे।

(१) जिन अनिट् धातुओंकी उपधामे इ उ ऋ है और अन्त्य मे श, ष, स, ह वे दिशादि हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

	प्र०	म०	उ०
लट्	जुहोति जुहुतः जुह्वति	जुहोषि जुहुथः जुहुथ	जुहोमि जुहुवः जुहुमः जुह्वः जुह्मः

२३६ हु धातु के लोट् के हि के स्थान मे धि होता है।

लोट् जुहोतु जुहुताम् जुह्वतु जुहुधि जुहुतम् जुहुत जुहवानि जुहवाव जुहवाम

लङ् अजुहोत् अजुहुताम् अजुहवुः अजुहोः अजुहुतम् अजुहुत अजुहवम् अजुहुव अजुहुम

लिङ् जुहुयात् जुहुयाताम् जुहुयुः जुहुयाः जुहुयातम् जुहुयात जुहुयाम् जुहुयाव जुहुयाम

ह्री (पं) लज्जा करना

लट् जिह्रेति जिह्रीतः जिह्रियति जिह्रेषि जिह्रीथः जिह्रीथ जिह्रेमि जिह्रीवः जिह्रीमः

भी (पं) डरना

लट् बिभेति बिभीतः[1] बिभ्यति बिभेषि बिभीथः बिभीथ बिभेमि बिभीवः बिभीमः

२३७ अभ्यस्त भृ धातु के पूर्व भृ के स्थान मे बि होता है।

(भृ) बिभर्ति बिभृतः बिभ्रति बिभर्षि बिभृथः बिभृथ बिभर्मि बिभृवः बिभृमः

२३८ ति, सि, मि, तु, त् ,:, भिन्न विभक्ति परे होनेसे दा और धा धातु के आकार को लोप होता है।

(दा) ददाति दत्तः ददति ददासि दत्थः दत्थ ददामि दद्वः दद्मः
दत्ते ददाते ददते दत्से ददाथे दद्ध्वे ददे दद्वहे दद्महे

२३९ पर भाग का आकार लोप होनेसे और त, थ, स, ध्व परे होनेसे धा धातु के पूर्व्वभाग के ध के स्थानमे द नहि होता; परन्तु त, थ, स, परे होनेसे पर भाग के ध् के स्थानमे त् होता है।

(धा) दधाति धत्तः दधति दधासि धत्थः धत्थ दधामि दध्वः दध्मः
धत्ते दधाते दधते धत्से दधाथे धद्ध्वे दधे दध्वहे दध्महे

२४० लोट् की हि विभक्तिमे अभ्यस्त दा धातु के स्थानमे दे और धा के स्थान मे धे होता है। यथा देहि, धेहि

हा (पं) छोड़ना

२४१ अगुण स्वर वर्ण वा यादादि परे होनेसे हा धातु के आकार का लोप होता है।

२४२ अगुण व्यञ्जन वर्ण परे होनेसे हा धातु के आकार के स्थान मे इ और

(१) अगुण व्यञ्जन वर्ण परे होनेसे भी धातु का ईकार विकल्प करके ह्रस्व होता है। बिभितः, बिभीतः बिभिमः बिभीमः इत्यादि।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ई होते है।

लट् जहाति जहितः) जहति जहासि जहिथः) जहिथ) जहामि जहिवः) जहिमः)
जहीतः) जहीथः) जहीथ) जहीवः) जहीमः)

लोट् जहातु जहिताम्) जहतु जहिहि[1]) जहितम्) जहित) जहानि जहाव, जहाम
जहीताम्) जहीहि) जहीतम्) जहीत)

लिङ् जह्यात् जह्याताम् जह्युः जह्याः जह्यातं जह्यात जह्याम् जह्याव जह्याम

हा (ङान्) जाना, मा (ङान्) मापना

२४३ हा और मा धातु के पूर्वभाग के आकार के स्थान मे इकार होता है।

२४४ अगुण स्वर वर्ण परे होने से उत्तर भाग का आकार लोप होता है।

२४५ अगुण व्यञ्जन वर्ण परे होने से उत्तर भाग के आकार के स्थान मे ई होती है।

लट् जिहीते जिहाते जिहते जिहीषे जिहाथे जिहीध्वे जिहे जिहीवहे जिहीमहे

२४६ ऋ धातु के पूर्वभाग के स्थान मे इय होता है। यथा, (लट्) इयर्ति, इयृतः, इय्रति (लङ्) ऐयः, ऐयृताम्, ऐयरुः

२४७ लडादि चार विभक्तियों मे निज्, विज्, विष, धातु के पूर्वभाग के इ के स्थान मे ए होता है। यथा,

लट् नेनेक्ति नेनिक्तः नेनिजति नेनेक्षि नेनिक्थः नेनिक्थ नेनेज्मि नेनिज्वः नेनिज्मः

२४८ आनि, आव, आम, ए, आवहे, आमहे, अम्, इन विभक्तियों मे निज्, विज्, विष, धातु के पर भाग को गुण नहिं होता। यथा; नेनिजानि नेनिजाव, नेनिजाम, नेनिजे, नेनिजावहे, नेनिजामहे, अनेनिजम्॥

२४९ जन धातु का अकार दीर्घ होता है और न का लोप होता है ने[2] यादि परे होने से और विकल्प करके य परे होने से। और अगुण स्वर परे होने से परभाग के अ का लोप होता है। यथा (लट्) जजन्ति, जज्ञातः, जज्ञति (लङ्) अजजन्, अजज्ञाताम्, अजज्ञुः।

२५० भस् धातु के परभाग का अकार लुप्त होता है अगुण स्वर परे होने से। यथा; बभस्ति, बभ्सतः बप्सति।

(१) इसका तीसरा पद जहाहि भी होता है। (२) न मे नि का ग्रहण नहिं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

णिजन्त प्रकरण

२५१ प्रेरण अर्थ में धातु के उत्तर णिच् होता है। णिच् का इ मात्र रहता है। णिजन्त धातु उभय पद होते हैं।

२५२ णिच् होने से धातु के अन्त्यस्वर और उपधा अकार की वृद्धि होती है। यथा; श्रु + इ = श्रावि, प्लु + इ = प्लावि, कृ + इ = कारि, हृ + इ = हारि, चल + इ = चालि, दह + इ = दाहि, पच + इ = पाचि, वह + इ = वाहि, इत्यादि।

२५३ णिच् होने से धातु के उपधा लघुस्वर को गुण(१) होता है। यथा; लिप + इ = लेपि, सिच् + इ = सेचि, मुच + इ = मोचि, दृश + इ = दर्शि, इत्यादि।

२५४ जिन धातुओं के उत्तर णिच् होता है वे णिजन्त धातु कहलाते हैं। यथा; श्रु धातु के उत्तर णिच् होने से श्रावि होता है, यह श्रावि स्वरूप एक स्वतन्त्र धातु गिना जाता है, और सारे धातु कार्य्य को प्राप्त होता है।

२५५ लड़ादि चार विभक्तियों में णिजन्त धातु भ्वादि गणीय धातुओं के तुल्य होते हैं।

श्रावि धातु

लट् श्रावयति, श्रावयतः श्रावयन्ति श्रावयसि श्रावयथः श्रावयथ श्रावयामि श्रावयावः श्रावयामः

लोट् श्रावयतु श्रावयताम् श्रावयन्तु श्रावय श्रावयतम् श्रावयत श्रावयाणि श्रावयाव श्रावयाम

(१) परन्तु ह्री, री, ब्ली, क्नूय धातुओं को गुण होता है और उनके उत्तर प आता है। यथा ह्रेपयति, रेपयति, ब्लेपयति, क्नोपयति। भी धातु के स्थान में भीष् और (स्मि) धातु के स्थान में स्माप होता है, और आत्मनेपद होता है, जो कर्त्ता अन्य निरपेक्ष होकर भय अथवा विस्मय देवे। यथा सर्पः शिशुं भीषयते (यहां सर्प अन्य की अपेक्षा न करके आप भय देता है) पुरुषः सर्पेन शिशुं भाययति (यहां कर्त्ता को अन्य की अपेक्षा है) (पक्षे) भापयते। स्मापयते, स्माययति।
दीधी, वेवी, और दरिद्रा के अन्त्य स्वर का लोप होता है। यथा दीधयति, वेवयति, दरिद्रयति। वृ, स्मृ, जागृ, नृ, नॄ, और (भय अर्थ में) दॄ को गुण होता है। यथा; वरयति, स्मरयति, जागरयति, नरयति, दरयति इत्यादि। दॄ (विदारणे) का तो "दारयति" होता है। गॄ के दो रूप होंगे यथा गारयति, गालयति।

(२) मृज् को वृद्धि होती है। यथा; मार्जति

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

लङ्. अश्रावयत् अश्रावयताम् अश्रावयन् अश्रावयः अश्रावयतम् अश्रावयत अश्रावयम् अश्रावयाव अश्रावयाम

लिङ्. श्रावयेत् श्रावयेताम् श्रावयेयुः श्रावयेः श्रावयेतम् श्रावयेत श्रावयेयम् श्रावयेव श्रावयेम

२५६ णिच् प्रत्यय होनेसे अमन्त(१) और चटादि धातुके अन्त्य स्वर और उपधा अकार को वृद्धि नहि होती(२)। यथा;

अमन्त

गम्	दम्	रम्	शम्
गमयति	दमयति	रमयति	शमयति

घटादि

घट्	व्यथ्	जन्	त्वर्	ज्ञप
घटयति	व्यथयति	जनयति	त्वरयति	ज्ञपयति

२५७ तथा आकारान्त(३) धातुके उत्तर प होता है। यथा; (स्था) स्थापयति, इत्यादि।

२५८ तथा धातु के अन्त्य ए, ऐ, ओ, को आ होकर उसके उत्तर भी प(४) होता है यथा (दे) (दो) दापयति (गो) गापयति।

(१) नमप्रभृति को विकल्प करके वृद्धि होती है। कोइ यों का नित्य वृद्धि होती है यथा (कम) कामयति

(२) ज्वलप्रभृति को विकल्प करके वृद्धि होती है। यथा; ज्वलयति (वा) ज्वालयति।

(३) वा (अदादि) धातु के उत्तर ज भी होता है। यथा वाजयति। पा धातु के उत्तर, पानार्थ में य, और रक्षार्थ मे ल होता है। यथा (पानार्थ) पाययति (रक्षार्थ) पालयति।

(४) किसी २ धातु के उत्तर य भी होता है। यथा; (ह्वे) ह्वाययति, (वे) वाययति, (व्ये) व्याययति, (शो) शाययति, (छो) छाययति, (सो) साययति। ज्ञा, स्ना, श्रा (वा) श्रै और ग्लै धातु के आकार को विकल्प करके ह्रस्व भी होता है। यथा ज्ञापयति (वा) ज्ञपयति इत्यादि। स्ना और ग्लै के पूर्व यदि उपसर्ग हो तो उसके आ को अ नहि होता यथा परिग्लापयति। क्ष्णै के आ को नित्य ह्रस्व होता है यथा तेपयति।
कई एक इवर्णान्त धातु के अन्त्य इ ई को आ होकर उनके आगे प होता है। यथा (जि) जापयति (मि) (मी) मापयति, (क्री) क्रापयति, (अधि + इ) अध्यापयति। चि के चार रूप होते हैं। यथा चापयति, चपयति, चाययति, चययति इत्यादि। ली के भी चार रूप होते हैं, यथा लापयति, लाययति, लालयति, लीनयति। भी के दो रूप; यथा, भीषयति, भाययति धू के दो रूप; यथा, धूनयति, धावयति।

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२५९ कुछ धातुओंके रूप विलक्षण होतेहैं। यथा; (रुह्) रोहयति (वा) रोपयति, (क्नूय् वा क्नू) क्नोपयति (दुष्) दूषयति[1] (हन्) घातयति, (शद्) शातयति, (स्फुर्) स्फारयति, वा, स्फोरयति (स्फाय्) स्फावयति, (स्माय्) स्मापयति, (मृज्) मार्जयति, (गुह्) गूहयति, (सिध्) साधयति, (यज्ञादिकर्मअर्थमे) सेधयति, (ह्लाद्) ह्लादयति, (रञ्ज्) (मृगया अर्थमे) रजयति (मृगान् व्याधः), (अन्यत्र) रञ्जयति (मृगान् रणदानेन[2])। (रध्) रन्धयति, (जभ्) जम्भयति, (रभ्) रम्भयति (लभ्) लम्भयति। (इ) गमयति।[3]

गुप्, विच्छ्, धूप्, पण्, पन्, ऋत् धातुओंके दो दो रूप होंगे। यथा गोपयति (वा) गोपाययति इत्यादि।

कृत के रूप कीर्तयति इत्यादि होंगे।

लुट्, लृट्, लृङ्,

लुट्	आवयिता[4]	आवयितारौ	आवयितारः	आवयितासि	आवयितास्थः	आवयितास्थ	आवयितास्मि	आवयितास्वः	आवयितास्मः
लृट्	आवयिष्यति	आवयिष्यतः	आवयिष्यन्ति	आवयिष्यसि	आवयिष्यथः	आवयिष्यथ	आवयिष्यामि	आवयिष्यावः	आवयिष्यामः
लृङ्	अआवयिष्यत्	अआवयिष्यताम्	अआवयिष्यन्	अआवयिष्यः	अआवयिष्यतम्	अआवयिष्यत	अआवयिष्यम्	अआवयिष्याव	अआवयिष्याम

आशीर्लिङ्

परस्मैपद

२६० आशीर्लिङ् के परस्मैपदमे णिजन्त धातुकी इका लोप होताहै।

आव्यात्	आव्यास्ताम्	आव्यासुः	आव्याः	आव्यास्तम्	आव्यास्त	आव्यासम्	आव्यास्व	आव्यास्म

आत्मनेपद

आवयिषीष्ट	आवयिषीयास्ताम्	आवयिषीरन्	आवयिषीष्ठाः	आवयिषीयास्थाम्	आवयिषीध्वम्	आवयिषीय	आवयिषीवहि	आवयिषीमहि

लिट्

२६१ लिट् विभक्तिमे णिजन्त धातुके उत्तर आम् होताहै; और आम् के उत्तर भू, कृ, अस्, इन तीन धातुओंका प्रयोग होताहै। यथा; आवयाम्बभूव, आवयाञ्चकार, आवयामास, इत्यादि।

(१) चित्तकी अप्रसन्नताके अर्थमे विकल्पकरके। यथा क्रोधः चित्तं दूषयति, दोषयति वा

(२) मृगया शब्दका अर्थ पशुवध है, इसीलिये पशुभिन्न अन्यजन्तुके वधमे न लोप नहि होता। यथा; रञ्जयति पक्षिणो व्याधः

(३) पलायन अर्थमे इको गम नहि होता। यथा; प्रति + इ = प्रत्याययति। (४) अनिट् धातु णिजन्त होनेसे उनके उत्तर इ लगता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लुङ्

२६२ लुङ् विभक्तिमे णिजन्त धातुके उत्तर अ होता है।

२६३ "अ" होनेसे णिजन्त धातु अभ्यस्त होते हैं, और लिट् प्रकरणके सारे अभ्यस्त कार्य्य को प्राप्त होते हैं।

२६४ अ परे होनेसे णिजन्त धातुके पर भागका, अन्तस्थित इकार लोप होता है। (पर निमित्तक कार्य्य, अर्थात् य प्रभृति बने रहते हैं)

२६५ तथा ———— उपधा गुरु स्वर लघु होता है।[1]

२६६ लुङ् विभक्तिमे णिजन्त धातुके पूर्वभागका लघु स्वर गुरु होता है।

सिच् + इ = सेचि — असीषिचत् असीषिचताम् असीषिचन्

मुच् + इ = मोचि — अमूमुचत् अमूमुचताम् अमूमुचन्

२६७ परवर्ण गुरु स्वर युक्त होनेसे पूर्वभागका लघु स्वर गुरु नहिं होता।

(निन्द् + इ = निन्दि) — अनिनिन्दत् अनिनिन्दताम् अनिनिन्दन्

(शिक्ष + इ = शिक्षि) — अशिशिक्षत् अशिशिक्षताम् अशिशिक्षन्

(चिन्त + इ = चिन्ति) अचिचिन्तत्,

२६८ लुङ् विभक्तिमे णिजन्त धातुके पूर्वभागके अकारके स्थानमे ई होती है।[2] यथा;

चल + इ = चालि — अचीचलत्

पत् + इ = पाति — अपीपतत्

भज + इ = भाजि — अबीभजत्

हस + इ = हासि — अजीहसत्

२६९ परवर्ण गुरुस्वर युक्त होनेसे ई नहिं होती, यथा

(शास + इ = शासि) अशशासत्, (भक्ष + इ = भक्षि) अबभक्षत्, (लङ्घ + इ = लङ्घि) अललङ्घत्।
(भ्राज + इ = भ्राजि) अबभ्राजत् (लक्ष + इ = लक्षि) अललक्षत्, (याच् + इ = याचि) अययाचत्

२७० संयुक्तवर्ण परे होनेसे ह्रस्व इ होती है। यथा;

(व्यथ + इ = व्यथि) अविव्यथत् (ज्ञप + इ = ज्ञपि) अजिज्ञपत्

---

(१) ढौकि शासि प्रभृति कई एक णिजन्त धातुके उपधा गुरुस्वर लघु नहिं होते। यथा; अडुढौकत्

(२) दृ धातुका नहिं होता। यथा; अददरत्। अनेकस्वर विशिष्ट धातुका विकल्प करके होता है; यथा (चकासि) अचीचकासत् अचचकासत्॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२७१ णिजन्त भ्राज, दीप, प्रभृति धातुओं के परभागका उपधागुरु स्वर विकल्पकरके लघु होना है। यथा; (भ्राजि) अबिभ्रजत् अबिभ्राजत् (दीपि) अदीदिपत्, अदिदीपत्, अजीजिवत्, अजिजीवत्।

२७२ जिन धातुओंकी उपधामे ऋ, ॠ, वा ऌ हो, णिजन्त लुङ्-विभक्ति मे, उनके पर भाग मे विकल्प करके ऋ, ऌ, हिर हती है। यथा; (वृत + इ = वर्त्ति), अवीवृतत्, अववर्त्तत्। (कृ(१)त + इ = कीर्त्ति) अचीकृतत्, अचिकीर्त्तत्, (कॢप् + इ = कल्पि) अचीकॢपत्, अचकल्पत् अचिकल्पत्।

२७३ णिजन्त लुङ् विभक्तिमे कुछ धातुओंके रूप विलक्षण होते हैं। यथा (पा + इ = पायि) अपीप्यत्, (स्था + इ = स्थापि) अतिष्ठिपत्, (घ्रा + इ = घ्रापि) अजिघ्रिपत् (वा) अजिघ्रपत्, (अधि + इ + इ = अध्यापि) अध्यजीगपत् (चेष्ट + इ) अचचेष्टत् (वा) अचिचेष्टत्, (ह्वे + इ = ह्वायि) अजुहावत् (वा) अजूहवत् (त्वर् + इ = त्वरि) अतत्वरत् (स्तॄ + इ = स्तारि, स्तृ + इ = स्तारि) अतस्तरत् अतिस्तरत् (दृ + इ = दारि) अददरत्, (द्युत + इ = द्योति) अदिद्युतत्, (श्वि + इ = श्वायि) अशूशवत् (वा) अशिश्वयत्, (स्मृ + इ = स्मारि) असस्मरत्, (स्वप् + इ = स्वापि) असूषुपत्, (कथ + इ = कथि) अचकथत् (वा) अचीकथत्, (गण + इ = गणि) अजगणत् (वा) अजीगणत्, (प्रथ + इ = प्रथि) अपप्रथत्।

२७४ णिजन्त लुङ् विभक्तिमे, स्वरादि धातुके पर व्यञ्जन वर्णको द्वित्व होकर पहिले व्यञ्जनके आगे इ लगती है। यथा (ऊह = अ + ऊजिह + अ + त) औजिहत्, (आप्) आपिपत्, (ईड्) ऐडिडत्

२७५ तथा स्वरादि धातुका पर वर्ण यदि र् वा न् युक्त हो तो उस वर्णका द्वित्व होनेसे पहिलेके साथ र् वा न् रहता है, दूसरे के साथ नहि। यथा, (अर्ह) आर्जिहत्, (ऋध् + इ = अर्धि) आर्दिधत्, (उन्द्) औन्दिदत्, (ऋ + इ = अर्पि) आर्पिपत्।

(१) कृत की ऋको ईर् होता है इ परे होनेसे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२७६ णिजन्तलुङ्मे स्वरादिधातुका परवर्ण यदि र् न् भिन्न वर्णसे युक्त हो तो प्रथम व्यञ्जन का द्वित्व होताहै। यथा (ईल) ऐलि-लत्,(अम्ब) आम्बिम्बत्

२७७ तथा स्वरादिधातुका परवर्ण यदि सस्वर हो तो सस्वरकोहि द्वित्व होताहै। यथा। (ऊर्ण) और्णुनवत्,(अवधीर्) आ-ववधीरत्,(अन्ध) आन्दधत्,(ऊन) औननत्

२७८ तथा श्रु, स्रु, द्रु, प्रु, प्लु, और च्यु, धातुके पूर्व भागके अकारके स्थानमे इ और उ होताहै। यथा; अशिश्रवत्, असुस्रवत्, अदिद्रवत्, अदुद्रवत्, इत्यादि।

चुरादिगण

२७९ चुरादिगणीय धातुओंके उत्तर स्वार्थमे णिच् होताहै; और णीजन्त धातुके कार्य्य होते हैं[1]।

(चुर + इ = चोरि)

लट्	लोट्	लङ्	लिङ्	लुट्	लृट्	लृङ्	लिङ्	लिट्
चोरयति	चोरयतु	अचोरयत्	चोरयेत्	चोरयिता	चोरयिष्यति	अचोरयिष्यत्	चोर्य्यात्	चोरयामास

लुङ्
अचूचुरत्

अकारान्त धातु[2]

२८० णिच् होनेसे धातुके अन्तस्थित अकारको लोपहोताहै; और फेर गुण वृद्धि नहिं होती। यथा; (रच) रचयति रचयतु रचयामास[3]

---

(१) कोईयोंके मतमे म्रच् धातुको गुण नहि होता यथा म्रचयति।

(२) यथा। अङ्क, अङ्ग, अञ्च, अर्थ, अन्ध, अवधीर, अंश, अस, आन्दोल, हिन्दोल, ऊन, कर्ण, कथ, कल, कड, काल, कुण, गुण, ग्राम, कुमार (वा) कुमाल, कुट्ट, कूट, कूण, कूप, केत, क्षप, खोट (वा) खोट (वा) खोड, खच, खेट (वा) खेड, (वा) खोट, गण, गवेष, गर्व्व, गद्द, गद्द, गोम, चह, चित्र, छिद्र, कर्ण, छद, छेद, तीर, तप, दुःख, दण्ड, चेक, ध्वन, निवास, पट, वट, पर्ण, पत, पद, पल्युल, वल्युल, पष, पश, पुट, पार, तीर, प्रेङ्खोल, भाज, भाम, मह, मिश्र, मूत्र, मृग, चर, रव, रस, रह, रूप, रूक्ष, लज, लञ्ज, लड, लाड, लाभ, वट, वण्ट, वर्ण, वर वस्सल, वस, वक्ष, विष्क, वात, वास, वीज, वेल, काल, वेल, (श्वेत) व्यय, (वित्त), व्रण, शठ, श्वठ, श्रील, शूर, वीर, श्रथ, श्रथ, सभाज, संग्राम, सङ्केत, सत्र, साम, सार, क्षप, सुख, सूच, सूत्र, स्तन, गद, स्तेन, स्तोम, स्थूल, स्पृह, स्फुट, स्वर, हिन्दोल, इत्यादि।
(शाकटायनके मतमे इन धातुओंके पीछे अपलगताहै यथा कथा पयति)(पद, गृह, मृग, कुह, शूर, वीर, स्थूल, अर्थ, सत्र, गर्व्व धातु आत्मनेपद हैं) (३) गद्द धातु की बको रा भी होताहै यथा ग्राद्दयति।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२९१ लुङ् विभक्तिमे अकारान्त धातुके पूर्व्वभागका लघुस्वर गुरु नहिं होता, और अकार के स्थानमे इ अथवा ई नहिं होती। यथा; अररचत्

२९२ तथा कथ और गण धातुके पूर्व्वभागके अकारके स्थानमे विकल्पकरके ई होती है। यथा; अचीकथत् (वा) अचकथत्; अजीगणत् (वा) अजगणत्

सनन्त प्रकरण

२९३ इच्छा अर्थमे धातुके उत्तर सन् प्रत्यय होता है; सन् का स मात्र रहता है।

२९४ सन् प्रत्यय परे होनेसे धातुके उत्तर इ होती है; परन्तु अनिट् धातुके उत्तर नहिं होती(1)।

२९५ सन् प्रत्ययान्त धातु अभ्यस्त होते हैं, और सारे अभ्यस्तकार्य्यको प्राप्त होते हैं।

२९६ सन् प्रत्ययान्त धातुके पूर्व्वभागके अकारके स्थानमे इकार होता है(2)।

लट्

पठ	वद	जीव
पिपठिषति	विवदिषति	जिजीविषति

२९७ स्वरादि धातुमे इ युक्त परवर्णको द्वित्व होता है। यथा; (अट्) अटिटिषति, (अश) अशिशिषति (ऋ) अरिरिषति. पर ऋध् और पत् धातुके अभ्यस्त रूप विकल्प करके ईर्त्स और पित्स भी होते हैं। यथा (ऋधु) अर्दिधिषति (वा) ईर्त्सति; इ, उ, धातुके रूप ईषिषति ऊदिषति प्रभृति होते हैं (ऊर्णुके) ऊर्णुनुविषति ऊर्णुनविषति

(१) परन्तु स्मि, प्रच्छ, गम् अञ्ज, अश (स्वादि) धातुओंके उत्तर इ होती है। ग्रह, वृत (परस्मै), स्यन्द (पर
स्मै), और ऊकारान्त धातुओंके उत्तर इ नहिं होती।
स्तृ, स्तृ, दरिद्रा, श्रि, गृ, भृ, वृ, भ्रस्ज, पत, कृत, वृत, नृत, ऋध्, तन्, सन्, दम्भ, सू, और इव जिनधातु
ओंके अन्तमे हो यथा दिव्, ष्ठिव्, सिव्, और ऋकारान्तधातुओंके उत्तर विकल्प करके इ आती है।
(२) धातु जिस पदका हो सन् प्रत्यय होनेसे भी उसी पदका रहता है; णीजन्तके न्याई सनन्तभी सनन्त धातुगिने जाते हैं, और सारे धातुकार्य्यको प्राप्त होते हैं, और लडादि चार विभक्तियोंमे भ्वादिगणीय धातुके तुल्य होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

ऊ एऊ उविषति (ये तीन प्रकार रूप होते हैं)

अनिट् धातु

नम	दह	पा	स्थां	भिद	बुध
निनंसति	दिधक्षति	पिपासति	तिष्ठासति	बिभित्सति	बुभुत्सति

२८८ सन् प्रत्यय परक इ होनेसे धातुके उपधा लघु स्वरको गुण[1] होताहै। यथा; (लिख्) लिलेखिषति, (शुभ) शुशोभिषते, (नृत्) निनर्तिषति, (वृत्) विवर्तिषते। (उख) ओचिखिषति, (इष) एषिषिषति, (अनिटि) (युध) युयुत्सते।

२८९ रुद्, विद्, और मुष धातुके उपधा लघु स्वर को गुण नहिं होता। यथा; रुरुदिषति, विविदिषति, मुमुषिषति। मुद, क्लिद् को विकल्पकरके। यथा मुमुदिषति, मुमोदिषति

२९० सन प्रत्यय परे होनेसे ग्रह धातुके स्थानमे गृह, स्वप्के स्थानमे सुप् और प्रच्छके स्थानमे पृच्छ होताहै। यथा; जिघृक्षति, सुषुप्सति;

२९१ तथा धातुका अन्त्यस्वर दीर्घ होताहै। यथा; (श्रि) शिश्रीषति[2], (द्रु) दुद्रूषति, (ऊ) जुहूषति। ए, ऐ, ओका आ होता-है। यथा (गै) जिगासति

२९२ तथा धातुके अन्तस्थित ऋ ॠके स्थानमे ईर्[3] हो-ताहै। यथा (कृ) चिकीर्षति, (धृ) दिधीर्षति (हृ) जिहीर्षति (तॄ) तितीर्षति[4]। ऋकार पवर्गके परे होनेसे उसे ऊर् होताहै। यथा (मृ) मुमूर्षति।

---

(१) इट् को विकल्पकरके यू भी होताहै। यथा (सिव) सुस्यूषति (वा) सिसेविषति। दुद्यूषति, दिदेविषति; कुवा-दिको गुण नहिं होता (२९२-२५ देखो) ऌङादिप्रकरणोक्त अन्यान्य विशेषकार्य्यभी होते हैं। यथा (भ्रस्ज्) बिभ्रक्षति, वा बिभर्क्षति, बिभ्रज्जिषति, बिभर्जिषति। (मज्ज) मिमङ्क्षति, (नश) निनङ्क्षति (नह) निनत्सति (दरिद्रा) दिदरिद्रिषति, (वा) दिदरिद्रासति। (कम्) चिकमिषते (वा) चिकामयिषते (गुप्) जुगोपिषति, जुगोपायिषति। (२) शिश्रयिषतिभी होताहै

(३) धातुकी उपधा ऋकाभी ईर् होताहै। यथा (कृत्) चिकीर्तयिषति (४) इट् विकल्प करके होताहै। यथा; तितरिषति वा तितरीषति

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२९३ सन्प्रत्ययान्त अभ्यस्त दा, धा, आप्, मा, लभ, रभ, धातुओंके स्थानमे यथा क्रम, दित्स, धित्स, ईप्स, मित्स, लिप्स, रिप्स, होताहै यथा; दित्सति, धित्सति ईप्सति, मित्सति, लिप्सते, रिप्सते[1]।

२९४ लिट् विभक्तिमे सनन्त धातुके उत्तर आम्, और भू, अस्, कृ, होते हैं। यथा; चिकीर्षाम्बभूव, चिकीर्षाञ्चकार, चिकीर्षामास।

लुट्, ल्टट्, लृङ्, लुङ्, और आशीर्लिङ्के आत्मनेपदमे, सन प्रत्ययके उत्तर इ लगती है।

लुट्	लृट्	लृङ्	लुङ्	आशीर्लिङ्
चिकीर्षिता	चिकीर्षिष्यति	अचिकीर्षिष्यत्	अचिकीर्षीत्	चिकीर्ष्यात्

२९५ कित्, तिज, गुप्, वध, और मान, धातुओंके उत्तर स्वार्थमे सन् होताहै और वध और मान धातुके पूर्वभागके अकार और आकारके स्थानमे ईकार होताहै। यथा, चिकित्सति, तितिक्षते, जुगुप्सते, बीभत्सते, मीमांसते।

यङन्त प्रकरण

२९६ एकस्वर युक्त और आदिमे व्यञ्जन वर्णविशिष्ट धातुके उत्तर पौनः पुन्य और अतिशय अर्थमे यङ् होताहै। यङ् काय मात्र रहताहै। यङन्त धातु आत्मनेपद होतें है[2]

(१) (चि) चिकीषति, चिचीषति। (गम्) जिगांसति, जिगमिषति। (गॄ) जिगलिषति, जिगरिषति (जि) जिगीषति। (अद) जिघत्सति। (हन) जिघांसति। (हि) जिघीषति (ह्वे) जुहूषति। (तन्) तितांसति, तितनिषति। (तॄह) तितृक्षति। (दृ आदरे) दिदरिषते। (दृ विदारणे) दिदरिषति दिदरीषति दिदीर्षति (द्युत) दिद्युतिषते, दिद्योतिषते। (धृ) दिधरिषति। (दम्भ) धिप्सति धीप्सति, दिदम्भिषति। (पद्, पत्) पित्सति (वा) पिपतिषति। (पू) पिपविषति, पुपूषति (भृ) बिभरिषति बुभूर्षति (मि, मी, मे) मित्सति (मृज्) मिमृक्षति मिमार्जिषति (यु) यियविषति, युयूषति। (राध्) रित्सति (रभ्) रिप्सते (लभ्) लिप्सते (वृ) विवरिषति, विवरीषति, वुवूर्षति। (भ्रस्ज) बिभ्रक्षति (शक्) शिक्षति (सन्) सिषासति सिसनिषति (स्मि) सिस्मयिषति (स्वृ) सिस्वरिषति सुस्वूर्षति। येसब विशेषरूप होते हैं।

(२) णिजन्त और सनन्तकी न्याई यङन्त भी सनन्त धातु गिने जाते हैं और लआदि चार विभक्तियोंमे भ्वादिगणीय धातुके तुल्य होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२९७ यङ् होनेसे धातु अभ्यस्त होते हैं; और सारे अभ्यस्तकार्य्य कोभी होते हैं।

२९८ यङ्-अन्त्यन्त धातु के पूर्व्वभाग का अकार दीर्घ होता है। यथा, (लप्) लालप्यते (नप्) नानप्यते (लष) लालष्यते।

२९९ यङ्-अन्त्यन्त धातुके पूर्व्वभाग को गुण होता है। यथा; (शुच) शोशुच्यते (दीप्) देदीप्यते (लुप) लोलुप्यते (सिच्) सेसिच्यते (रुद्) रोरुद्यते।

३०० यङ् होनेसे नान्त, मान्त, और लान्त धातुके पूर्व्वभाग के स्वरवर्ण से परे अनुस्वार, अथवा पर सवर्णी सानुनासिक वर्ण होता है।[1] यथा (जन्) जञ्जन्यते (मन्) मम्मन्यते (गम्) जङ्गम्यते (क्रम) चङ्क्रम्यते (चल्)[2] चञ्चल्यते (गल्) जंगल्यते (फल्) पंफल्यते इत्यादि।

३०१ ऋकारोपध धातुके पूर्व्वभागसे परे री होती है। यथा (नृत) नरीनृत्यते, (सृप) सरीसृप्यते, (कृष) चरीकृष्यते।

३०२ ऋकारान्त धातुके ऋके स्थानमे री होती है। यथा, (कृ) चेक्रीयते, (सृ) सेस्रीयते।

३०३ लुङादि अय विभक्तियोंमे व्यञ्जन वर्णसे परे यङ्-का लोप होता है। यथा (लुट्) शोशुचिता (लृट्) शोशुचिष्यते (लृङ्) अशोशुचिष्यत (लिट्) शोशुचामास, शोशुचाम्बभूव, शोशुचाञ्चक्रे (लङ्) अशोशुचिषत (आशीर्लिङ्) शोशुचिषीष्ट।

(१) परन्तु स्वरादि धातु को सम्पूर्ण द्वित्व होता है, और शेष भाग का ह्रस्व स्वर दीर्घ होता है। यथा; (अट्) अटाट्यते। ऋका रूप इस प्रकार होता है। यथा, अरार्य्यते इत्यादि। कृछ एक धातुओं के पूर्व्वभाग से परे नी आती है। यथा; (पद्) पनीपद्यते (पत्) पनीपत्यते (कस्) चनीकस्यते (कश्) चनीकश्यते (भ्रंश) बनीभ्रश्यते (यङ् मे धातुके उपधा न्का लोप होजाता है) (स्रंस) सनीस्रस्यते (ध्वंस) दनीध्वस्यते (स्कन्द) चनीस्कद्यते। ध्माके देध्मीयते घ्राके जेघ्रीयते और गृके जेगिल्यते इत्यादि रूप होते हैं। (दा) देदीयते (गै) जेगीयते (वे) वेवीयते (लुप्) लोलुप्यते (स्वप्) सेषिप्यते प्रभृति भी रूप होते हैं।

(२) जप्, जभ्, दह्, दंश्, भंज् प्रभृति के पूर्व्व भागके अके दीर्घ होनेके स्थानमे अनुस्वार भी आजाता है। यथा; जञ्जप्यते, दन्दश्यते बम्भज्यते इत्यादि। चर् के चञ्चूर्य्यते इत्यादि रूप होते हैं। हन् के, जेघ्नीयते जंघन्यते, और जङ्घन्यते ये तीन प्रकारके रूप होते हैं।

(३) इसके विकल्प करके जाजायते प्रभृति रूप भी होते हैं।

(४) चाकल्यते प्रभृति भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यङ्लुगन्त

३०४ यङ्प्रत्ययका विकल्पकरके लोप भी होजाताहै।

३०५ यङ्के लुक होनेसे भी धातु अभ्यस्त होतेहैं, और अदादिगणके परस्मैपदकी न्याईं उनके रूप होतेहैं। यथा; (दा) दादाति

३०६ तथा ——— पूर्वभागको गुण होताहै, और अको आ। यथा (विद्) वेवेत्ति (पच्) पापक्ति

३०७ तथा ——— पूर्वभागके अ के पीछे र ई भी विकल्पकरके लगतेहैं। यथा (कृ) चरीकर्त्ति, चरिकर्त्ति, चर्कर्त्ति

३०८ तथा ——— ऋको द्वित्व होकर अर्ऋ (वा) अरिऋ होताहै। यथा अरर्त्ति, अरियर्त्ति

३०९ तथा ——— गृ, तृ के पूर्वभागमें आ होताहै। यथा जागर्त्ति, तातर्त्ति

३१० तथा ——— अनुस्वारागम प्रभृति कार्य्य पूर्ववत् होतेहैं। यथा जङ्गन्ति

३११ तथा ——— ति, सि, मि, तु, त्, :, विभक्तियों के पूर्वविकल्पकरके ई लगतीहै। यथा (भू) बोभवीति, (वा) बोभोति बोभूतः, बोभुवति

३१२ तथा ——— आकारान्त धातुके शेष आको ई होताहै ति, सि, मि, तु, त्, :, भिन्नव्यञ्जन विभक्ति परे होनेसे। यथा (हा) जाहीवः, जाहीमः। परदा धाके शेष आका लोप होताहै। यथा, दाद्वः, दाध्मः

३१३ तथा ——— तथा ——— ई विकल्पकरके होताहै ति, सि, मि, तु, त्, :, विभक्ति परे होनेसे; और उस ईको गुण भी होताहै। यथा; जाहाति (वा) जाहेति

३१४ तथा ——— तथा ——— आका लोप होताहै स्वरादि विभक्ति परे होनेसे। यथा; (हा + अन्ति) जाहति, दादति

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३१५ यङ्के लुक् होनेसे आकारान्त धातुके आको विकल्पकरके ए होताहै यादि विभक्ति परे होनेसे। यथा जाहायात् (वा) जाहेयात्

३१६ तथा ——— घ्रा और ध्मा के आको ई होजाताहै। यथा दा-धेति

३१७ लिट्मे (बुध्) बोबुधामास, (भू) बोभवामास (यहां ऊको गुण होगया) (हन्) वावञ्जामास

३१८ आशीर्लिङ् को छोड़कर अवशिष्ट चार लकारोंमे सब धातुयोंसे इका आगम होताहै; पर इआनेसे भी कई धातुओंके शेष भागके उपधास्वरको गुण नहि होता। यथा; (बुध) बोबुधिता (भी) बेभियता, बोबुधिष्यति, परन्तु (भू) बोभविता।

कर्म्मवाच्य और भाव वाच्य प्रकरण

३१९ कर्म्मवाच्य और भाववाच्य होनेसे धातु आत्मनेपदहोते हैं

३२० कर्म्म वाच्य होनेसे कर्म्म पदमे जो पुरुष और जो वचन होताहै, क्रियापदमे भी वहि पुरुष और वहि वचन होता है।

३२१ भाव वाच्य क्रियामे केवल प्रथम पुरुष का एक वचन होताहै।

३२२ कर्म्मवाच्य और भाववाच्य होनसे लडादि चार विभक्तियों मे सब गणके धातुओंके उत्तर य होताहै। यथा (गम) गम्यते (पठ) पठ्यते (त्यज्) त्यज्यते (भुज) भुज्यते (भिद्) भिद्यते (छिद्) छिद्यते (मुच्) मुच्यते (स्पृश) स्पृश्यते (लभ) लभ्यते (नी) नीयते (हन्) हन्यते (ज्ञा) ज्ञायते (सृज्) सृज्यते (ध्या) ध्यायते (सेव) सेव्यते (लुप) लुप्यते; इत्यादि।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३२३ य परे होनेसे दा, धा, मा, गा, हा, पा[१], सा, स्था, धातुओंके आकारको ई होती है। यथा (दा) दीयते, एवं धीयते, मीयते, गीयते, हीयते, पीयते, सीयते, स्थीयते[२]।

३२४ १३४ से लेकर ९० नियमोंमे आशीर्लिङ् के परस्मैपदमे जिस धातुका जो कार्य्य होताहै य प्रत्यय परे होनेसे भी उस धातुको वहि कार्य्य होताहै[३]। यथा;

१३४ नियमानुयायी उदाहरण (जि) जीयते (श्रि) श्रीयते (स्तु) स्तूयते (स्तॄ) स्तीयते इत्यादि[४]।

१३५ तथा (कृ) क्रियते (भृ) भ्रियते (हृ) ह्रियते (मृ) म्रियते इत्यादि।

१३६ तथा (स्मृ) स्मर्य्यते (स्तृ) स्तर्य्यते (ऋ) अर्य्यते (जागृ) जागर्य्यते,

१३७ तथा (तॄ) तीर्य्यते (कॄ) कीर्य्यते (पॄ) पूर्य्यते

१३८ तथा (ग्रह) गृह्यते (प्रच्छ) पृच्छ्यते (व्यधु) विध्यते (यज) इज्यते

१३९ तथा (वच्) उच्यते (वद्) उद्यते (वप्) उप्यते (वस्) उष्यते (वह्) उह्यते (स्वप्) सुप्यते इत्यादि।

१४० तथा (ह्वे) हूयते (व्ये) वीयते (वे) ऊयते

१४१ तथा (शास्) शिष्यते।

१४२ तथा (ध्वंस) ध्वस्यते, (मन्थ) मथ्यते, (भ्रंश) भ्रश्यते, (भञ्ज) भज्यते, (शंस) शस्यते, (बन्ध) बध्यते, (लम्भ) लभ्यते, (सञ्ज) सज्यते।

१४३ तथा जायते, जन्यते, तायते। खन्यते, सायते, सन्यते[५]

३२५ य परे होनेसे णिजन्त धातुके अन्तस्थित इकारको लोप होताहै[६]। यथा (कारि) कार्य्यते, (स्थापि) स्थाप्यते, (हर्षि) हृष्यते, (दर्शि) दर्श्यते।

३२६ सन् प्रत्ययके अकारका लोप होताहै य परे होनेसे। यथा (बुध) बोधिष्यते।

(१) पानार्थक पा धातु। (२) आकारान्त अन्य धातु वैसेहि रहतेहैं। यथा; ख्यायते, ज्ञायते। दरिद्रा, दीधी, वेवीके अन्त्य स्वरका लोप होताहै। यथा; दरिद्र्यते। ज्याको जी होताहै, जीयते। (३) ४९ वें नियमोक्त आदेशकी न्याइ (कम्) कम्यते (कम्) काम्यते, गुप्ये (गा) गोपाय्यते, विच्छ्यते विच्छाय्यते ऋत्यते, ऋतीय्यते इत्यादि रूप भी होतेहैं। ऊह को उह होताहै उपसर्ग पूर्व होने से। अज को वी, चक्ष को ख्या, अस् को भू, ब्रू को वच्, चक्ष को ख्याञ् होताहै
(४) श्विको शू और श्वी को शायू होताहै। यथा; शूयते, शाय्यते। (५) जायते, जन्यतेभी (६) परइके ह्रस्वादिका ... रहतेहैं)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(सेव धातु)

लिट्	लुट्	लृट्	लृङ्	आशीर्लिङ्
सिषेवे	सेविता	सेविष्यते	असेविष्यत	सेविषीष्ट
सिषेवाते	सेवितारौ	सेविष्येते	असेविष्येताम्	सेविषीयास्ताम्
सिषेविरे	सेवितारः	सेविष्यन्ते	असेविष्यन्त	सेविषीरन्

(भुज् धातु)

बुभुजे	भोक्ता	भोक्ष्यते	अभोक्ष्यत	भुक्षीष्ट
बुभुजाते	भोक्तारौ	भोक्ष्येते	अभोक्ष्येताम्	भुक्षीयास्ताम्
बुभुजिरे	भोक्तारः	भोक्ष्यन्ते	अभोक्ष्यन्त	भुक्षीरन्

(पच) पेचे इत्यादि

१२७ लुट्, लृट्, लृङ्, और आशीर्लिङ् विभक्तियोंमें स्वरान्त धातु और ग्रह, दृश, और हन धातुओंके उत्तर विकल्प करके इ होती है।

१२८ यह इ परे होनेसे धातुके अन्त्य स्वर और उपधा अकारको वृद्धि होती है।

(स्वरान्त श्रु धातु)

शुश्रुवे	श्रोता	श्रोष्यते	अश्रोष्यत	श्रोषीष्ट
	श्राविता	श्राविष्यते	अश्राविष्यत	श्राविषीष्ट

(ग्रह धातु)

जगृहे	ग्रहीता	ग्रहीष्यते	अग्रहीष्यत	ग्रहीषीष्ट
	ग्राहिता	ग्राहिष्यते	अग्राहिष्यत	ग्राहिषीष्ट

१२९ यह इ परे होनेसे उपधा लघुस्वरको गुण होताहै

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(दृश् धातु)

ददृशे	द्रष्टा	दृश्यते	अदृश्यत	दृक्षीष्ट
	दर्शिता	दर्शिष्यते	अदर्शिष्यत	दर्शिषीष्ट

२३० यह इ परे होनेसे हन् धातुके ह् के स्थानमे घ होता है

लिट्	लुट्	लृट्	लृङ्	आशीर्लिङ्
जघ्ने	हन्ता	हनिष्यते	अहनिष्यत	वधिषीष्ट
	घानिता	घानिष्यते	अघानिष्यत	घानिषीष्ट

२३१ यह इ परे होनेसे आकारान्त धातुके उत्तर य भी होता है

(दा धातु)

ददे	दाता	दास्यते	अदास्यत	दासीष्ट
	दायिता	दायिष्यते	अदायिष्यत	दायिषीष्ट

लुङ्

२३२ कर्म वाच्य और भाव वाच्यमे लुङ् के त विभक्तिके स्थानमे इ होतीहै; यह इ परे होनेसे अन्त्य स्वर और(१) उपधा अकार की वृद्धि होतीहै, और उपधा लघुस्वर को गुण होता है।(२)

(वद् धातु)	सिव्	भज	मन
अवादि	असेवि	अभाजि	अमानि
अवादिषाताम्	असेविषाताम्	अभक्षाताम्	अमंसाताम्
अवादिषत	असेविषत	अभक्षत	अमंसत

२३३ स्वरान्त धातु, और ग्रह्, दृश्, हन् धातुओंको लुङ् की त भिन्न विभक्तियोंमे लृङादि की न्याई कार्य होते हैं

(१) अमन्त प्राय सारे धातुओंके अ की वृद्धि नहि होती। यथा; अक्रमि, अतमि, अशमि (शान्त्यर्थ मे, अन्यत्र अशामि) और जन् का दीर्घ नहि होता, अजनि। (२) मृज् के अमार्जि और गुह् के अगूहि प्रभृति रूप होते हैं। (३) ४६ वें नियमानुयायी अकमि वा अकामि, रध्, जभ्, रभ्, मे न् आताहै। यथा अरन्धि। लभ को विकल्प अगोपि वा अगोपायि; अविच्छि अविच्छायि। करके अलम्भि (वा) अलाभि; पर उपसर्ग पूर्व्वक लभ् को नित्य। प्रालम्भि। भञ्ज् के न् का विकल्प करके लोप होता है अभाजि, अभञ्जि। ईड् के अईडि, ऐडि, वा अईडि ये तीन रूप होते हैं। इ को गा; अगायि। अधि पूर्व्वक इ को विकल्प करके गा। यथा; अध्यगायि अध्यायि। ऋत को आर्तीयि वा आर्ति।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

	(दा)	(श्रु)	(ग्रह)	(दृश्)
प्र.[1]	अदायि	अश्रावि	अग्राहि	अदर्शि
द्वि.	अदिषाताम्	अश्रोषाताम्	अग्रहीषाताम्	अदृक्षाताम्
	अदायिषाताम्	अश्राविषाताम्	अग्राहिषाताम्	अदर्शिषाताम्
ब.	अदिषत	अश्रोषत	अग्रहीषत	अदृक्षत
	अदायिषत	अश्राविषत	अग्राहिषत	अदर्शिषत

(हन्)

प्र.	द्वि.	ब.
अवधि	अवधिषाताम्	अवधिषत
अघानि	अहसाताम्	अहसत
	अघानिषाताम्	अघानिषत

नामधातु

३३४ नामसे परे कई एक प्रत्यय होते हैं और वे प्रत्यय होने से शब्दको धातु न होता है, और वह नामधातु कहलाता है ॥

३३५ सारे नामधातुओंके भ्वादिगणीय धातुओंकी न्याईं रूप होते हैं ।

काम्य प्रत्यय अपनी इच्छा अर्थमे — (आत्मनः पुत्रमिच्छति) पुत्रकाम्यति, पुत्रकाम्येत्, पुत्रकाम्यतु, अपुत्रकाम्यत्, पुत्रकाम्यामास पुत्रकाम्यिष्यति, अपुत्रकाम्यिष्यत् पुत्रकाम्यात् अपुत्रकाम्यीत् (पुत्रस्य पुत्रमिच्छति इत्यादिस्थलेन)

क्यच् ———— तथा ———— परस्मैपद होता है (क्यच् काय रहता है) क्यच् होनेसे शब्दका अन्त अकार

(१) प्रथम पुरुषके एक वचन मे विकल्प नहि होते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

		ई होजाताहै और ह्रस्व स्वर दीर्घ होता है। यथा, पुत्रीयति
	बुभुक्षा अर्थमेभी	अशनशब्दसे। अशनशब्दका अन्त्य अकार दीर्घ होजाताहै। यथा; अशनायति
	पिपासा अर्थमेभी	उदकशब्दसे उदको उदन्होजाताहै। यथा; उदन्यति
	करण अर्थमेभी	नमस् तपस् और वरिवस् शब्दसे। यथा, नमस्यति, तपस्यति, वरिवस्यति।
	आचारअर्थमेभी	कर्म्मवाचक उपमानके उत्तर। यथा (शिष्यं पुत्रमिव) (आचरति) पुत्रीयति शिष्यम्।
		अन्त्यस्थित ऋके स्थानमे री होताहै। यथा; उपाध्यायंपितरमिव आचरति। पित्रीयति उपाध्यायम्
क्यङ्	तथा	कर्त्तृवाचक उपमानके उत्तर और आत्मनेपद होता है। शब्दका अन्तस्थित ह्रस्व स्वर दीर्घ होताहै और न,स लोप होता है। यथा पुत्रायते, शिष्यायते, हंसायते सखीयते
		अन्तस्थित ऋके स्थानमे री पित्रीयते।
	करणअर्थमेभी	शब्द वैर कलह शब्दसे। यथा शब्दायते, वैरायते, कलहायते
	अनुभवअर्थमेभी	सुख दुःख कृच्छ्र शब्दसे। सुखायते, दुःखायते, कृच्छ्रायते
क्यङ्	प्रत्यय होताहै उद्वमनअर्थमे	वाष्प उष्मन् फेन धूम शब्दसे। यथा वाष्पायते, उष्मायते, फेनायते, धूमायते

उद्गार पूर्व्वक चर्व्वन अर्थमे रोमन्थशब्दसे। यथा; रोमन्थायते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अभूततद्भाव अर्थमे	यथा (अभृशो भृशोभवति) भृशायते, (एवं) शीघ्रायते, चपलायते, मन्दायते पण्डितायते, उत्सुकायते, सुमनायते दुर्मनायते, उन्मनायते
क्विप् आचरण अर्थमे	कर्तृवाचक उपमानके उत्तर (क्विप् का कुछ नहिं रहता है) परस्मैपद होता है। यथा; (पुत्र इव आचरति) पुत्रति (एवं) शिष्यति, सखयति, वध्वति पितरति मातरति
णिच् करण अर्थमे	णिजन्त प्रकरणमे जोसब विधान हुआहै, यहां भी यथा सम्भव वहसब होताहै। यथा; (भस्मं करोति) भस्मयति, शब्दयति, (ऋ) पृथु मृदु दृढ के ऋको र। यथा; प्रथयति, म्रदयति, द्रढयति। स्थूलको स्थव दूरको दव, अन्तिकको नेद, बहुलको बंह होताहै। यथा; स्थवयति। दवयति, नेदयति बंहयति।
स्य (वा) अस्य कामना अर्थमे	परस्मैपदमे - यथा (मधु) मधुस्यति (वा) मध्वस्यति (अश्व) अश्वस्यति

पदव्यवस्था

२३८. कुछएक आत्मने पद और उभय पद धातु उपसर्ग विशेषके योगमे और अवस्था विशेषमे परस्मै पद होजाते हैं। यथा विरमति, आरमति, परिरमति, उपरमति (वा) उपरमते अनुकरोति पराकरोति, अभिक्षिपति प्रतिक्षिपति, अतिक्षिपति, प्रवह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ति, (लिट्, लुट्, लृट्, लृङ्, मे रूप) ममार मर्त्ता मरिष्यति
अमरिष्यत् (णीजन्त) बोधयति, योधयति, नाशयति जन-
यति, अध्यापयति, (णीजन्त भोजनार्थ और चलनार्थ)
भोजयति, आशयति, चलयति, कम्पयति, (णीजन्त) स्राव-
यति, द्रावयति, स्रावयति, अणीजन्तकालमे अकर्मक धातु
आणीकर्त्ता होनेसे णीजन्त अवस्थामे पं और सकर्मक
होता है; पुत्रः शेते, माता पुत्रं शाययति इत्यादि ॥

२३८ कई एक परस्मैपदी और उभय पदीधातु उपसर्ग विशेष
के योगमे और अवस्था विशेषमे आत्मने पद होजाते हैं
यथा निविशते विक्रीणीते परिक्रीणीते अवक्रीणीते वि-
जयते पराजयते। आदत्ते (नविस्तारे अर्थे) मुखं व्याद-
दाति सिंहः; आ-अनु-परिक्रीडते, संक्रीडते (नकूजनार्थे)
संक्रीडति चक्रं (हर्ष प्रकाश आहारान्वेषण वास ग्रहनेच्छा
अर्थे अप-कृ धातु) अपस्किरते वृषभः अपस्किरते कुक्कु-
टः, अपस्किरते सारमेयः आपृच्छते, प्र-वि-अव-सं-ति-
ष्ठते उत्तिष्ठते (नउत्थानार्थे) आसना उत्तिष्ठति (देवपू-
जा मिलन मैत्रीकरण अर्थे) विष्णुमुपतिष्ठते वैष्णवः
यमुना मुपतिष्ठते गङ्गा, साधुमुपतिष्ठते साधुः (लाभेच्छा-
यां) (वा) धनिनमुपतिष्ठति उपतिष्ठते वा भिक्षुः (उपपू-
र्व्वक अकर्म्मकस्याधातु) भोजनकाल उपतिष्ठते
(आ पूर्व्वक अकर्म्मक हन्, यम्) आहते, आयच्छते (आत्म
अवयव कर्म्म होनेसे) आयच्छते पाणिमात्मीयम्; आहते
स्वीयं शिरः (सम् पूर्व्वक अकर्म्मक गमश्च) सङ्गच्छते, सं-
शृणुते; (स्पर्द्धा अर्थे) मल्लमाह्वयते मल्लः; (हृदि उत्साह अ-
प्रतिबन्ध अर्थे(१)) सतांश्रीः क्रमते, अध्ययनाय क्रमते शिष्यः
शास्त्रेषु क्रमते बुद्धिः; (ग्रह नक्षत्रादि ज्योति पदार्थोंके ऊर्द्ध
गमन अर्थमे) आक्रमते सूर्य्यः; (पदविक्षेप अर्थे) साधु वि-

(१) पर, और उपभिन्न अन्य उपसर्गके योगमे नहि होता।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्रमते वाजी; (आरम्भ अर्थे) प्रक्रमते भोक्तुम्, उपक्रमते भोक्तुम्; (उपसर्ग हीन क्रमको (वा) क्रमते (वा) क्रामति; (अपह्नवार्थे) उक्तमपजानीते अपलपतीत्यर्थः संजानीते प्रतिजानीते (न स्मरणार्थे) पुत्रं संजानाति; (उपसर्ग हीन ज्ञा धातुको वा) जानीते (वा) जानाति; (प्रतिज्ञा अर्थे) सङ्गिरते, उच्चरते गुरुवचनं (न अकर्म्मके) उच्चरति धूमः; (तृतीयान्त पदयोगे) अश्वेन सञ्चरते (विवाह अर्थे) कन्यामुपयच्छते; (उपसर्ग[१] पूर्व्वक भुज) प्रभुङ्क्ते निभुङ्क्ते इत्यादि; भुङ्क्ते (न रक्षार्थे) महीं भुनक्ति राजा (जो कर्त्ता स्वप्रयोजनोद्देशसे क्रियाका अनुष्ठान करे तो उभय पद धातुके उत्तर केवल आत्मने पद होता है) यजते विप्रः, यजति याजकः (सन्नन्त जिज्ञासते, शुश्रूषते, सुस्मूर्षते, दिदृक्षते, (अनुपूर्व्वक ज्ञाको न) अनुजिज्ञासति (प्रति आ पूर्व्वक श्रुको न) प्रतिशुश्रूषति, आशुश्रूषति

लकारार्थ निर्णय

३३८ वर्त्तमान कालमे धातुके उत्तर लट् विभक्ति होती है। यथा भवति (होता है, होती है) गच्छति (जाता है) पश्यति (देखता है)

३३९ अतीत कालमे धातुके उत्तर लिट्, लङ्, और लुङ् होता है। यथा; जगाम, अगच्छत्, अगमत् (गया था, गया है, गया)

३४० भविष्यत्कालमे धातुके उत्तर लुट् और लृट् होता है। यथा; गन्ता; गमिष्यति (जानेवाला है, जायगा)

३४१ स्मशब्दके योगमे अतीतकालमे लट् होता है। यथा; सममूद्रमागच्छति स्म (वह मेरे घरमे आया था) सव्याकरणमधीते स्म (तिसने व्याकरण पढ़ा है)

(१) निर, दुर, सम, पूर्व्वक भुजको नहि होता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३४२ माशब्दके योगमे सबकालोंमे लुङ् होताहै यथा माभ-
त् दुःखम्, माभूत्शोकः
३४३ मास्मशब्दके योगमे सबकालोंमे लङ् और लुङ् होताहै
यथा, मास्म भवदुःखम्, मास्मभूत् शोकः
३४४ यावत् और पुराशब्दके योगमे भविष्यत् कालमे लट् हो
ताहै। यथा, सयावत् आगच्छति तावत् अहं गमिष्यामि
(वह जब तक आवेगा मै तबतक जाऊंगा)
३४५ कदा और कर्हि शब्दोंके योगमे भविष्यत्कालमे विकल्पक
रके लट् होताहै। यथा, कदा ददामि न जाने, कदा दास्या-
मि नजाने
३४६ कथंशब्द के योगमे सर्व्वकालमे विकल्पकरके लट् और
विधिलिङ् होताहै। यथा, कथं गच्छामि कथंगच्छेः
३४७ यदा और यदि शब्दके योगमे भविष्यत्कालमे विधि लिङ्
होताहै। यथा, वत्स्यामि यदास आगच्छेत्, दास्यामि यदि
स आगच्छेत्
३४८ आशीर्व्वाद अर्थमे धातुके उत्तर आशीर्लिङ् और लोट्
होताहै। यथा, तव सुखं भूयात्, तव सुखं भवतु
३४९ आशीर्व्वाद अर्थमे लोट्के तु और हि के स्थानमे विकल्प
करके तात् होताहै। यथा, तव कुशलं भवतात्, भवतु (वा)
ईशस्त्वां पातात् पाहि (वा)
३५० विधि अर्थमे धातुके उत्तर विधिलिङ् होताहै, विधि दोप्रकार
की है, प्रवर्त्तना और निवर्त्तना, सत्कर्म्ममे प्रवृत्ति होनकराने
का नाम प्रवर्त्तना है, असत् कर्म्ममे निवर्त्तनकरानेकानाम
निवर्त्तना है। यथा, (प्रवर्त्तना) सत्यं वदेत्, प्रियं ब्रूयात् (गुरून्
अर्च्चयेत् (निवर्त्तना) नानृतं वदेत्, क्रोधं यत्नेन वर्ज्जयेत्
३५१ अनुज्ञा, नियोग, निमन्त्रण, अनुरोध, प्रार्थना, जिज्ञासा, इन
अर्थोंमे विधिलिङ् और लोट् होताहै। यथा, (अनुज्ञा) गच्छ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

न्तु भवान्, (नियोग) करोतु भवान्, (निमन्त्रण) इह भुञ्जीत भवान्, (अनुरोध) इह शयीत भवान्, (प्रार्थना) मन्त्रमध्यापयेद्भवान्, (जिज्ञासा) किंभो व्याकरणमधीयीय उत साहित्यम्?

३५२ दो क्रियाओंमे कार्य्यकारणभावका बोध होनेसे दोनो क्रियाओंसे भविष्यत्कालमे विधि लिङ् होताहै। यथा; यदि बाल्ये अधीयीत, यावज्जीवं सुखं लभेत; यदि प्रियं वदेत, सर्वस्य प्रियोभवेत्

३५३ शक्यार्थमे धातुके उत्तर लोट् होताहै। यथा; सिन्धुमपि शोषयानि (समुद्रकोभी सुखा सक्ताहूं)

३५४ इच्छार्थ धातुके योगमे विधि लिङ् और लोट् होताहै। यथा इच्छामि भवान् भुञ्जीत भुङ्क्ताम् वा, इच्छामि स आगच्छेत् आगच्छतु वा

३५५ क्रियाकी अनिष्पत्ति प्रतीत होनेमे अतीतकालमे धातुके उत्तर लृङ् होताहै। यथा; सचेत् आगमिष्यत् तदाहमगमिष्यम् (जो वह आता तोमैजाता) (अर्थात् वह आयान हि इसलिये मै गयानहिं)

३५६ पौनः पुन्य और अतिशय अर्थमे सब धातुओंके उत्तर सर्व्वकालमे सब पुरुष और सब विभक्तिओंमे लोट् की हित स्व ध्वम् ये विभक्तियें होतीहैं। यथा; पुनः पुनः अतिशयेन वा हरति जहार हरिष्यति इन अर्थोमे हर हरेति हरत हरध्वम्।

इति आख्यात प्रक्रिया॥

इतिद्वितीयभागः ॥ ✢ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सरलव्याकरण

संस्कृतका

हिन्दीभाषामे

श्रीनवीनचन्द्रराय कर्तृक प्रणीत

तृतीयभाग

मित्रविलासयन्त्रलाहौरमें

पण्डितश्रीमुकुन्दरामयन्त्राध्यक्षनेछापा

संम्वत् १९२९ विक्रम सन १८७२ ईस्वी

द्वितीयसंस्करण मूल्य ।।।) १२०० वार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कृतप्रकरण

साधारणनियम

१ धातु के उत्तर तव्य निष्ठा प्रभृति कई एक प्रत्यय होते हैं, उन्हे कृत् प्रत्यय कहते हैं।

२ कृत् प्रत्यय होनेसे धातु के अन्त्यस्वर और उपधा लघु स्वर को गुण होता है; परन्तु क् अथवा ङ् इत्(१) होनेसे नहिं होता।

३ कृत् प्रत्यय का ण अथवा ञ् इत् होने से धातु के अन्त्य-स्वर और उपधा अकार की वृद्धि होती है। और आकारान्त धातु के उत्तर य होता है।

४ कृत् प्रत्यय(२) परे होने से णिच् का लोप होता है।

५ कृत् प्रत्यय का घ इत् होनेसे धातु के अन्तस्थित च् के स्थान मे क् और ज के स्थान मे ग् होता है।

६ कृत् प्रत्यय का ख् इत् होने से पूर्व पद द्वितीया का एकवचनान्त होता है।

७ तथा——प इत् होने से ह्रस्व स्वरान्त धातु के उत्तर त् होता है।

८ तथा——य परे होने से धातु के अन्तस्थित ओ के स्थान मे अव और औ के स्थान मे आव होता है।

(१) किसी कार्य्य के निमित्त जो अधिक वर्ण लगाया जाता है उसे इत् कहते हैं, का-र्य्यान्त मे उसका लोप होता है। यथा; ण्यत् प्रत्यय मे ण इत् है।

(२) आलु, इत्नु प्रभृति प्रत्यय परे होने से और इट् के व्यवधान मे णिच् का लोप नहिं होता।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कृत्यप्रत्यय[१]

१ **तव्य** — कर्म्मवाच्य और भाव वाच्यमे धातु के उत्तर होता है। लुट् विभक्तिमे इट् प्रभृति जो सब कार्य्य होते हैं इसमे भी वे सब होते हैं। यथा; (दा) दातव्य (शी) शयितव्य (कृ) कर्त्तव्य (वच्) वक्तव्य (याच्) याचितव्य इत्यादि।

२ **अनीय** — कर्म्मवाच्य और भाव वाच्यमे। यथा; (पा) पानीय (विद्) वेदनीय।

३ **ण्यत्** — तथा——ऋकारान्त और व्यञ्जन वर्णान्त धातु के उत्तर होता है। यथा; (कृ) कार्य्यम् (वच्) वाच्यम् (सिच्) सेच्यम् (पच्) पाक्यं (रुज्) रोग्यम्।

४ **यत्** — तथा——स्वरान्त धातु के उत्तर होता है। यथा; (चि) चेयम् (भू) भव्यम् (नी) नेयम् (दा) देयम्[२]।

तथा——शक, सह, और पवर्गान्त धातु के उत्तर भी। यथा; शक्यम्, सह्यम्, शप्यम्, गम्यम्, लभ्यम्।

तथा——उपसर्ग हीन गद्, मद्, यम्, चर्, धातुओं के उत्तर भी। यथा; गद्यम्, मद्यम्, यम्यम्, चर्य्यम्।

५ **क्यप्** — तथा——इ, दृ, भृ, वृ, जुष्, शास्, स्तु, प्रभृति धातुओं के उत्तर। यथा; इत्य, दृत्य, भृत्य, वृत्य, जुष्य, स्तुत्य, शिष्य[३], कृत्य, (पक्षे ण्यत्) कार्य्य। ब्रह्मवद्य (पक्षे) ब्रह्मोद्य[४], मृषोद्य[५],

---

(१) कृत्य प्रत्यय साधित शब्द क्रियाकी न्याइ व्यवहृत होनेसे भाव वाच्यमे क्लीव लिङ्ग की प्रथमा के एक वचनान्त होते हैं; और कर्म्मवाच्यमे कर्म्मके विशेषण होते हैं, इसीलिये कर्म्मका जो लिङ्ग जो विभक्ति जो वचन हो वहि लिङ्ग विभक्ति वचन उनके भी होते हैं। यथा; (भाववाच्ये) मया स्थातव्यम् (कर्म्मवाच्ये) त्वया हस्तः सेचनीयः, हस्तौ सेचनीयौ, मया नदी द्रष्टव्या, तेन पुष्पं नेयम्, पुष्पानि नेयानि, इत्यादि। कृत्य प्रत्यय साधित शब्द जब विशेषण होते हैं तब विशेष्यके लिङ्ग विभक्ति वचन को प्राप्त होते हैं। यथा; गन्तव्यो ग्रामः, गन्तव्यम् ग्रामम्, द्रष्टव्या नदी, इत्यादि कृत्य प्रत्यय भविष्यत् काल औचित्य और अनुज्ञा अर्थमे होते हैं। यथा; (भविष्यत्काले) मया गन्तव्यं (मै जाऊंगा) (औचित्ये) असत्सङ्गः परिहर्त्तव्यः (असत्सङ्ग परित्याग करना उचित है) (अनुज्ञायाम्) त्वया अध्ययनीयम् (तुम अध्यायन करना) इत्यादि।

(२) यत् परे होनेसे धातु के अन्त्य आ को ए होता है। (३) शास् के आ को इ होता है।

(४) ब्रह्मन् पदके परवर्त्ती वद् धातुके उत्तर क्यप् और यत् होते हैं और क्यप् पक्षमे व के स्थान उ होता है। (५) मृषा शब्दसे केवल क्यप् होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ब्रह्मभूय, स्त्रीहत्या।

६ केलिम कर्म्मकर्त्त वाच्यमे। यथा; (भिद्) भिदेलिम, (पच्) पचेलिम, (छिद्) छिदेलिम।

७ शतृ[१] कर्तृवाच्यमे परस्मैपद[२] धातुके उत्तर वर्त्तमान कालमे होताहै। लट् प्रभृति चार विभक्तियोंमे जिसधातुको जो कार्य्य होतेहैं शतृ होनेसे भी तिसधातुको वेहि कार्य्य होंगे। यथा, (भ्वादिगणीय) धावत्, भवत्, जयत्, कर्षत्, भिक्षत्, (दिवादिगणीय) दीव्यत् (क्र्यादि) अश्नत्[३] (णिजन्त) कारयत् (सनन्त) चिकीर्षत् इत्यादि

८ शानच् कर्तृवाच्यमे आत्मनेपद धातुके उत्तर वर्त्तमान कालमे होताहै। शानच् प्रत्ययान्तको लट्के आत्मने विभक्तिके सारे कार्य्य होतेहैं। भ्वादि, दिवादि, और तुदादि गणीय धातुसे शानच्के स्थानमे मान होताहै। यथा, (भ्वादि) सेवमान, वर्त्तमान (दिवादि) जायमान (तुदादि) म्रियमाण (अदादि) शयान (तनादि) मन्वान (ह्वादि) मिमान।

कर्म्मवाच्य धातुके उत्तर भी वर्त्तमान कालमे होताहै। (शानच् को कर्म्मवाच्यमे मान होजाताहै) यथा क्रियमाण, दीयमान इत्यादि[४]।

९ क्वसु अतीत काल और परस्मैपदमे धातुके उत्तर होताहै। (लिट्के उत्तमपुरुषके द्वि वचनमे जो जो कार्य्य होतेहैं क्वसु होनेसे भी धातुको इट् भिन्न सारे कार्य्य होतेहैं) यथा; (श्रु) शुश्रुवस्, बभूवस् (क्वसु होनेसे घस् इन् और आकारान्त धातुके उत्तर इट् होताहै) यथा; जक्षिवस्,

---

(१) शतृ, शानच्, क्वसु, कानच्, स्यतृ, स्यमान, प्रत्ययान्त शब्द विशेषण होतेहैं इसीलिये विशेष्यके लिङ्ग विभक्ति और वचन को प्राप्त होतेहैं। यथा; पश्यन् पुरुषः, पश्यन्तं पुरुषम्, गच्छन्ती स्त्री, शुश्रुवांसं पुरुषं, विविदुषी कन्या, पेतुषा पक्षेण, गमिष्यन् पुरुषः इत्यादि।

(२) कर्तृवाच्यमे उभयपद धातुके उत्तर शतृ और शानच् दोनो होतेहैं। (३) अदादि गणीय विद् धातुसे शतृके स्थानमे विकल्प करके वस् होताहै। यथा विद्वस्, विदत्। (४) अदादिगणीय आसधातुसे शानच्के स्थानमे ईन होताहै। यथा (आस) आसीन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ईयिवस, नश्यिवस, ॥ (अभ्यासकार्य्यसे पर जो सब धातु एक स्वर विशिष्ट रहजाते हैं क्वसु प्रत्यय परे होनेसे तिन धातुओं के उत्तर इट् होताहै) यथा; पेचिवस, आदिवस, ऊचिवस, क्वसु परे होनेसे गम, हन, विश, दृश, और विद धातुओंके उत्तर विकल्प करके इट् होताहै। यथा; (गम्) जग्मिवस, जगन्वस, (हन) जघ्निवस, जघन्वस, इत्यादि।

१० कानच् अतीत काल और आत्मने पदमे धातुके उत्तर होता है (लिट् के आते विभक्तिमे जो २ कार्य्य होतेहैं कानच् होनेसे भी वेहि कार्य्य होतेहैं) यथा रुरुचान ववन्दान ऊचान।

११ स्यत् कर्तृवाच्यमे परस्मैपद धातुके उत्तर भविष्यत्कालमे होताहै (लृट् विभक्तिमे गुण इट् प्रभृति जो जो कार्य्य होतेहैं स्यत् स्यमान परे होनेसे भी वेहि होतेहैं) यथा भविष्यत्, जेष्यत्, कारयिष्यत्।

१२ स्यमान तथा आत्मने पद धातु के उत्तर तथा यथा सेविष्यमाण, वर्त्तिष्यमाण, पक्ष्यमान इत्यादि तथा —— कर्म्मवाच्यमे भी धातुके उत्तर भविष्यत्कालमे होताहै। यथा; ज्ञायिष्यमाण, ज्ञास्यमान कारिष्यमाण, करिष्यमाण, वक्ष्यमाण।

१३ तुमुन् दो क्रियाका एक कर्त्ता होनेसे दोनोके बीच निमित्त अर्थ बोधक धातुके उत्तर होताहै (तुमुन् परे होनेसे लुट के सारे कार्य्य होतेहैं) यथा द्रष्टुंयाति, अध्येतुमिच्छति, कारयितुम्, इत्यादि।

तथा —— समर्थार्थक और कालवाचक शब्दोंके योगमे भी धातुके उत्तर होताहै। यथा; वोढुं समर्थः; भोक्तुं पटुः नर्त्तितुंनिपुणः; कारयितुं कुशलः; योजयितुं प्रवीण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

न्तुं समर्थोऽयम्, अध्येतुं कालोऽयम्।

१४ णमुल् पौनःपुन्य अर्थमें पूर्वकालिक क्रियावाचक धातु के उत्तर होता है। यथा; (स्मृ) स्मारम्, श्रावम्, नामम्, भोजम्, मर्शम्, हासम् (प्रयोगकालमें णमुल प्रत्ययान्त शब्द को द्वित्व होता है) यथा; स्मारं स्मारम्, घातं घातम्।

तथा सोप पद धातुओंके उत्तर भी होता है विविध अर्थोंमे। यथा; अन्यथा कारम्, एवङ्कारम्, कथङ्कारम्, इत्यङ्कारम्। दरिद्रदर्शं ददाति (सर्व्वान् दरिद्रान् दृष्ट्वा ददातीत्यर्थः) यावज्जीवमधीते। उदरपूरं[1] भुङ्क्ते (उदरं पूरयित्वा भुङ्क्ते इत्यर्थः) समूलकाषं कषति[2] समूलघातं हन्ति। जीवग्राहं गृह्णाति, हस्तग्राहं गृह्णाति। स्वपोषं[3] पुष्णाति, धनपोषम् पुष्णाति (स्वेन पुष्णाति धनेन पुष्णातीत्यर्थः)। ऊर्द्ध्वशोषं शुष्यति तरुः (तरुरूर्द्ध्व इव तिष्ठन् शुष्यतीत्यर्थः)। विद्युत् प्रणाशं प्रनष्टः (विद्युदिव क्षणेनैव विनष्ट इत्यर्थः)। इत्यादि।

१५ ल्यप्[5] नञ्भिन्न अव्ययके साथ समास होनेसे पूर्वकालिक क्रिया वाचक धातुके उत्तर होता है। यथा, आ+घ्रा=आघ्राय नि+शाम=निशाम्य।

(ल्यप् होनेसे धातुके अन्त्यस्वर और उपधा लघुस्वरको गुण नहिं होता) यथा वि+जि=विजित्य, द्विधा+कृ=द्विधाकृत्य, वि+शिष=विशिष्य, आ+हन्[6]=आहत्य, सम्+यम्=संयम्य (वा) संयत्य, आ+सन्ज[7]=आसज्य, आ+प्रच्छ[8]=आपृच्छ्य, सम्+ग्रह=संगृह्य, आ+ह्वा=आहूय[9],

(१) कर्मवाचक। (२) क्रियाविशेषणवाचक। (३) ऐसे प्रयोगोंमे जो धातु णमुलान्त हैं उन्हीका आगे भी प्रयोग होता है। (४) कारणबोधक। (५) तुमुन् णमुल और ल्यप् प्रत्यय निष्पन्न शब्द अव्यय होते हैं इसीलिये इनके उत्तर विभक्ति नहिं होती, ये असमापिका क्रिया होती हैं। (६) हनादि धातुके न को त होता है ल्यप् होनेसे और यमादिके म को विकल्प करके त होता है। (७) सन्ज प्रभृतिके न को लोप होता है। (८) प्रच्छ और ग्रहके र को ऋ होती है ल्यप् परे होनेसे। (९) ह्वा को हू और ति को ही होती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्र + ति = प्रतीय, सम् + स्वप्[1] = संसुप्य, प्र + वच् = प्रोच्य, सम् + वप् = समुप्य, अधि + वस् = अध्युष्य, प्र + वह् = प्रोह्य, अनु + वद् = अनूद्य, वि + कॄ[2] = विकीर्य्य, नि + मीलि[3] = निमील्य, वि + रचि = विरचय्य[4], प्र + आपि = प्राप्य (वा) प्रापय्य

१९ क्त
२० क्तवतु } धातुके उत्तर अतीत कालमे होते हैं, इन्को निष्ठा कहते हैं।

(तिङन्त प्रकरण के साधारण नियमोंसे जो सब कार्य्य होते हैं निष्ठा[5] प्रत्यय परे होनेसे भी यथा सम्भव वे सब कार्य्य होते हैं) यथा (शक) शक्तः शक्तवान् (शिष) शिष्टः शिष्टवान्

(तिङन्त प्रकरणमे जो सब धातु सेट् या अनिट् कहे गयेहैं निष्ठामे भी वैसेहि होते हैं) यथा (ख्या) ख्यातः ख्यातवान् (लिख) लिखितः लिखितवान् (णीच् का लोप होताहै निष्ठाके सहित इट् परे होनेसे) यथा (कारि) कारितः कारितवान् (पी) पायितः[6] पायितवान् (श्रि) श्रितः श्रितवान् (हृ) हृतः हृतवान् (यु) युतः युतवान्[7], (धु) धुतः धुतवान्, (दीप) दीप्तः[8] दीप्तवान्, त्रस्तः त्रस्तवान्, (और प्रकरणोंमे जिन धातुओंके उत्तर इट् विकल्प करके होताहै निष्ठामे वे अनिट् रहते हैं) यथा (इष्) इष्टः (गुप्) गुप्तः (दिव्) द्यूतः, स्यूतः, स्नुतः, । क्रान्तः तान्तः । गतः हतः यतः रतः ततः नतः मतः । खातः जातः सातः । (दनश) दष्टः (रन्ज) रक्तः (सन्ज) सक्तः । (छिद्[9])

(१) स्वपादिके व् और अ के स्थानमे उ होताहै। (२) धातुके ऋ को ई र् होताहै। (३) णिच् का लोप होताहै। (४) णीच् का पूर्व्ववर्त्ती स्वर लघु होनेसे णीच् के स्थानमे अय होताहै, आप् धातु को विकल्प करके होताहै। (५) क्त्वा क्तिन् प्रत्यय परे होनेसे भी। (६) आगे जिन धातुओंके जैसे प्रयोग लिखेंगे वैसेहि कार्य्य होते हैं। (७) निष्ठामे उकारान्त और ऊकारान्त के उत्तर इट् नहिं होता। (८) गणपाठमे जो ईदित धातु हैं उन्से भी इट् नहिं होता। (९) धातुके अन्त्य दकार और निष्ठाके तकारको न होता है मद धातु को नहि॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्लिन्नः, क्लिन्नवान्। मत्तः मत्तवान्। (हन्[1]) हन्नः (क्षि) क्षीणः। (शॄ) शूर्णः[2] (चूर्) चूर्णः चूर्णवान्। (कॄ[3]) कीर्णः कीर्णवान्। ग्लानः म्लानः घ्राणः स्त्यानः। (ह्री) ह्रीणः ह्रीतः (नुद) नुन्नः नुत्तः (विन्द) वित्तः विन्नः। क्लिष्टः क्लिशितः; हृष्टः, हर्षितः, संघुष्टः, संघुषितः; रुष्टः, रुषितः; विश्वस्तः, विश्वसितः; आश्वस्तः आश्वसितः; जप्तः जपितः।

(छादि) छन्नः, छादितः (ज्ञपि) ज्ञप्तः ज्ञपितः। (स्फाय) स्फीतः स्फातः (प्या) पीनः प्यानः (मा) मितः (सा) सितः (शा) शितः शातः (दा) दितः (धा) हितः (स्वरान्त उपसर्ग + दा) आदत्तः आत्तः (यज) इष्टः (व्यध) विद्धः। (ग्रह) गृहीतः (प्रच्छ) पृष्टः (भ्रस्ज) भृष्टः। (श्वि) शूनः (ह्वा) हूतः। (वच्) उक्तः (वस्) उषितः (वद) उदितः (वप) उप्तः (वह) ऊढः (स्वप) सुप्तः (गा) गीतः (पा) पीतः (हा) हीनः। (क्षै) क्षामः (पच) पक्वः (शुष) शुष्कः।

क्तवतु[4] कर्तृवाच्यमे होता है इसीलिये तन्निष्पन्न शब्द कर्त्ता का विशेषण होताहै। यथा, स पुस्तकं पठितवान्। तौ पुस्तकं पठितवन्तौ। सा चन्द्रं दृष्टवती। वृक्षात् फलानि पतितवन्ति।

क्त ...... कर्म्मवाच्यमे सकर्म्मक धातुके उत्तर होताहै; इसीलिये तन्निष्पन्न शब्द कर्म्मका विशेषण होताहै। यथा; कुम्भकारेण घटौ कृतौ; मालिना पुष्पाणि चितानि।

क्त ...... कर्तृवाच्यमे अकर्म्मक धातुके उत्तर होताहै। यथा

(१) ओकारेत् धातुओंसे परे निष्ठाके तको न होताहै। (२) रसे परे निष्ठाके तको न होता है। (३) धातुके अन्त्य ऋको ईर् होताहै। (४) जब क्तवतु और क्त प्रत्यय निष्पन्न शब्द समापिका क्रिया की न्याईं प्रयुक्त न होकर केवल विशेषण स्वरूप प्रयुक्त होते हैं तबविशेष्यके लिङ्ग-वचन और विभक्ति को प्राप्त होते हैं; यथा भीतः शिष्यः; भीतं शिष्यम् भीतेन शिष्येन इत्यादि।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सञ्जागरितः, सारलङ्घितः, जले शुष्कम्।
तथा गमनार्थ धातुके उत्तर भी होता है। यथा, संग्रामं गतः
तथा शी, स्था, आस, वस, श्लिष, रुह इन धातुओंका उपसर्गके सहित योग होकर सकर्म्मक होने से भी। यथा, स गृहमधिशायितः। पिता पुत्र माश्लिष्टः।

क्त[1] .... भाववाच्यमे सब धातुके उत्तर होता है। यथा; शिशुभिः हसितम्

१८ क्त्वा[2] दो क्रियाका एक कर्त्ता होनेसे पूर्व्वकालिक क्रियाबोधक धातुके उत्तर होता है। यथा (ज्ञा) ज्ञात्वा (निष्ठा मे जिन नियमोंसे इट् होता है क्त्वा मे भी उन्ही नियमों से होता है[3]) यथा (स्ना) स्नात्वा (पठ) पठित्वा (इट् होनेसे धातुके अन्त्यस्वर और उपधा लघुस्वरको गुण होता है[4]) यथा (शी) शयित्वा (कारि) कारयित्वा (जान्त थान्त और फान्त धातुओं के उपधा नकार को विकल्प करके लोप होता है[5]) यथा (भन्ज) भक्त्वा भङ्क्त्वा इत्यादि। (त्यागार्थ हाको हि) हित्वा।
निषेध अर्थमे अलं और खलु शब्दके योगमे भी धातुके उत्तर होता है। यथा; अलं गत्वा, खलु उक्त्वा।

१९ क्तिन् भाव वाच्यमे धातुके उत्तर होता है। क्तिन् प्रत्यय निष्पन्न शब्द स्त्री लिङ्ग होता है। यथा, (ख्या) ख्यातिः

(१) भाव वाच्यके क्त निष्पन्न शब्द जब समापिका क्रियाकी न्याई व्यवहृत होते हैं तब नित्य क्लीब लिङ्ग की प्रथमा के एक वचनान्त होते हैं। यथा तेन कृतम्, ताभ्याम् कृतम्। और जब विशेष्य शब्दकी न्याई व्यवहृत होते हैं तब उनके रूप अकारान्त क्लीव लिङ्ग शब्दकी न्याई होते हैं। यथा, गतम् गते गतानि। (२) क्त्वा प्रत्यय निष्पन्न शब्द अव्यय होते हैं, और असमापिका क्रिया। (३) पू और क्लिश धातुके उत्तर विकल्पकरके इट् होता है। यथा, पवित्वा, पूत्वा, क्लिशित्वा, क्लिष्ट्वा। और उकारेत् धातुओंको भी विकल्पकरके इट् होता है। यथा, क्रमित्वा क्रान्त्वा। (४) रुदादिकों को गुण नहि होता। यथा रुदित्वा, मृदित्वा, रुदित्वा, विदित्वा, मुषित्वा, और मिलि, लिख, स्निम, कुष, लुध, तुट, द्युत, रुच, स्फुट, क्लिश, तृष, और मृष, धातुओंको विकल्पकरके गुण होता है। यथा, मिलित्वा, मेलित्वा, इत्यादि। (५) वन्च और लन्च धातुओंके नकोभी विकल्पकरके लोप होता है। यथा, वचित्वा, वञ्चित्वा, लचित्वा, लञ्चित्वा॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(गा) गीतिः (चि) चितिः (शक्) शक्तिः (पद्) पत्ति (दृश्) दृष्टिः (ग्ला, म्ला, हा, प्रभृति धातुओंके उत्तर ति के स्थानमे नि होती है) यथा ग्लानिः, म्लानिः, हानिः;

२० णक कर्तृवाच्यमे धातुके उत्तर होताहै। यथा (नी) नायकः (लिप) लेपकः (योजि) योजकः।

तथा भविष्यत्कालमे निमित्त अर्थ होनेसे। यथा भोजको व्रजति (भोजन करनेके निमित्त जाता है)

२१ षक कर्तृवाच्यमे शिल्पी अर्थ होनेसे नृत, खन, और रञ्ज धातुके उत्तर होताहै। यथा (नृत्) नर्त्तकः (खन) खनकः (रञ्ज) रजकः।

२२ णनट और थक तथा गाधातुके उत्तर होताहै। यथा गायनः, गाथकः।

२३ तृच् कर्तृवाच्यमे धातुके उत्तर होताहै[१]। यथा (दा) दाता (जि) जेता (हन) हन्ता, (सिच) सेक्ता, (लुट् विभक्ति मे जिन धातुओंके उत्तर जिन नियमोंसे इट् होताहै, तृच प्रत्यय परे होनेसे भी उन्ही धातुओंके उत्तर उन्ही नियमों से होताहै) यथा (भू) भविता (कारि) कारयिता (दिव) देविता।

२४ अण तथा कर्म्मवाचक पदके परवर्ती धातुके उत्तर होता है। यथा (कुम्भंकरोति) कुम्भकारः, तन्तुवायः, सूत्रधारः,

२५ अट् तथा सोपपद धातुके उत्तर होताहै। यथा, दिवाकर, कर्म्मकारः। (हेतुअर्थे) शोककरः, वन्धुनाशः,। (अनुकूलअर्थे) बलकरः, पुष्टिकरः अन्न हितकरः, प्रीतिकरः, पुरःसरः, अग्रसरः अग्रेसरः अग्रतःसरः; (जलेचरति) जलचरः (भुविचरति) भूचरः साक्षचरः (खेचरति) खचरः (रात्रौचरति) रात्रिचरः रात्रिञ्चरः (सामगायति)

(१) शील, धर्म्म, और सम्यक् कारण अर्थमे भी तृच होताहै (२) कर्म्म, अधिकरण वाचकपद विभक्त्युत्तर होताहै। यथा खेचरः गेचरः इत्यादि।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सामगः (स्तनंपिबति) स्तनपः सीधुपः (शत्रुंहन्ति) शत्रुघ्नः

२६ अ कर्त्तृवाच्यमे पचादि और सोपपद अन्यान्यधातुओं के उत्तर होताहै। यथा; पचः, चलः, सर्पः, देवः, धरः, (अंशं हरति) अंशहरः (पूजां अर्हति) पूजार्हः (शिलायांशेते) शिलाशयः (पार्श्वेनशेते) पार्श्वशयः (अन्नं ददाति) अन्नदः (तत्त्वंज्ञायते) तत्त्वज्ञः (धर्म्मंजानाति) धर्म्मज्ञः (भुवंपाति) भूपः, द्विजः, प्रदः, (गृहे तिष्ठति) गृहस्थः समस्थः (सरसिजायते) सरोजम् (वा सरसिजम्, द्विजः। (अन्तंगच्छति) अन्तगः, दूरगः, खगः, (पतेन पतेण गच्छति) पतगः, पतङ्गः, पतङ्गमः। (क्लेशम् अपहन्ति) क्लेशापहः, शोकापहः, तमोपहः।

२७ अङ् तथा जिनधातुओंकी उपधामे इ, उ, ऋ, हो तिन्के उत्तर होताहै। यथा; विदः, बुधः, नुदः, स्तृतः। तथा ई कृ गृ धातुके उत्तर भी (और ई को इय ऋ को इर् होताहै)। यथा, प्रियः, किरः, गिरः। तथा स्ववन्त पदके परवर्ती उह धातुके उत्तर (और ह को घ)। यथा, (कामंदोग्धि) कामदुघा धेनुः।

२८ णिन् तथा धातुओंके उत्तर होताहै कर्त्तृवाच्यमे (अर्थात् वाला अर्थमे)। यथा; मन्त्री, वादी, अभिलाषी; स्थण्डिलशायी, उष्णभोजी (विकरोति) विकारी मित्रद्रोही। (सोमेन इष्टवान्) सोमयाजी, (पितरंजघान) पितृघाती। (भविष्यत् अर्थमे) भावी, यायी, स्थायी, गामी, प्रतिबोधी, प्रतियोधी, प्रतिरोधी।

२९ घिनुण तथा शील अर्थमे सृज, युज, विच्, त्यज, रञ्ज, धातुओंके उत्तर होताहै। यथा; संसर्गी, योगी, विवेकी,

(१) कर्म्मवाचक पदके परवर्ती आकारान्त धातुके उत्तर अ होताहै और आकारलोप होताहै।
(२) जन हन धातुके अन का और गम् के अ म् का लोप होजाताहै अ प्रत्यय परे होनेसे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

त्यागी, रागी।

३० इनि कर्तृवाच्यमे (शील अर्थमे शमादिके उत्तर होताहै) यथा; शमी, श्रमी, दमी, क्लमी, तपी, भ्रमी।

तथा (निन्दा अर्थमे कर्मवाचक पदके परवर्त्ती अतीत कालमे विपूर्वक क्रीधातुके उत्तर भी होता है)। यथा मांसविक्रयी, शुक्रविक्रयी, रसविक्रयी तैलविक्रयी, घृतविक्रयी।

३१ खश्‌ कर्तृवाच्यमे। (विधुं तुदति) विधुंतुदः, (अरुन्तुदति) अरुन्तुदः, (परं तपति, तापयति वा) परन्तपः, असूर्यम्पश्य(१); उग्रम्पश्यः, प्रियंवदः, अभ्रंलिहः, वाचंयमः, सर्व्वङ्कषः, कूलङ्कषः, कूलमुद्रुजः, कूलमुद्वहः।

३२ खच् तथा संज्ञा अर्थमे। यथा; विश्वम्भरः विष्णुः, पतिंवरा कन्या, वसुन्धरा पृथिवी

३३ खट् तथा। यथा, भयङ्करः, प्रियङ्करः, क्षेमङ्करः, स्तनन्धयः;

३४ खि तथा। यथा, कुक्षिम्भरिः, उदरम्भरिः।

३५ खश तथा। (आत्मानं पण्डितं मन्यते) पण्डितम्मन्यः, कृतार्थम्मन्यः।

३६ इ तथा। शकृत्करिः, स्तम्बकरिः, फलेग्रहिः, आत्मम्भरिः, उदरम्भरिः।

३७ खनट् करण वाच्यमे प्रिय प्रभृति शब्दके परवर्त्ती कृधातुके उत्तर अभूततद्भाव अर्थमे। यथा, (अप्रियः प्रियः क्रियतेऽनेन) प्रियङ्करणम्, पलितङ्करणम्, नग्नङ्करणम्, अन्धङ्करणम्, स्थूलङ्करणम्, सुभगङ्करणम्, आढ्यङ्करणम्।

३८ खिष्णुच्, खुकञ् कर्तृवाच्यमे होताहै तथा। यथा, (अप्रियः प्रियो भवति) प्रियम्भविष्णुः, प्रियम्भावुकः।

३९ णि कर्तृवाच्यमे। (यह प्रत्यय सम्पूर्ण रहता है) (अंशंभ

(१) दृश् धातुके स्थानमे पश्य होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जते) अंशभाक्, (उःखंभजते) उःखभाक्।

४० क्विप् तथा (तथा)। सभासद्, संसद्, परिषद्, उत्सृः, मित्रद्विट्, सेनानी (सुकृतवान्) सुकृत्, कर्म्मकृत्, पुण्यकृत्, (भ्रुणंजघान) भ्रूणहा, ब्रह्महा, वृत्रहा, अग्निचित्, सोमसुत्।

४१ क्विप्, षट्- कर्त्तवाच्यमे उपमानवाचक तद्, यद्, एतद्, भवत्, अस्मद्, युष्मद्, अदस्, इदम्, किम्, अन्य और समान, शब्दोंके परवर्त्ती दृश धातुके उत्तर होताहै। यथा; (सइवदृश्यते) तादृक्, तादृशः, यादृक्, यादृशः, एतादृक्, एतादृशः, अस्मादृक्, अस्मादृशः, युष्मादृक्, युष्मादृशः; मादृक्, मादृशः, त्वादृक्, त्वादृशः; अमूदृक्, अमूदृशः; ईदृक्, ईदृशः; कीदृक्, कीदृशः; भवादृक्, भवादृशः; सदृक्, सदृशः; अन्यादृक्, अन्यादृशः।

४२ क्वनिप् कर्त्तवाच्यमे कर्म्मवाचक पदके परवर्त्ती दृश धातुके उत्तर अतीतकालमे होता है। यथा; (पारं दृष्टवान्) पारदृश्वा, शत्रुजित्वा

४३ इष्णु सह्, रुच्, वृध्, अलङ्कृ निराकृ, प्रजन, उत्पच, उत्पत, उन्मद, अपत्रप्, वृत, चर, भू, धातुओंके उत्तर कर्त्तवाच्यमे शीलधर्म्म और सम्यक् कारण अर्थमे होताहै। यथा; सहिष्णुः, रोचिष्णुः वर्द्धिष्णुः; इत्यादि।

४४ स्नुक् जि, भू, स्था और ग्ला धातुओंके उत्तर तथा। जिष्णुः; भूष्णुः; स्थास्नुः, ग्लास्नुः,

४५ क्नु त्रस, गृध धृष और क्षिप धातुओंके उत्तर तथा त्रस्नुः, गृध्नुः; धृष्णुः, क्षिप्नुः,

(२) पर्शोमेलेकर और सब कार्य्य प्रयोगानुसार होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

४६ उकञ् कम्, लष्, पत्, पद्, स्था, भू, वृष, हन्, गम् और शॄ धातुओं के उत्तर तथा। कामुकः, लाषुकः, पातुकः, पादुकः, इत्यादि।

४७ आलु दय् नि तत् पूर्वक द्रा और श्रत् पूर्वक धा, शी, गृहि, स्पृहि, पति, धातुओं के उत्तर तथा। दयालुः निद्रालुः श्रद्धालुः पतयालुः, इत्यादि।

४८ उर मन्द्, भास् और मिद धातुओं के उत्तर तथा। मन्दुरः, भासुरः, मेदुरः।

४९ क्वरप् नश्, इ, जि, सृ, और गम् धातुओं के उत्तर तथा। नश्वरः, इत्वरः, जित्वरः, गत्वरः, सृत्वरः।

५० र नम्, हिंस्, स्मि, कम्प्, अजस, और दीप् धातुओं के उत्तर तथा। नम्रः, हिंस्रः, स्मेरः, कम्प्रः, अजस्रः, दीप्रः।

५१ उ आ पूर्वक शन्स्, इष्, भिक्ष् और सन्नन्त धातुओं के उत्तर तथा। आशंसुः, इच्छुः, भिक्षुः, जिज्ञासुः, पिपासुः, बुभुक्षुः, चिकीर्षुः, विवक्षुः, जिघृक्षुः, जिघांसुः, तितीर्षुः, ईप्सुः, दित्सुः, लिप्सुः, जिगीषुः इत्यादि।

५२ वर स्था, ईश्, भास, पिस, कस, प्रमद्, और यङन्त या धातुओं के उत्तर तथा। स्थावरः, ईश्वरः, भास्वरः, (यायाय) यायावरः।

५३ ऊक जागृ, और यङन्त यज्, जप्, वद्, और दन्श धातुओं के उत्तर तथा। जागरूकः, यायजूकः, जञ्जपूकः, वावदूकः, दन्दशूकः,

५४ इत्नु स्तनि, मदि, हृषि, गदि और हृदि धातुओं के उत्तर तथा। स्तनयित्नुः, मदयित्नुः, हृषयित्नु, गदयित्नु, हृदयित्नुः।

५५ क्मर घस्, अद्, और सृ, धातुओं के उत्तर तथा। घस्मरः,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अङ्कुरः, स्मरः ।

५६ कुर छिद्, भिद्, और विद् धातुओं के उत्तर यथा। छिदुरः, भिदुरः, विदुरः ।

५७ त्र नी, दा, स्तु, शस्, यु, युज, तुद्, सि, सिच्, मिह्, पत, दनश्, नह् धातुओंके उत्तर कर्त्तवाच्य करण अर्थमे होताहै। यथा, (नीयते अनेन) नेत्रम्, शस्त्रम्, स्तोत्रम्, पत्रम्, (दश्यते अनया) दंष्ट्रा इत्यादि।

५८ इत्र करण वाच्यमे पू, चर्, वद्, खन्, लू, ऋ, धू, सू, और सह् धातुओं के उत्तर होता है। (पूयते अनेन) पवित्रं, चरित्रं, वदित्रं, खनित्रं इत्यादि।

५९ इ भाव वाच्यमे उपसर्ग और अन्तर् शब्द के परवर्त्ती धाधातु के उत्तर होता है। (धा) विधिः, निधिः, सन्धिः, आधिः, अन्तर्द्धिः। अधिकरणवाच्यमे कर्म्मवाचक पद के परवर्त्ती धा धातुके उत्तर भी होताहै। यथा (जलानिधीयन्तेऽस्मिन्) जलधिः, वारिनिधिः, पयोधिः इत्यादि।

६० त्रिमक् तन्निर्वृत्त अर्थमे डु इत् धातुओंके उत्तर होताहै यथा; (क्रियया निर्वृत्तम्) कृत्रिमम्, दत्रिमम्, पक्त्रिमम्।

६१ अथु भाववाच्यमे टु इत् धातुके उत्तर होताहै। यथा; वेपथुः, वमथुः, श्वयथुः।

६२ अनि भाववाच्यमे नञ्के परवर्त्ती धातुओंके उत्तर आक्रोश अर्थमे होताहै। अनिप्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। यथा; (जीव) अजीवनिः (जन) अजननिः।

६३ अन भाववाच्यमे धातुओंके उत्तर होताहै। अन प्रत्ययान्त शब्द क्लीव लिङ्ग होते हैं। यथा; (गम) गम

(१) धा के आ का लोप होताहै।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नम्, भोजनम्, शयनम्, दर्शनम्[१]। कर्तृवाच्य में नन्दि प्रभृति के उत्तर भी होता है। यथा; नन्दनः, मदनः, साधनः, क्रोधनः, रोषणः; ज्वलनः, शोचनः, अलङ्करणः इत्यादि।

९४ अनट् करण और अधिकरण अर्थमे होताहै। यथा; (नीयतेऽनेन) नयनम्, लोचनम्, चरणम्, भूषणम्, (शय्यतेऽस्मिन्) शयनम्, भवनम्, स्थानम्,

९५ घञ् भाव वाच्यमे, और कर्तृभिन्नकारक वाच्यमे होताहै। यथा पाकः, त्याग, शोकः, स्रावः, सङ्गः, स्वादः, इत्यादि।

९६ अ —— तथा —— जयः, लयः, वर्षम्, बोधः, भिदः।

९७ अ, अन, कर्म्मवाच्यमे। सुशासनः, सुशासः, दुःशासनः, दुःशासः, सुयोधनः, सुयोधः, दुर्योधनः, दुर्योधः; सुदर्शनः, सुदर्शः, सुधर्षः, सुधर्षणः, सुमर्षः; सुमर्षणः।

९८ आ[१] भाववाच्यमे प्रत्ययान्त धातु और नाम धातुओं के उत्तर होताहै। यथा; जिज्ञासा, तपस्या, पुत्रकाम्या।

तथा —— गुरुस्वर विशिष्ट व्यञ्जनान्त धातुओं के उत्तर भी होताहै। यथा; भिक्षा, सेवा, ब्रीडा।

तथा षित् धातु के उत्तर होताहै। यथा, त्रपा, व्यथा, मृजा,

तथा भिद् प्रभृति धातुओं के उत्तर भी (और गुण नहिं होता)। यथा; भिदा, छिदा, क्षुधा, तृषा, क्षमा, दया, इच्छा, प्रच्छा।

(१) णिजन्त वन्द विद ईष आस के उत्तर अन होनेसे स्त्रीलिङ्ग आकारान्त होते हैं। यथा; (कारि) करणा, भावना, विडम्बना, वन्दना, ईषणा, आसना, (णिजन्त क्लीवलिङ्ग भी होते हैं) प्रेरणम् गोपनम्, इत्यादि। (२) आ और यक् प्रत्ययान्त शब्द स्त्री लिङ्ग होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तथा उपसर्गके परवर्त्ती आकारान्त धातु के उ-
त्तर। यथा, आभा, प्रभा, संस्था, आज्ञा, निष्ठा-
तथा श्रत् और अन्तर् के परवर्त्ती धा के उत्तर।
श्रद्धा, अन्तर्द्धा,
५९ न तथा यज्ञः, यत्नः, स्वप्नः, प्रश्नः, याच्ञा, तृष्णा।
६० यक्[1] तथा व्रज्या, परिव्रज्या, चर्य्या, मृगया, विद्या।
क्रिया[2], कृत्या, शय्या, इज्या।

इति कृत प्रकरणम् ॥

(१) आ और यक् प्रत्ययान्त शब्द स्त्री लिङ्ग होते हैं।

(२) क्रियादि शब्द निपातन से सिद्ध होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तद्धितप्रकरण

साधारणनियम।

१ नामसे उत्तर जो प्रत्यय होते हैं उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं

२ णकारान्त तद्धित प्रत्यय परे होनेसे नामके आदि स्वर को वृद्धि होती है। (कहीं २ नहिं भी होती है)

३ तथा सुभगादि[1] शब्दोंके दोनो पदोंके आदि स्वरकी वृद्धि होती है।

४ तथा सुपञ्चालादि[2] शब्दोंके द्वितीय पदके आदि स्वरकी वृद्धि होती है।

५ तद्धित प्रत्ययका य और स्वर परे होनेसे नामके अन्त्य इ और अ को लोप होता है।

६ ——— तथा ——— उ को गुण होता है।

७ ओकार और औकारके परस्थित तद्धित य स्वरका काम देता है।

८ उकारेत् तद्धित प्रत्यय परे होनेसे नामकी टि[3] का लोप होता है।

९ णित् प्रत्यय होनेसे पदके अन्तस्थित आद्य स्वरस्थान जात य को इय् और व को उव् होता है।

१० द्वारादि[4] शब्दोंके आदि य् और व को इय्, उव्, होता है।

११ स्वागतादि[5] शब्दोंके आदि य और व को इय् उव् नहिं होता।

१२ श्वापद और न्यङ्कु के य और व को विकल्प करके इय् उव् होता है।

(१) सुभगा, उर्भगा, अधिदेव, अधिभूत, परलोक, सर्वलोक, अकुपाल, परस्त्री इत्यादि। (२) सुपञ्चाल, अर्द्धपञ्चाल, अग्निदेवता, पितृदेवता, द्विवर्ष, त्रिवर्ष, चतुर्वर्ष, पञ्चवर्ष, इत्यादि। (३) अन्त्यस्वर और उससे पीछे जो वर्ण हो उन्हें टि कहते हैं। (४) द्वार, स्वर, स्वाध्याय, व्यल्कस, स्वस्ति, स्वर, स्फ्यकृत, स्वादुमृदु, श्वस, श्वन्, स्व। (५) स्वागत, स्वध्वर, स्वङ्ग, व्यङ्ग, व्यड, व्यवहार, स्वपति।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१३ उकारेत् तद्धित प्रत्ययान्त शब्द अव्यय होते हैं।
१४ तद्धित प्रत्यय परे होनेसे नाम के अन्तस्थित नकारका लोप होताहै।
१५ षण् प्रत्यय होनेसे अन् भागान्त शब्दके न् का लोप नहिं होता।
१६ तद्धित काय परे होनेसेभी ——— तथा ——— (१)
१७ षण् प्रत्यय होनेसे इन भागान्त शब्दके ——— तथा ———
१८ तथा अपत्यार्थ होनेसे मन् भागान्त नामके न् का लोप नहिं होता

अपत्यार्थप्रत्ययाः

१ षिण् अपत्य अर्थमें अकारान्त नामसे उतर होता है। यथा; (शूरस्यापत्यं) शौरिः, द्रौणिः, दाशरथिः, वैकर्णिः, कार्ष्णिः, (व्यासस्यापत्यं) वैयासकिः, सौधातकिः, इत्यादि।
बाहु प्रभृति शब्दसे भी होताहै। (बाहोरपत्यं) बाहविः इत्यादि।

२ षायनण् नडादि- से (नडस्यापत्यं) नाडायनः, चारायणः, नारायणः, दाक्षायणी इत्यादि।

३ ष्यण् गर्गादि - से (गर्गस्यापत्यं) गार्ग्यः, वात्स्यः, चाणक्यः, पाराशर्यः इत्यादि।

४ षण् शिवादि से (शिवस्यापत्यं) शैवः, (पृथायाः अपत्यं) पार्थः इत्यादि।
विदादि से भी (विदस्यापत्यं) वैदः, और्वः, काश्यपः, भारद्वाजः इत्यादि।
भृग्वादि से भी (भृगोरपत्यं) भार्गवः, मारीचः, पाण्डवः, हैमवतीः(२) इत्यादि।

(१) कर्म और भाव अर्थमें न् लोप होताहै। (२) यहां ड का आगम हुआहै।
(३) षण् प्रत्यय होनेसे संख्यावाचक शब्दके परवर्ती मातृ शब्दके ऋकार उर् होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

५ ढेयण् स्त्री प्रत्ययान्त(१) नाम के उत्तर होता है। (गङ्गा-
याअपत्यं) गाङ्गेयः, राधेयः, इत्यादि।
शुभ्रादि शब्दों से भी (शुभ्रस्यापत्यं) शौभ्रेयः,
आत्रेयः, वैमात्रेयः, (ढेयण होने से नाम के अ-
न्त्य उवर्ण का लोप होता(२) है) (मृकण्डुरपत्यं) मार्क-
ण्डेयः (तथा सुभगादि के उत्तर इन् होता है)
सौभागिनेयः, बान्धकिनेयः इत्यादि।
(कुलटादि(३) शब्दों से विकल्प करके) कौलटिनेयः, कौ-
लटेयः।

६ ईयण्(४) स्वस्रप्रभृति शब्दों से: (स्वस्रपत्यं) स्वस्रीयः इ-
त्यादि।

७ इकण् रेवती प्रभृति से। रैवतिकः, आश्वपालिकः, दाण्ड-
ग्राहिकः इत्यादि।
उक्त प्रत्ययों का कहीं२ लोप भी होजाता है; परन्तु
स्त्रीलिङ्ग में नहिं होता। यथा (गर्गस्यापत्यानि) ग-
र्गाः;(५) यस्काः, बिदाः, अत्रयः, (कहीं२ लोप का विक-
ल्प भी होता है) रघवः (वा) राघवः (स्त्रियां तु)
यस्कस्यापत्यानि स्त्रियः यास्क्यः इत्यादि।

(१) स्त्री प्रत्ययों का विधान आगे होगा।
(२) पाण्डु और कद्रु शब्द के उवर्ण का लोप नहिं होता पाण्डवेयः, काद्रवेयः।
(३) कुलटा का अर्थ यहां भिक्षोपजीविनी सती स्त्री है। व्यभिचारिणी अर्थ में तो कौल-
टेयः और कौलटेरः होता है।
(४) पितृष्वसृ और मातृष्वसृ शब्दों के उत्तर विकल्प करके ढेयण होता है, और ढेयण
होने से ऋ का लोप होता है। यथा; पैतृष्वसेयः, पैतृष्वस्रीयः, मातृष्वसेयः मातृष्व-
स्रीयः।
(५) गर्गादि एक गण हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अर्थविशेषेप्रत्ययाः

१ अपत्यार्थ उक्त प्रत्यय और इय, कण्, णीन्, षीकण्, ये प्रत्यय सब अर्थ विशेष मे भी यथा सम्भव होतेहैं।

२ तद्वेत्ति तदधीते इन अर्थोंमे (तर्कंवेत्ति अधीतेवा) तार्किकः पौराणिकः, शिक्षैकः[1], मीमांसकः, इत्यादि।

३ तेनप्रोक्तम्—(ऋषिणाप्रोक्तं) आर्षम्, मानवं, मानवीयम्, नारदीयम्, इत्यादि।

४ तेनकृतम्—(कायेनकृतं) कायिकम्, पौरुषेयम्, सौत्रम्, वाचनिकम्।

५ तेनरक्तम्—(कषायेणरक्तं) काषायम्, माञ्जिष्ठम्, पीतकम्,

६ सा अस्य देवता—(शिवोऽस्य देवता) शैवः, वैष्णवः, अग्नीषोमीयम्,

७ तस्यसमूहः—(भिक्षाणांसमूहः) भैक्षम्, मानुष्यकम्, ब्राह्मण्यम्,

८ तत्रभवः—(मथुरायांभवः) माथुरः, कुलीनः, शारीरिकम्, (अकस्माद्भवं) आकस्मिकम् (बहिर्भवम्) बाह्यम्, बाहीकम्,

९ तत्रसाधुः—(सभायांसाधुः) सभ्यः, सामाजिकः, सांग्रहिकः,—

१० तस्मिन्देयकालात्—(मासेदेयम्) मासिकम्, वार्षिकम्, आवर्णिकम्—

११ निर्वृत्ते—(दिनेननिर्वृत्तं) दैनिकम्, मासिकम्, सम्वत्सरीयम्, आह्निकम्,

१२ व्याप्तौ—(दिनंव्याप्यस्थितम्) दैनकम्, मासिकम्, चातुर्मास्यम्,

१३ वयसि—(द्वेवर्षेअस्यवयः) द्विवार्षीणः, षोडशवार्षिकः—

१४ ततआगतः—(मथुरायाआगतः) माथुरः, पैतामहम्, स्रैणम्,

१५ तदर्हति—(शतमर्हति) शतिकः (दण्डमर्हति) दण्ड्यः, दक्षिणीयः,

[1] शिक्षादि शब्दोंका अन्त्यस्वर ह्रस्वहोजाताहै। और शब्दोमे प्रयोगानुसार आदेशादि जानने चाहियें॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१६ तस्मादनपेतम् (धर्म्मादनपेतं) धर्म्यम्, वैधम्, न्याय्यम्,
१७ तस्येदम् — (विष्णोरिदं) वैष्णवम्, शैवम्, आस्मरम्, युष्मदीयम्, त्वदीयम्, मदीयम्, यौष्माकीणं, यौष्माकम्, आस्माकीनम्, आष्माकम्, तावकीनम्, तावकम्, मामकीनम्, मामकम्, परकीयम्, स्वकीयम्, स्वीयम् (सूर्य्यस्येदम्) सौरम् (सर्व्वजनस्येदम्) सार्वजनं, स्वायम्भुवम्, भवदीयम्, अन्यदीयम्,
१८ तस्यविकारः — (सुवर्णविकारः) सौवर्णः, राजतः (सीसस्यविकारः) सैसः, तैलम्
१९ तदस्यपण्यम् — (लवणमस्यपण्यं) लावणिकः, तैलिकः, ताम्बूलिकः,
२० तदस्यप्रहरणम् — (धनुरस्यप्रहरणम्) धानुष्कः, आसिकः, तारवारिकः,
२१ तदस्यप्रयोजनम् — (स्वर्गः प्रयोजनमस्य) स्वर्ग्यम्, यशस्यम्, काम्यम्,
२२ तदस्यशीलम् — (तपोऽस्यशीलं) तापसः, छात्रः, पैतः, चौरः,
२३ तदस्यप्राप्तंकालात् — (समयोऽस्यप्राप्तः) सामयिकः, कालिकः, दैष्टिकः, आर्त्तवः,
२४ अधिकृत्यकृतेग्रन्थे — (राममधिकृत्यकृतं) रामायणं, भागवतं, भारतम्,
२५ तस्मैप्रभवति — (सन्तापायप्रभवति) सान्तापिकः, सांग्रामिकः, सांघातिकः, (कर्म्मणेप्रभवति) कार्म्मुकं धनुः
२६ तस्मैहितम् — (यज्ञायहितं) यज्ञियम्, अध्वरीणम्, ब्राह्मण्यम्
२७ कालेनतत्रान्नयोगे (विशाखया नक्षत्रेण युक्तोमासः) वैशाखः राधः, तैषः, पौषः, चैत्रः, चैत्रिकः,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कार्त्तिकः, कार्त्तिकिकः,

२८ तद्वहति — (धुरंवहति) धुर्य्यः, धौरेयः, चतुर्धुरीणः, हालिकः, सैरिकः,

२९ तेनजीवति — (वेतनेनजीवति) वैतनिकः, वाहनिकः, नाविकः,

३० तदस्मिन्दीयते — (द्वावस्मिन् वृद्धिः आयः लाभः शुल्कं उपदा वादीयते) द्विकंशातनम्, त्रिकंशातनम्, चतुष्कंशातनम्, पञ्चकंशातनम्,

३१ तादर्थ्ये — (पादार्थमुदकम्) पाद्यम्, अर्घ्यम्, बालेयम्, आतिथ्यम्,

३२ स्वार्थे — (बन्धुरेव) बान्धवः, चौरः, चाण्डालः, मानसम्, सैन्यम्,

३३ सोऽस्यनिवासोऽभिजनोवा — (मथुरा अस्यनिवासः) माथुरः, (गन्धारोऽस्याभिजनः) गान्धारः (बहुवचनेतु प्रत्यय लोपः) (अङ्ग एषांनिवासः) अङ्गाः, वङ्गाः, कश्मीराः, (स्त्रियांलोपोन) (मगधः आसांनिवासः) मागध्यः, पाञ्चाल्यः, वैदेह्यः,

३४ सोऽस्यराजेत्येवम् — (कश्मीरस्यराजा) काश्मीरः, (बहुवचने) काश्मीराः,

३५ तस्यभावः — (कुमारस्यभावः) कौमारम्, गाम्भीर्य्यम्, बाल्यम्, कार्पण्यम्,

३६ तस्यभावःकर्म्मच (ब्राह्मणस्यभावःकर्म्म वा) ब्राह्मण्यम्, चौर्य्यम्, चातुर्य्यम्, चातुरी,

३७ इत्येषपि। और २ अर्थोंमे भी उक्त प्रत्यय होते हैं (धर्म्मं चरति) धार्म्मिकः, (वशंगतः) वश्यः (पृथिव्या ईश्वरः) पार्थिवः, इत्यादि।

३८ लोपःक्वचित्प्रत्ययस्य विभाषाच। कहीं प्रत्ययोंका लोप और विकल्प भी होजाता है (व्रीहीणांफलानि) व्रीहयः, (मल्लिकायाः पुष्पं) मल्लिका, जम्बु (वा) जाम्बवम्, इत्यादि।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अर्थविशेषे प्रत्ययविशेषः

अर्थविशेषमे और २ प्रत्यय भी होते हैं। यथा;

१ खण्ड काण्ड तलः, समूहे (कमलानां समूहः) कमलखण्डम्, उर्वीकाण्डम्, कर्मकाण्डम्, (जनानां समूहः) जनता(१), बन्धुता, इत्यादि।

२ तल स्वार्थे देवात् (देव एव) देवता

३ त्व तलौ तस्य भावः (प्रभोर्भावः) प्रभुत्वं, प्रभुता, भीरुत्वं, भीरुता, राजत्वं, राजता,

४ इमनि वा नीलादेः (नीलस्य भावः) नीलिमा, नीलत्वं, नीलता, पीतिमा, (लघोर्भावः) लघिमा(२), (पृथोर्भावः) प्रथिमा(३), (प्रियस्य भावः) प्रेमा(४), (महतो भावः) महिमा, (गुरोर्भावः) गरिमा, द्रढिमा, द्राघिमा, (बहोर्भावः) भूमा

५ तण् तत्र भवे (स्त्रीषु भवं) स्त्रैणम्, पौंस्नम्

६ धेयः तथा भाग रूप नामभ्यः (भाग एव) भागधेयम्, रूपधेयम्, नामधेयं

७ तिकन् तथा मृदः (मृदेव) मृत्तिका

८ स्न, प्रशंसायाम् (प्रशस्ता मृत्) मृत्स्ना, मृत्स्ना,

९ वतिच् औपम्ये (चन्द्र इव मुखम्) चन्द्रवन्मुखं, (हिमभिव) हिमवत्, इत्यादि

१० चुञ्चु, चणौ तेन वित्तः (अर्थेन वित्तः) अर्थचुञ्चुः; अर्थचणः;

११ इतच् तदस्यास्मिन्वा संजातं (तारका अस्मिन् संजाताः) तारकितं नभः; पल्लवितस्तरुः; पुष्पिता लता, पुलकितं शरीरं

१२ मात्रच् दघ्नच् द्वयसचः प्रमाणे (हस्तः प्रमाणमस्य) हस्तमात्र

(१) तल प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होता है। (२)
टि का लोप होता है
(२) इमनि इष्ठ ईयसु प्रत्ययोंमे शब्दके अन्त्य उवर्ण का लोप होता है
पृथु मृदु दृढ कृश भृश परिवृढ इनके ऋको र होता है।
(३) —— तथा —— और शब्दोंमे भी प्रयोगानुसार आदेशादि होते हैं।
(४) —— तथा —— प्रियको प्र, महत्को मह, आदेश होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

इयत्त्वं, इयद्द्वयसम्

१३ डतिः संख्यापरिमाणे किमः (कासंख्यापरिमाणमेषां) कति

१४ तयप् अवयवे संख्यायाः (चत्वारोऽवयवा अस्य) चतुष्टयम्, पञ्चतयम्, सहस्रतयम्, शततयम्,

१५ उयट् वा द्वित्रिभ्याम् (द्वाववयवावस्य) द्वयम् (वा) द्वितयम्, त्रयं, त्रितयम्

१६ यः उभात् (उभाववयवावस्य) उभयम्

१७ ड तदस्मिन्नधिकमिति दशान्तात् (एकादश अधिका अस्मिन्) एकादशं शतम्, द्वादशं शतम्, त्रयोदशं शतम्, चतुर्दशं शतम्

डः शदन्तविंशतेश्च (त्रिंशदधिका अस्मिन्) त्रिंशं शतम्, चत्वारिंशं शतम्, पञ्चाशं शतम्, चतुश्चत्वारिंशं शतम्, पञ्चपञ्चाशं शतम् विंशं शतम् एकविंशं शतम्

१८ डट् संख्यायाः पूरणे (एकादशानां पूरणः) एकादशः षोडशः अष्टादशः

१९ मट् नान्तात् यथा (पञ्चानां पूरणः) पञ्चमः, सप्तमः, दशमः;

२० थुट् चतुः षष्ठ् कतिभ्यः (चतुर्णां पूरणः) चतुर्थः (षण्णां पूरणः) षष्ठः (कतीनां पूरणः) कतिथः कतिपयथः

२१ तीयः द्वेः (द्वयोः पूरणः) द्वितीयः; तृतीयः तुर्यः तुरीयः (निपातनात्)

२२ तमट् वा विंशत्यादेः (विंशतेः पूरणः) विंशतितमः विंशः चत्वारिंशत्तमः चत्वारिंशः

—नित्यं शतादेः (शतस्य पूरणः) शततमः, सहस्रतमः, अयुततमः, मासतमः, संवत्सरतमः,

—षष्ट्यादेश्च (षष्टेः पूरणः) षष्टितमः, सप्ततितमः अशीतितमः नवतितमः

२३ तिथुक् बहुगणपूगसंघेभ्यः (बहूनां पूरणः) बहुतिथः

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गणतिथः पूगतिथः संघतिथः।

२४ इसुक् वतन्तात् (यावतां पूरणः) यावतिथः, तावतिथः, एतावतिथः, कियतिथः, इयतिथः;

२५ मतुप् तदस्यास्मिन् वास्ति (मतिरस्यास्ति) मतिमान्, पितृमान् (वायुरस्मिन्नस्ति) वायुमान् (गावोऽस्यां सन्ति) गोमती शाला।

२६ वतुप् परिमाणे (यत्परिमाणमस्य) यावान्, तावान् एतावान्, कियान्, इयान्।

अवर्णान्तात् (ज्ञानमस्यास्ति) ज्ञानवान्, विद्यावान्, दयावान्।

स्पर्शान्ताच्च (विद्युदस्मिन्नस्ति) विद्युत्वान् मेघः; (इदमस्यास्ति) इदंवान्।

अवर्णोपधाच्च (भासोऽस्यास्ति) भास्वान्, हार्वान्

मकारोपधाच्च (लक्ष्मीरस्यास्ति) लक्ष्मीवान्, शमीवान्

यवादेर्न (अतएव मतुप्) यवमान् ऊ-
र्मिमान्, वशामान्, भूमिमान्, द्राक्षामान्, गरुत्मान्, मरुत्मा-
न्, हरिन्मान्, ककुद्मान्, ऊर्मिमान्, कृमिमान्।

२७ ड्मतुप् कुमुदनडमहिषवेतसेभ्यः (कुमुदान्यस्मिन् सन्ति) कुमुद्वान्, नड्वान्, वेतस्वान्, महिष्मान्।

२८ विनिर्वा अस्मायामेधास्रजः (यशोऽस्यास्ति) यशस्वी, मायावी, मेधावी, स्रग्वी (पक्षे वतुप्) यशस्वान्, मायावान्, मेधावान्, स्रग्वान्।

नित्यं तपसः (तपोऽस्यास्ति) तपस्वी, तपस्विनी

२९ इन् चानेकस्वरादवर्णात् (पक्षे मतुप् वतुप् विनः) (ज्ञानमस्यास्ति) ज्ञानी ज्ञानवान्, मायी, मायावी, विवेकी, विवेकवान्।

नित्यं सुखादेः (सुखमस्यास्ति) सुखी, दुःखी, प्रणयी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हस्ती, सहस्री।

हस्तकराभ्यां जातौ (हस्तोऽस्यास्ति) हस्ती गजः, क रीगजः (अन्यत्र) हस्तवान् पुरुषः।

वर्णाद्ब्रह्मचारिणि (वर्णोऽस्यास्ति) वर्णी, ब्रह्मचारी, (अन्यत्र) वर्णवान्।

पुष्करादिभ्यो देशे (पुष्कराण्यस्यां सन्ति) पुष्करिणी दीर्घिका, पद्मिनी नलिनी।

अर्थाद्याचके (अर्थोऽस्यास्ति) अर्थी याचकः (अन्यत्र) अर्थवान्।

अर्थान्तेभ्यश्च (विद्यारूपोऽर्थः प्रयोजनमस्यास्ति) विद्यार्थी, धनार्थी।

१० लोमांसादेर्वा (मांसमस्यास्ति) मांसलः; श्रीलः; पक्ष्मलः शीलः; पिङ्गलः।

११ इलश्च फेनात् (फेनोऽस्मिन्नस्ति) फेनलः; फेनिलः (पक्षे) फेनवान्।

पिच्छापङ्काभ्याम् (पिच्छाऽस्यास्ति) पिच्छिलः; पङ्किलः

१२ शः लोमादेः (लोमान्यस्य सन्ति) लोमशः; रोमशः गिरिशः, कर्कशः, कपिशः।

१३ उरो दन्तात् (उन्नता दन्ताः सन्त्यस्य) दन्तुरः।

१४ रः ऊषसुषिमुष्कमधोर्मुखादेश्च। ऊषरः सुषिरः मुष्करः; मधुरः; मुखरः; कुञ्जरः; नगरम्, पाण्डुरः।

ईरः कुटीशमीशुण्डाभ्यो ह्रस्वे (ह्रस्वा कुटी) कुटीरः; शमीरः; शुण्डारः।

१५ ड्वलच्कृषिरजःशादात् (नडाअस्मिन्सन्ति) नड्वलः; शाद्वलः।

१६ वलः कृष्यादेः (कृषिरस्यास्ति) कृषीवलः परिषद्वलः; रजस्वला

१७ वः केशादेः संज्ञायाम् (केशाः सन्त्यस्य) केशवो विष्णुः मणिवो नागः; गाण्डीवम् धनुः।

(१) वल होने से अन्य स्वर दीर्घ होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३९ आमिन् स्वादैश्वर्ये (स्वमैश्वर्यमस्यास्ति) स्वामी।
३९ आलुः शीतोष्णाभ्यामसहने (शीतंनसहते) शीतालुः, उष्णालुः।
४० कि न् वातातिसाराभ्यांरोगे (वातोऽस्यास्ति) वातकी, अतीसारकी।
४१ भो बल्यादेः (बलिरस्तिअस्ति) बलिभम्, मध्यभम्।
४२ अ दर्शआदेः (अर्शांसि अस्यसन्ति) अर्शसः, उरसः, पलितः; जटः, अम्लः, अयः, लवणः।
४३ यु अहं शुभं भ्यां (अहमस्यास्ति) अहंयुः, अहङ्कारवान् शुभंयुः, शुभान्वितः।
४४ जाहः कर्णादेर्मूले (कर्णस्यमूलं) कर्णजाहम्, अक्षिजाहम्, भ्रूजाहम्, नखजाहम्, केशजाहम्, पादजाहम्, श्रृङ्गजाहम्, दन्तजाहम्।
४५ तिः पक्षात् (पक्षस्यमूलं) पक्षतिः।
४६ इनिस्तनीयार्थे पूर्वात् (पूर्वं मनेन कृतं भुक्तं पीतं गतंवा) पूर्वी, कृत पूर्वीकटं, भुक्तपूर्वी ओदनं, पीतपूर्वीपयः, गत पूर्वीगृहम्।

इष्टादिभ्यश्च (इष्टमनेन) इष्टीयते, अधीतीयागे, श्रुतीवेदे।

४७ तमप् इष्ठनौ अतिशायने (अयमेषामतिशयेन पटुः) पटुतमः, पटिष्ठः, गुरुतमः, गरिष्ठः लघुतमः लघिष्ठः, कृशतमः, कृशिष्ठः।
४८ तरप् ईयसुनौ द्वयोः (अयमनयोरतिशयेन पटुः) पटुतरः, पटीयान्, प्रियतरः, प्रेयान्, लघुतरः, लघीयान्, दीर्घतरः, द्राघीयान्।
४९ इष्ठ ईयसुनौ (अयमेषामतिशयेन प्रशस्यः) श्रेष्ठः[1] (अयमनयोरतिशयेन प्रशस्यः) श्रेयान्, ज्येष्ठः, ज्यायान्,

(१) श्रेष्ठादिशब्दोंमें प्रयोगानुसार आदेशादि होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वर्षिष्ठः, वर्षीयान्, नेदिष्ठः, नेदीयान्, साधिष्ठः, साधीयान्, कनिष्ठः, कनीयान्, अल्पिष्ठः, अल्पीयान्, कनिष्ठः, कनीयान्, यविष्ठः, यवीयान्, स्थविष्ठः, स्थवीयान्, दविष्ठः, दवीयान्, वरिष्ठः, वरीयान्, क्षोदिष्ठः, क्षोदीयान्, क्षेपिष्ठः, क्षेपीयान्, वंहिष्ठः, वंहीयान्, श्रेष्ठः, श्रेयान् (अयमेषामतिशयेन मायावी) मायिष्ठः, मायीयान्, बलिष्ठः, बलीयान्, भूयान्, भूयिष्ठः।

५० डतरः किंयत्तदो द्वयोरेकस्य निर्धारणे। अनयोः कतरो वैष्णवः, अनयोर्यतरो ब्राह्मणः ततर आगच्छतु

५१ डतमः बहूनां। एषां कतमः शैवः, एषां यतमः क्षत्रियः ततमः भयातु।

एकान्नाभ्यान्तु। भवतो रेकतरः पठतु, भवतामेकतमः शृणोतु, तयोरन्यतरो यातुः, तेषामन्यतमो मन्तः।

५२ तरप् तमप् किमेदन्ताद् द्रव्ये प्रकर्षे। किन्तराम्, किन्तमाम्, प्राह्णेतराम्, प्राह्णेतमाम्, उच्चैस्तराम्, उच्चैस्तमाम्, (अद्रव्ये किं) उच्चैस्तरस्तरुः।

५३ रूपः प्रशंसायाम् (प्रशस्तो वैयाकरणः) वैयाकरणरूपः, नैयायिकरूपः, आलङ्कारिकरूपः।

५४ कल्प देश्य देशीयाः ईषदूने (ईषदूनो विद्वान्) विद्वत्कल्पः, विद्वद्देश्यः, विद्वद्देशीयः।

तिङन्तात् तरप्तमादि (पठतितराम् पठतितमाम् पठतिरूपम् पठतिकल्पम् पठतिदेश्यम् पठतिदेशीयम्)

५५ बहुः प्राक्तान्तु वा (ईषदूनः पटुः) बहुपटुः (वा) पटुकल्पः, पटुदेश्यः

५६ स्थानस्थानीयौ तेन तुल्यः (पितृतुल्यः) पितृस्थानः, पितृस्थानीयः, मातृस्थाना, मातृस्थानीया।

५७ जातीयः जातौ। ब्राह्मणजातीयः, क्षत्रियजातीयः, शूद्र

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ष जातीयः वैयाकरणजातीयः तार्किकजातीयः

५८ कृत्वसुच संख्यायाः क्रियाभ्यावृत्तिगणने[1] (पञ्च-वारान्भुङ्क्ते) पञ्चकृत्वोभुङ्क्ते, सप्तकृत्वः, शतकृत्वः प-[ञ्च]कृति

५९ सुच् द्वि त्रि चतुर्भ्यः (द्वौवारौभुङ्क्ते) द्विर्भुङ्क्ते त्रिर्भुङ्क्ते चतुर्भुङ्क्ते (एकंवारंभुङ्क्ते) सकृद्भुङ्क्ते स-कृदधीते

६० धात् बहोर्वा क्रिया तुष्टानकालस्य प्रत्यासत्तौ बहुधा दिवसस्य भुङ्क्ते, बहुकृत्वो दिवसस्य भुङ्क्ते (नेक-टेति किं, बहुकृत्वो मासस्यागच्छति

संख्याया विधार्थे (एकाविधा) एकधा (द्वेविधे) द्विधा, त्रिधा, चतुर्धा, पञ्चधा,

भावान्तरापादाने च। पञ्चराशीन् एकधाकुरु, एकं राशिं पञ्चधाकुरु

६१ चशस् बह्वल्पार्थाद्कारकात् (बहुददाति) बहु-शो ददाति (भूरि ददाति) भूरिशो ददाति अल्पशो ददाति (कारकेतिकिं) बहूनांस्वामी त्यत्र माभूत्

संख्यैकदेशवचनाच्च वीप्सायाम् (संख्या) (द्वौद्वौददाति) द्विशो ददाति, पञ्चशो ददाति (एकदेशवा-चक) (पादं पादं ददाति) पादशो ददाति, अर्द्धशो ददाति

६२ मयट् विकारे (स्वर्णस्य विकारः) स्वर्णमयो घटः, स्वर्ण-मयी प्रतिमा, मृण्मयः (हिरण्यस्य विकारः) हिरण्मयः[2]

६३ मयट् अवयवे (दारूण्यस्यावयवाः) दारुमयमासन-म् दर्भमयोब्राह्मणः

व्याप्तौ (जलेनव्याप्तं) जलमयं, रोगमयं शरीरम् धूममयंगृहम्।

संसर्गे (तिलेनसंसृष्टं) तिलमयं तर्पणम्, घृतमयं अन्नम्।

(१) क्रियाभ्यावृत्तिः क्रियायाआवृत्तिः (२) एकस्यापिकृत्वसोरादेशस्तु (३) हिरण्यस्य हिरण्यआदेशः

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अस्थ्यभावेऽत्र (निर्गतान्यस्थीनि) निरस्थमपजगत्
सारङ्गमांसम्, निरस्थः पुरुषः
गोश्चपुरीषे (गोः पुरीषं) गोमयम्

५३ तैलम् स्नेहे (तिलस्य स्नेहः) तिलतैलम् सर्षपतैलम्
पाएतैलम्

५४ पाशः कुत्सिते (कुत्सितो वैयाकरणः) वैयाकरणपाशः
भिषक्पाशः, वैदिकपाशः, लेखकपाशः, पाचकपाशः, मी-
मांसकपाशः।

५५ चरट् भूतपूर्वे (आढ्यो भूतपूर्वः) आढ्यचरः, दृष्टचरः
अर्थितचरः, अधीतचरः।

५६ रूप्यश्च समन्त्रे (देवदत्तस्य भूतपूर्वं) देवदत्तरूप्यं,
देवदत्तचरो वा भवनम्।

५७ आकिनिच् एकाद् असहाये (एक एव) एकाकी, एकाकिनी।

५८ अक स्वार्थे प्राक्टेः (कन्या एव) कन्यका (नारी एव) नारका

५९ इक् बालादेः (बाला एव) बालिका, नालिका, निझरि-
का, वल्लरिका, लतिका।

६० कन् अज्ञाते (कस्यायमश्वः) अश्वकः, उष्ट्रकः, महिषकः
गर्दभकः।
कुत्सिते (कुत्सितोऽश्वः) अश्वकः, महिषकः।
अल्पे (अल्पं तैलम्) तैलकम्, क्षीरकम्, सलिलकम्।
ह्रस्वे (ह्रस्वो हलः) हलकः, घटकः, दण्डकः,
अनुकम्पायाम् (अनुकम्पितः पुत्रः) पुत्रकः वत्सकः
दुर्बलकः।
संज्ञायाम्[1] कामकः, देविलकः, शर्विलकः, (मालवी)
मालविका।

६१ तरट् ह्रस्वे अश्वोक्षवत्सर्षभेभ्यः (ह्रस्वोऽश्वः) अश्वतरः,
उक्षतरः, वत्सतरः, ऋषभतरः

(१) कन होने से स्त्रीलिङ्ग शब्द का अन्त्यस्वर ह्रस्व हो जाता है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

७२ **तसिल् वा पञ्चम्याः**। गृहात्, गृहतः; ग्रामात्, ग्रामतः; सर्वस्मात्, सर्वतः; भवतः, भवत्तः; एतस्मात्, अतः; यस्मात्, यतः; तस्मात्, ततः; कस्मात्, कुतः; अस्मात्, इतः।

सप्तम्यास्तु। पूर्वस्मिन्, पूर्वतः; अन्ते, अन्ततः; आदौ, आदितः

नित्यं पर्यभिभ्याम्। परितः; अभितः

न हाकुञ्होः। स्वर्गात् हीयते पर्वतादवरोहति

७३ **त्रल् वा सर्वनाम्नः सप्तम्याः**। सर्वस्मिन्, सर्वत्र, उभयस्मिन्, उभयत्र, एतस्मिन्, अत्र, यस्मिन्, यत्र, तस्मिन्, तत्र, कस्मिन्, कुत्र, क्व।

त्रल् तसिलौ इतरासामपि दृश्यन्ते। स भवान्, ततो भवान्, तत्र भवान्, तं भवन्तं, ततो भवन्तं, तत्र भवन्तम्, तेन भवता, ततो भवता, तत्र भवता, तस्मै भवते, ततो भवते, तत्र भवते, तस्य भवतः, ततो भवतः, तत्र भवतः;

७४ **हः सप्तम्याः किमिदमोः**। अस्मिन्, इह[१], कस्मिन् कुह[२]।

७५ **दा काले एकसर्वान्यकिंयत्तदां** (एकस्मिन् काले) एकदा, सर्वदा, सदा[१], (वा) अन्यदा, कदा[१], यदा, तदा,

७६ **र्हिल् चान्यकिंयत्तदिदमेतदाम्** (अन्यस्मिन् काले) अन्यर्हि, कर्हि[१], यर्हि (अस्मिन् एतस्मिन् वा काले) एतर्हि, वा अधुना[१]

७७ **दानीं च तदिदमोः** (तस्मिन् काले) तदानीम् (अस्मिन् काले) इदानीम्

७८ **एद्युस् पूर्वादेरहनि** (पूर्वस्मिन्नहनि) पूर्वेद्युः, अन्येद्युः, अपरेद्युः, इतरेद्युः, अन्यतरेद्युः, अधरेद्युः, उत्तरेद्युः, उभयेद्युः (वा) उभयद्युः;

७९ **थाल् प्रकारे तृतीयायाः** (सर्वैः प्रकारैः) सर्वथा, अन्यथा, इतरथा, यथा, तथा, अपरथा।

(१) एतस्मादादि को यथाक्रम अ आदेश होते हैं (२) [illegible]

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

८० थं किमिदमेतदो (केनप्रकारेण) कथं (अनेन एतेन वा प्रकारेण) इत्थम्।

८१ अस्तात् परादेः सप्तमी पञ्चमी प्रथमानाम् (परस्मिन् परस्मात् परो वा) परस्तात्, पश्चिम स्तात् (अपरस्मिन् अपरस्मात् अपरो वा) पश्चात्(१) (ऊर्ध्वे ऊर्ध्वात् ऊर्ध्वो वा) उपरि, उपरिष्टात्

८२ असिच्च पूर्वाधरावराणाम् (पूर्वस्मिन् पूर्वस्मात् पूर्वो वा) पुरस्तात् (वा) पुरः (अधरस्मिन् अधरस्मात् अधरो वा) अधस्तात् (वा) अधः (अवरस्मिन् अवरस्मात् अवरो वा) अवरस्तात्(१), अवरः (वा) अवस्तात्, अवः

८३ अतसु दक्षिणोत्तराभ्याम् (दक्षिणस्मिन् दक्षिणस्मात् दक्षिणो वा) दक्षिणतः, उत्तरतः।

८४ आति रुत्तराधरदक्षिणात् (उत्तरस्मिन् उत्तरस्मात् उत्तरो वा) उत्तरात्, अधरात्, दक्षिणात्।

८५ एनप् चादूरे पञ्चम्याः (उत्तरस्मिन् उत्तरो वा) उत्तरेण अधरेण, दक्षिणेन।

८६ आदाहौ च दक्षिणोत्तरयोः (दक्षिणस्मिन् दक्षिणो वा) दक्षिणा, दक्षिणाहि, उत्तरा, उत्तराहि।

८७ तनप् भवे कालाव्ययेभ्यः (अद्य भवम्) अद्यतनम्, प्रातस्तनम्, सायन्तनम्, अधुनातनम्।

प्राह्णे प्रगेभ्याञ्च। प्राह्णेतनम्, प्रगेतनम्।

पूर्वाह्णापराह्णाभ्यां वा (पूर्वाह्णे भवम्) पूर्वाह्णेतनम्, अपराह्णेतनम्, (पक्षे) पौर्वाह्णिकम्, आपराह्णिकम्

नित्यमूर्ध्वादेः (ऊर्ध्वे भवः) ऊर्ध्वतनः, उपरितनः, अधस्तनः, प्राक्तनः पूर्वतनः।

८८ म नादिमध्याभ्याम् (आदौ भवः) आदिमः, मध्यमः

८९ डिमोऽग्रान्तपश्चाद्भ्यः (अग्रे भवः) अग्रिमः अन्तिमः पश्चिमः

(१) प्रयोगानुसार आदेश (२) निपातन से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

९० त्न चिर परुत् परारिभ्यः। चिरत्नः परुत्नः, परारित्नः

९१ त्यप् दक्षिणापश्चात्पुरसः। दाक्षिणात्यः, पाश्चात्यः, पौरस्त्यः।

९२ त्यः क्वाःमेहः तसित्रल्भ्यः। क्वत्यः, अमात्यः, इहत्या, (तसिल प्रत्ययान्ताः) ततस्त्यः, यतस्त्यः, कुतस्त्यः, (त्रल्प्रत्ययान्ताः) तत्रत्यः, अत्रत्यः,

९३ चित् चनौ विभक्त्यन्तात् किमः। कश्चित्, किञ्चित्, कञ्चित्, केनचित्, कस्मैचित्, कस्माच्चित्, कस्यचित्, कस्मिंश्चित्, कुतश्चित्, क्वचित्, कुत्रचित्, कदाचित्, (एवं) कश्चन, कुतश्चन, इत्यादि।

९४ च्वि कृभ्वस्तियोगेऽभूततद्भावे।[1] (च्वि सम्पूर्ण इत है, च्वि होने से अन्त्यस्वर दीर्घ होता है, अकार को ईकार होता है, ऋकार को री होता है। (अलघुं लघुं करोति) लघूकरोति, (अलघुर्लघुर्भवति) लघूभवति, (अलघुर्लघुः स्यात्) लघूस्यात्। शुक्लीकरोति, भवति, स्याद्वा, (अश्रोतारं श्रोतारं करोति) श्रोत्रीकरोति, श्रोत्रीभवति, स्याद्वा, अरहः[2] करोति विमनीभवति, उच्चस्स्यात्, उच्चेतीभवति, विरही स्यात्, विरजीभवति।

९५ सातिच्कार्त्स्न्ये वा[3] (कृत्स्नं लवणं जलं करोति) जलसात्करोति, भवति, स्याद्वा, भस्मसात् करोति, भवति स्याद्वा (पक्षे) जली करोति, भस्मी भवति।

अभिविधौ[4] सम्पदा च अग्निसात्करोति, अग्निसाद्भवति, अग्निसात्स्यात्, अग्निसात् सम्पद्यते, (पक्षे) अग्नी भवति, अग्नी सम्पद्यते।

अधीनतायाञ्च (राज्ञोऽधीनं करोति) राजसात्करोति, राजसात् सम्पद्यते, (पक्षे) राजीभवति राजीसम्पद्यते

(१) अभूततद्भाव अर्थात् जैसा न था वैसा होजाना। (२) अरुस् मनस् चक्षुस् चेतस् रहस् रजस् इनके अन्त्यवर्ण का लोप होता है। (३) एकस्य। अर्कैः सर्वावयवावच्छेदे नान्यथाभावः कार्त्स्न्यम्।
(४) बहूनां धातूनां किञ्चिदवयवावच्छेदेनान्यथाभावोऽभिविधिः।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

८० थं किमिदमेतदो (केनप्रकारेण) कथं (अनेन एतेन वा प्रकारेण) इत्थम्।

८१ अस्तात् पुरादेः सप्तमी पञ्चमी प्रथमानाम् (परस्मिन् परस्मात् परो वा) परस्तात्, पश्चिम स्तात् (अपरस्मिन् अपरस्मात् अपरो वा) पश्चात् (ऊर्द्ध्वे ऊर्द्ध्वात् ऊर्द्ध्वो वा) उपरि, उपरिष्टात्

८२ असिश्च पूर्वाधरावराणाम् (पूर्वस्मिन् पूर्वस्मात् पूर्वो वा) पुरस्तात् (वा) पुरः (अधरस्मिन् अधरस्मात् अधरो वा) अधस्तात् (वा) अधः (अवरस्मिन् अवरस्मात् अवरो वा) अवरस्तात्, अवरः (वा) अवस्तात्, अवः

८३ अतसु दक्षिणोत्तराभ्याम् (दक्षिणस्मिन् दक्षिणस्मात् दक्षिणो वा) दक्षिणतः, उत्तरतः।

८४ आति रुत्तराधर दक्षिणात् (उत्तरस्मिन् उत्तरस्मात् उत्तरो वा) उत्तरात्, अधरात्, दक्षिणात्।

८५ एनप् चादूरे पञ्चम्याः (उत्तरस्मिन् उत्तरो वा) उत्तरेण अधरेण, दक्षिणेन।

८६ आदाही च दक्षिणोत्तरयोः (दक्षिणस्मिन् दक्षिणो वा) दक्षिणा, दक्षिणाहि उत्तरा, उत्तराहि।

८७ तनश्च भवेकालाव्ययेभ्यः (अद्यभवम्) अद्यतनम्, प्रातस्तनम्, सायन्तनम्, अधुनातनम्।

प्राह्णे प्रगेभ्याञ्च। प्राह्णेतनम्, प्रगेतनम्।

पूर्वाह्णापराह्णाभ्यां वा (पूर्वाह्णे भवम्) पूर्वाह्णेतनं, अपराह्णेतनम्, (पक्षे) पौर्वाह्णिकम्, आपराह्णिकम्

नित्यमूर्द्ध्वादेः (ऊर्द्ध्वे भवः) ऊर्द्ध्वतनः, उपरितनः, अधस्तनः, प्राक्तनः पूर्वतनः।

८८ म नादिमध्याभ्याम् (आदौ भवः) आदिमः, मध्यमः

८९ डिमोऽग्रान्तपश्चाद्भ्यः (अग्रे भवः) अग्रिमः अन्तिमः पश्चिमः

(१) प्रत्येकमा उकारस्यादेश (२) निपातसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

९० **त्न चिर परुत् परारिभ्यः।** चिरत्नः परुत्नः, परारित्नः

९१ **त्यण् दक्षिणा पश्चात् पुरसः।** दाक्षिणात्यः, पाश्चात्यः, पौरस्त्यः।

९२ **त्यः क्वाः मेह, तसित्रल्भ्यः।** क्वत्यः, अमात्यः, इहत्या, (तसिल प्रत्ययान्ताः) ततस्त्यः, अतस्त्यः, कुतस्त्यः, (त्रल प्रत्ययान्ताः) तत्रत्यः, अत्रत्यः,

९३ **चित् चनौ विभक्त्यन्तात् किमः।** कश्चित्, किञ्चित्, कञ्चित्, केनचित्, कस्मैचित्, कस्माच्चित्, कस्यचित्, कस्मिंश्चित्, कुतश्चित्, क्वचित्, कुत्रचित्, काचित्, (एवं) कश्चन, कुतश्चन, इत्यादि।

९४ **च्वि कृभ्वस्तियोगेऽभूततद्भावे[1]।** (च्वि सम्पूर्ण इतदे) च्वि होनेसे अन्त्यस्वर दीर्घ होता है, अकारको ईकार होता है, ऋकारको री होता है। (अलघुं लघुं करोति) लघूकरोति, (अलघुर्लघुर्भवति) लघूभवति, (अलघुर्लघुः स्यात्) लघूस्यात्। शुक्लीकरोति, भवति, स्याद्वा, (अश्रोतारं श्रोतारं करोति) श्रोत्रीकरोति, श्रोत्रीभवति, स्याद्वा, अहर्[2]करोति विमनीभवति, उच्चस्स्यात्, सचेतीभवति, विरहीस्यात्, विरजीभवति।

९५ **सातिच् कात्स्न्र्ये वा[3]** (कृत्स्नं लवणं जलं करोति) जलसात्करोति, भवति, स्याद्वा, भस्मसात् करोति, भवति स्याद्वा (पक्षे) जलीकरोति, भस्मीभवति।

अभिविधौ[4] सम्पदा च अग्निसात्करोति, अग्निसाद्भवति, अग्निसात्स्यात्, अग्निसात् सम्पद्यते, (पक्षे) अग्नीभवति, अग्नीसम्पद्यते।

अधीनतायाञ्च (राज्ञोऽधीनं करोति) राजसात्करोति, राजसात् सम्पद्यते, (पक्षे) राजीभवति, राजीसम्पद्यते

(१) अभूततद्भाव अर्थात् जैसा नथा वैसा होजाना। (२) अरुस् मनस् चक्षुस् चेतस् रहस् रजस् इनके अन्त्यवर्णका लोप होताहै। (३) पक्षम्। साकेः सर्वावयवावच्छेदेनान्यथाभावः कार्त्स्न्यम्।
(४) बहूनां व्यक्तीनां किञ्चिदवयवावच्छेदेनान्यथाभावोऽभिविधिः।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

९६ त्राच्देये (ब्राह्मणाय देयं करोति) ब्राह्मणत्राकरोति, ब्राह्मणत्रा सम्पद्यते, (पक्षे) ब्राह्मणसात् करोति, ब्राह्मणसात् सम्पद्यते।

९८ डाच् कृञा द्वितीयादेः कृषौ। द्वितीयाकरोति, तृतीयाकरोति (द्वितीयं तृतीयं कर्षणं करोतीत्यर्थः), शम्बाकरोति (अनुलोमकृष्टं क्षेत्रं प्रतिलोमं कर्षतीत्यर्थः) बीजाकरोति (बीजेन सह कर्षतीत्यर्थः)।

संख्यायाश्च गुणान्तायाः। द्विगुणाकरोति, त्रिगुणाकरोति (क्षेत्रं द्विगुणं त्रिगुणं कर्षतीत्यर्थः)।

समयाच्च यापनायाम्। समयाकरोति (कालं यापयतीत्यर्थः)।

सपत्रनिष्पत्राद् व्यथने। सपत्राकरोति मृगं व्याधः (सपत्रं शरमस्य शरीरे प्रवेशयन् व्यथयतीत्यर्थः) निष्पत्राकरोति (शरीरात् शरमपरपार्श्वे निष्क्रामयन् व्यथयतीत्यर्थः)

निष्कुलान्निष्कोषणे। निष्कुलाकरोति दाडिमम् (दाडिमस्य अन्तरवयवान् बहिर्निःसारयतीत्यर्थः)

सुखप्रियादानुलोम्ये। सुखाकरोति प्रियाकरोति मित्रम् (अनुकूलाचरणेनानन्दयतीत्यर्थः)

दुःखात्प्रातिलोम्ये। दुःखाकरोति भृत्यः (स्वामिनं पीडयतीत्यर्थः)

शूलात्पाके। शूलाकरोति मांसं (शूलेन पचतीत्यर्थः)

सत्यादशपथे। सत्याकरोति भाण्डं वणिक् (क्रेतव्यमिति प्रतिजानीते इत्यर्थः)

मद्रात्परिवापणे मद्राकरोति (माङ्गल्यमुण्डनं करोतीत्यर्थः)।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निपातनं(१)

(इक्ष्वाकोरपत्यम्) ऐक्ष्वाकः, (कुरोरपत्यं) कौरव्यः, (मनोरपत्यं) मनुष्यः, मानुषः, (कन्याया अपत्यं) कानीनः, (गोधाया अपत्यम्) गौधेरः, गौधारः, (हेमन्ते भवम्) हैमनम् (ग्रीष्मे भवं) ग्रैष्मिकम् (पुनः पुनर्भवं) पौनःपुनिकम् (प्रतीचि भवम्) प्रतीच्यम्, उदीच्यम्, तिरश्चीनम्॥ (नवमेव) नूतं, नूतनम् (उपाय एव) औपायिकः॥ (गोदोहादुद्भवति) हैयङ्गवीनम् (अद्यश्वो वा वदने) अद्यश्वीनं, (पथि कुशलः) पाथ्यः (साक्षात् द्रष्टा वा न) साक्षी, (वृद्ध्या जीवति) वार्धुषिकः, (अमुष्मिन् परलोके हितम्) आमुष्मिकम्, अमुष्य (प्रसिद्धस्य पुत्रः) आमुष्यायणः (पुनः पुनरनुष्ठानं सञ्जननं वा) पौनःपुन्यम्॥ (उदकमस्मिन्नस्ति) उदन्वान् समुद्रः (राजास्मिन्नस्ति) राजन्वान्, (चर्म्म अस्यामस्ति) चर्म्मण्वती नाम नदी, (अस्थि अस्मिन्नस्ति) अष्ठीवान् जानूरुसन्धिः (चक्रमस्यास्ति) चक्रीवान् नाम राजा (कक्षा अस्यास्ति) कक्षीवान् नाम ऋषिः (लवणमस्मिन्नस्ति) रुमण्वान् नाम पर्वतः (ज्योतिरस्या अस्ति) ज्योत्स्ना (तमोऽस्या अस्ति) तमिस्रा (शृङ्गमस्यास्ति) शृङ्गिणः (मलमस्यास्ति) मलिनः, मलीमसः (अर्णांसि अस्मिन् सन्ति) अर्णवः समुद्रः (वाचोऽस्य सन्ति) वाग्मी वाचालः, वाचाटः, (मातुर्भ्राता) मातुलः (पितुर्भ्राता) पितृव्यः, (मातुः पिता) मातामहः, (मातुर्माता) मातामही (पितुः पिता) पितामहः (पितुर्माता) पितामही (कर्म्मणि कुशलः) कर्म्मठः, (एकविधा) ऐकध्यम् द्वैधम् त्रैधम्, षोढा (पूर्वस्मिन्नहनि) ह्यः, (समानेऽहनि) सद्यः (अस्मिन्नहनि) अद्यः (परस्मिन्नहनि) श्वः, परेद्यवि; (अस्मिन् वर्षे) ऐषमः (पूर्वस्मिन् वर्षे) परुत्, (पूर्वतरे वर्षे) परारि इत्यादि।

(१) लोकार्थ कि[illegible] कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पुंवद्भावः

१ तसिल् त्रल् चरट् जातीय देशीय पाश कल्प रूप तर और तमप् प्रत्यय परे होनेसे भाषित पुंस्क[1] स्त्रीलिङ्ग शब्द को पुंवद्भाव होता है। यथा (उत्तरस्यादिशः) उत्तरतः, (सर्व्वस्यांदिशि) सर्व्वत्र, (अर्पिताभूतपूर्व्वा) अर्पितचरी, (जात्याब्राह्मणी) ब्राह्मणजातीया, (ईषदूनापण्डिता) पण्डितकल्पा, (कुत्सितापाचिका) पाचकपाशा (प्रशस्तागायिका) गायकरूपा (इयमनयो रतिशयेननिपुणा) निपुणतरा, (इयमासामतिशयेन-चपला) चपलतमा।

२ शस् प्रत्यय परे होनेसे बह्वर्थ और अल्पार्थ भाषितपुंस्क स्त्रीलिङ्गको पुंवद्भाव होताहै। यथा (बह्वीभ्योदेहि) बहुशोदेहि, (अल्पाभ्योदेहि) अल्पशोदेहि।

३ त्व और तल प्रत्यय परे होनेसे गुणवाचक भाषितपुंस्क स्त्रीलिङ्गको पुंवद्भाव होता है। यथा; (निपुणायाभावः) निपुणत्वं, निपुणता, इत्यादि।

४ कल्प रूप तर तम प्रत्यय परे होनेसे भाषित पुंस्क ईवन्त ऊवन्त स्त्रीलिङ्गको विकल्प करके पुंवद्भाव होताहै, यथा; विदुषी कल्पा (वा) विद्वत्कल्पा। मेधाविनी रूपा (वा) मेधाविरूपा। मायाविनीतरा (वा) मायावितरा। मनोहारिणीतमा (वा) मनोहारितमा। वामोरूकल्पा (वा) वामोरुकल्पा इत्यादि[2]।

इतितद्धितप्रकरणम्।

(१) भाषित पुंस्क उसशब्दको कहते हैं जो स्त्री लिङ्ग और पुंलिङ्ग दोनो होते हैं।

(२) वैयाकरण लोग ऊवन्तका पुंवद्भावनिषेधकरके ऊप्‌काविकल्पकरके ह्रस्व विधानकरते हैं पुंवद्भाव के अभाव पक्षमे ईप्‌का भी कहीं नित्य और कहीं विकल्प ह्रस्वविधान किया करते हैं। यथा; विदुषिकल्पा, विदुषीकल्पा, विद्वत्कल्पा, ब्राह्मणीकल्पा, ब्राह्मणिकल्पा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्त्रीप्रत्यय

१। आप्, ईप्, ऊप् प्रत्यय जिन शब्दोंके अन्तमे लगते हैं वे स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

आप्

२। अकारान्त नाम के उत्तर आप् लगता है (प् इत है)। यथा, कृशा, दीना, मलिना, कृपणा, क्रूरा, सरला। पाचिका,[1] पालिका, नायिका।

ईप्

३। गौर प्रभृति अकारान्त शब्दों के उत्तर ईप् लगता है, (प् इत है); ईप् होनेसे शब्द के अन्त्य अ का लोप होजाता है। यथा; गौरी, कुमारी, किशोरी इत्यादि।

४। जाति का बोध होने से जातिवाची अकारान्त शब्दों के उत्तर ईप् लगता है। यथा, सिंही, वृषली, गोपी, इत्यादि।

५। परन्तु जातिवाची अजादि शब्दों के उत्तर ईप् नहि लगता। यथा, अजा, कोकिला, शूद्रा[2] प्रभृति।

६। तथा जिन जातिवाची शब्दों की उपधामे य् हो उन्के उत्तर भी ईप् नहि लगता। यथा, वैश्या; पर गवयी, हयी, मुकयी, मत्सी,[3] मनुषी[3] मे ईप् लगता है।

७। ऋकारान्त शब्दोंके उत्तर ईप् लगता है। यथा, दात्री, धात्री, कर्त्री इत्यादि; परन्तु स्वसृ प्रभृति शब्दोंसे ईप् नहि होता। यथा, स्वसा, माता, दुहिता, याता, ननान्दा, तिस्रः, चतस्रः।

८। नकारान्त शब्दोंके उत्तर ईप् लगता है। यथा, कामिनी,

(१) आप् होनेसे उसके पूर्व अक् प्रत्यय के अ को इ होता है; पर अष्टका, अधित्यका, उपत्यका के अ को इ नहि होता। (२) पर महत् शब्द पूर्व होने से "महाशूद्री" बनता है। (३) ईप् होनेसे मत्स्य और मनुष्य शब्दोंके य् का लोप होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गामिनी, अनुगामिनी, उपकारिणी इत्यादि। राज्ञी[1]। (युवन्) युवती[2], शुनी, युवतिः; (श्वन्) शुनी, (मघवन्) मघोनी, मघवती।

९। परन्तु संख्यावाची नान्त शब्दोंके उत्तर ईप् नहिं लगता। यथा, पञ्च, सप्त, अष्ट, नव, दश।

१०। नान्त शब्दोंमे मन्नन्त के उत्तर भी ईप् नहिं लगता। यथा, सीमा, पामा, सुदामा, अतिमहिमा।

११। बहुव्रीहि[3]-समास होनेसे अनन्त के उत्तर ईप् नहिं होता। यथा, (बहूनि सन्त्यस्यां पर्व्वाणि) बहुपर्व्वा वेणु-यष्टिः।

१२। बहुव्रीहि समास होनेसे अनन्तके उत्तर विकल्प करके डाप् होता है। यथा, बहुपर्व्वा, बहुपर्व्वे, बहुपर्व्वाः; (पक्षे) बहुपर्व्वा, बहुपर्व्वाणौ, बहुपर्व्वाणः।

१३। जिन अनन्त शब्दोंकी उपधाका लोप हो सकता है बहुव्रीहि समास होनेसे उनके उत्तर विकल्प करके डाप् और ईप् होता है। यथा; (बहवः सन्त्यत्र राजानः) बहुराजा, बहुराजे, बहुराजाः; बहुराज्ञी, बहुराज्ञ्यौ, बहुराज्ञ्यः; (पक्षे) बहुराजा, बहुराजानौ, बहुराजानः।

१४। उकारेत् और ऋकारेत् प्रत्यय निष्पन्न शब्दों के उत्तर ईप् लगता है। यथा; उकारेत्- भवती, यावती, बुद्धिमती, धनवती, श्रेयसी; ऋकारेत्- सती, हदती, कुर्व्वती, ददती इत्यादि।

१५। ईप् होनेसे भ्वादि और दिवादि गणीय धातुओं के उत्तर विहित शतृ प्रत्ययके तके पूर्व्व न आता है। यथा;

(१) न के पूर्व्व अ होने से उस अ का लोप होता है, पर वह अ यदि म् अथवा व् संयुक्त वर्ण मे मिला हो तो उसका लोप नहिं होता। (२) युवती प्रभृति शब्द निपात से सिद्ध होते हैं। (३) समासों का वर्णन आगे होगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भ्वादि–भवन्ती, धावन्ती, गच्छन्ती, कारयन्ती, चिकीर्षन्ती, दिवादि–दीव्यन्ती, नश्यन्ती, नृत्यन्ती, जीर्य्यन्ती, भ्राम्यन्ती, इत्यादि।

१६। तथा तुदादिगणीय से विकल्पकरके। यथा, तुदन्ती (पत्ते) तुदती; इच्छन्ती, इच्छती; प्रच्छन्ती, प्रच्छती; सिञ्चन्ती, सिञ्चती,।

१७। तथा अदादिगणीय आकारान्त से विकल्पकरके। यथा, यान्ती, याती; मान्ती, माती; भान्ती, भाती; स्नान्ती, स्नाती;।

१८। तथा स्यतृ प्रत्ययके त के पूर्व विकल्पकरके न आता है। यथा; भविष्यन्ती, भविष्यती; करिष्यन्ती, करिष्यती,।

१९। टकारेत् और षकारेत् प्रत्यय निष्पन्न शब्दों के उत्तर ईप् लगता है। यथा; टकारेत् प्रत्यय निष्पन्न गायनी; कर्म्मकरी, निशाचरी; सुरापी; प्रियङ्करणी; चतुर्थी, पञ्चमी, इत्यादि; द्वयी, त्रयी, चतुष्टयी, दशमयी;। षकारेत् प्रत्ययनिष्पन्न-नर्त्तकी, रजकी, मानवी, ईदृशी इत्यादि।

२०। ईप् होनेसे हल् वर्ण के अव्यवहित परवर्त्ती ष्यण् प्रत्यय का लोप होता है। यथा, (गार्ग्य) गार्गी, (वात्स्य) वात्सी, (पौलस्त्य) पौलस्ती इत्यादि।

२१। प्राच् प्रभृति शब्दों के उत्तर ईप् लगता है। यथा; प्राची, अवाची, प्रत्यञ्ची, उदञ्ची, तिर्य्यञ्ची, प्रतीची, उदीची, तिरश्ची।

२२। जाया अर्थमे जातिवाची अकारान्त शब्दों के उत्तर ईप् होता है। यथा; (ब्राह्मणस्यजाया) ब्राह्मणी,

(१) प्रत्यच्, उदच्, और तिर्य्यच् शब्दों के ये रूप निपातनसे सिद्ध होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

(शूद्रस्यजाया) शूद्री, गोपी, गणकी, नापिती, निषादी। प-
(पालकान्त शब्द से ईप नहि होता। यथा, (गोपालकस्य
जाया) गोपालिका, पशुपालिका—

२३। शोण प्रभृति शब्दों के उत्तर विकल्प करके ईप लगता है।
यथा; शोणी, शोणा; चण्डी, चण्डा; इत्यादि।

२४। बहुब्रीहि समास होनेसे अवयव वाचक शब्दोंके उत्तर वि
कल्पकरके ईप होता है। यथा; चन्द्रमुखी, चन्द्रमुखा; सुके-
शी, सुकेशा; इत्यादि।

२५। परन्तु क्रोड़ प्रभृति के उत्तर नहि। यथा; सुक्रोड़ा, तीक्ष्ण
खुरा, चारुशिखा, दीर्घशफा।

२६। जिन अवयव वाचक शब्दों की उपधामे संयुक्त वर्ण हो उनके
उत्तर ईप नहि होता। यथा, मृगनेत्रा, चारुगुल्फा; परन्तु
अङ्ग प्रभृति के उत्तर होता है। यथा; कृशाङ्गी, कृशाङ्गा;
मृदुगात्री, मृदुगात्रा इत्यादि।

२७। जिन अवयव वाचक शब्दोंमे दोसे अधिक स्वर हों उनके
उत्तर ईप नहि लगता। यथा, मृगनयना, चन्द्रवदना।
पर नासिका और उदर के उत्तर लगता है। यथा, तुङ्गना-
सिकी, तुङ्गनासिका, कृशोदरी, कृशोदरा।

२८। सह, नञ्, विद्यमान पूर्व होने से अवयव वाचक के उत्तर
ईप नहि होता। यथा, सकेशा, अकेशा, विद्यमानकेशा।

२९। बहुब्रीहि समास होनेसे ऊधस शब्दके उत्तर नित्य ईप
और टिके स्थानमे न होता है। यथा, (पीनमस्याऊधः) पी-
नोध्नी, (घटवदस्याऊधः) घटोध्नी इत्यादि।

३०। बहुब्रीहि समास होनेसे और संख्यावाचक शब्द पूर्व हो-
ने से दामन्, हायन के उत्तर ईप लगता है। यथा; (द्वेदामनी
दाम्नी) द्विदाम्नी (द्वावस्याहायनौ) द्विहायनी।

(१) हायन शब्द वयोवाचक न होनेसे ईप और णत्व नहि होता। यथा, द्विहायनाशाला।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२१। इकारान्त शब्दोंके उत्तर विकल्प करके ईप् लगताहै। यथा, श्रेणी, श्रेणिः; राजी, राजिः; आली, आलिः; कटी, कटिः; रात्री, रात्रिः; रजनी, रजनिः; इत्यादि। पर सखी शब्दको नित्य ईप् होता है। सखी।

२२। क्ति प्रत्यय निष्पन्न इकारान्त शब्दोंके उत्तर ईप् नहि होता यथा, गतिः, स्थितिः, बुद्धिः इत्यादि। पर (अस्त्रार्थ) शक्ति, और पद्धतिशब्द के उत्तर विकल्प करके। यथा, शक्ती, शक्तिः पद्धती, पद्धतिः।

२३। बहुव्रीहि समास होनेसे पद् के उत्तर ईप् लगता है। यथा; (द्वावस्याः पदौ) द्विपदी, त्रिपदी, चतुष्पदी, बहुपदी, शतपदी।

२४। तथा ———— दत्के उत्तर ईप् होताहै। यथा; सुदती, चारुदती, इत्यादि।

२५। पत्नी अर्थमे पाणिगृहीत शब्दके उत्तर ईप् लगता है। यथा; (पाणिर्गृहीतोऽस्याः) पाणिगृहीती पत्नी (अन्यत्र) पाणि गृहीता नारी।

२६। गुण वाचक उकारान्त शब्दोंके उत्तर विकल्प करके ईप् लगताहै। यथा; मृद्वी, मृदुः; साध्वी, साधुः; इत्यादि पर खरु शब्द को ईप् नहि होता, और उपधा मे संयुक्त वर्ण होनेसे भी नहि होता, यथा पाण्डुः। बहुके उत्तर विकल्प करके। बह्वी, बहुः। अशिश्वी, अनड्ही अनड्वाही, ये तीन शब्द नित्य ऐसेहि रहते हैं।

२७। यज्ञ फलभागित्व अर्थमे पति के इ के स्थान मे नीप् होताहै। यथा; वशिष्ठस्य पत्नी (वशिष्ठानुष्ठित यज्ञफल भोक्त्रीत्यर्थः)। ग्रामस्य पतिरियम् (यहां पति शब्दका अर्थ अधिकारिणी है यज्ञ फल भोक्त्री नहि इसलिये नीप् नहि हुआ)।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३८। सपत्नी प्रभृति शब्द निपातन से सिद्ध होते हैं। यथा; (समानः पतिरस्याः) सपत्नी (एकः पतिरस्याः) एकपत्नी साध्वी, वीरपत्नी, दृढपत्नी, भद्रपत्नी, पञ्चपत्नी द्रौपदी (पतिरस्त्यस्याः) पतिवत्नी जीवद्भर्त्तृका, (अन्तरस्त्यस्याः) अन्तरवत्नी गर्भिणी।

३९। जाया अर्थ मे भव प्रभृति शब्दों के उत्तर आनीष् होता है। यथा (भवस्य जाया) भवानी, शर्व्वाणी, रुद्राणी, मृडानी, इन्द्राणी, वरुणानी, ब्रह्माणी[1], मातुलानी[2], क्षत्रियाणी[3], अर्य्याणी, उपाध्यायानी, आचार्य्यानी[4]।

४०। अर्थविशेष मे हिमादि शब्दों से आनीष् होता है। यथा; (महत् हिमम्) हिमानी, (महद् अरण्यम्) अरण्यानी, (दुष्टो यवः) यवानी, (यवनानां लिपि) यवनानी।

ऊङ्

४१। उकारान्त शब्दों के उत्तर ऊङ् होता है। यथा; कुरूः, करूः पङ्गूः, अलाबूः, कर्कन्धूः, ब्रह्मबन्धूः,।

४२। परन्तु रज्जु प्रभृति के उत्तर ऊङ् नहि होता। यथा, रज्जुः, धेनुः, आखुः, हनुः, कमण्डलुः, कृकवाकुः, हनुबद्धः, अध्वर्य्युः,।

४३। तनु प्रभृति के उत्तर विकल्प करके। यथा; तनुः, तनूः चञ्चूः; चञ्चुः; श्वश्रूः[5]।

४४। उपमा अर्थ मे ऊरु शब्द के उत्तर ऊङ् होता है। यथा; (रम्भे इवास्या ऊरू) रम्भोरूः, करभोरूः, करिकरोरूः,

४५। वाम प्रभृति शब्दों के उत्तर ऊरु होनेसे उसमे ऊङ् लगता है। यथा; वामोरूः, संहितोरूः, सहोरूः, संहितोरूः, लक्षणोरूः, शफोरूः।

(१) आनीष् होनेसे ब्रह्मण शब्द के न् का लोप होजाता है। (२) "मातुली" इस प्रकार रूप भी होता है। (३) क्षत्रिय प्रभृति शब्दों से ईप् विकल्प करके होता है। यथा; क्षत्रिया, अर्य्या, उपाध्याया, आचार्य्या। (४) इस शब्द मे न् को ण् नहि होता। (५) यह निपातन से सिद्ध होता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अथ समासप्रकरणं।

१ दोया बहुत पदोंका एक पद होजाना समास कहलाताहै।

२ समास के अन्तर्गत पदों की विभक्तियें लोप होजाती हैं।

३ समास होनेसे पूर्वपदका अन्त्य नकार लोप होजाता है।

४ स्वर परे होनेसे परवदका ____ तथा ____

५ ____ तथा ____ इवर्ण और अवर्णका लोप होताहै।

६ हल परे होनेसे नञ् का नकार लोप होता है।

७ स्वर परे होनेसे नञ् के स्थानमे अन् होता है।

८ उकारेत् प्रत्यय परे होनेसे टि का लोप होता है।

९ जहां अन्य पदार्थ की प्रतीति हो वहां अन्त्य गो शब्द और स्त्री प्रत्यय ह्रस्व होजाते हैं।

१० समास होनेसे जो कई पदोंका एक पद होजाता है उसे उत्तर नयी विभक्तियें होती है।

११ जहां अन्य पदार्थकी प्रतीति हो वहां समस्त पद विशेष्य लिङ्ग होता है।

१२ समाहार समास होनेसे समस्त पद नपुंसकलिङ्ग और एकवचनान्त होता है।

१३ समासमे स्त्रीलिङ्ग सर्व्वनामको पुंवद्भाव होता है (अर्थात् उसका पुल्लिङ्ग केन्याई रूप होता है)

१४ विशेष्य शब्द परे होनेसे महत् शब्द के स्थानमे महा होता है।

१५ समासमे विंशति शब्दके ति का लोप होता है।

अव्ययीभावसमास

१ अव्ययीभाव समास मे पूर्व्व पद प्रधान होताहै।

२ अव्ययीभाव समास होनेसे समस्तपद नपुंसकलिङ्ग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होता है।

३ अकारान्त अव्ययीभाव की परवर्ती विभक्ति के स्थानमे म होता है। पञ्चमीके स्थान मे नहिं होता। तृतीया और सप्तमी के स्थानमे विकल्पकरके होता है।

४ अकारान्त भिन्न अव्ययीभावकी परवर्ती विभक्तिका लोप होता है।

५ समीप प्रभृति अर्थोंमे सुबन्त पदके साथ अव्यय का समास होता है। यथा; (गृहस्य समीपम्) उपगृहम् (विघ्नस्याभावः) निर्विघ्नम्, (हिमस्यात्ययः) अतिहिमम् (निद्रासम्प्रति न युज्यते) अतिनिद्रम्, (रथस्यपश्चात्) अनुरथम्, (रूपस्ययोग्यम्) अनुरूपम्, (दिनंदिनंप्रति) प्रतिदिनम् (शक्तिमनतिक्रम्य) यथाशक्ति, (ज्येष्ठस्यानुपूर्व्येण) अनुज्येष्ठम्, (हरौ) अधिहरि, (गृहे) अधिगृहम्, (हरेः सदृशं) सहरि, (चक्रेण युगपत्) सचक्रम्, (तृणमप्यपरित्यज्य) सतृणम्, (मद्राणां समृद्धिः) सुमद्रम्, (अग्निग्रन्थपर्यन्तमधीते) साग्नि इत्यादि।

६ अवधारण अर्थमे सुबन्तके साथ यावत् शब्द का समास होताहै, यथा; यावदमत्रं ब्राह्मणानामन्त्रयस्व (यावन्त्यमत्राणि सम्भवन्ति पात्र पड़वा तावत् ब्रामन्त्रयस्वेत्यर्थः)

७ पञ्चम्यन्तपदके साथ वहिस् प्रभृति शब्दोंका विकल्पकरके समास होताहै। यथा, वहिर्ग्रामं; ग्रामाद्वहिः प्रागुपवनं, उपवनात् प्राक्।

८ मर्यादा(१) और अभिविधि अर्थमे सुबन्तके साथ आङ् अव्ययका विकल्प करके समास होता है। यथा; आपाटलिपुत्रम् आपाटलि पुत्राद्वृष्टो देवः। आकुमारं

* अव्ययीभाव समासमे सह शब्दको स होताहै। परन्तु काल अर्थमे नहिं। यथा सहापराह्णम्। (१) तेन विना मर्य्यादा, तेन सहितोऽभिविधिः।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आकुमारेभ्यो यशः कालिदासस्य।

९ आभिमुख्य अर्थमे लक्ष्यवाचक सुबन्त के साथ अभि प्रति इन दोनो अव्ययों का विकल्प करके समास होताहै। यथा, अभ्यग्नि, अग्निमभि शलभाः पतन्ति। प्रत्यग्नि, अग्निं प्रति।

१० जिसका दैर्घ्य समझाजाय तिसके साथ अनु अव्यय का विकल्प करके समास होताहै। यथा, अनुगङ्गं, गङ्गाया अनु वाराणसी।

११ षष्ठ्यन्त पदके साथ पार और मध्य शब्दका विकल्प करके अव्ययीभाव समास होताहै। यथा, समुद्रस्य पारं, पारे(१) समुद्रं; गङ्गाया मध्यं मध्ये(१) गङ्गम् (पक्षे षष्ठी समास)

१२ समाहार अर्थमे नदीवाचक सुबन्त पदके साथ संख्यावाचकका अव्ययीभाव समास होताहै। यथा, (तिसृणां गङ्गानां समाहारः) त्रिगङ्गम्, पञ्चनदम्, सप्तगोदावरम्।

१३ अव्ययीभाव समासमे तिष्ठद्गु प्रभृति शब्द निपातनसे सिद्ध होते हैं। यथा, (तिष्ठन्ति गावो यस्मिन्काले दोहनाय) तिष्ठद्गु, आयती गवम्, अनुगवम् इत्यादि।

१४ अव्ययीभाव समासमे शरद्(२) प्रभृति शब्दोंके उत्तर अन् होताहै। यथा, उपशरदम्, प्रतिदिशम्, आहिमवतम्, उपजरसम्(३), प्रत्युरसम् इत्यादि।

१५ प्रति, परस्, सम्, अनुके परवर्ती अक्षिशब्द के उत्तर अन् होताहै। यथा, प्रत्यक्षम्, परोक्षम् समक्षम् अन्वक्षम्

१६ अन्नन्त भागान्त शब्दके उत्तर भी अन् होताहै। यथा, उपराजम्, अध्यात्मम्, प्रत्यध्वम्॥ परन्तु नपुंसक अन् भी

(१) एकारागम निपातन से हुआ। (२) शरद्, विपाश्, अनस्, मनस्, उपानह्, दिव्, हिमवत्, दिह्, दिव्, सद्, दिश्, दृश्, विश्, चतुर्, त्यद्, तद्, यद्, कियत्, जरा। (३) अन् होनेमे जरा को जरस् होताहै।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

शान्तके उत्तर विकल्प करके। यथा, उपचर्मम् उपचर्म।

१९ गिरि, नदी, पौर्णमासी, और आग्रहायणीके उत्तर विकल्प करके अत होताहै। यथा, उपगिरम्, उपगिरि इत्यादि।

२० पञ्चमभिन्न स्पर्शवर्णान्तके उत्तर विकल्प करके अत होताहै। यथा, उपदृषदम्, उपदृषत्, अनुसमिधम्, अनुसमित्।

तत्पुरुषसमास

१ तत्पुरुष समास में परपदकी प्राधान्यता होतीहै इसीलिये समस्तभाग परपदके लिङ्गको प्राप्त[१] होताहै।

साधारणकार्य

२ द्वितीयान्तके सहित समास, यथा। (कष्टंश्रितः) कष्टश्रितः (अन्नं बुभुक्षुः) अन्नबुभुक्षुः। (मुहूर्त्तंसुखं) मुहूर्त्तसुखं (मासंगम्यः) मासगम्यः। (खट्वां आरूढः) खट्वारूढः इत्यादि।

३ तृतीयान्तके सहित समास, यथा। (मासेनपूर्वः) मासपूर्वः (वाचाकलहः) वाक्कलहः (मात्रासदृशी) मातृसदृशी। (एकेनऊनः) एकोनः (गर्व्वेणशून्यः) गर्व्वशून्यः (व्याघ्रेण हतः) व्याघ्रहतः (शिरसाधार्य्यं) शिरोधार्य्यं (शीतेन ऋतः) = शीतार्त्तः[२]।

४ चतुर्थ्यन्त के सहित समास, यथा। (भूताय [illegible]) भूतबलिः। द्विजार्थः सूपः, द्विजार्था यवागूः, [illegible]जार्थं पयः[३]। (कुण्डलाय हिरण्यं) कुण्डलहिरण्यम् [illegible] इत्यादि।

(१) तत्पुरुष मे अन्तस्थित रात्र, अह्न, और अह शब्द पुंलिङ्ग [illegible]ते हैं। संख्यावाचक से परे रात्र नपुंसक होताहै। और पुण्य शब्दसे परे अह भी नपुंसक होता[illegible] [illegible]छाया प्रभृति शब्द विकल्पकरके नपुंसक होते हैं यथा तरुच्छायं तरुच्छाया गोशालं गो[illegible]शाला। एवं पदार्थ की बाहुल्यता में छाया शब्द नित्य नपुंसक होताहै यथा (इक्षूणां छाया) [illegible] छायम् शरच्छायम्। सभाशब्दभी कहीं नपुंसक होता है यथा [illegible] प्रभुसभम् ईश्वरसभम् रक्षःस[illegible]भम् पिशाचसभम् स्त्रीसभम् शिष्यसभम्। अण्डमा[illegible]दि परे होनेसे कुक्कुटी प्रभृतिको पुंवद्भा[illegible]व होताहै। यथा (कुक्कुट्या अण्डं) कुक्कुटाण्डम् हंसी[illegible]क्षीरम्। (२) तृतीया समास्य अवर्ण से [illegible] ऋत शब्द होने से अ + ऋ को आर् होताहै।

(३) अर्थान्त समास [illegible] विशेष्यके लिङ्गको प्राप्त हो[illegible] है।

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

५ पञ्च म्यन्तके सहित समास, यथा। (व्याघ्राद्भयम्) व्याघ्रभयम् (गृहान्निर्गतः) गृहनिर्गतः (रथात्पतितः) रथपतितः इत्यादि।

६ षष्ठ्यन्त के सहित समास, यथा। (गङ्गायाजलम्) गङ्गाजलम् (सुखस्यभोगः) सुखभोगः इत्यादि[1]।

७ सप्तम्यन्त के सहित यथा। (दानेशौण्डः) दानशौण्डः (रणेपण्डितः) रणपण्डितः (मासेदेयं, मासदेयमृणम् (पूर्वाह्णे कृतं) पूर्वाह्णकृतम् (तीर्थेकाक इव) तीर्थकाकः।

विशेषकार्य्य

८ प्रथमान्तके सहित षष्ठ्यन्तका समास। यथा (मासोजातस्य) मासजातः (अर्द्धंपिप्पल्याः) अर्द्धपिप्पली। (पूर्वंकायस्य) पूर्वकायः (पूर्वमह्नः) पूर्वाह्णः, सायाह्नः (मध्यंरात्रेः) मध्यरात्रः (द्वितीयभिक्षायाः) द्वितीयभिक्षा, तृतीयभिक्षा, चतुर्थभिक्षा, तुर्यभिक्षा। इत्यादि।

९ तथा पञ्चम्यन्तका समास। यथा (निष्क्रान्तः कौशाम्ब्याः) निष्कौशाम्बिः (उत्थितोनिद्रायाः) उन्निद्रः[2] इत्यादि।

१० प्रथमान्तके सहित चतुर्थ्यन्त का समास। यथा (परिग्लानो ऽध्ययनाय) पर्य्यध्ययनः; परिषेवः (अलंजीविकायै) अलंजीविकः इत्यादि।

११ तथा तृतीयान्तका समास। यथा (अवक्रुष्टः कोकिलया) अवकोकिलः इत्यादि।

१२ तथा द्वितीयान्तका समास। यथा (अतिक्रान्तः खट्वाम्) अतिखट्वः (उत्क्रान्तोवेलाम्) उद्वेलः इत्यादि।

१३ अव्यय के सहित सुबन्त पदका समास। यथा ईषत्कडारः

(१) निर्द्धारण अर्थमें विहित षष्ठी के साथ समास नहीं होता। यथा नृणां द्विजः श्रेष्ठः। गुण वाचक, तृप्त्यर्थक, तव्य, और अक् प्रत्ययान्त के साथ। यथा पटस्य शुक्लः, फलानां तृप्तः, ब्राह्मणस्य कर्तव्यम्, जगतः स्रष्टा, सुखस्य दाता। (२) अहन् को अह्न और रात्रिके उत्तर अच् हुआ। (३) त् के स्थान पर न् को पूर्वसवर्ण हुआ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ग्रामधुरः, अति दयालुः उत्कूलम्, दुष्पुरुषः, कुसंस्कारः।

१४ नञ् के सहित सुबन्त पदका समास। यथा (नप्रियः) अप्रियः (नसत्वं) असत्वं (न उपलभ्यः) अनुपलभ्यः।

१५ उपपदके[1] सहित धातुका समास। (यथा) कुम्भकारः, भ्रमकरः, जलचरः, अण्डजः, अग्रसरः (उपसर्गात्) संस्कारः, विजयः, अभिषेकः,। (ऊरीकरोति) ऊरीकरणम्, ऊरीकृत्य, आविष्क्रिया (च्वि) (स्वीकरोति) स्वीकारः, भस्मीभावः (डाच्) (समयाकरोति) समयाकरणम्, दुःखाकृत्य। (खात्करोति) खात्करणम्, सत्कारः। (अलङ्करोति) अलङ्करणम्, अन्तर्भावः, पुरस्कारः, अलङ्कृतः, अच्छोद्य, अच्छगत्य, तिरोभावः, साक्षात्कृत्य (वा साक्षात्कृत्य) (सप्तम्यन्तेनवा) उरसिकृत्य, उरसिकृत्वा वा, मध्येकृत्य, मध्येकृत्वावा, हस्तेकृत्य, पाणौकृत्य (दारकर्म्म कृत्वेत्यर्थः)। स्वामिकृतम्, सयन्दनम् इत्यादि।

कर्म्मधारयसमास

१ जिस तत्पुरुष समासमे समस्यमान पद सब समानाधिकरण अर्थात् विशेष्य विशेषण भावापन्न हों अथवा अभेद सम्बन्धमे एकार्थ प्रतिपादक हों उसको कर्म्मधारय कहते हैं।

२ विशेषण पदके सहित विशेष्यका समास। यथा (नीलमुत्पलं) नीलोत्पलम्, (केवलो वैयाकरणः) केवलवैयाकरणः, नवग्रहाः (महती नवमी) महानवमी[2], इत्यादि।

३ अभेदसम्बन्धमे एकार्थ प्रतिपादक पदोंका समास। यथा (कृतञ्चतदकृतञ्च) कृताकृतम् (नीलश्च सलोहितश्च)

(१) जिन सुबन्त प्रभृति के परवर्त्ती धातुके उत्तर कृत्य प्रत्यय विहित होते है उनको उपपद कहते हैं। कुम्भकार, यहां कुम्भम् इस उपपदके साथ कृधातुका समास होकर कुम्भ कृ इसका रूप होनेसे अण् प्रत्यय होता है। इसी प्रकार सर्व्वत्र। (२) कर्म्मधारय समासमे भाषितपुंस्क स्त्रीलिङ्ग पूर्व्व पदका पुंवद्भाव होता है। परन्तु ऊङ् प्रत्ययान्तका नहीं होता यथा वामोरूभार्य्या।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नीललोहितः (पूर्वस्नातः पश्चादनुलिप्तः) स्नातानुलिप्तः, भुक्तोज्झीर्णम्।

४ उपमान और उपमेयके समान धर्म्मवाचक पदके साथ उपमानवाचक पदका समास होता है। यथा (घन इव श्यामः) घनश्यामः (नवनीतमिव कोमलं) नवनीतकोमलम्।

५ व्याघ्रादि उपमानवाचक सुबन्त पदके साथ उपमेय पदका समास होता है। यथा (पुरुषो व्याघ्र इव) पुरुषव्याघ्रः (राजा चन्द्र इव) राजचन्द्रः इत्यादि।

६ अभूत तद्भाव अर्थमें श्रेणी प्रभृति पदका कृतप्रभृति सुबन्त पदके साथ समास होता है। यथा (अश्रेणयः श्रेणयः कृताः) श्रेणीकृताः। (अनिपुणा निपुणाःकृताः) निपुणकृताः

द्विगुसमास

१ जिस कर्म्मधारयके पूर्व्व पदमें संख्यावाचक शब्द हो उसे द्विगु कहते हैं।

२ तद्धितार्थमें, उत्तर पद परे होनेसे, और समाहार अर्थमें, द्विगु समास होता है। यथा (तद्धितार्थे) (पञ्चभिर्गोभिः क्रीतः) पञ्चगुः (उत्तर पद परे) (पञ्च हस्ताः प्रमाणमस्य) पञ्चहस्त प्रमाणः

३ समाहार द्विगु होनेसे अकारान्त शब्दके उत्तर ईप् होता है।[१] यथा (त्रयाणां लोकानां समाहारः) त्रिलोकी, चतुष्पदी, पञ्चनली।

टप्रत्यय

१ तत्पुरुष समासमें कई एक शब्दोंके उत्तर ट होता है। (ट इत जाता है) यथा (अह्नां राजा) अहराजः,पर-

(१) भुवन प्रभृति शब्दोंके उत्तर ईप् नहिं होता। यथा त्रिभुवनम्, चतुर्युगम्, पञ्चपात्रम्

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात्; राजसखः, पञ्चगवम्, अश्मोरसम्, उपानसम्, अम-
ताषम्, कालायसम्, मण्डूकसरसम्, ग्राममहाः, कौट-
तक्षः, अतिश्वः, आकर्षश्वः, उत्तरसक्थम्, मृगसक्थम्,
पूर्व्वसक्थम्, फलकसक्थम्, द्विनावम् इत्यादि।

निपातनम्

१ तत्पुरुषसमासमें कई एक शब्द निपातनसे भी सिद्ध हो-
ते हैं। यथा मयूरव्यंसकः, अश्नीत पिबता, पचतभृज्जता,
निश्चेयसम् पुरुषायुषम् इत्यादि।

बहुव्रीहिसमास

१ अनेक प्रथमान्त पद अन्य पदार्थमें रहनेसे बहुव्रीहि
समास होता है। यथा (आरूढो वानरो यम्) आरूढ-
वानरो (वृक्षः), (कृतं कर्म्म येन) कृतकर्म्मा (पुरुषः)
(दत्तं धनं यस्मै) दत्तधनो, (दरिद्रः) उद्धृतमुदकं यस्मा-
त्) उद्धृतोदकः (कूपः), (दीर्घौ बाहू यस्य) दीर्घबाहुः
(पुरुषः), (प्रफुल्लानि कमलानि यस्मिन्) प्रफुल्लकम-
लं (सरः), (दक्षिणस्याः पूर्व्वस्याश्च दिशोरन्तरालं)
दक्षिणपूर्व्वा, (पुत्रेण सह) सपुत्रः, (वा) सहपुत्रः[२]
(केशेषु केशेषु गृहीत्वेदं युद्धं प्रवृत्तं) केशाकेशि[३]
(दण्डैश्च दण्डैश्च प्रहृत्येदं युद्धं प्रवृत्तं) दण्डादण्डि,[३]
बाहूबाहवि, (दशानां समीपे ये ते) उपदशाः,[४] (विंशते-
रासन्नाः) आसन्नविंशाः, (त्रिंशतो दूरे) अदूरत्रिंशाः
(द्वौ वा त्रयो वा) द्वित्राः, (पञ्च वा षड् वा) पञ्चषाः

(१) बहुव्रीहि समासमें अन्य पदार्थका लिङ्ग होता है। (२) तृतीयान्त पदके साथ सह शब्दका बहुव्रीहि समास होता है। और सहको विकल्प करके स आदेश होता है।
(३) [illegible] समासमें [illegible] होनेसे पूर्व्व पदको अन्त्य स्वर दीर्घ होजाता है, और परपदके अन्तर [illegible] होता है, [illegible] होनेसे अन्त्य [illegible] होता है। (४) संख्यावाचक शब्दके उत्तर [illegible] परन्तु [illegible] नहिं [illegible]

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२ बहुव्रीहि समास में स्त्रीलिंगशब्द परे होने से भाषित पुंस्क स्त्रीलिङ्ग शब्द को पुंवद्भाव होता है। यथा, (स्थिरा बुद्धिर्यस्य) स्थिरबुद्धिः, (महती मतिर्यस्य) महामतिः, (पीता गौर्यस्य) पीतगुः।

३ बहुव्रीहि समास में कई एक शब्दों के उत्तर अप्, ष, असिच्, अन्, इ, कप्, होते हैं। यथा (अप्) (कल्याणी पञ्चमी यासां रात्रीणां ताः) कल्याणी पञ्चमा रात्रयः (स्त्री प्रमाणी येषां ते) स्त्रीप्रमाणाः कुटुम्बिनः। (अविद्यमानानि चत्वार्यस्य) अचतुरः, सुचतुरः, विचतुरः, उपचतुराः। मृगनेत्राः रात्रयः। पद्मनाभः। अन्तर्लोमः, असक्थः (वा) असक्थिः॥ (ष) यथा। पञ्चाङ्गुलं दारु। दीर्घसक्थः पुरुषः, विशालाक्षी देवी, द्विमूर्द्धः, त्रिमूर्द्धः, (असिच्) यथा; अप्रजाः, दुष्प्रजाः, सुप्रजाः, अमेधाः, दुर्मेधाः, सुमेधाः, मन्दमेधाः, अल्पमेधाः, (अन्) सुधर्म्मा (दक्षिणे ईर्म्म व्रणं यस्य) दक्षिणेर्म्मा मृगः (इ) सुगन्धि भोजनम्, पद्मगन्धि (कप्) (भाषितः पुमानेन) भाषितपुंस्कः अनर्थकम् (ईयसन्तात् स्त्रियां कप्) बहुधनिका नगरी (ऋदन्तनदीभ्यां च) एकपितृकः, बहुकुमारीकः, पृथुधनुष्कः (वा) पृथुधनुः॥

४ बहुव्रीहि समास में कई शब्द निपातन से भी सिद्ध होते हैं। यथा; प्रज्ञुः, संज्ञुः, ऊर्द्ध्वज्ञुः (वा) ऊर्द्ध्वजानुः। (उपसर्गाच्च नासिकायाः नसः संज्ञायाञ्च) प्रणसः उन्नसः अपनसः गोनसः [illegible] णसः, खरणाः, खुरणसः, खुरणाः, विग्न, विख्य, विकुत्र, [illegible] (युवतिर्जाया यस्य) युवजानिः, सुन्दरजानिः, प्रिय[illegible]जानिः, द्विपात, सुपात्, कुम्भपदी, सुहृत्, उद्धृत्, सुगन्धिः, बलवत्सुः इत्यादि।

(१) ऊङ् प्रत्ययान्त को पुंवद्भाव नहिं होता यथा वामोरूभार्य्यः [illegible] स्त्री लिंग शब्द को उपधाम [illegible] नहिं होता यथा [illegible] को भी नहिं होता यथा [illegible]भार्य्यः [illegible] [illegible] को तथा [illegible] को भी नहिं होता यथा [illegible] [illegible] । (२) ईयसुन् प्रत्ययान्त के [illegible] शब्द के उत्तर कप् नहिं होता यथा बहुश्रेयसी, [illegible] [illegible]

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

द्वन्द्वसमास

१ परस्पर योग अर्थमे द्वन्द्व समास होताहै। यथा, (हरिश्च हरश्च) हरिहरौ, (कन्दश्च मूलञ्च फलञ्च) कन्दमूलफलानि[१]।

२ दो वा अधिक पदार्थों का समाहार[२] होने से भी द्वन्द्व समास होता है। यथा (पाणी च पादौ च) पाणिपादम् (पणवश्च मृदङ्गश्च) पणवमृदङ्गम् (धनूंषि च शराश्च) धनुःशरम् (ब्रह्मपुत्रश्च चन्द्रभागा च) ब्रह्मपुत्रचन्द्रभागम् (मथुरा च पाटलिपुत्रञ्च) मथुरापाटलिपुत्रं (गावश्च महिषाश्च) गोमहिषम् (व्रीहयश्च यवाश्च) व्रीहियवम् अहिनकुलम्, गवाश्वम्, सर्वौषधं (वा) सर्वौषधे, शीतोष्णं (वा) शीतोष्णौ, गोपनापितम्, दधिपयसी इत्यादि।

३ समास द्वन्द्वमे चवर्गान्त दकारान्त षकारान्त और हान्त शब्द के उत्तर अ होता है। यथा वाक्त्वचम्, सम्पद्विपदम्, वाक्त्विषम्, धेनुगोदुहम्।

४ विद्या सम्बन्ध और गोत्र सम्बन्ध होनेसे और ऋकारान्तशब्द परवर्त्ती होनेसे ऋकारान्त शब्द के उत्तर आ होता है। यथा (होता च पोता च) होतापोतारौ (माता च पिता च) मातापितरौ।

५ पुत्रशब्द परे होनेसे ऋदन्त के उत्तर भी आ होता है। यथा (पिता च पुत्रश्च) पितापुत्रौ।

६ देवतावाची पदों का द्वन्द्व होनेसे भी पूर्व्व पद के उत्तर आ होता है। यथा, (इन्द्रश्च वरुणश्च) इन्द्रावरुणौ

७ एक विभक्ति होनेसे समानाकार अनेक पदोंका एकमात्र

(१) द्वन्द्वसमास मे समस्त भाग परपद के लिङ्ग को प्राप्त होता है। (२) परन्तु समाहार मे समस्तपद नपुंसकलिङ्ग का एकवचनान्त होजाता है। (३) ब्रह्मप्रजापति प्रभृति के उत्तर आ नहिं होता।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अवशिष्ट रहता है। यथा (तरुश्च तरुश्च) तरू, (तरुश्च तरुश्च तरुश्च) तरवः (फलञ्च फलञ्च) फले।

८ समानाकार स्त्रीवाचक पदके साथ समास होने से पुरुषवाचकपद अवशिष्ट रहता है। यथा (ब्राह्मणश्च ब्राह्मणीच) ब्राह्मणौ (कुक्कुटश्च कुक्कुटीच) कुक्कुटौ(१)।

९ स्वसृके साथ भ्रातृका, दुहितृ के साथ पुत्र का समास होनेसे भ्रातृ और पुत्र अवशिष्ट रहता है। यथा (भ्राताच स्वसाच) भ्रातरौ, (पुत्रश्च दुहिताच) पुत्रौ।

१० मातृ पदके साथ समास होनेसे पितृपद, और श्वश्रूपदके साथ समास होनेसे श्वशुरपद विकल्प करके अवशिष्ट रहते हैं। यथा (मातापितरौ, (वा) पितरौ। श्वश्रू श्वशुरौ (वा) श्वशुरौ।

११ नपुंसकभिन्नके साथ समास होनेसे नपुंसक पद अवशिष्ट रहता है और विकल्प करके एकवचन होता है। यथा (शुक्लश्च शुक्लाच शुक्लञ्च) शुक्लम् वा शुक्लानि।

१२ परन्तु नपुंसकके साथ होनेसे एकवचन नहिं होता। (शुक्लञ्च शुक्लञ्च शुक्लञ्च) शुक्लानि।

१३ द्वन्द्व समास मे निपातन से सिद्ध। अग्नीषोमौ, अग्नीवरुणौ, द्यावाभूमी, द्यावाक्षमे, द्यावापृथिव्यौ, दिवस्पृथिव्यौ, मातापितरौ, जायापती, दम्पती, जम्पती, स्त्रीपुंसौ, वाङ्मनसे इत्यादि।

सर्व्वसमाससाधारणविधि

१ समास होनेसे समस्त पदके अन्तस्थित पथिन् शब्दके उत्तर अ होता है। यथा; उपपथं, जलपथः लेत्रपथौ।

२ समास होनेसे अन्तस्थित कई शब्दोंके उत्तर अन होता है

(१) व्यक्ति विशेषक संज्ञावाचक पदोंका एकशेष नहिं होता। यथा; इन्द्रेन्द्राण्यौ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

यथा, विमलापसरः, द्वीपम्, अन्तरीपम्, नीपम्[1], राजधुरा, अ-र्द्धर्चः, अनृचो माणवकः, बह्वृचश्चरणः; प्रतिलोमम्, अनुलोमम्, अवलोमम्, प्रतिसामम्, कृष्णभूमः, उदकभूमः, पाण्डुभूमः, चतुर्भूमः; ब्रह्मवर्चसम्, हस्तिवर्चसम्, पल्यवर्चसम्, राजवर्चसम्, अवतमसम्, सन्तमसम्, अन्धतमसम्, श्वोवसीयसम्, श्वःश्रेयसम्। इत्यादि।

३ कहीं समासान्तविधि नहीं भी होती है। यथा स्वराजा, स्वपन्था, किंराजा (नञ्तत्पुरुषे) अराजा, असखा।

४ समासमे समान शब्दको स होता है गोत्रप्रभृति शब्द परे होनेसे। यथा (समानं गोत्रमस्य) सगोत्रः, सरूपः, सोदर्यः; (वा) समानोदर्यः।

५ तथा अन्यशब्दके उत्तर द होता है आशिस् प्रभृति परे होनेसे। यथा, अन्यदाशीः अन्यदागः (न ननी वा षष्ठ्योः) (अन्येन आशीः) अन्याशीः (अर्थेवा) अन्यदर्थः, अन्यार्थः, अन्यस्था।

६ तथा कुशब्दको कत् होता है स्वर परे होनेसे और त्रि, रथ, वद परे होनेसे। यथा कदश्वः, कत्त्रयः, कद्रथः, कद्वदः।

७ तथा कुशब्दको का होता है, ईषत् अर्थमे और पथिन्, अक्षि परे होनेसे। यथा कामधुरं (ईषन्मधुरमित्यर्थः) कापथः, काक्षः, (विभाषा पुरुषे) कापुरुषः, कुपुरुषः

८ तथा कुशब्दको का, कत्, कव होता है उष्ण परे होनेसे। यथा, कोष्णं, कदुष्णं, कवोष्णम्।

९ निपात से भी कई शब्द सिद्ध होते हैं। यथा विश्वामित्रः; सकामः, समनाः, गन्तुकामः, गन्तुमनाः, अवश्यदेयम्, अवश्यभव्यम्, अवश्यकार्य्यम्।

(१) द्वि, अन्तर और उपसर्ग के परवर्ती अप शब्दके अ को ई होता है परन्तु अवर्णान्त उपसर्ग के परवर्ती होने से विकल्प करके यथा प्रेपम् प्रापम्।

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१० समासमे उत्तर पद परे होनेसे कहीं२ विभक्तिका लोप नहिं भी होता। यथा स्तोकान्मुक्तः, ओजसाकृतम्, पुंसानुजः, जनुषान्धः, आत्मनः दशमः, आत्मनेपदम्, परस्मैपदम्, युधिष्ठिरः, अन्तेगुरुः, मध्येगुरुः, कण्ठेकालः, हस्तेबन्धः, अन्तेवासी मनसिज (वामनोजः) चौरस्यकुलम्, दास्याःपुत्रः (वा दासीपुत्रः) वाचोयुक्तिः, देवानांप्रियः, शुनःशेफः, दिवोदासः, होतुः पुत्रः, मातुः स्वसा, पात्रेसमिता इत्यादि।

११ समासमे कहीं२ मध्यपदका लोप होता है। यथा (घृतमिश्रम् ओदनम्) घृतौदनम् (पलमिश्रमन्नं) पलान्नं (अनुगतोऽर्थोऽस्मिन्) अन्वर्थः (पञ्चाधिका विंशति) पञ्चविंशति इत्यादि।

पूर्व्वनिपात

१ अव्ययीभावमे अव्यय प्रथमान्तपद, तत्पुरुषमे द्वितीयादि विभक्त्यन्तपद, कर्म्मधारयमे विशेषण प्रथमान्तपद, द्विगुमे संख्या वाचक पदका पूर्व्वनिपात होता है। यथा (कुलस्य समीपम्) उपकुलम्, (हलंप्राप्तः) हलप्राप्तः (नीलमुत्पलम्) नीलोत्पलम्, (पञ्चभिर्गोभिः क्रीतः) पञ्चगुः।

२ बहुव्रीहि मे सप्तम्यन्त और विशेषण पदका पूर्व्वनिपात होता है। यथा; कण्ठेकालः, दीर्घबाहुः।

३ निष्ठा प्रत्यय निष्पन्न पदका पूर्व्वनिपात होता है। यथा; कृतकर्म्मा, धृतायुधः। कहीं विकल्प भी होता है। यथा आहिताग्नि, अग्न्याहितः।

४ द्वन्द्व समासमे अपेक्षा कृत अल्पस्वर विशिष्ट पदोंका पूर्व्वनिपात होता है। यथा; नालतमालौ। स्वर साम्यस्थल मे स्वरादि अकारान्त पदका और इकारान्त उकारान्त पदका पूर्व्व निपात होता है। यथा; अश्वगजौ, हरि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हरौ, पटु शुक्लौ।

५ अभ्यर्हित बोधक पदका पूर्व्वनिपात होता है। यथा; माता पितरौ; तापसयाचकौ।

६ लघुवर्ण विशिष्ट पदका पूर्व्व निपात होता है। यथा, कुश काशम्, नलनीलौ,।

७ बड़े भाई और बड़े वर्ण का पूर्व्व निपात होता है। यथा युधिष्ठिरार्ज्जुनौ। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्राः।

८ ऋतु और नक्षत्र वाचक पदों का पौर्व्वापर्य्य क्रम से पूर्व्वनिपात होता है। यथा, हेमन्तशिशिरौ, अश्विनी भरण्यौ।

९ राज दन्तादिकों का गडु प्रभृति के और प्रहरणार्थ वाचक पदके योगमे सप्तम्यन्त पदका पर निपात होता है। यथा (दन्तानां राजा) राज दन्ताः; अग्रेवनम् (गडुकण्ठे यस्य) गडुकण्ठः (शस्त्रं पाणौ यस्य) शस्त्रपाणिः।

१० प्रियशब्दका और कर्म्मधारय मे कडार प्रभृति पदका विकल्प करके पूर्व्वनिपात होता है। यथा प्रियगुडः, गुडप्रियः, कडारगजः गजकडारः ॥ ९ ॥

इति समास प्रकरणम्।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अथ विभक्तिनिर्णयः

१ संख्या कारक बोधयित्री विभक्तिः

जिससे संख्या और कारककी प्रतीति हो उसे विभक्ति कहते हैं। यथा, घटः, घटौ, घटाः, यहां घट शब्दमें प्रथमा विभक्ति का योग होनेसे एक घट, दो घट, बहु घट, इस प्रकार संख्याकी प्रतीति होती है; चन्द्रं पश्यति, यहां चन्द्र शब्दमें द्वितीया विभक्ति का योग होनेसे उसमें कर्म्म कारककी प्रतीति होती है।

२। विभक्तयः सप्त।

प्रथमादि सात विभक्तियें शब्द के ऊपर प्रयोजनानुसार प्रयुक्त होती हैं।

प्रथमा

३। अभिधेयमात्रे प्रथमा।

जहां क्रिया पद प्रभृति नहीं, वहां केवल अभिधेय की प्रतीति के निमित्त शब्द के ऊपर प्रथमा विभक्ति लगती है। यथा; वृक्षः, लताः, पुष्पम्,

४। कर्त्तरि।

कर्त्ते कारकमें प्रथमा विभक्ति होती है। यथा, शिशुः क्रीडति, लड़का खेलता है (यहां लड़का खेल क्रियाका कर्त्ता है इसलिये शिशु शब्दमें प्रथमा लगी)

५। सम्बोधने।

सम्बोधनमें प्रथमा विभक्ति होती है। यथा, हे पितः, हे भ्रातरौ, हे पुत्राः

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

७। अव्यययोगे च।

इति प्रभृति कई एक अव्ययोंके योगमे प्रथमा विभक्ति होती है। यथा, अयोध्यानगरे दशरथ इतिख्यातो नृपतिरासीत्, पापात्मनां सङ्गः परित्यक्तुं साम्प्रतं, विषवृक्षोऽपि संवर्द्ध्य स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतं।

द्वितीया

१। कर्म्मणि द्वितीया

कर्म्मकारकमे द्वितीया विभक्ति होती है। यथा, पुष्पं चिनोति देवदत्तः देवदत्त फूलोंको चुंगता है। यहां फूल कर्म्म हैं इसलिये पुष्प शब्दमे द्वितीया हुई।

८। क्रियाविशेषणे च।

क्रियाविशेषणमे द्वितीया होती है, और केवल क्लीवलिङ्गका एकवचन होता है। यथा, सत्वरं धावति, द्रुतं पलायते, मृदु हसति, साधु भाषते।

९। अध्वकालाभ्यामत्यन्तसंयोगे।

अत्यन्त संयोग अर्थात् व्याप्ति अर्थमे अध्ववाचक और कालवाचक शब्दोंके उत्तर द्वितीया होती है। यथा, अध्ववाचक- क्रोशं गिरिः स्थितः, योजनं भृत्येनागतः; कालवाचक- दिवसमुपवसति, मासमधीते; क्रोशं योजनं दिनं मासं व्याप्येत्यर्थः

१०। अभिपरिसर्व्वोभयैस्तसन्तैः।

तस प्रत्ययान्त अभि, परि, सर्व्व और उभय शब्दके योगमे द्वितीया होती है। यथा, ग्राममभितः, गृहं परितः, उद्यानं सर्व्वतः, नदीमुभयतः।

११। प्रत्यनुधिङ्निकषान्तरेणयावद्भिः।

प्रति, अनु, धिक्, निकषा, अन्तरा (मध्यार्थमे), अन्तरेण (बिना अर्थमे), और यावत् शब्दके योगमे द्वितीया विभक्ति होती है। यथा, दीनं प्रति दया, राममनुजातो लक्ष्मणः, कृपणं धिक्, ग्रामं निकषा नदी, सत्वां मांच अन्तरा उपविष्टः, श्रममन्तरेण विद्या न भवति, वनं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यावदनुसरति।

तृतीया

१२ तृतीयाकरणे।

करणकारकमे तृतीया विभक्ति होतीहै। यथा; हलेनकृषति, चक्षुषा पश्यति, कर्णेन शृणोति।

१३ सहार्थैः।

सहार्थ शब्दों के योगमे भी तृतीया होतीहै। यथा; रामः सीतया लक्ष्मणेन च सह वनं जगाम।

सहार्थ शब्दों के अप्रयोगमे भी तृतीया होती है। यथा; पिता पुत्रेण गच्छति (पुत्रेण सहेत्यर्थः)

१४ ऊनवारणप्रयोजनार्थैश्च।

ऊनार्थ, वारणार्थ और प्रयोजनार्थ शब्दोंके योगमे तृतीयाविभक्ति होतीहै। यथा; ऊनार्थ- एकेन ऊनः, विद्यया हीनः, अहङ्कारेण शून्यः; वारणार्थ- अलंविवादेन, कलहेन किम्; प्रयोजनार्थ- धनेन प्रयोजनम्, कोऽर्थः कलहेन।

१५ अध्वकालाभ्यामपवर्गे।

अपवर्ग अर्थात् क्रियासमाप्ति और फलप्राप्ति अर्थमे अध्ववाचक शब्दोंके उत्तर तृतीया होतीहै। यथा; अध्ववाचक- क्रोशेनानुवाकोऽधीतः; कालवाचक- त्रिभिरहोभिः कृतम्, मासेन व्याकरणमधीतम्। मासंव्याकरणमधीतं नत्वस्फुरति, (यहां अध्ययनकी फल- प्राप्ति न होनेसे मास शब्दके उत्तर तृतीया नहुई।

१६ येनाङ्गेनाङ्गिनोविकारः।

जिस अङ्गके विकृत होनेसे अङ्गीका विकार लक्षित होताहै उस अङ्गवाचक शब्दके उत्तर तृतीया होती है। यथा; चक्षुषाकाणः, पादेन खञ्जः, कर्णेन वधिरः, पृष्ठेन कुब्जः।

१७ लक्षणात्।

जिस लक्षण अर्थात् चिह्न द्वाराकोई व्यक्ति सूचित हो उस लक्षण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बोधकशब्द के उत्तर तृतीया होती है। यथा; जटाभि स्तापसमपश्यम्, भूषाभिः शिशुमदर्शम्।

१८। प्रकृत्यादिभ्यश्च।

स्थल विशेषमे प्रकृति प्रभृति शब्दों के उत्तर तृतीया होती है। यथा; प्रकृत्याचारुः, स्वभावेन सरलः, जात्या ब्राह्मणः, वेगेनयाति, यत्नेन लिखति, क्लेशेन वदति।

चतुर्थी

१९। चतुर्थीसम्प्रदाने।

सम्प्रदान कारकमे चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा; दरिद्राय धनं ददाति।

२०। तादर्थ्ये।

"उसके लिये" इस अर्थमे चतुर्थी होती है। यथा; अश्वाय घासः (अश्वके लिये घास), स्नानाय नदीं याति।

२१। निवृत्तौ निवर्त्तनीयात्

निवृत्ति अर्थमे निवर्त्तनीयके उत्तर चतुर्थी होती है। यथा; मशकाय धूमः (मशक निवृत्तये इत्यर्थः), आतपाय छत्रम्।

२२। सम्पद्यमानात् क्लृप्यादेः।

क्लृपि प्रभृति धातुके प्रयोगमे सम्पद्यमानके उत्तर चतुर्थी होती है। यथा; भक्तिर्ज्ञानाय कल्पते, ज्ञानं सुखाय सम्पद्यते, धर्म्मः स्वर्गाय भवति, अधर्म्मः नरकाय भवति।

२३। हितसुखनमोभिः।

हित, सुख, और नमस् शब्दोंके योगमे चतुर्थी होती है। यथा; हितं पुत्राय, सुखंशिष्याय, नमोगुरवे।

क्रिया योगे विकल्प। यथा; गुरवे नमस्कृत्य, गुरुं नमस्कृत्य

२४। स्वस्ति स्वाहा स्वधा वषड्भिः।

स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा और वषट् शब्दोंके योगमे चतुर्थी होती है। यथा, स्वस्तिप्रजाभ्यः।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

२५। समर्थार्थकेश्च।

समर्थार्थक शब्दों के योगमे चतुर्थी होती है। यथा; समर्थो मल्लो मल्लाय, प्रभुर्मल्लो मल्लाय।

समर्थार्थक क्रियायोगेऽपि। प्रभवति मल्लो मल्लाय

२६। मन्यकर्म्मण्यनादरे विभाषा

अनादर अर्थमे (दिवादि गणीय) मन धातु के कर्म्म के स्थान मे। वैकल्पकरके चतुर्थी होती है। यथा; सत्वां तृणाय मन्यते, नाहं त्वां कुक्कुराय मन्ये। (पक्षे द्वितीया।

पर शृगाल, काक, नौ, अन्न शब्दों के उत्तर चतुर्थी नहि होती। यथा; त्वामहं शृगालं मन्ये।

२७। वा गत्यर्थ कर्म्मणिचेष्टायाम्।

चेष्टा अर्थमे गत्यर्थ धातुओं के कर्म्म के स्थानमे विकल्प करके चतुर्थी होती है। यथा; ग्रामाय गच्छति, व्रजाय व्रजति। (पक्षे द्वितीया)

(चेष्टाभिन्न अर्थमे) मनसा मधुरां गच्छति।

पर अध्ववाचक शब्द कर्म्म होनेसे चतुर्थी नहि होती। यथा; अध्वानं गच्छति, पन्थानं गच्छति।

पञ्चमी

२८ अपादाने पञ्चमी।

अपादान कारक मे पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा; अश्वात् पतितः, गृहाच्चलितः, जलादुत्थितः।

२९। ल्यब्लोपे कर्म्मण्यधिकरणेच।

ल्यप् प्रत्ययान्तपद का जहां प्रयोग होसकता है, ऐसे स्थलमे द्वितीया और सप्तमी के स्थानमे पञ्चमी होती है। यथा; प्रासादात् प्रेक्षते (प्रासादमारुह्य इत्यर्थः), आसनादवलोकयति (आसने उपविश्य इत्यर्थः)।

३०। कालाध्वनोरवधेः।

कालपरिमाण और अध्वपरिमाण अर्थमे अवधि बोधक शब्दों के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उत्तर पञ्चमी होतीहै। यथा; कालपरिमाण अग्रहायण्यात् पञ्चमासाः विवाहात् सप्तमेदिने; अध्वपरिमाण पाटलिपुत्रात् शतं क्रोशाः,

२१। निकृष्टादुत्कर्षे।

दो वा अधिक के मध्यमे एकका उत्कर्ष बोध होनेसे निकृष्ट के उत्तर पञ्चमी होतीहै। यथा, धनात् विद्यागरीयसी, चैत्रो मैत्रात् बलीयान्, मथुराः पाटलिपुत्रकेभ्य आढ्यतराः।

२२। मर्य्यादाभिविध्योराङ्योगे।

मर्य्यादा और अभिविधिका बोध होनेसे आ अव्यय के योगमे पञ्चमी होतीहै। यथा; मर्य्यादा- आजन्मनः, आ शैशवात्, आमृत्योः, आ समुद्रात्; अभिविधि- आवना हृष्टोदेवः (वनं व्याप्य इत्यर्थः), आसकलात् ब्रह्म, सकलं व्याप्य इत्यर्थः।

२३। अन्यार्थैः।

अन्यार्थ शब्दोंके योगमे पञ्चमी होतीहै। यथा; मित्रादन्यः कः परित्रातुं समर्थः, घटः पटादितरः, इदमस्माद्भिन्नम्। अन्यार्थ क्रियायोगेऽपि। यथा; स्वर्णं रजताद्भिद्यते।

२४। दिग्देशकालवाचिभिः।

दिग्वाचक, देशवाचक और कालवाचक शब्दोंके योगमे पञ्चमी होतीहै। यथा; दिग्वाचक- पूर्वोग्रामात्, देशवाचक- चैत्रो मैत्रात् पूर्वदेशे; कालवाचक- चैत्रात्पूर्वः फाल्गुनः, भोजनात् प्राक्, शयनात् पूर्वं, उत्थानात् परतः, प्रस्थानादनन्तरम्।

२५। बहिरारात्प्रभृतिभिः।

बहिस्, आरात्,[१] और प्रभृति शब्दोंके योगमे पञ्चमी होतीहै। यथा; गृहात् बहिः, आराद्वनात्, जन्मनः प्रभृति।

२६। आ आदिभ्याञ्च।

आ और आदि प्रत्ययान्त शब्दोंके योगमे पञ्चमी होतीहै। यथा; उद्यानादुत्तराग्गृहम्, गृहादुत्तराहि सरः, हिमालयात् दक्षिणा भारतवर्षम्, प्रयागात् दक्षिणाहि विन्ध्यः।

(१) क्रमदीश्वरने बहिः शब्दके योगमे पञ्चमी षष्ठी दोनो विभक्तियोंका विधान कियाहै।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३७। ऋतेयोगे द्वितीया च।

ऋते शब्दके योगमे पञ्चमी और द्वितीया विभक्तियें होतीहैं। यथा; ज्ञानादृते, ज्ञानमृते (वा)

३८। पृथग्विनाभ्यां द्वितीयातृतीये च।

पृथक् और विना शब्दोंके योगमे पञ्चमी, द्वितीया, और तृतीया विभक्तियें होतीहैं। यथा; चैत्रात् पृथक्, चैत्रं पृथक्, चैत्रेण पृथक्, श्रमात् विना, श्रमं विना, श्रमेण विना।

३९। स्तोककृच्छ्राल्पकतिपयेभ्यस्तृतीया च।

स्तोक, कृच्छ्र, अल्प और कतिपय शब्दोंके उत्तर पञ्चमी और तृतीया होती है। यथा; स्तोकान्मुक्तः, स्तोकेनमुक्तः, कृच्छ्रान्मुक्तः, कृच्छ्रेणमुक्तः, अल्पान्मुक्तः, अल्पेनमुक्तः, कतिपयान्मुक्तः, कतिपयेनमुक्तः।

परन्तु विशेषण होनेसे नहि होता। यथा; स्तोकः पाकः, स्तोकं पचति।

४०। हेतौ च।

हेतु अर्थमे तद्बोधक शब्दोंके उत्तर पञ्चमी और तृतीया होतीहै। यथा; धनात् कुलम्, धनेन कुलम्, भयात् कम्पः, भयेन कम्पः, हर्षात् नृत्यति, हर्षेण नृत्यति, दुःखात् रोदिति, दुःखेन रोदिति।

षष्ठी

४१। षष्ठी सम्बन्धे।

सम्बन्धमे षष्ठी विभक्ति होती है। यथा; ममपिता, तवपुत्रः, गोर्दुग्धम्, नद्याजलम् इत्यादि।

४२। कर्त्तृकर्म्मणोः कृतिः।

कृत् प्रत्ययके प्रयोग होनेसे कर्त्ता और कर्म्ममे षष्ठी होती है। यथा; कर्त्तामे- शिशोः शयनम्, अश्वस्यगतिः, तवपिपासा; कर्म्ममे- अन्नस्यपाकः, पयसः पानम्, सुखस्यभोगः, धनस्यदाता, वृक्षस्यछेदकः।

४३। उभयप्राप्तौ कर्म्मणि।

कर्त्ता और कर्म्म उभयत्र प्राप्ति होनेसे केवल कर्म्ममे षष्ठी होतीहै। यथा; गवां दोहो गोपेन, पयसः पानं शिशुना, धनस्यदानं नृपेण।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

५४। क्वचिद्विभाषा कर्त्तरि।

कहीं २ कर्त्तामे विकल्प करके षष्ठी होती है। यथा; घटस्य कृतिः कुम्भकारेण कुम्भकारस्य वा, चन्द्रस्य दिदृक्षा मया मम वा, शिष्यस्य प्रशंसा गुरुणा गुरोर्वा, शब्दानामनुशासनमाचार्य्येणाचार्य्यस्य वा।

५५। न शत्रादेः।

(१) शतृ, शानच्, क्वसु, कानच्, स्यत्, और स्यमान प्रत्ययों के प्रयोगमे षष्ठी नहि होती। यथा; शतृ– गृहं गच्छन्, जलं पिबन्; शानच्– अन्नं भुञ्जानः, व्याकरणमधीयानः; क्वसु–ओदनं पेचिवान्; कानच्– शास्त्रं शुश्रुवाणः; स्यत्– गृहं गमिष्यन्; स्यमान– गुरुं सेविष्यमाणः

५६। न तुमुनादेः।

तुमुन्, क्त्वा, ल्यप्, और णमुल्, प्रत्ययोंके प्रयोगमे षष्ठी नहि होती। यथा; तुमुन्– गृहम् गन्तुम्, चन्द्रं द्रष्टुम्; क्त्वा जलं पीत्वा; ल्यप्– गृहमागत्य, णमुल्– गुरुं सेवम् सेवम्।

५७। नोदन्तस्य।

उकारान्त कृत् प्रत्यय के प्रयोगमे षष्ठी नहि होती। यथा; जलं पिपासुः, फलं गृहयालुः, रिपुन्जिगीषुः।

५८। नोकशीलतृन्भविष्यण्णिनाम्।

(२) उक, शीलार्थतृन्, और भविष्यदर्थणिन् प्रत्यय के प्रयोगमे षष्ठी नहि होती। यथा, उक– गृहं गामुकः; शीलार्थतृन्– धनं दाता; भविष्यदर्थणिन्– धनं दायी।

५९। न खलर्थानाम्

(३) खलर्थ प्रत्ययोंके प्रयोगमे षष्ठी नहि होती। यथा; नैतत् सुकरं भवता, नतद्दुष्करं तेन, सर्व्वमीषत्करं सुधिया, मया सुमर्षणः शत्रुः, त्वया दुःशासनो रिपुः।

---

(१) द्विषो विभाषा। द्विष् धातुसे विकल्प करके। यथा; सुरं द्विषन्, सुरस्य द्विषन्।
(२) कामुक शब्दके प्रयोगमे होती है। यथा; धनस्य कामुकः।
(३) सु, दुर, और ईषत् शब्दोंके योगमे धातुके उत्तर जो अ और अन होते हैं उन्हें खलर्थ प्रत्यय कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

५०। न निष्ठायाः।

निष्ठा प्रत्ययों के प्रयोग मे षष्ठी नहि होती। यथा; क्त- तेन व्याकरणमधीतम्, तया चन्द्रो दृष्टः; क्तवतु- मारूढं गतवान्, ग्रहं चन्द्रं दृष्टवान्।

५१। क्तस्य वर्त्तमाने।

वर्त्तमानकाल मे विहित क्त प्रत्यय के प्रयोग मे षष्ठी होती है। यथा; राज्ञां मतः, (राजभिर्मन्यते इत्यर्थः); सतां पूजितः, सद्भिः पूज्यते इत्यर्थः।

५२। अधिकरणवाचिनश्च।

अधिकरण कारक मे विहित क्त प्रत्यय के प्रयोग मे षष्ठी विभक्ति होती है। यथा; इदमेषां शयितम्, इदमेषां मासितम्।

५३। विभाषा भावे।

भाववाच्य मे विहित क्त प्रत्यय के प्रयोग मे विकल्प करके षष्ठीविभक्ति होती है। यथा; मम स्नातम्। पक्षमे तृतीया मया स्नातम् इत्यादि।

५४। कृत्यानां कर्त्तरि वा।

कृत्य प्रत्यय का प्रयोग होनेसे कर्त्ता मे षष्ठी विकल्प करके होती है। यथा; पुस्तकन्तव पाठ्यम्, गुरुस्त्वयार्चनीय, पक्षमे तृतीया।

५५। कर्म्मणि जासि पिष् निप्रहृणां हिंसायाम्।

हिंसा अर्थमे जासि, पिष् और निप्र पूर्वक हन धातु के कर्म्म मे षष्ठी विभक्ति होती है। यथा; चौरस्य उज्जासयति, शत्रोः पिनष्टि, नि और प्र के व्यस्त समस्त और विपर्य्यस्त होनेसे भी होती है। यथा; निहन्ति प्रहन्ति निप्रहन्ति प्रणिहन्ति वा चौरस्य।

५६। वा स्मरत्यर्थदयेशां कर्म्मणि।

स्मरणार्थ दय और ईश धातु के कर्म्म मे विकल्प करके षष्ठी विभक्ति होती है। यथा; पुत्रो मातुः स्मरति, दाता दरिद्रस्य दयते पक्षमे द्वितीया होती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

५७। स्मृत्यर्थानां विभाषा करणे।

स्मृत्यर्थ— धातुके करण कारक मे विकल्प करके षष्ठी विभक्ति होती है। यथा; नाग्निस्तृप्यति काष्ठानाम्, साधुः स्मरन्ति खदने तुषारा। पक्षमे तृतीया होती है।

५८। अस्तादस्तात्यतस्भिः।

अस्तात्, अस्ति, आति, और अतस् प्रत्यय के योग मे षष्ठी विभक्ति होती है। यथा, अस्तात— पुरस्ता उद्यानस्य, उपरि मन्दिरस्य; अति— पुरो नगरस्य, अधोगृहस्य, आति— उत्तरात् समुद्रस्य; अतस् दक्षिण तो ग्रामस्य।

५९। कृत्वस् सुचोः कालाऽधिकरणे।

कृत्वस् और सुच प्रत्यय के प्रयोग मे कालवाचक शब्दके अधिकरण मे षष्ठी विभक्ति[१] होती है। यथा; कृत्वस्— पञ्चकृत्वो दिवसस्याधीते; सुच्— द्विर्दिवसस्य भुङ्क्ते।

६०। एनपा द्वितीया च।

एनप् प्रत्ययान्त शब्दके योगमे षष्ठी और द्वितीया होती है। यथा; दक्षिणेन हस्तवारिकायाः सरः, (वा) दक्षिणेन हस्तवारिकां सरः।

६१। तुल्यार्थैस्तृतीया च।

तुल्यार्थ शब्दों के योगमे षष्ठी और तृतीया विभक्ति होती है। यथा, ममतुल्यः; मयातुल्यः, मम सदृशः, मयासदृशः, ममसमः, मया समः।

६२। आशिषि कुशलादिभिश्चतुर्थी च।

आशीर्वाद अर्थमे कुशल प्रभृति[२] शब्दोंके योगमे षष्ठी और चतुर्थी होती है। यथा, कुशलं देवदत्तस्य भूयात्, कुशलं देवदत्ताय भूयात्, निरामयं देवदत्तस्य भूयात्, निरामयं देवदत्ताय भूयात्। इत्यादि।

(१) वोपदेव और क्रमदीश्वर के मतमे विकल्प से होती है।

(२) कुशल, निरामय, हित, सुख, अर्थ, आयुष्य और तदर्थ कशब्द।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

९३। दूरान्तिकार्थैः पञ्चमीच।

दूरार्थ और अन्तिकार्थ शब्दों के योग मे षष्ठी और पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा, दूरङ्ग्रामस्य दूरङ्ग्रामात्, अन्तिकन्नगरस्य अन्तिकन्नगरात्।

९४। निमित्ता द्धेतुप्रयोगे।

हेतुशब्द के प्रयोग मे निमित्त बोधकशब्द के उत्तर षष्ठी होती है[1] अन्नस्य हेतोर्वसति, अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन्।

९५। सर्वनाम्नस्तृतीयाच।

हेतुशब्दका प्रयोग होने से, निमित्त बोधक सर्वनाम के उत्तर षष्ठी और तृतीया विभक्ति होती है[2] यथा, कस्य हेतोः समागतः, केन हेतुना समागतः।

सप्तमी

९६। सप्तम्यधिकरणे।

अधिकरण कारक मे सप्तमी विभक्ति होती है। यथा, गृहेतिष्ठति, शय्यायांशेते, नद्यांस्नाति।

९७। यस्यचभावेन भावलक्षणम्।

जिस सम्बन्धिक्रिया के काल द्वारा अन्य सम्बन्धि क्रिया का काल निरूपित होता है, उसके उत्तर सप्तमी विभक्ति होती है। यथा, रवावस्तङ्गते गतः (रवि के अस्त होजाने पर गया)

९८। साधुनिपुणाभ्यामर्चायाम्।

प्रशंसा अर्थ मे साधु और निपुण शब्द के योग मे सप्तमी विभक्ति होती है। यथा, व्याकरणे साधुः, साहित्ये निपुणः[3]।

९९। क्तस्य सहेनिना कर्मणि।

इनि सहित क्त प्रत्यय के प्रयोग मे कर्म मे सप्तमी विभक्ति होती

(१) वोपदेव और भट्टोजिदीक्षित ने इस स्थल मे तृतीयादि पांच विभक्तियों का विधान किया है। (२) वोपदेव क्रमदीश्वर और भट्टोजिदीक्षित ने सातों विभक्तियों का विधान किया है।

(३) वोपदेव के मत मे षष्ठी और सप्तमी दोनों होती हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है। यथा, अधीत व्याकरण मनेन, अधीती व्याकरणे, गृहीतउ-
पदेशोनेन, गृहीती उपदेशे।

८०। अध्वनो व्यवधौ सप्तमी च।

व्यवधान द्योतन मे अध्ववाचक शब्दके उत्तर सप्तमी और प्रथ-
मा विभक्ति होती है। यथा, ग्रामो वनात् पञ्चसु क्रोशेषु पञ्च
क्रोशा वा, पांच कोश के अन्तर मे है; प्रयागो पाटलिपुत्रात् दश-
सु योजनेषु दश योजनानि वा, दश योजन अन्तर पर है।

८१। प्रसितोत्सुकाभ्यां तृतीया च।

प्रसित और उत्सुक शब्दके योगमे सप्तमी और तृतीया विभक्ति
होती है। यथा, धनेषु प्रसितः, धनैः प्रसितः विद्यायामुत्सुकः वि-
द्ययोत्सुकः।

८२। क्रियामध्येऽध्वकालाभ्यां पञ्चमी च।

दो क्रियाओं के मध्यवर्त्ती अध्ववाचक और कालवाचक शब्दों के
उत्तर सप्तमी और पञ्चमी विभक्ति होती हैं। यथा, अध्ववाचक-
अयमिह स्थित्वा क्रोशे क्रोशाद्वा लक्ष्यं विध्येत्, कालवाचक- अ-
यमद्य भुक्त्वा द्व्यहे द्व्यहाद्वा भोक्ता।

८३। दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया तृतीया पञ्चम्यश्च।

दूरार्थ और अन्तिकार्थ शब्दों के उत्तर सप्तमी, द्वितीया, तृतीया,
और पञ्चमी होती हैं। यथा, दूरे ग्रामस्य दूरङ्ग्रामस्य, दूरेण ग्राम-
स्य, दूरात् ग्रामस्य, अन्तिके गृहस्य, अन्तिकात् गृहस्य अन्तिक
गृहस्य, अन्तिकेन गृहस्य। विशेषण होनेसे नहिं होता। यथा,
दूरो ग्रामः।

८४। षष्ठी चानादरे।

क्रिया द्वारा अवज्ञा जताने मे अवक्तेय के उत्तर सप्तमी और
षष्ठी विभक्ति होती हैं। यथा, रुदति शिशौ जगाम, रुदतः
शिशोर्जगाम। (रोते उपवासक को अनादर करके गया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

७५। साक्षिप्रभूतिभिश्च।

साक्षी प्रभृति शब्दोंके योगमें सप्तमी और षष्ठी होती हैं। यथा; विवादे साक्षी, विवादस्य साक्षी; व्यवहारे प्रतिभूः, व्यवहारस्य प्रतिभूः, मीमांसायां कुशलः मीमांसायाः कुशलः; गोषु स्वामी, गवां स्वामी; सर्वस्मिन्नीश्वरः सर्वस्येश्वरः; राष्ट्रेऽधिपतिः राष्ट्रस्याधिपतिः।

७६। यतश्च निर्द्धारणम्।

जाति गुण क्रिया अथवा सञ्ज्ञा द्वारा सारे सजातीय से एक के पृथक् करने को निर्धारण कहते हैं। जिससे निर्धारण किया जाय उसके उत्तर सप्तमी और षष्ठी विभक्ति होती हैं। यथा; जाति द्वारा —— मनुष्येषु क्षत्रियः शूरः, मनुष्याणां क्षत्रियः शूरः; गुण द्वारा —— गोषु कृष्णा बहुक्षीरा, गवां कृष्णा बहुक्षीरा; क्रिया द्वारा —— अध्वगेषु धावन्तः शीघ्रगामिनः, अध्वगानां धावन्तः शीघ्रगामिनः; सञ्ज्ञा द्वारा — छात्रेषु मैत्रः प्रवीणः, छात्राणां मैत्रः प्रवीणः।

७७। निमित्तात्कर्म्मसमवाये विभाषा।

कर्म्म के साथ सम्बन्ध होने से निमित्त बोधक शब्दके उत्तर विकल्प करके सप्तमी होती है। यथा, चर्म्मणि द्वीपिनं हन्ति, दन्तयोर्हन्ति कुञ्जरं, केशेषु चमरीं हन्ति, सीम्नि पुष्कलको हतः। पक्षे चतुर्थी। यथा, मुक्ताफलाय करिणं हरिणं पलाय इत्यादि। (१)

कारक।

७८। क्रियान्वयि कारकम्।

क्रिया के साथ जिसका अन्वय हो उसे कारक कहते हैं।

७९। षट् कारकाणि।

अपादान, सम्प्रदान, करण, अधिकरण, कर्म्म, और कर्त्ता

(१) केचित् वैयाकरण केवल सप्तमी विधान करके मुक्ता फलाय करिणं हरिणं पलाय इत्यादिकको अपप्रयोग कहते हैं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ये छः कारक हैं।

अपादान

८०। यतो विश्लेषोऽपादानम्।

जिससे विश्लेष होता है, उसे अपादान कहते हैं। यथा, अश्वात् पतितः, हलाद्भ्रष्टः, जलादुत्थितः, गृहात् प्रस्थितः, विदेशात् प्रत्यागतः;

८१। भीत्रार्थानां भयहेतुः

भयार्थ और त्राणार्थ धातु के प्रयोग में भयहेतु अपादान होता है। यथा, भयार्थ — व्याघ्राद्बिभेति, सर्पात् त्रस्यति; त्राणार्थ — आतपात् त्रायते मल्लिका इतति।

८२। हेतुरुत्पत्तेः।

उत्पत्तिका कारण अपादान होता है। यथा, बीजादङ्कुरो जायते, पितुः पुत्रो जायते, धर्मात् सुखं भवति।

८३। आविर्भवने भुवः।

भू धातु के प्रयोग में आविर्भावरूपी अर्थात् प्रकाशस्थान अपादान होता है। यथा, हिमवतो गङ्गा प्रभवति, वल्मीकाग्रात् प्रभवति धनुः खण्डमाखण्डलस्य, आविर्भवतीत्यर्थः।

८४। विरामार्थानां यतो विरतिः।

विरामार्थक धातु के प्रयोग में जिससे विराम हो उसकी अपादानसंज्ञा होती है। यथा अध्ययनाद्विरमति, कलहान्निवर्तते।

८५। पराजेरसह्यम्।

परापूर्वक जि धातु के प्रयोग में असह्य विषय अपादान होता है। यथा, अध्ययनात् पराजयते, पापात् पराजयते। अध्ययनं पापञ्च सोढुमसमर्थ इत्यर्थः।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

८६। यस्यादर्शनमिच्छति।

जिसके अदर्शनकी इच्छा हो उसमे — — — अपादान होता है। यथा, गुरोरन्तर्धत्ते, पितुर्निलीयते, दस्योर्लुक्कायते; गुरुः पिता दस्युर्वा नमां पश्येदिति लज्जया भयेनवा न-दृश्येत यथा दपसरतीत्यर्थः।

८७। यतो जुगुप्सा तदर्थानाम्।

जुगुप्सार्थक धातुओंके प्रयोगमे जिससे जुगुप्सा होती है उसकी अपादान संज्ञा है। यथा, पापाज्जुगुप्सते,

८८। त्रपार्थानां यतस्त्रपा।

लज्जार्थक धातुओं के योगमे जिससे लज्जा होती है वह अपादान है। यथा, गुरोर्लज्जते, पितुस्त्रपते, मातुर्जिह्रेति।

८९। अधीत्यर्थानामध्यापयिता।

अध्ययनार्थक धातु के प्रयोगमे अध्यापयिता अपादान होता है। यथा, उपाध्यायादधीते, गुरोः पठति।

९०। वारणार्थानामीप्सितः।

वारणार्थक धातुओं के योगमे निवार्य्यमाणका ईप्सित अपादान होता है। यथा, अन्नेभ्यः काकं वारयति, यवेभ्यो गां निषेधति, व्यसनात् पुत्रं निवारयति

९१। श्रुत्यर्थानां श्रावयिता।

श्रवणार्थक धातु के प्रयोगमे श्रावयिता अपादान होता है। यथा, गुरोः शास्त्रं शृणोति नटाद्गीतमाकर्णयति, कस्मात् श्रुतं भवता, मया श्रुतमिदं तातात्।

९२। ग्रहण प्राप्त्यर्थानां तत्स्थानम्।

ग्रहणार्थक और प्राप्त्यर्थक धातुओंके प्रयोग मे ग्रहणस्थान और प्राप्तिस्थान अपादान होते हैं। यथा, ग्रहणार्थक — आचार्यादुपदेशं गृह्णाति प्रजाभ्यः करमादत्ते; प्राप्त्यर्थक - उपाध्यायाद्विद्यामाप्नोति, गुरोर्ज्ञानंल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भते।

९३। प्रमादार्थानांयतः प्रमादः।

प्रमादार्थक धातु के प्रयोग मे जिस से प्रमाद हो वह अपादान होता है। यथा, धर्म्मात्प्रमाद्यति, अध्ययनादनवधानम्।

सम्प्रदान।

९४। यस्मैदानं सम्प्रदानम्।

जिसको कोई वस्तु दी जाय उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। यथा, दरिद्राय धनन्ददाति, भिक्षवे भिक्षान्ददाति, सर्वस्वं गुरवे ददाति।

९५। रुच्यर्थानां प्रीयमाणः।

रुच्यर्थक धातुओं के प्रयोगमे प्रीयमाणसम्प्रदान होता है। यथा, मोदकः शिशवे रोचते, इदंमह्यंस्वदते।

९६। स्पृहेरीप्सितः।

स्पृहि धातु के प्रयोग मे कर्त्ता का ईप्सित सम्प्रदान होता है। यथा, धनाय स्पृहयति, पुष्पेभ्यः स्पृहयति।

९७। धारेरुत्तमर्णः।

धारि धातुके प्रयोग मे उत्तमर्ण सम्प्रदान होताहै। यथा, स त्वभ्यं शतं धारयति, त्वं मह्यं सहस्रं धारयसि।

९८। क्रियया यमभिप्रैति।

क्रिया द्वारा जिसको अभिप्राय करताहै, अर्थात् जिसके प्रीति जननादि उद्देश्यसे क्रिया का अनुष्ठान हो वह सम्प्रदान होताहै। यथा, शिशवे क्रीडनक मानयति, पुत्राय चन्द्रन्दर्शयति।

तनतङ्गमिपतिः पत्न्यै दर्शयन्प्रियदर्शनः

अपिलङ्घितमध्वानं बुबुधे न बुधोपमः।

९९। क्रोधद्रोहेर्ष्यासूयार्थानांतउद्देश्यः।

क्रोधार्थक, द्रोहार्थक, ईर्ष्यार्थक, और असूयार्थक धातुओं के प्रयोग मे क्रोधादि का उद्देश्य सम्प्रदान होताहै। यथा मन्याय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्रुध्यति, शत्रवे द्रुह्यति, प्रतिवेशिने ईर्ष्यति, प्रतिद्वन्द्विने असूयति।

१००। प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः प्रवर्तकः।

प्रति पूर्वक और आङ् पूर्वक श्रु धातु के प्रयोग मे प्रवर्त्तक सम्प्रदान होता है। यथा, दरिद्राय धनं प्रति शृणोति, आशृणोति वा,। दरिद्रेण मह्यं धनं देहीति प्रवर्तितः प्रतिजानीति इत्यर्थः

करण

१०१। साधकतमं करणम्।

क्रिया निष्पत्ति का जो सर्व प्रधान उपाय है उसको करण कारक कहते हैं। यथा, चक्षुषा पश्यति, कर्णेन शृणोति, हस्तेन गृह्णाति, दात्रेण लुनाति।

अधिकरण

१०२। आधारोऽधिकरणम्।

क्रिया के आधारभूत कर्त्ता और कर्म्म का जो आधार हो उसको अधिकरण कारक कहते हैं। आधार तीन प्रकार का होता है। एकदेशिक, वैषयिक, अभिव्यापक। यथा, एकदेशिकः—वने वसति, वनैकदेशे इत्यर्थः; नद्यां स्नाति, नद्याः एकदेशे इत्यर्थः, वैषयिकः—जले तृष्णा, जलविषये इत्यर्थः धने स्पृहा, धनविषये इत्यर्थः। अभिव्यापकः-गुडे माधुर्य्यमस्ति; गुडस्य सर्वानवयवान् व्याप्येत्यर्थः;

कर्म्म

१०३। क्रिययाक्रान्तङ्कर्म्म।

कर्त्ताकी क्रिया द्वारा जो आक्रान्त हो उसे कर्म्म कारक कहते हैं। यथा, गृहम्प्रविशति, चन्द्रम्पश्यति, ग्रामङ्गच्छति, इत्यादि।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है। यथा, शिशुः क्रीडति, गौः शब्दायते, मेघो गर्जति इत्यादि।

११४। प्रयोजकश्च।

जो अन्य को क्रिया में प्रवृत्त करे उसे भी कर्तृकारक कहते हैं।

११५। तृतीया प्रयोज्ये।

क्रिया के अणिजन्त अवस्था के कर्ता को णिजन्त अवस्था में प्रयोज्य कहते हैं। प्रयोज्य कर्ता में तृतीया होती है। यथा, देवदत्त ओदनम्पचति, यज्ञदत्तो देवदत्तेन ओदनम्पाचयति। इस वाक्य में देवदत्त पचनक्रिया की अणिजन्त अवस्था में कर्ता था, णिजन्त अवस्था में उसकी प्रयोज्य संज्ञा हुई और उसमें तृतीया विभक्ति होगई। और यज्ञदत्त देवदत्त को पचन क्रिया में प्रवृत्त करता है, इस कारण वह प्रयोजक है अतएव उसकी कर्तृ संज्ञा होकर उसमें प्रथमा विभक्ति हुई।

११६। गत्यर्थानाङ्कर्म्म संज्ञा प्रयोज्यस्य।

गमनार्थ धातु के प्रयोग में प्रयोज्य कर्ता की कर्म्म संज्ञा होती है। यथा, देवदत्तो गृहं गच्छति, यज्ञदत्तो देवदत्तं गृहं गमयति।

११७। ज्ञानाशनार्थानाञ्च।

ज्ञानार्थ और अशनार्थ(१) धातुओं के प्रयोग में प्रयोज्य कर्ता की कर्म्म संज्ञा होती है। यथा, ज्ञानार्थ— शिष्यो धर्मं बुध्यते गुरुः शिष्यं धर्म्मम्बोधयति; भोजनार्थ— पुत्रोऽन्नमश्नाति, माता पुत्रमन्नमाशयति।

११८। शब्दकर्म्मकाणामकर्म्मकाणाञ्च।

शब्द कर्म्मक(२) और अकर्म्मक धातुओं के प्रयोग में प्रयोज्य कर्ता की कर्म्म संज्ञा होती है। यथा, शब्द कर्म्मक— शिष्यो वेदमधीते, गुरुः शिष्यं वेदमध्यापयति; अकर्म्मक— शिशुः शेते, माता शिशुं शाययति।

(१) अद्, खाद्, भक्ष, भुज। (२) शब्दात्मक विषय पद, वाक्य, ग्रन्थ, उपदेश, तिरस्कार, प्रशंसा प्रभृति।
(३) ह्वे, क्रन्द, शब्दाय, जल्प, भाष, लप, स्तु, विज्ञा, उपलभ प्रभृति।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

११९। विभाषा हृञ् कृञोः।

हृञ् और कृञ् धातु के प्रयोगमे प्रयोज्य कर्त्ताकी विकल्प करके कर्म्म सञ्ज्ञा होती है। यथा, भृत्यो भारं हरति, प्रभुर्भृत्यं भृत्येन वा भारं हारयति; कुम्भकारो घटं करोति, यज्ञदत्तः कुम्भकारं कुम्भकारेण वा घटं कारयति

१२०। कर्म्मभावयोस्तृतीया।

कर्म्मवाच्य और भाववाच्य के प्रयोग मे कर्त्ता मे तृतीया विभक्ति होती है। यथा, कर्म्मवाच्य—गोपेन दुग्धन्दुह्यते, मालाकारेण पुष्पन्नीयते, राज्ञा धनन्दीयते; भाववाच्य—शिशुना रुद्यते, वृद्धेन सुप्यते।

१२१। कर्म्मसञ्ज्ञायां प्रयोज्यकर्म्मणोः प्रथमाद्वितीये।

जहां प्रयोज्य कर्त्ता की कर्म्मसञ्ज्ञा होती है, वहां कर्म्मवाच्य प्रयोग मे प्रयोज्य कर्त्ता मे प्रथमा विभक्ति और कर्म्म मे द्वितीया विभक्ति होती है। यथा, शिष्येण वेदोऽधीयते, गुरुणा शिष्यो वेदमध्याप्यते। यहां प्रयोज्य कर्त्ता शिष्य मे प्रथमा विभक्ति और कर्म्म वेद मे द्वितीया विभक्ति हुई। तद्भिन्नस्थलमे देवदत्तेन ओदनम्पच्यते, यज्ञदत्तेन देवदत्तेन ओदनम्पाच्यते।

१२२। निवृत्तौ च प्रवृत्तिवत् क्रियायाः।

क्रिया प्रवृत्ति स्थल मेहि तत्तत् कारक का विधान हुआ है, परन्तु क्रिया प्रवृत्तिकी न्याईं निवृत्ति स्थल मेभी तत्तत् कारक का विधान होता है। यथा, अश्वात् पतति, अश्वान्न पतति; अध्ययनात् विरमति अध्ययनान्न विरमति, गृहे तिष्ठति गृहे न तिष्ठति, जलं पिबति, जलन्न पिबति, मेघो वर्षति मेघो न वर्षति।

१२३। विवक्षावशात् कारकाणि।

जहां जो कारक विहित हुआ है, वक्ताकी इच्छानुसार उसका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अन्यथाभाव लक्षित हो सकता है। यथा, गृहङ्गच्छति, गृहे गच्छति, गृहम्प्रविशति, गृहे प्रविशति, पुष्पेभ्यः स्पृहयति, पुष्पाणि स्पृहयति, अरये कुप्यति, अरौ कुप्यति, शिष्याय विद्यां वितरति शिष्ये विद्यां वितरति, हिमवतो गङ्गा प्रभवति, हिमवति गङ्गा प्रभवति।

इति॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

४
—
५

Via Karana
No: 114

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Via Karana

No: 1H

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Via karana

No: 1H

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Grammar
891.245
N.295

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Grammar
891.245
N.295

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust